वास्तु कलानिधि

ALBUM OF INDIAN ARCHITECTURAL DESIGNS

आलेखक
पद्मश्री प्रभाशंकर ओ. सोमपुरा
शिल्पविशारद

Padmashri PRABHASHANKAR O. SOMPURA
Shilpavisharad

Publishers
THE LATE SHRI BALWANTRAI PRABHASHANKAR SOMPURA & BROTHERS
3, Pathik Society, Ahmedabad-13

पद्मश्री प्रभाशंकर सोमपुरा
शिल्पविशारद
Padmashri PRABHASHANKAR O SOMPURA
Shilpa-visharad

Padmashri Prabhashankar Sompura, aged 82 years

Architect Padmashri Prabhashankarbhai Sompura was born in his native place Palitana in the month of May, 1896 After few years studies in High School, he joined his family traditional occupation of Shilpa About 20 books written by him have been published with its detailed drawings, plans and technical translation into Gujarati after research in ancient Sanskrit texts on Indian temple architecture He is having theoretical knowledge with practical knowledge of temple building He has made research in difficult and rare texts These invaluable texts have been so translated into vernacular that even ordinary class can also understand He has also published books on drawings and plans on Shilpa and Iconography

The Government of India has honoured him with the award of Padmashri in appreciation of his rare knowledge Looking to the great temples built by him in India, Jagadguru Shri Shankaracharyaji awarded him a degree of 'Shilpa Visharad ' He is being invited by various Universities to deliver lectures on this subject Recently the Government of India has awarded him an award of "Master Craftsmanship"

He has built great temples at the cost of—lacs and crores of Rupees in various parts of India, namely— Gujarat, Maharashtra, Andhra, Kerala, Madhya Pradesh, Bengal, Punjab, etc

Late Sardar Shri Vallabhbhai Patel had entrusted him the construction of great Sandhar Prasad of renowned Somnath temple looking to his profound knowledge and ability

स्थपति पद्मश्री प्रभाशकरभाई सोमपुरा का जन्म मई १८९६ को अपने वतन मे पालिताणा (सौराष्ट्र) मे हुआ। सेकन्डरी स्कूल शिक्षण के बाद आपने कौटुम्बिक परपरागत स्थापत्य व्यवसाय अपनाया और सस्कृत शिल्प ग्रथोका अध्ययन किया। सस्कृत शिल्पग्रथो का गुजराती एवम् हिन्दी अनुवाद नक्शो के साथ तैयार करके आपने बीसेक अध्ययन-पूर्ण ग्रथो को सपादित करके प्रकाशित किए है। आपको स्थापत्यका अद्वितीय ज्ञान सैधातिक एवम् क्रियात्मक रूपसे प्राप्त है। आपने जो कठिन और अलभ्य ग्रथोका सशोधन किया है, उसे आज आम कारीगर वर्ग पढकर स्थापत्यका ज्ञान प्राप्त करता है।

भारत सरकार ने आपके स्थापत्य विषयक ज्ञान से प्रभावित होकर आपको पद्मश्री एवोर्ड प्रदान किया है। जगद्गुरु श्री शकराचार्यजीने भी आपके शिल्प-स्थापत्य के भव्य निर्माण देखकर आपको 'शिल्प विशारद' पदवी समर्पित की है। कई युनिवर्सिटीयाँ आपको व्याख्यान के लिए निमत्रित करती है।

सरदार श्री वल्लभभाई पटेल ने आपका कौशल्य देखकर सुप्रसिद्ध सोमनाथ साधार महाप्रासाद का निर्माण कार्य आपको सुप्रत कीया था।

भारत के विभीन्न प्रदेश जैसे कि गुजरात, महाराष्ट्र, आध्र, केरला, मध्य प्रदेश, बगाल, पजाब इत्यादि मे आपने कई भव्य और महान प्रासाद के निर्माण किए हैं—कर रहे हैं।

आमुख

ताप, शीत और वर्षा से सुरक्षा की आवश्यकता प्रत्येक जीवित प्राणी को जन्म से ही होती है। भवनो का निर्माण इन्ही आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए आरभ हुआ। वास्तु-कला का जन्म कब हुआ, इस सम्बन्ध मे थोडा वाद-विवाद है, पर वेदो तथा पुराणो मे इस विषय मे जो प्रमाण उपलब्ध होता है उनसे प्रतीत होता है कि प्राचीन आर्यों के काल मे जो घर बनते थे, वे सादे और अनलकृत होते थे, तथा उन्हे घास, बांस, लकडी और मिट्टी जैसे नाशवान् पदार्थों से बनाया जाता था। इस युग को कुटीर-युग कह सकते है। इसके बाद आया काष्ठ-युग, जिसकी अवधि काफी लम्बी रही। इस अवधि मे काष्ट-निर्मित भवनो का निर्माण आरभ हुआ। तत्पश्चात्, आरभ हुआ दग्ध ईंटो का प्रयोग। इन कालो के कोई अवशेष उपलब्ध नही है, कारण इन कालो के निर्माणो मे जिस प्रकार की सामग्री का उपयोग किया गया, वह चिरस्थायी नही थी।

बेबीलोन और असीरीया वास्तु-कला के भी बहुत कम अवशेष उपलब्ध हैं, जो उपलब्ध हैं, वे मात्र दग्ध ईंटो से निर्मित भवनो के ही हैं, क्योकि टाइग्रिस और युफारेतस नदियो के तटो पर स्थित होने के कारण इन भवनो मे प्रस्तर का प्रयोग सभव न था। फिर भी, दग्ध ईंटो पर उत्कीर्ण आलेखो के अवशेष अवश्य उपलब्ध हैं।

ग्रीस (यूनान), ईटली, ईरान और मिस्र जैसे देशो मे ५००० वर्ष पुराने भवनो के अवशेष आज भी पाये जाते हैं, कारण उनमे प्रस्तर का प्रयोग हुआ था।

भारत की ओर दृष्टिपात करने पर, हमे रामायण और महाभारत मे राजभवनो, सभागृहो और मदिरो के विशद वर्णन मिलते हैं। जैसे जैसे किसी सभ्यता का विकास होता था, वैसे वैसे उसकी वास्तु-कला भी विकसित होती जाती है।

काष्ठ और ईंटो के प्रयोग के युग के पश्चात् आया प्रस्तर-निर्मित सरचनाओ का युग, जो प्राय २५०० वर्षों तक, ५वी सदी तक, चला। इमारती अर्थात् सुविन्यस्त प्रस्तर का प्रयोग पहली सदी से आरभ हुआ, और उसकी परिणति एक महान कला-शैली के रूप मे हुई। जो भी इन भव्य, निर्माणो को, जिनका सृजन घेनी और तूलिका से हुआ, देखता है, वह विस्मय-विमुग्ध रह जाता है। उदाहरणार्थ, एलोरा मे, पूरे पर्वत के एक पार्श्व को वास्तु-कला की एक अद्वितीय कृति के रूप मे लक्षित किया गया। यह सारा सृजन उस काल के शिल्पियो के सृजनात्मक शिल्प का एक अन्यतम उदाहरण है। भारत मे वास्तु-कला के इस विकास का श्रेय तत्कालीन राजाओ और कुलीन तथा उदारयेता व्यक्तियो की धार्मिक भावनाओ और शिल्पियो को उनसे प्राप्त निरन्तर प्रोत्साहन को है।

वास्तु-शास्त्र के अर्थ अत्यन्त व्यापक हैं, और उसमे वास्तुकाल सहित सब कलाओ का समावेश हो जाता है। वास्तु-कला का पारम्पारिक क्षेत्र है मदिरो, राजमहलो, जलासयो, उद्यानो, निवासस्थानो, दुर्गों, राजमार्गों का निर्माण तथा नगर-आयोजन, आदि। ललित कला को वास्तु-कला का एक उप-विभाग माना जाता था, क्योकि ललित कला मे निपुण कलाकार जिन मूर्तियो की रचना करते थे, उन्हें वास्तु-कला का आलकारिक तत्त्व ही माना जाता था। इस प्रकार, वास्तु-शास्त्रकी सम्पूर्ण व्याख्या मे कला औरव वास्तुकला दोनो के क्षेत्रो का समावेश है।

वास्तु-शास्त्र के विज्ञान को जन्म देने वाले थे हमारे प्राचीन ऋषि-मूनि। उन्होंने वास्तु-शास्त्र-विषयक जिन ग्रथो की रचना की, वे काल के गर्भ मे समा जाने के कारण उपलब्ध नही है। उनकी मूल कृतियो के जो अवशेष रह गये, उनके आधार पर, बाद मे, विद्वानो ने नये-नये ग्रथो का सकलन किया। इन शास्त्रो मे जिन सिद्धातो का निराकरण किया गया है, उनका प्रयोग चौथी सदी मे गुप्ताकाल तक होता रहा। कुछ सदियो के व्यवधान के बाद, आठवी और नवी सदियो मे उनका प्रयोग पुन हुआ। उनके अवशेषो का अध्ययन कर, हमे उन परिवर्तनो का पता चल सकता है, जो उनकी शैलियो मे समय-समय पर हुए। ग्यारहवी और बारहवी सदी मे जो शैली प्रचलित थी, वह चौदहवी सदी मे हुए कुछ रूपातरो को छोडकर आज तक प्रचलित है। सामान्यत, ग्यारहवी और बारहवी सदियो मे वास्तु-कला से सम्बन्धित जो ग्रथ प्रकाश मे आये उन सबकी रचना विश्वकर्मा ने की थी। पन्द्रहवी सदी मे, वास्तुकला से सम्बन्धित प्राचीन ग्रथो पर आधारित कुछ नये ग्रथ सूत्रधार (वास्तुकार) वीरपाल तथा भारद्वाज गोत्र के सोमपुरा सूत्रधार मण्डल द्वारा लिखे गये थे।

महर्षि शुक्राचार्य ने कला और ज्ञान की पारम्पारिक व्याख्या इन शब्दो मे की है कला असीम है, और ज्ञान अनन्त। सामान्यत, ज्ञान की ३२ शाखाएँ है, और कला की ६४। निम्न श्लोक मे इसी बात को कहा गया है

यद्यत्स्थान्द्वाचिक सस्थकर्मविद्याभि संज्ञकम्।
शक्तोमूकोऽपिथत्कर्तु कलासंज्ञन्तुनुत्स्मृतम्॥
('जो वाणी द्वारा सम्पन्न हो सके, वह ज्ञान है,
और जो मौन द्वारा सम्पन्न हो सके, वह कला हैं।')

नृत्य, शिल्प (वास्तु-कला) तथा चित्रकला चूकि मौन द्वारा सम्पन्न होते हैं, इसलिए उन्हे कला की श्रेणी मे रखा जाता है। वास्तु-कला निधि मे लेखक ने, अपनी योग्यता का सर्वोत्तम लाभ उठाते हुए, वास्तु-कला के विभिन्न पक्षो को समझाने का प्रयास किया है।

भारत मे कभी असख्य स्मारक थे। पर दुर्भाग्य से देशके उतर-पश्चिमी तथा पश्चिमी भाग मे ८०० वर्षो तक मूर्तिभजको और धर्म-विरोधियो के राज्य-काल मे, हज़ारो अनमोल मूर्तियाँ और वास्तु-कला के श्रेष्ठ नमूने नष्ट कर दिये गये। यही कारण है कि आज प्रादेशिक शैलियो का सम्पूर्ण अध्ययन सभव नही है।

भारतीय मदिरो की वास्तु-कला से सम्बन्धित भारतीय ग्रथो मे विभिन्न प्रादेशिक शैलियो की चर्चा है नागर, द्रविड, लातिन, भूमिज, फासना, वल्लभी आदि। ऐसी कुल शैलियो की सख्या है-१४। पश्चिम भारत, अर्थात् गुजरात, राजस्थान और मेवाड मे, विशुद्ध नागरी शैली पायी जाती है। उत्तर भारत के प्रान्तो मे नागर शैली से उत्पन्न शैली पायी जाती है, और दक्षिण मे, कर्नाटक मे होयशल शैली पायी जाती है तथा द्रविड शैली तमिल नाडु मे। द्रविड शैली होयशल शैली से भिन्न है।

आधुनिक युग मे, वास्तु-कला के प्रति दृष्टिकोण मे ह्रास आया है, और पश्चिमी शैलियो का अन्धानुकरण करने के कारण वह असौन्दर्यात्मक हो गयी है। यह देखकर वडा दुख होता है कि शिक्षा के क्षेत्र मे भी यही ह्रासोन्मुखता दिखायी पडती है।

इसमे कोई सन्देह नही कि आधुनिक विज्ञान वडी तीव्र गति से प्रगति कर रहा है, और हमे उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए। पर, इसके यह अर्थ कदापि नही है कि हम वास्तु-कला की अपनी देशज परम्पराओ को बिलकुल भुला दे। "आधुनिक शैली" की नकल मे निर्मित "आधुनिक भवन" या तो अस्तवल सा लगता है, या पशुशाला सरीखा, वह प्रकाश और वायु को तो रोकता ही है। हमारे पूर्वज, जलवायु का ध्यान रखते हुए, भवनो मे खिडकियाँ, दरवाज़े, वाल्कनियाँ, दालान और रक्षावरण वनाते थे। सुविधा की नयी सकल्पनाओ के अनुसार, हम अपने भवनो के आन्तरिक भाग मे सशोधन भले ही कर लें, पर हमारे भवनो की वाह्य आकृति विशुद्ध भारतीय होनी आवश्यक है, जिसे देखकर हम अपनी सस्कृति के प्रति गौरव अनुभव कर सकें।

ऐसे लोग मौजूद हैं जो इन पारम्परिक दृष्टिकोणो का विरोध करते हुए, यह दावा करते हैं कि वास्तु-कला के प्रति ऐसा पारम्परिक दृष्टिकोण अपनाने से व्यर्थ का अतिरिक्त व्यय होता है। यह दावा गलत है। किसी विशाल भवन मे यदि ३-४ प्रतिशत खर्चे उसे शोभित करने मे लग जाये, तो उसे अधिक व्यय मानना ठीक नही होगा। इस प्रकार का तर्क मिथ्या है, और उसके परिणामस्वरूप, हम न केवल अपनी कला, वास्तु-कला और चित्रकला को पश्चिम का अन्धानुकरण करके नष्ट करते है, और अपनी सुरुचि को विकृत करते हैं। पश्चिमी शैलियो का ऐसा ही अन्धानुकरण हमे चित्रकला और मूर्तिकला (शिल्प) मे भी देखने को मिलता है। देखने वाले को, पहली दृष्टि मे, इस कृत्रिम शैली के सर-पैर का विलकुल पता नही चलता।

भारत आने वाले एक युरोपयिन ने एक वार मुझसे कहा था कि भारत कला का एक विशाल सग्रहालय है, लेकिन फिर भी भारतीय मात्र पश्चिम की नकल करते हैं। विदेशी प्रशसक हमारी कलाकृतियो को अपने साथ ले जाते हैं, और पश्चिम मे उनकी प्रदर्शनियाँ आयोजित करते है, और स्वय हमे उनके मूल्य के वारे मे कोई पता नही है। यह वडे दुर्भाग्य का विषय है।

इस स्थिति मे, ऐसा लगा कि यह ग्रथ समाज की एक वडी आवश्यकता की पूर्ति करेगा, और जनता को इस दिशा मे सही राह दिखाने मे सहायक होगा। इस ग्रथ मे मैने वास्तु-कला की इन शैलियो के अनुक्रम विवरण और उनकी योजनाओ को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है साधार, निरधर, प्रासाद, नागर, लातिन, वल्लभी, भूमिज, फासनाकार, द्रविड आदि। जिन शैलियो की विशेष रूप से चर्चा की गयी है, वे हैं मध्य प्रदेश, कलिंग, आन्ध्र, कर्नाटक की शैलियाँ। इनके अतिरिक्त, मदिर, पीठ, महापीठ, मडोवर, द्वार, जधा कलसासन, तथा भारतीय वास्तु-कला की शैली मे निर्मित भवनों के अग्र उत्थापन का विवरण भी इस ग्रन्थ की एक विशेषता है।

इस ग्रथ मे मैंने अपने ५५-६० वर्षो के पैतृक व्यावसायिक अनुभव को जो मुझे सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आध्र प्रदेश, केरल, वगाल आदि राज्यो मे सैंकडो मानचित्रो, रूपरेखाओ, विवरणो, भागो तथा मूर्तियो आदि का निर्माण करते समय प्राप्त हुआ, समावेश करने का प्रयास किया है। ऐसा करते समय, मेरी आशा यही रही है कि हमारी देशज परम्परा अक्षुण्ण रहे, और उसकी प्रगति के लिये यह ग्रथ एक मार्गदर्शक की भूमिका अदा कर सके।

अनेकानेक भारतीय प्रबन्धो का अध्ययन, सम्पादन, (टिप्पणियो सहित), अनुवाद करते समय और उनके लिये चित्र बनाने के पश्चात्, मैं निम्नलिखित २० ग्रथो का प्रकाशन कर सका दीपार्णव, क्षीरार्णव, प्रासाद-मजरी, प्रासाद तिलक, वेध-वास्तु प्रभाकर, दुर्ग विधान, भारतीय शिल्प सहिता, जैन दर्शन शिल्प, वास्तु-तिलक, वास्तु-कला निधि, प्रतिमा कला निधि, वास्तु कला-कोश आदि। आजकल मैं वृक्षार्णव, वास्तु-विद्या और वास्तु-शास्त्र के प्राचीन ग्रथो का सम्पादन कर रहा हू। ये सब प्राचीन ग्रथ सस्कृत मे है। अतएव, सरल-सुबोध भाषा मे उनके अनुवाद कलाकारो की सृजनात्मक आवश्यकताओ की पूर्ति करेंगे। उनके माध्यम से इन कलाकारो का परिचय शास्त्रीय ज्ञान से हो सकेगा। शिल्पियो की, इस प्रकार सेवा हो सके, इस कारण ही मैंने उन्हें प्रकाशित किया है। मुझे विश्वास है कि विद्वज्जन तथा कलाप्रेमी इन ग्रथो मे रह गयी त्रुटियो और कमियो को उदारतापूर्वक सहार लेंगे।

इन ग्रथो के अन्य सह लेखक हैं मेरा ज्येष्ठतम पुत्र स्व वलवतराय, सर्वश्री विनोदराय, हर्षदराय, और मेरा सबसे छोटा पुत्र धनवतराय, पौत्र चन्द्रकात तथा मेरे परिवार के अन्य सदस्य स्वर्गीय चन्दूलाल भगवानजी, और मेरी बहिन का पुत्र स्वर्गीय भगवानजी मगनलाल।

शास्त्रीय लेखको की मान्यता है कि ज्ञान और कला के महत्व पृथक-पृथक हैं। ज्ञान उन तक ही पहुँच पाता है जो उसकी शोध करते है, पर वह उनसे दूर रहता है, जो उसे प्राप्त करने योग्य नही होते। पर, अपने ग्रथो मे मैंने सिद्धान्त-वाक्य का पालन आवश्यक रहस्यो और उनके अर्थो को प्रस्तुत करते समय नही किया है। अनेक तीखे अनुभवो के बावजूद, मैंने इस ज्ञान भडार को प्रकाश मे लाने का प्रयास किया है। भारत मे ज्ञान को दबा कर रखने की आदत थी क्योकि यह भय रहता था कि कही उसका दुरुपयोग न हो जाये। इस प्रकार बहुत सा ज्ञान-भडार विलुप्त रहा, और अन्तत नष्ट हो गया। स्वय मेरे परिवार मे, कला और ज्ञान को अक्षुण्ण रखने की परम्परा का पालन मेरा पौत्र चन्द्रकात कर रहा है।

अत मे, मैं साहित्य और कला के प्रेमी, तथा धर्म के समर्थक उद्योगपति, सम्माननीय श्री करमशीभाई सोमैया और डॉ शातिभाई सोमैया का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रथ का प्रकाशन सम्भव करके मुझे अनुग्रहीत किया है। मैं प्रधान सम्पादक डॉक्टर जी एस कोशे, जनरल मैनेजर श्री डी डी करकरीया, प्रोडक्शन मैनेजर श्री वी एच पुजार को भी धन्यवाद देता हूँ। समय पर इतने सुन्दर ब्लॉक बनाने के लिए मैं गज्जर प्रोसेस स्टूडियो, अहमदाबाद के गोविन्दभाई को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं श्री हरीमोहन शर्मा का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस भूमिका का अनुवाद अग्रेजी से हिन्दी मे किया।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥
श्री शुभं भवतु । श्री कल्याणमस्तु । श्रीरतु ॥

विक्रम सवत्सर २०३३
१९७७ क्रि श

पद्मश्री प्रभाशंकर सोमपुरा
शिल्प-विशारद

PREFACE

From birth every living creature needs protection from heat, cold and rain, and it is to satisfy these needs that buildings were constructed Regarding the origins of the art of architecture, however, there is some controversy, but according to the evidence found in Vedic and Puranic texts, it appears that in the age of the ancient Aryans the dwellings were simple ones made of perishable materials such as grass, bamboo, wood and mud This age may thus be called that of hut age This was followed by the wooden age, which lasted very long, and during which the art of wooden construction was established, and it was followed by the use of burnt bricks No remains of these periods survive today because of the very nature of the material used

Of Babylonian and Assyrian architecture also few remains survive, and these only of burnt bricks, because they were located on the banks of the rivers Tigris and Euphrates and hence lacked stone as a building material However the remains of scripts engraved on burnt bricks are available

It is in countries such as Greece, Italy, Iran and Egypt that we find remains of buildings 5000 years old because they used stone

Turning to India, the Ramayana and Mahabharata give us vivid description of royal palaces, Sabha halls and temples As each civilization develops, there develops with it the art of architecture

The age of wood and bricks was followed by that of rock-cut structures, which endured for about 2500 years until the 8th century The use of structural stone i e , dressed stone, goes back to the first century A D , and this was ultimately developed into a great art form Those who see these magnificent creations growing out of the chisel and the brush are struck with wonder At Ellora for example, a whole mountain side was sculptured into a unique work of architecture reflecting on the skill of the craftsmen These developments in architecture in India were always derived from, and encouraged by, the religious spirit of kings and nobles

The term Vastu Shastra has a very broad meaning incorporating within itself all the arts including architecture The traditional sphere of architecture was temples, palaces, city planning, tanks, gardens, dwellings, forts, royal highways, etc Fine art was considered as a sub-division of architecture, for the images which it created were used as decorative elements of architecture In this way the definition of Vastu Shastra includes the spheres of both art and architecture

The origin of the science of Vastu Shastra goes back to ancient Rishis and Munis Their works were, however, lost in time and the compilations made later by scholars are the remains of these original works The principles enunciated in these Shastras were being practised upto the Gupta period in the 4th century and, with a break, once again in the 8th and 9th centuries A D The changes which occurred in the styles can be studied from the remains The style prevailing during the 11th and 12th century continued upto contemporary times with some modifications occurring during the 14th century In general the books on architecture of the 11th and 12th century owe their authorship to Vishvakarma In the 15th century a number of fresh texts based on the ancient ones were produced by Sutradhar(architect) Virpal and by Sompura sutradhar Mandan of Bharadwaj gotra

Maharshi Sukracharya has traditionally defined art and knowledge knowledge is infinite, art is limitless In general knowledge has 32 branches while art has 64 These are generally defined as follows

द्यद्यत्स्थान्द्वाधिक सस्थकर्मविद्याभि संज्ञकम् ।
शक्तोमूकोऽपिधत्कर्तु कलासंज्ञंन्तुतत्स्मृतम् ॥

"That which can be performed by the voice is knowledge,
that which can be performed by the voiceless is art'

Dance, Shilpa (architecture) and Painting can be performed by the voiceless, hence they belong to art Here, in "Vastu kala Nidhi", the author has attempted to explain the various aspects of the art of architecture to the best of his capacity

India once contained innumerable great monuments, but unfortunately due to the rule for 600 years of iconoclasts and antagonists to religion prevailing in the north-west and west, thousands of precious images and works of architecture were destroyed Because of this no comp lete study of regional styles is possible today

Indian works on Indian temple architecture mention different regional styles Nagar, Dravida, Latin, Bhumij, Phasana, Vallabhi etc totalling fourteen In western India, i e , Gujarat, Rajasthan and Mewar, the pure Nagari style is found In north Indian provinces the style is one derived from the Nagar, while in the south there is the Hoyshala style in Karnataka and the Dravid in Tamil Nadu The latter differ from the former

In the modern period the attitude to architecture has deteriorated and became unaesthetic due to the blind imitation of Western styles It is sad to find this attitude existing also in the sphere of education

No doubt modern science is fast growing and transforming the world and we should keep in true with it, but that does not mean that we should destroy our indigenous traditions in architecture The "modern building", made in imitation of "modern style", only succeeds in obstructing light and air and resembles an animal shed or stable Our forefathers used to construct windows, doors, screens, balcony, porches, etc , in accordance with the climate While we may modify our interiors to suit new concepts of comfort, the external appearance of our buildings should retain an Indian character and reflect pride in our culture

There are those who, in opposing these traditional views, claim that such a traditional approach to architecture entails useless extra expenditure This is wrong In a large building if an extra 3-4% are spent on beautifying it, it is not much Such an argument is spurious, and its consequences are that we spoil our art, architecture and painting by blindly imitating the West, and a complete perversion of good taste occurs Similar blind imitation of Western style is also in art of Painting and Statue (Shilpa), wherein it is difficult for the viewer on the first sight to find out head or tail of it

A European visitor once told me that India is a great storehouse of art, and yet the Indians merely copy the West Foreigners carry with them our works of art and exhibit them in the West and admire them, while we remain unconscious of their value This is most unfortunate

In this situation, it is felt that this book will serve a great need of society and help to guide the public In it I have attempted to present the sequence of architectural styles, and give their plans and details such as

Sandhar, Nirandhar, Prasad, Nagar, Latin, Vallabhi, Bhumij, Phansna, Dravida, etc , and in particular the styles of *Madhya Pradesh, Kalinga, Andhra, Karnataka*, details of temple Pith,

Mahapith, Mandovara, Door jangha, Lintels, Kakshasana, front elevation of building in the style of Indian architecture etc

My hereditary professional experience of 55-60 years spread over to Saurashtra, Gujarat, Maharashtra, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Karnataka, Andhra, Kerala, Bengal, etc , during which hundreds of plans, designs, details, sections, images, were prepared, is now brought together in this book in the hope that our indigenous tradition may continue to survive and that this work may serve as a guide for its progress

After studying the numerous Indian treatises, editing them, with comments, translations and illustrations, I was able to publish about 20 books as follows Diparnava, Kshirarnava, Prasad Manjari, Prasad Tilaka, Veda Vastu Prabhakar, Durga Vidhan, Bharatiya Shilpa Samhita, Jain Darshan Shilpa, Vastu Tilaka, Vastu Kala Nidhi, Pratima Kala Nidhi, Dictionary of Architecture etc Currently I am editing the Vrisharnava, Vastu Vidya and Vastu Shastra from ancient texts All these texts are in Sanskrit so that their translation into easily comprehensible language will serve the creative needs of artists Through them they can become acquainted with classical knowledge, and it was with this aim of serving the Shilpis that I have published them I trust that scholars and art-lovers will look with tolerance on whatever defects and qualities these works possess

Other contributors to these works are my eldest late son Balwantrai, then Sarvashri Vinodrai, Harshadrai, and my youngest son Dhanvantrai, grandson Chandrakant, and other members of my family, the late Chandulal Bhagavanji and my sister's son late Bhagavanji Maganlal

Shastric authors state that knowledge and art have a differing significance Knowledge goes to only those who seek it, but it keeps away from those who are undeserving But in my books I have not adhered to this dictum, while describing necessary secrets and its meanings, and despite some bitter experiences, I nevertheless publish this knowledge In India it was customary to withhold knowledge for fear of misuse, and thus much knowledge was kept hidden and was ultimately lost In our own family the tradition of art and knowledge is being preserved through my grandson Chandrakant

Finally, I must express my great gratitude to those lovers of literature and art, supporters of religion, and industrialists the honourable Shri Karamsibhai Somaiya and Shri Shantibhai Somaiya who have done me a great favour by making the publication of this book possible I am also thankful to the Chief Editor Dr G S Koshe and the Production Manager Shri B H Pujar The beautiful blocks so timely prepared are due to the effort of Govindbhai of Gajjar Process Studio, Ahmedabad, whom I also hereby thank I am equally grateful to Professor V S Parmar, Dipl-Ing (Munich), Reader in Architecture, Department of Architecture, M S University of Baroda, for rendering the preface into English so competently

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥
श्री शुभं भवतु । श्री कल्याणमस्तु । श्रीरस्तु ॥

Vikram Samvat 2033,
1977 A.D

PADMSHRI PRABHASHANKAR SOMPURA
Shilpa-Visharad

प्रासाद् और तल दर्शन

प्रासाद् के उपांग

स्तम्भ और मंडोवर का समन्वय

Prasadas and Ground Plans

Upangas

Co-ordination of Pillar and Mandovara (Shrine-wall)
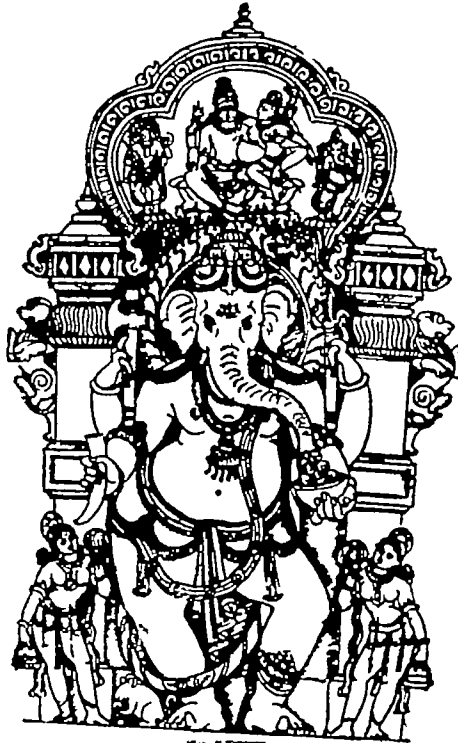
शिव पचायतन परिकर युक्त गणेश
Shiv Panchāyatan Ganesh
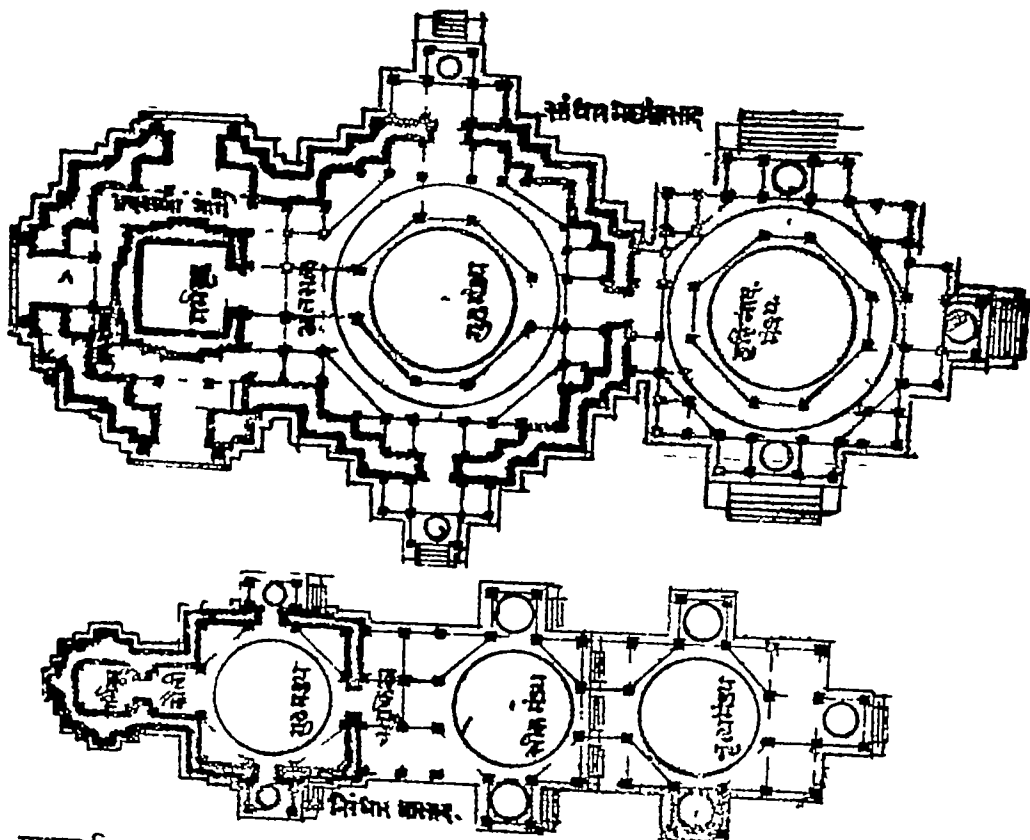
साधार निरधार प्रासाद का तल दर्शन *The Ground Plan of Sāndhār Nirandhār Prāsāda*

श्री सोमनाथ का सम्पूर्ण अवलोकन

A perspective view of Somnāth Temple, Prabhās Pātan

साधार महा मेरु प्रासाद, सोमनाथ, प्रभास पाटण *Sāndhār Mahā Meru Prāsāda, Somnāth, Prabhās Pātan*
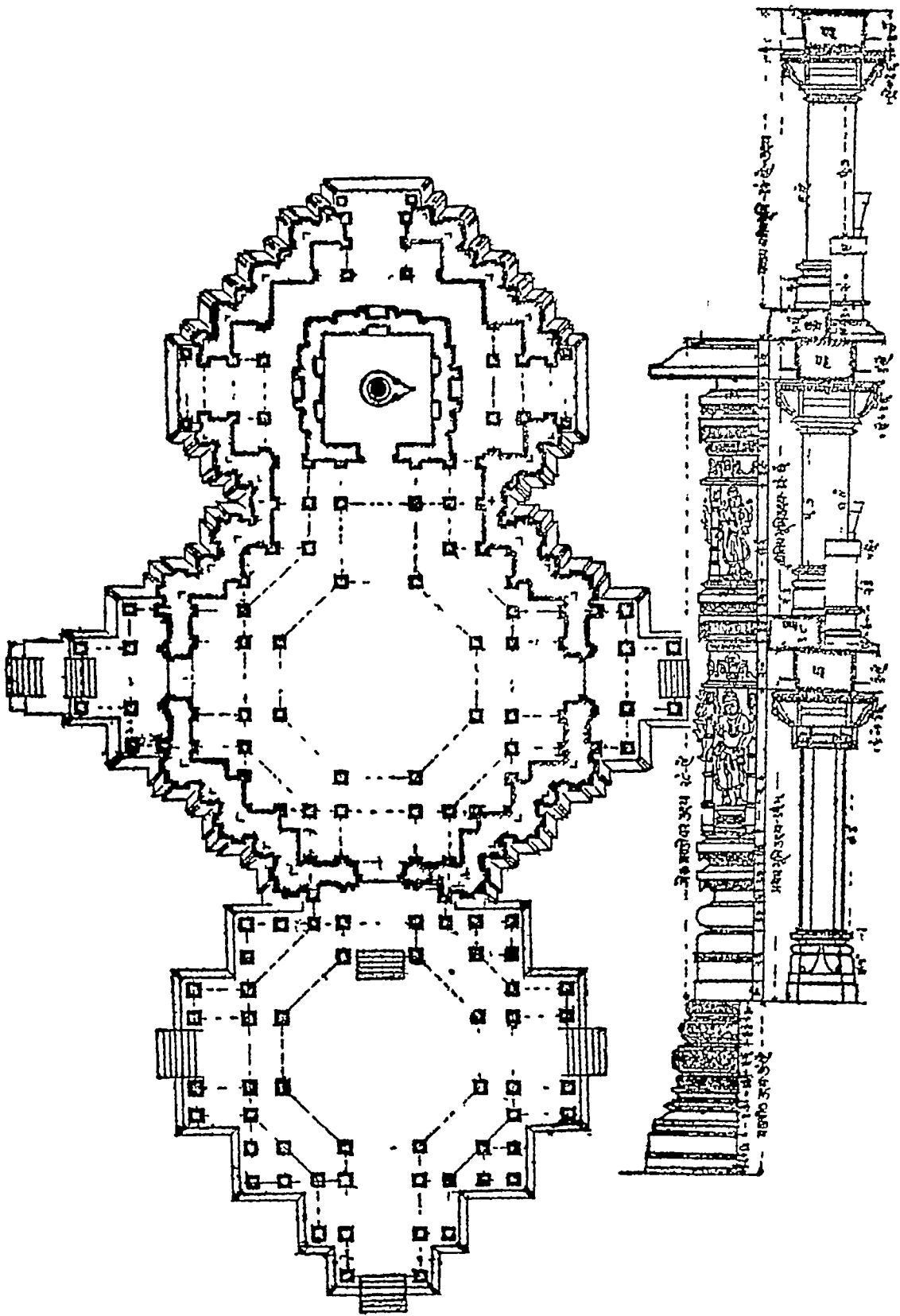
तल दर्शन *Ground Plan*

मंडोवर साथ अंतर्गत स्तम्भ का समन्वय
Co-ordination of Internal Pillar and Mandovara—the Shrine Wall

श्री द्वारिकाधीश जगत् मंदिर साधार महा प्रासाद *Dwārikādhish Sāndhār Mahāprāsāda*
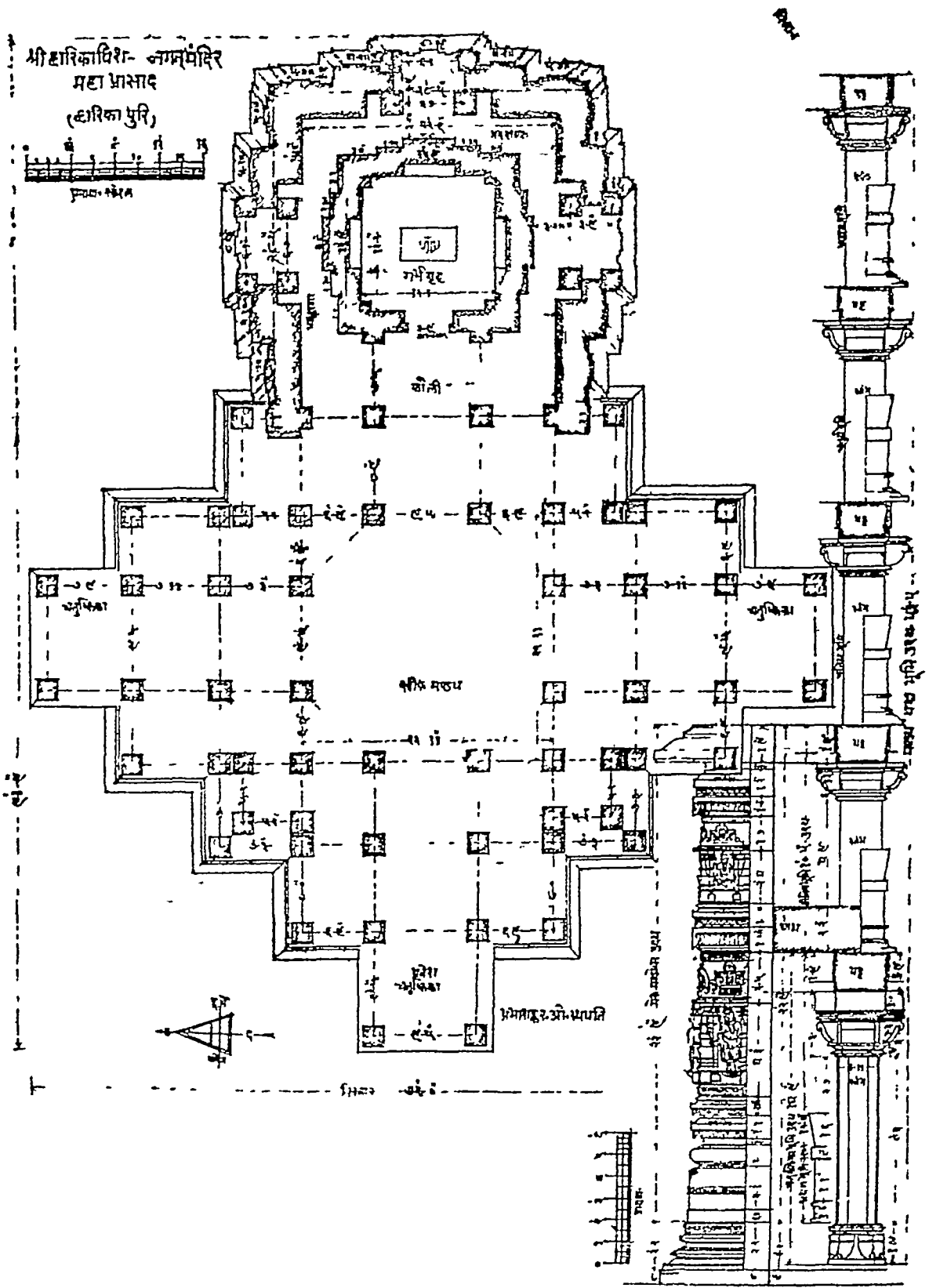
तल दर्शन
Ground Plan

मंडोवर
Mandovara-Shrine Wall

स्तम्भ
Pillar

साधार प्रासाद, घुमली, नवलखी (सौराष्ट्र) *Sāndhār Prāsāda, Ghumli, Navalakhi (Saurashtra)*
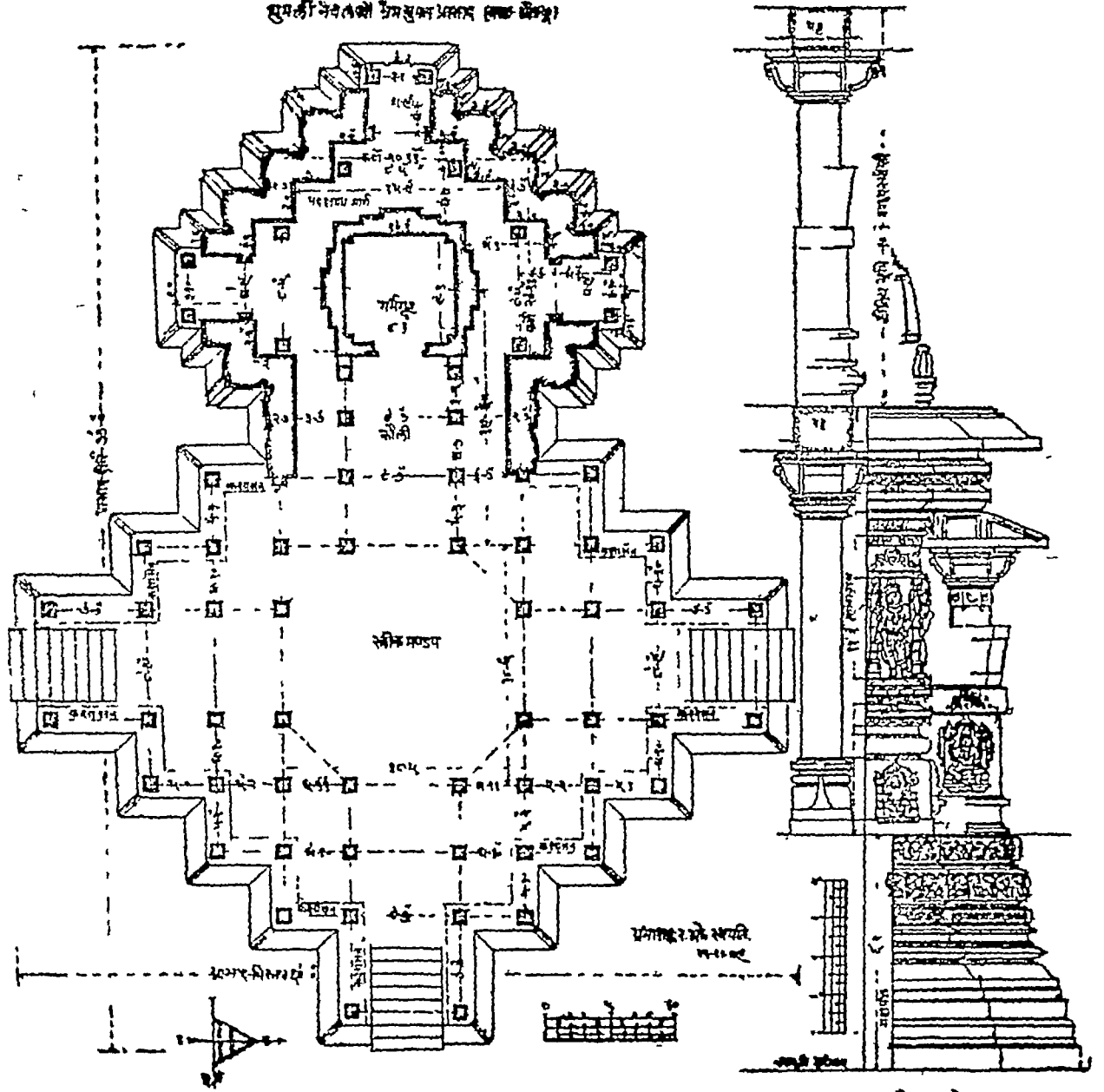
तल दर्शन *Ground Plan*

स्तम्भ और मंडोवर
Pillar and Mandovara

श्री तारगा का भ्रम युक्त साधार प्रासाद *Sāndhār Prāsāda, Tārangā*
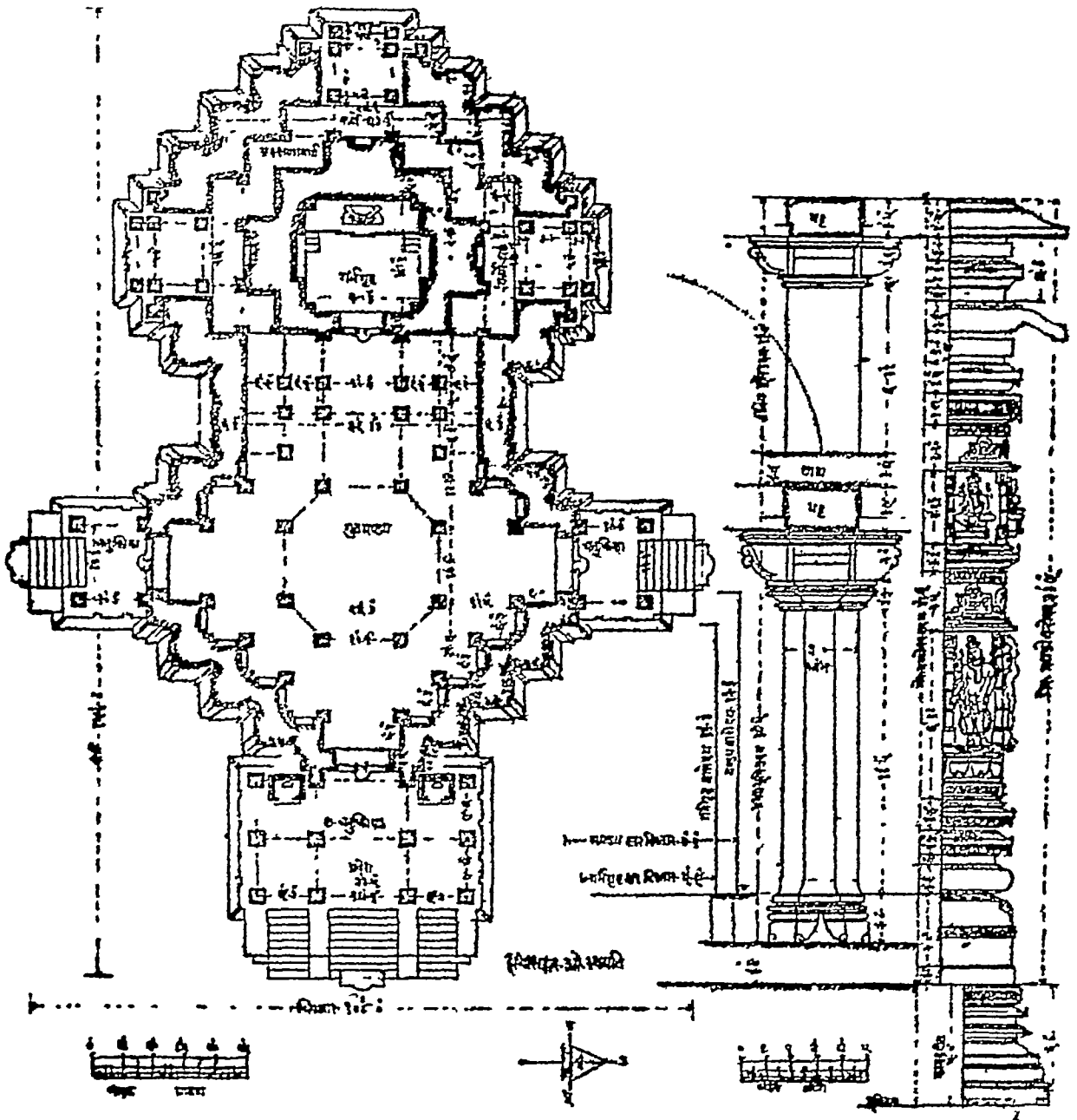
तल दर्शन *Ground Plan*

स्तम्भ और मडोवर
Pillar and Shrine Wall

श्री सोमनाथ महा मेरु प्रासाद का इलिवेशन और सेक्शन

DESIGN FOR RECONSTRUCTION
OF
SHREE SOMNATH TEMPLE
KAILAS MAHA MERU PRASAD
PRABHAS PATAN
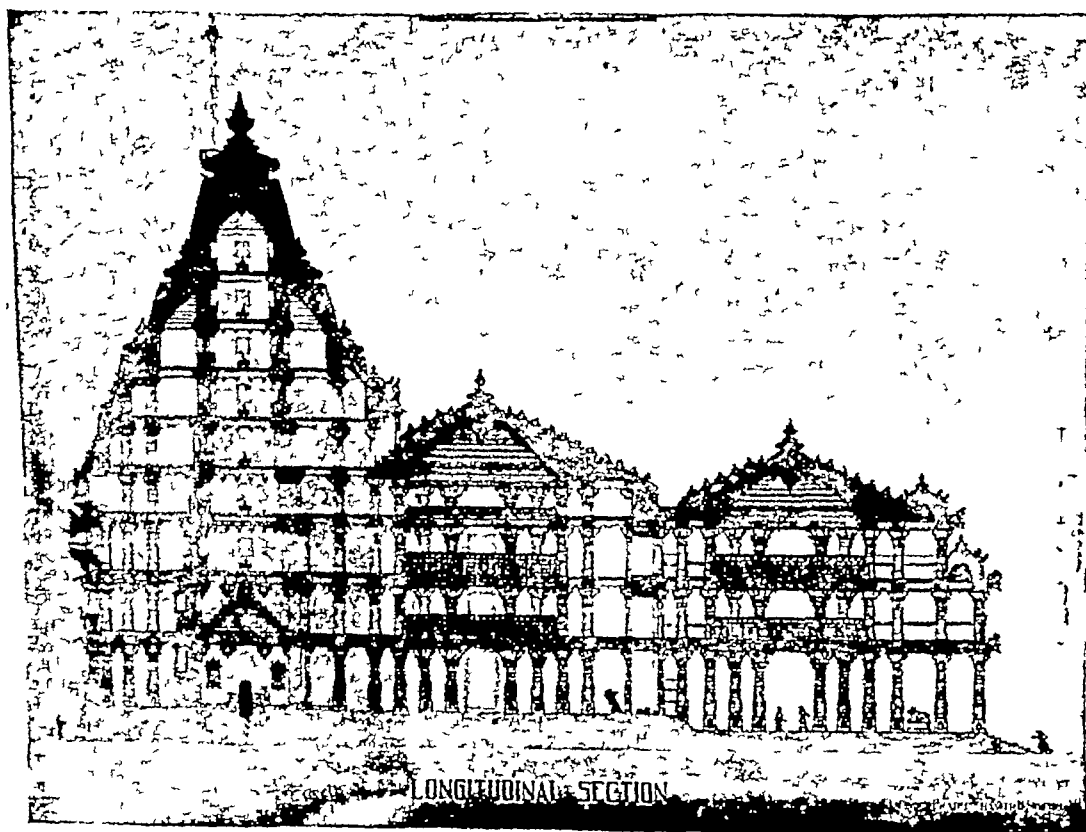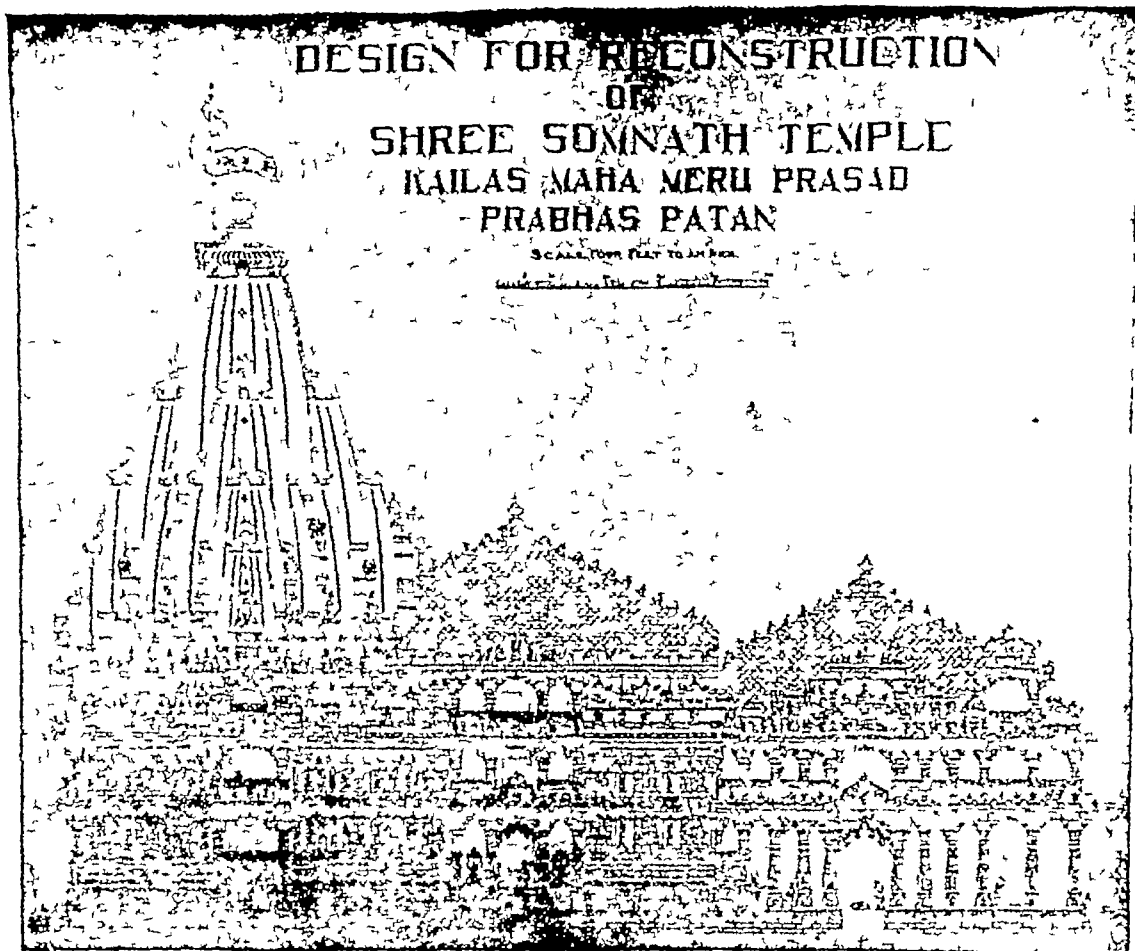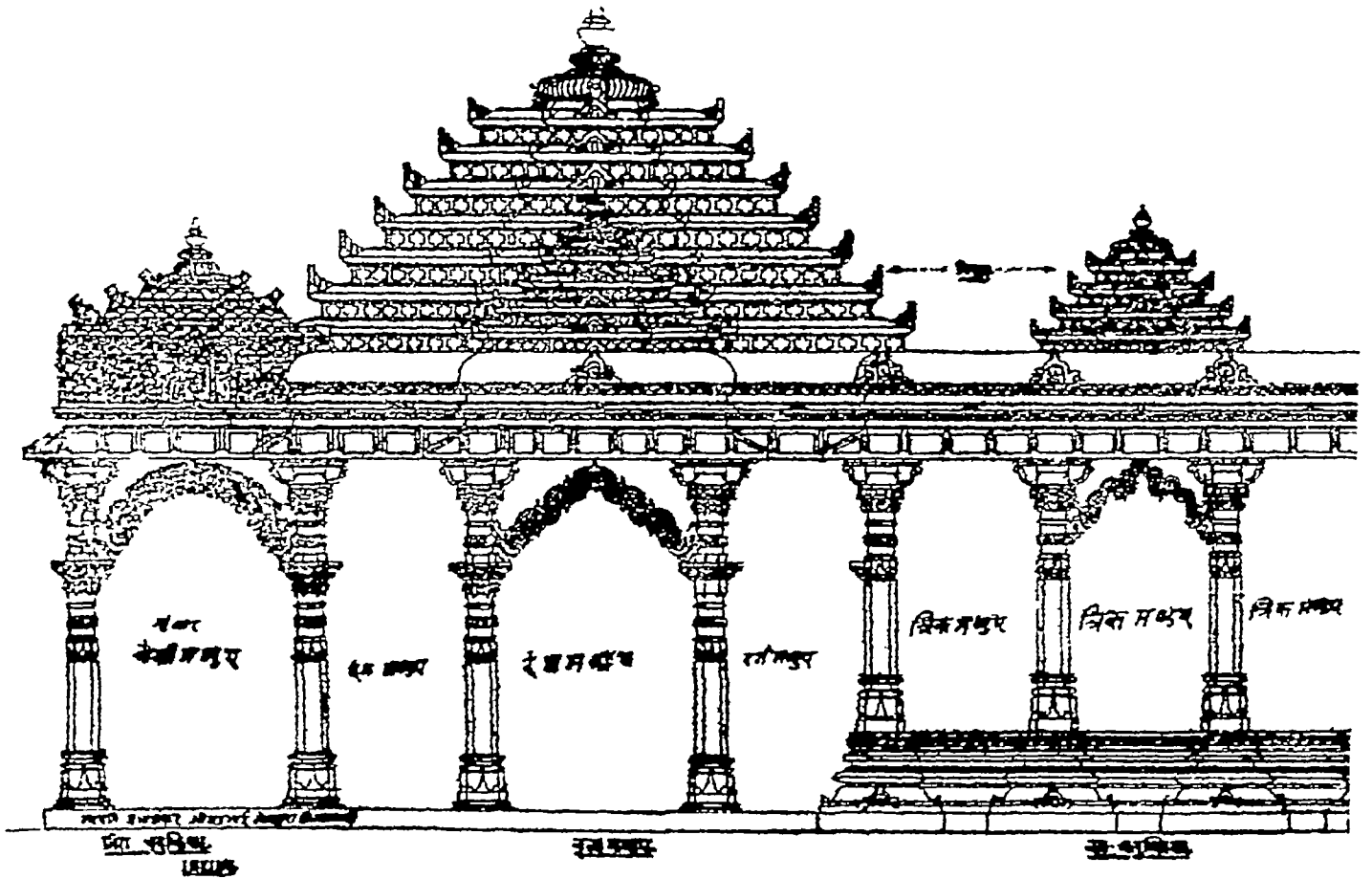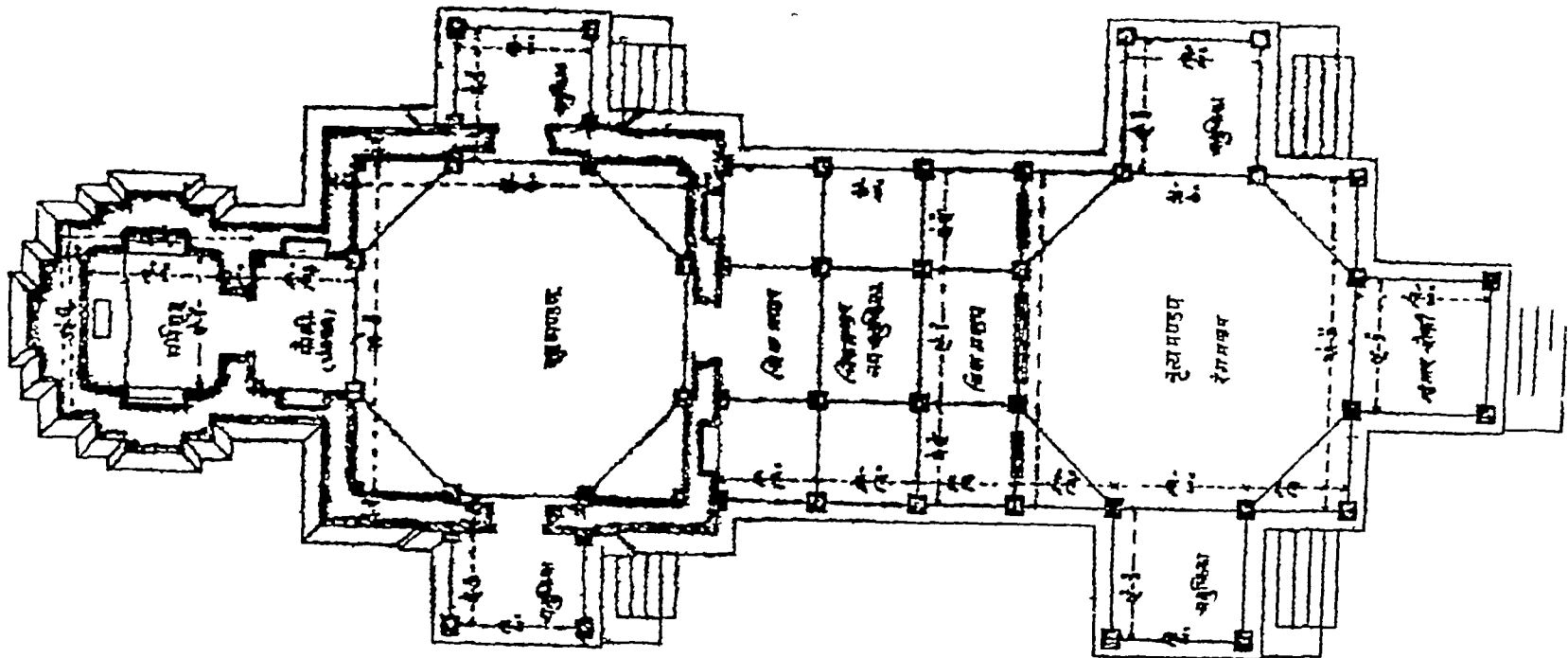
पद्मश्री प्रभाशंकर ओ. सोमपुरा, शिल्पविशारद

प्रकाशित ग्रंथ

१.	दीपार्णव (पूर्वार्ध)-गुजराती (*Deeparnava*, Part I—Gujarati)	Rs 50
२	दीपार्णव (उत्तरार्ध)-गुजराती (*Deeparnava*, Part II—Gujarati)	Rs 20
३	क्षीरार्णव (हिंदी-गुजराती) (*Ksheerarnava*—Hindi-Gujarati)	Rs 25
४	प्रासादमजरी-गुजराती अनुवाद (*Prasadamanjari*—Gujarati)	Rs 7
५	प्रासादमजरी-हिंदी अनुवाद (*Prasadamanjari*—Hindi Translation)	Rs 7
७	वास्तुसार-गुजराती (*Vastusara*—Gujarati)	Rs 15
८	वास्तु कलानिधि-हिंदी-अग्रेजी (*Album of Indian Architectural Designs*)	Rs 120
९	प्रतिमा कलानिधि-हिंदी-अग्रेजी (*Album of Hindu Iconography*)	Rs 80
१०	वेदवास्तु प्रभाकर-हिंदी-गुजराती (*Veda Vastu Prabhakar*—Hindi-Gujarati)	Rs 12
११	जिन दर्शन शिल्प-गुजराती (*Jina Darshan Shilpa*—Gujarati)	Rs 15
१२	भारतीय दुर्गविधान-गुजराती (*Bharatiya Durga Vidhan*—Gujarati)	Rs 35
१३	भारतीय शिल्पसहिता-हिंदी (*Bharatiya Shilpa Samhita*—Hindi) (The above two books are available from Somaiya Publications Pvt Ltd , 172, Mumbai Marathi Granthasangrahaleya Marg Dadar, Bombay-400014)	Rs 125

१४ वृक्षार्णव (*Vrikshamava*) In Press

१५ वास्तुशास्त्र जयपृच्छा (*Vastushastra Jayapruchchha*) In Press

१६ वास्तुविद्या (*Vastuvidya*) Press

१७ वास्तु निघट्टु (शब्दकोश) (*Vastunighantu*) सशोधन } Under research

१८ शिल्पबालाव बोध (*Shilpabalava Bodh*) सशोधन } Under research

गूढ
मण्डप
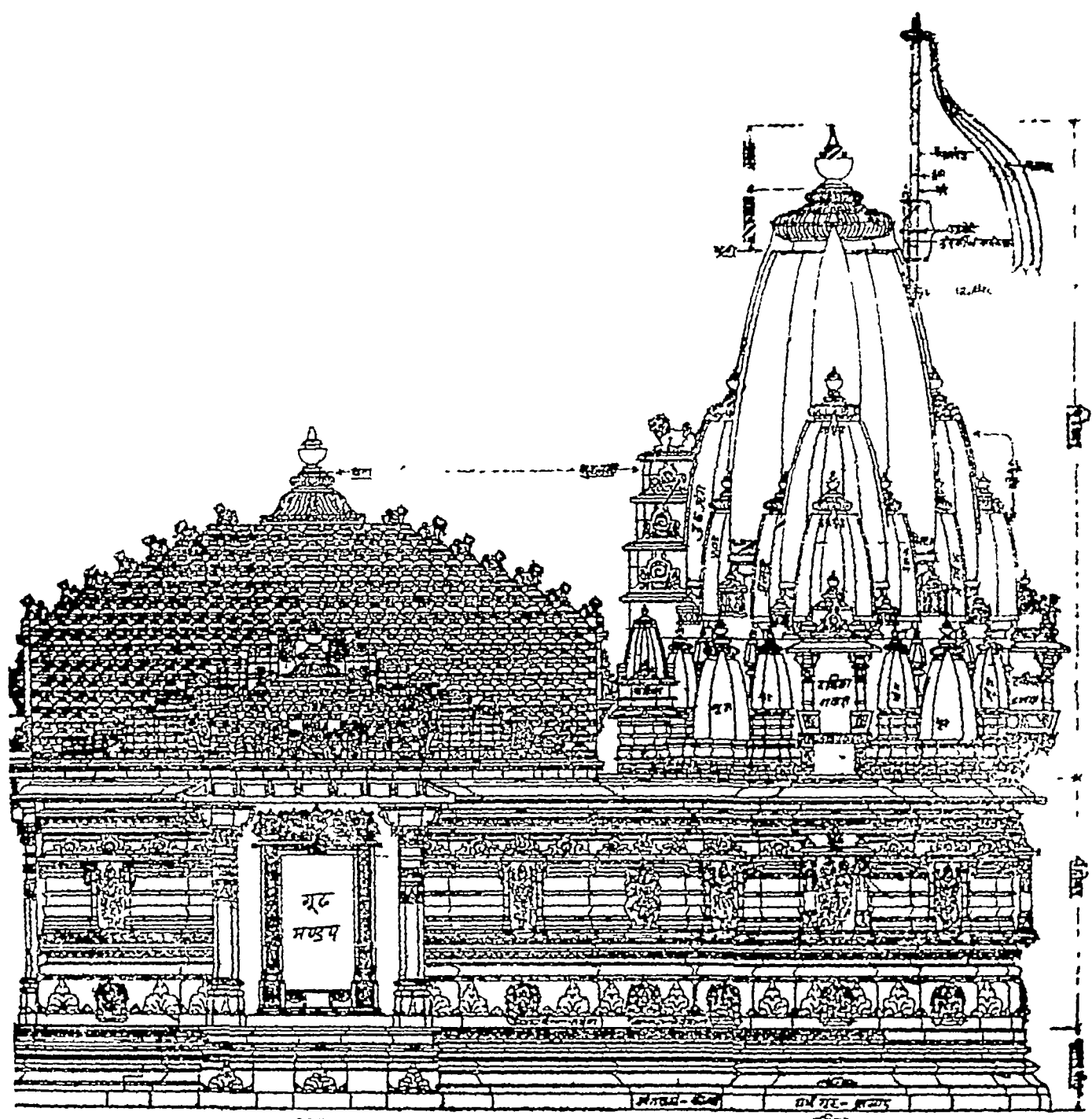
विविध प्रासादों के तलदर्शन *Ground Plans of Different Prāsādas*
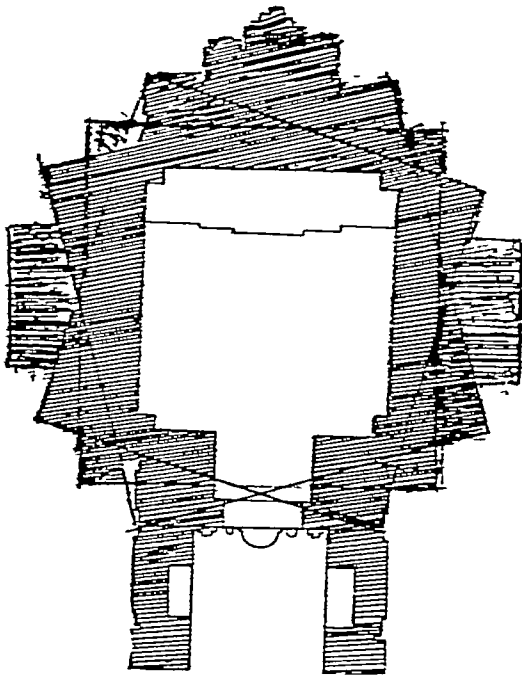
चतुरस्त्र कर्णउपाग *Quadrilateral*
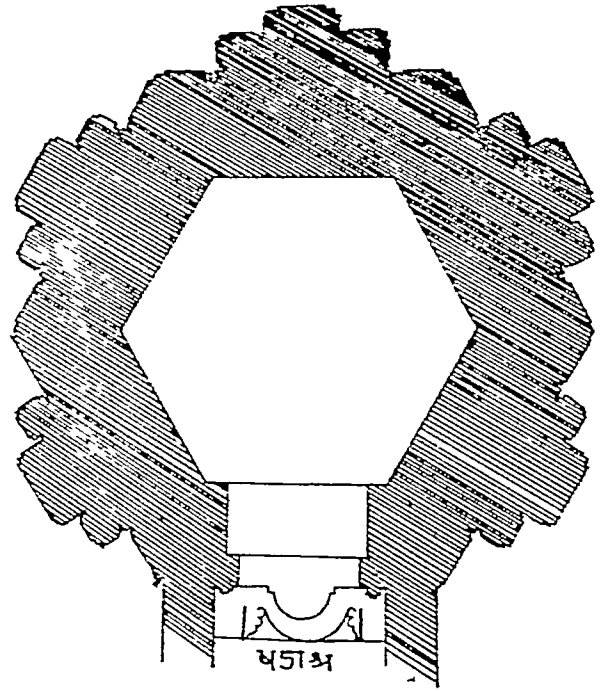
षष्ठाश्र *Hexagon*
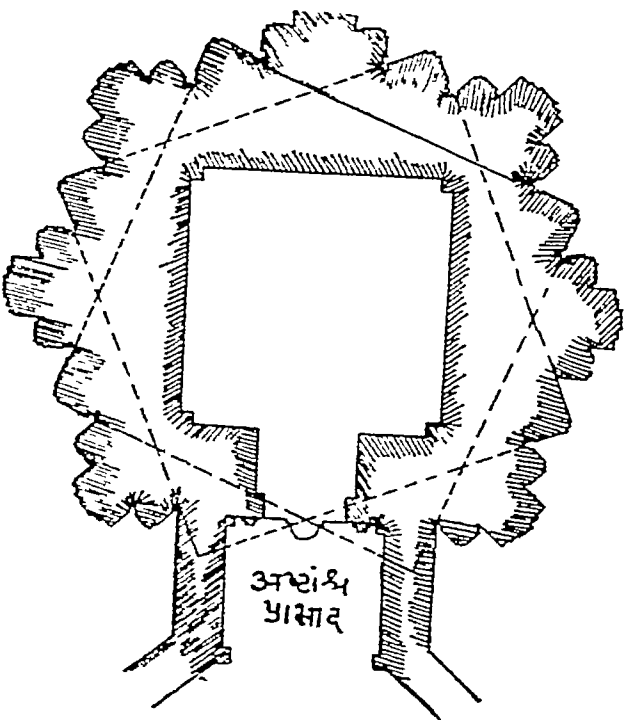
अष्टाश्र *Octagon*
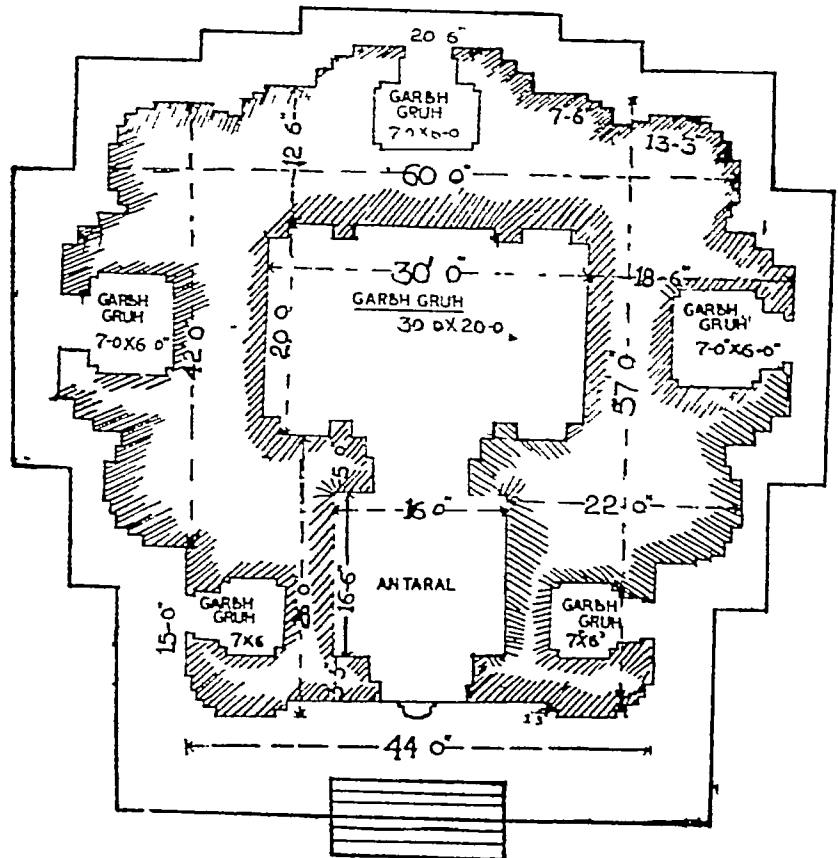
वल्लभी प्रासाद का तल दर्शन *Ground Plan of Vallabhi-Prāsāda*

भारतीय प्रदेश की प्रासाद् जातियाँ

Different Kinds of Prasadas According to Regions
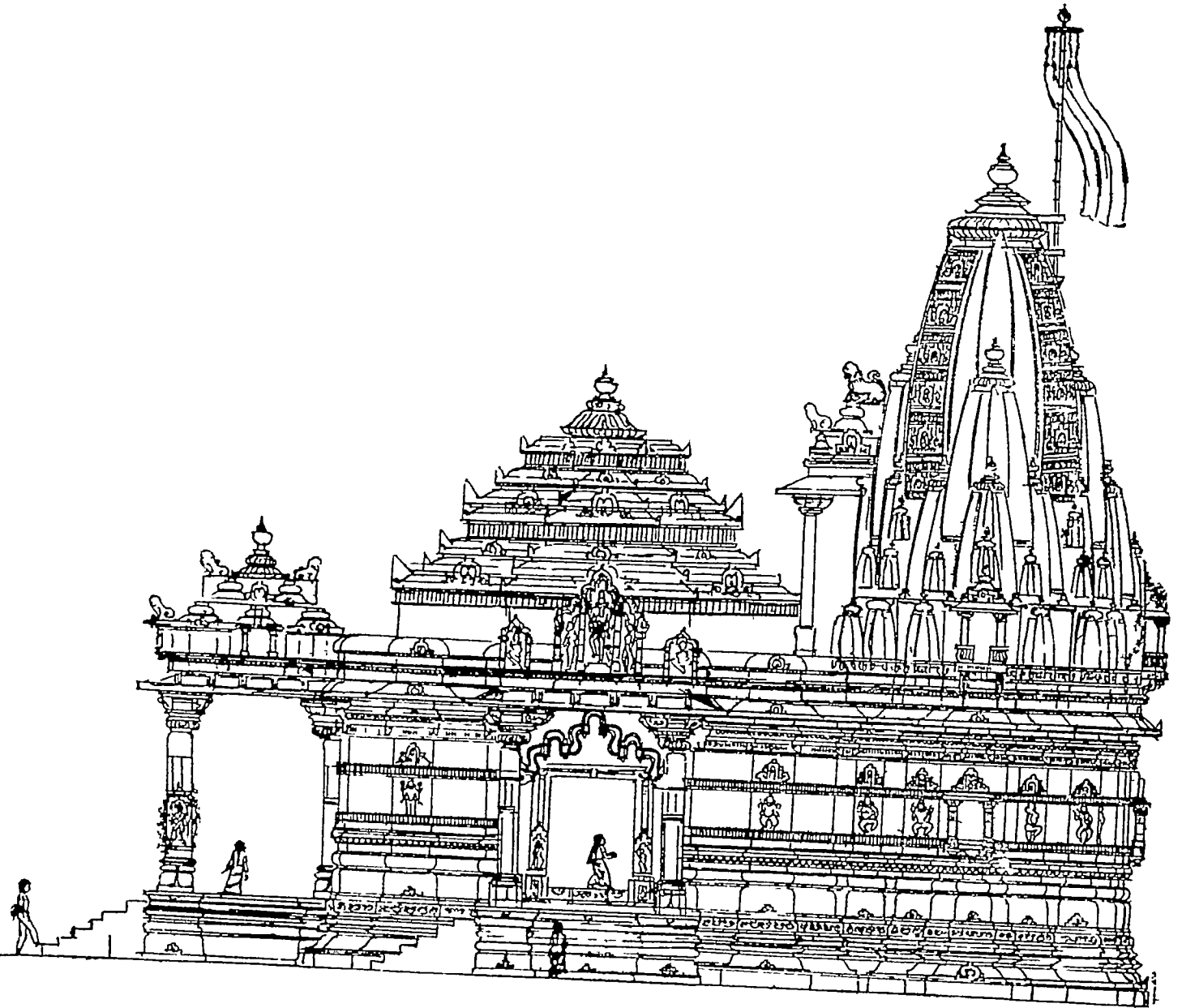
नागरादि प्रासाद पक्षदर्शन *Side Elevation of Nāgarādi Prāsāda*
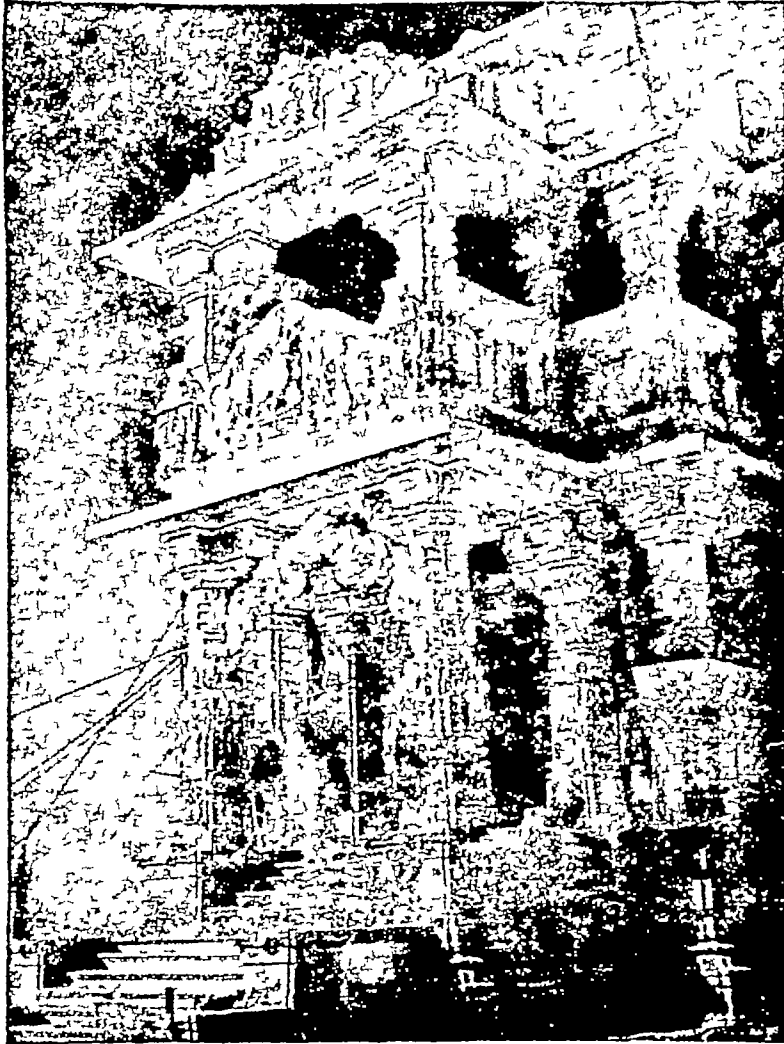
सोमनाथ मंदिर का मुखदर्शन *Front Side of Somnāth Temple*
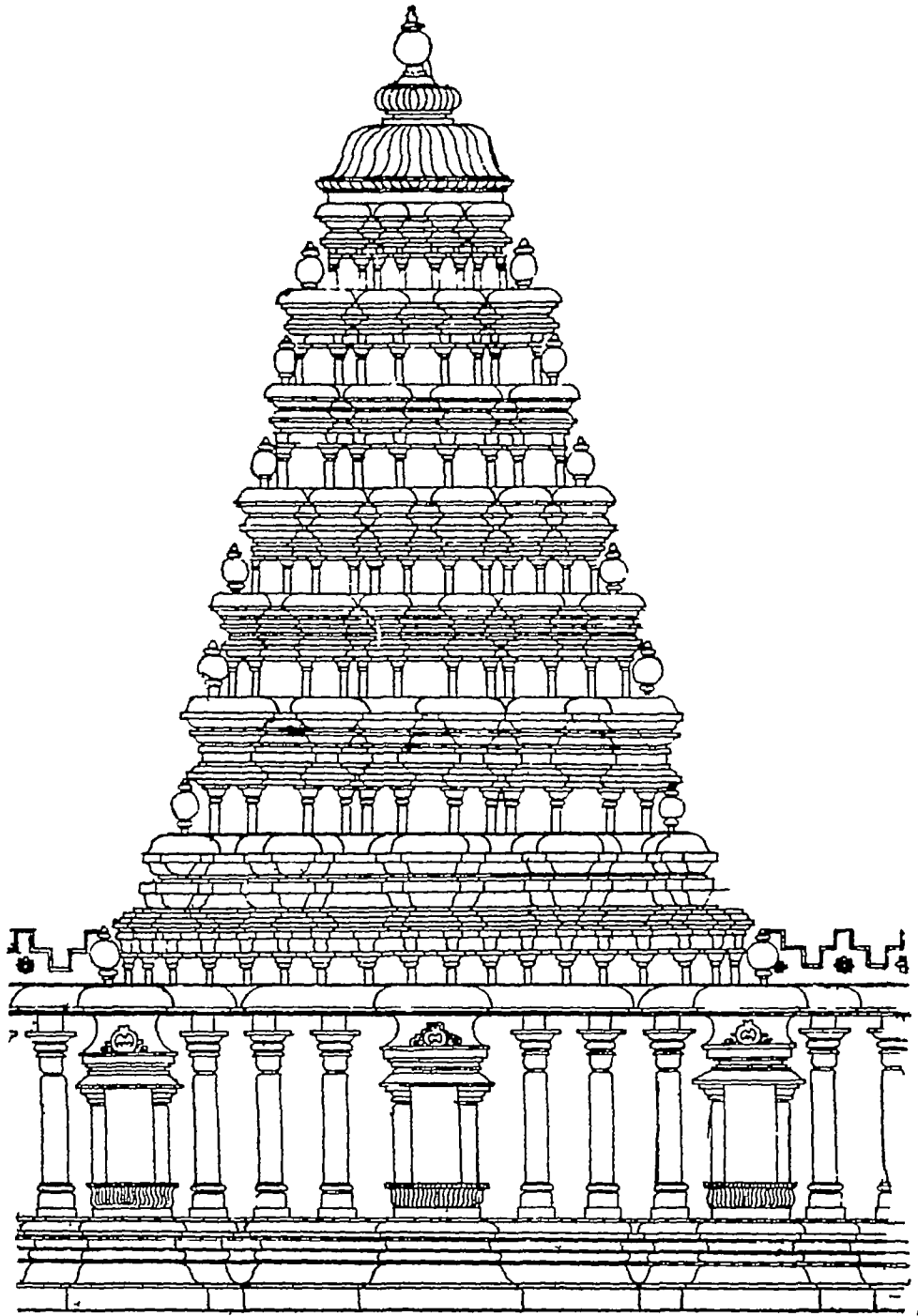
आध्र प्रदेशका कुलपाक जी के मदीरका शिखर *Kulpakji temple Shikhar of Andhra Pradesh*

द्रविड शैली के चतुरस्त्र और गोलाकार प्रासाद के शिखर *Shrines of Dravida-Prāsāda (in Round and Square Shape)*

एकाडी ललित प्रसाद *Ekandı Lalıta Prasad*
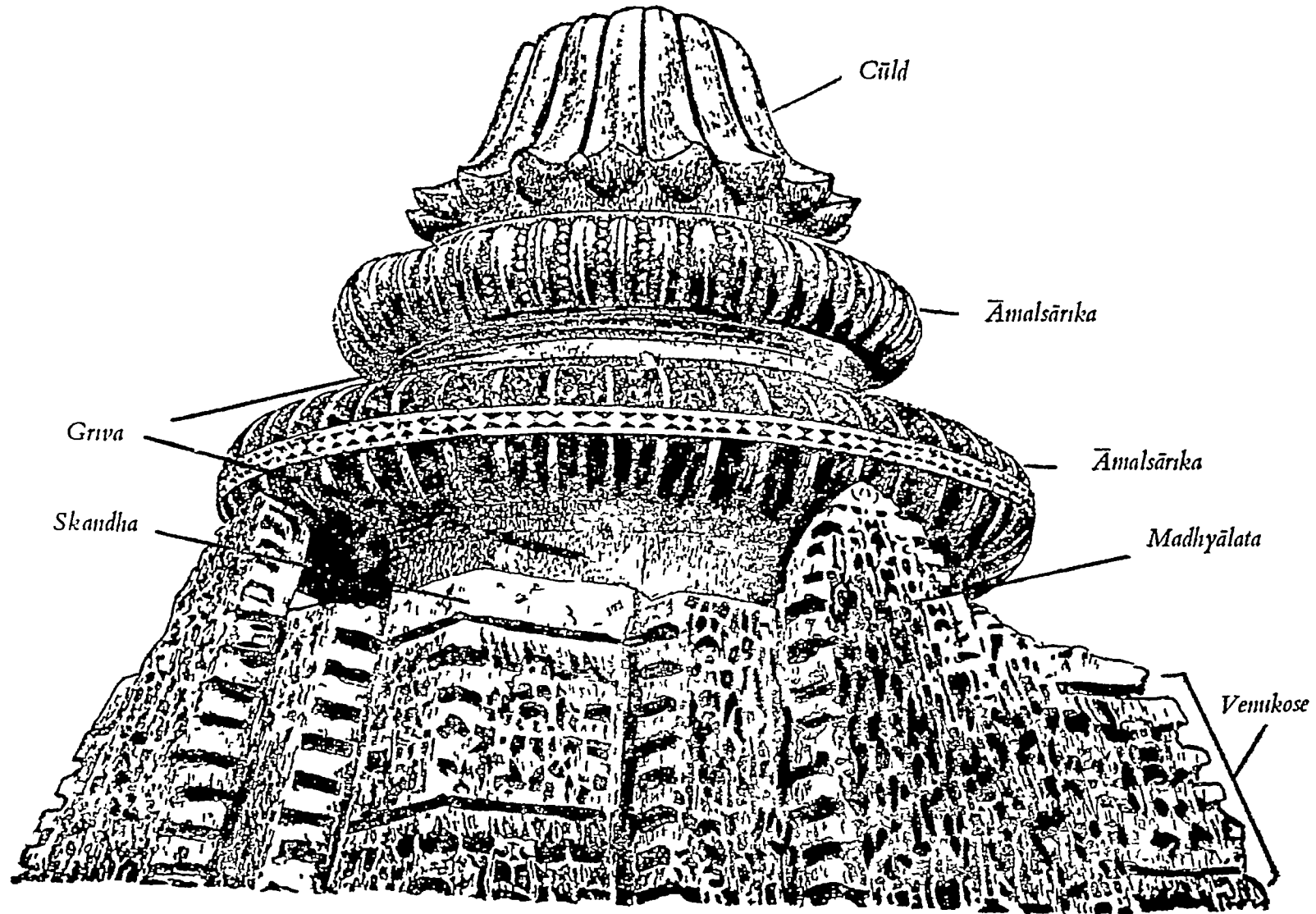
भुमिज प्रासाद शिखरका उर्ध्व अंश *Upper Portion of Shikhara of Bhumij Prasad*
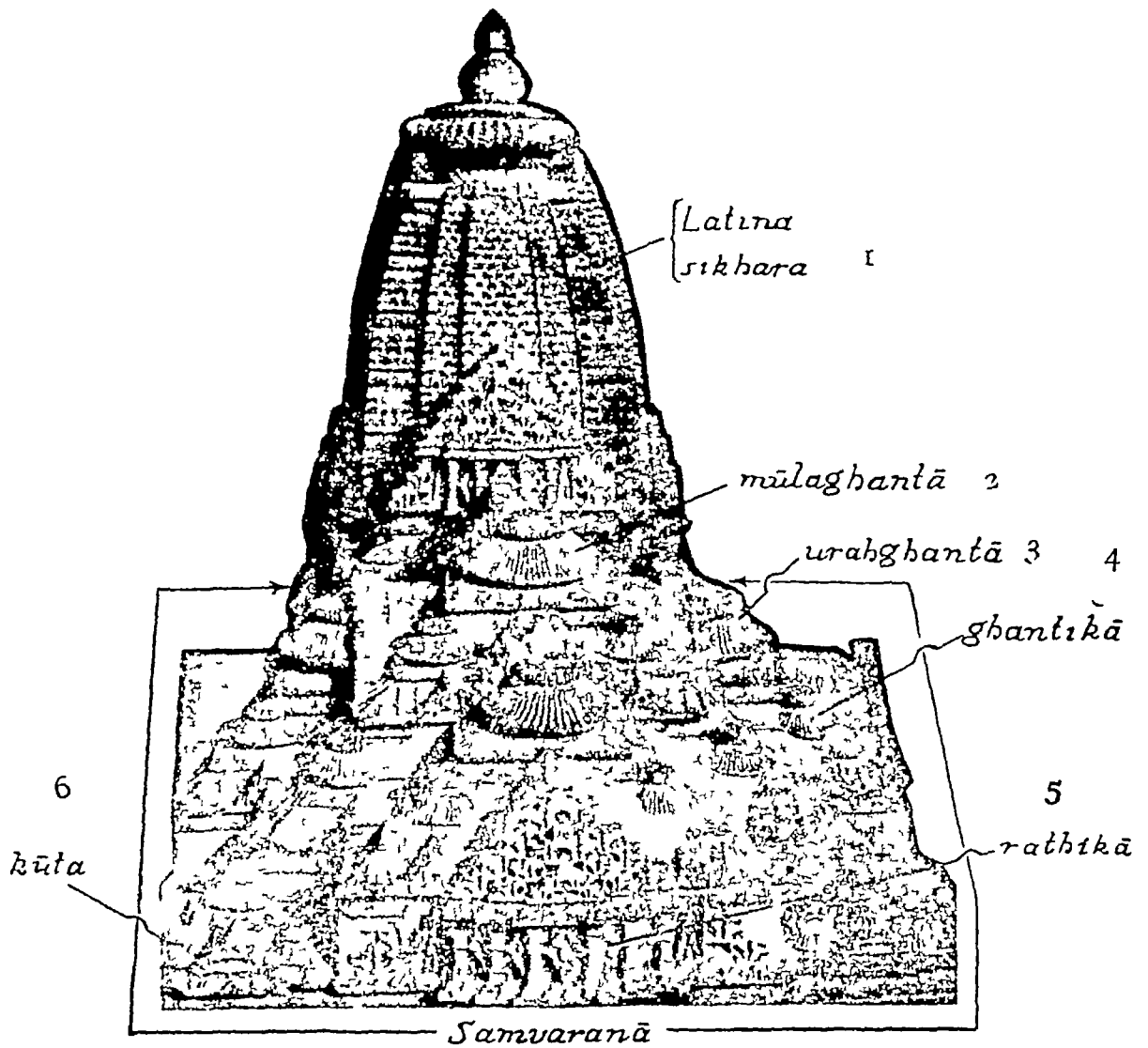
लतिन प्रासाद के शिखर और सम्वर्णा *Shikhara and Samvaranā of Latina Prāsāda*

फासनादि प्रासाद Phāsanādi Prāsāda
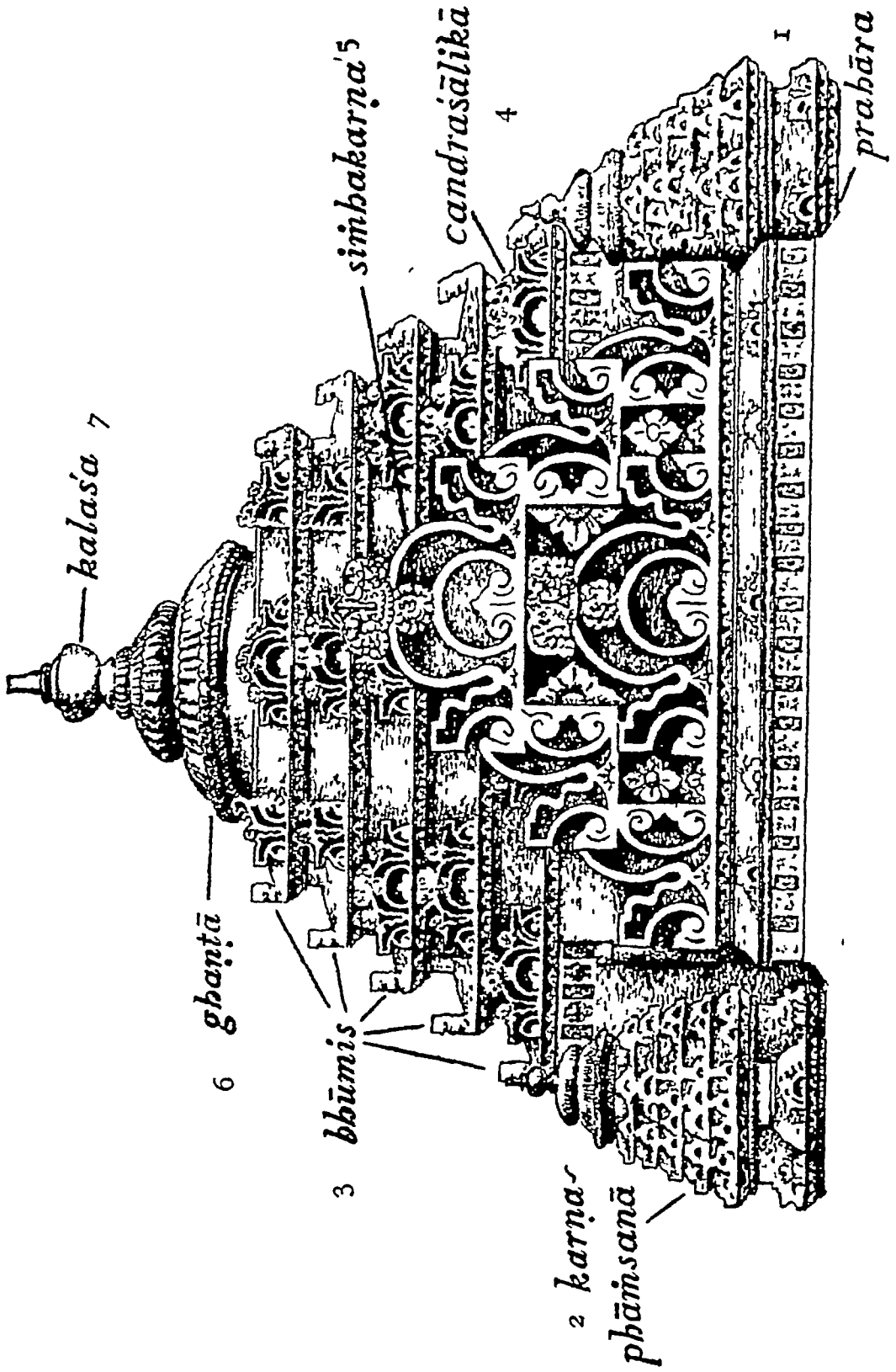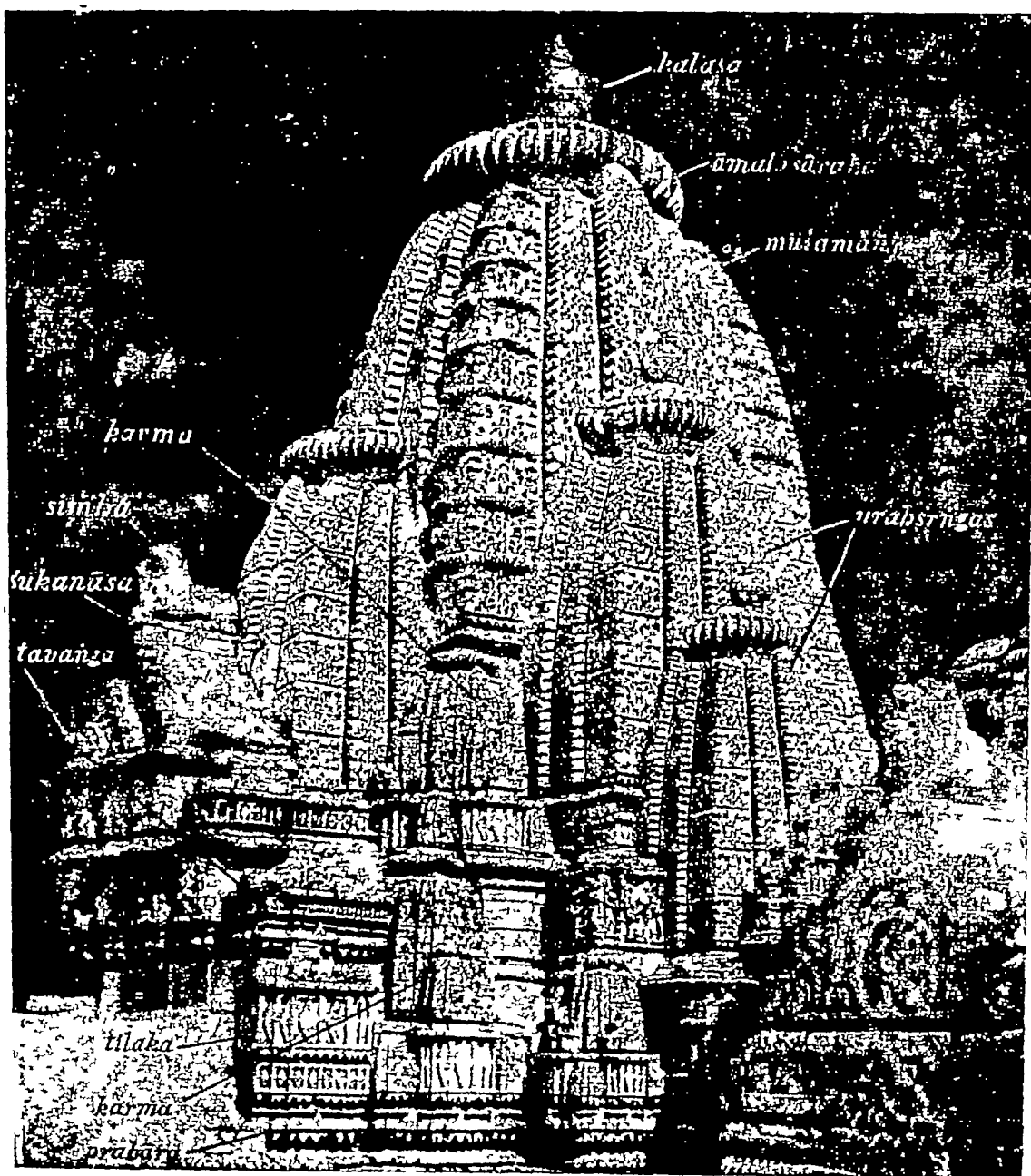
नागरादि प्रासाद का शिखर (उत्तर-पश्चिम भारत) *Shikhara of Nāgarādi Prāsāda (North–West India)*
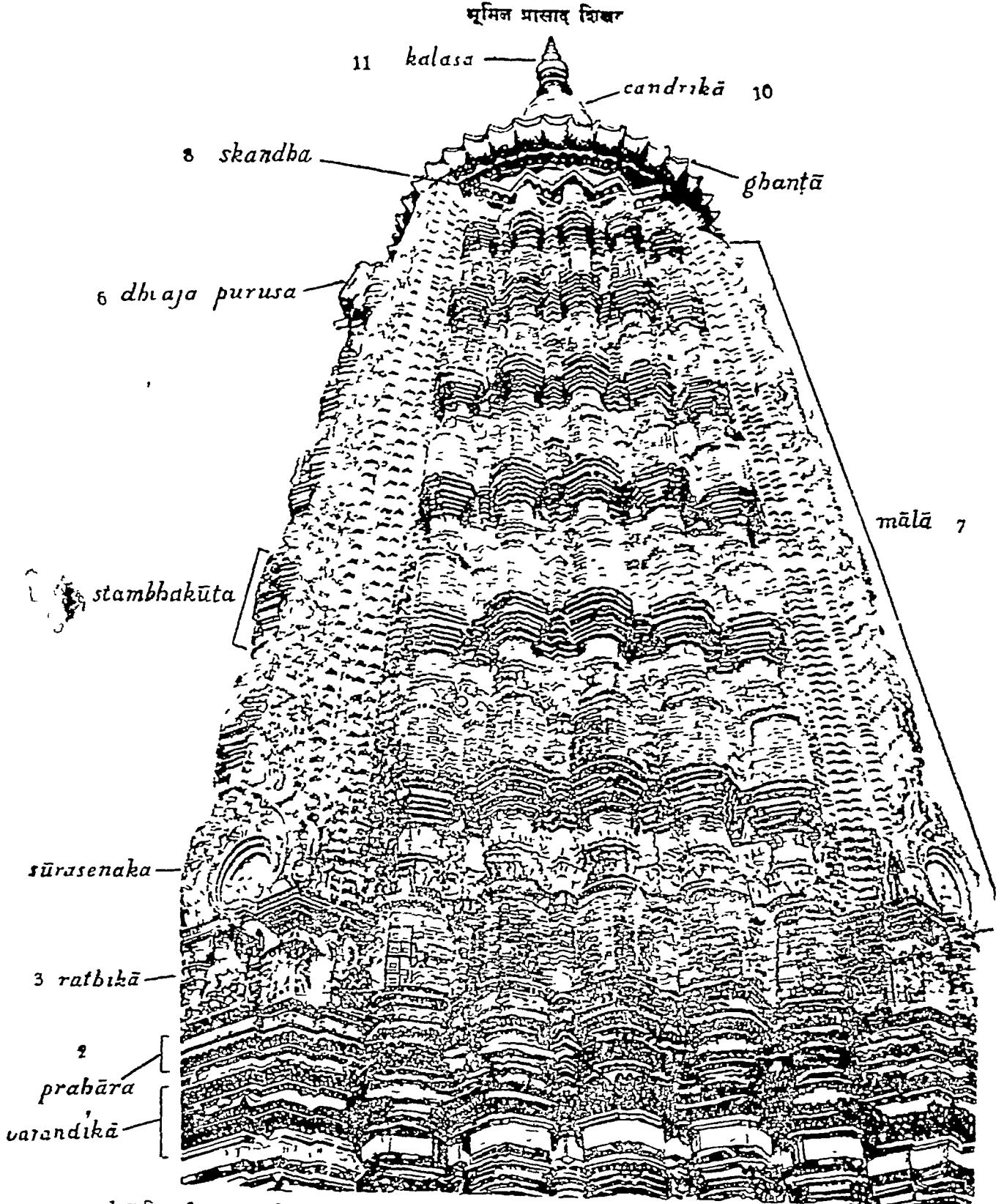
1 वरंडिका, 2 प्रहार, 3 रथिका, 4 शूरसेनक, 5 स्तम्भकूट 6 ध्वजापुरुष, 7 माला, 8 स्कंध, 9 घंटा, 10 चन्द्रिका, 11 कलश
क्षीरार्णव प्रस्तावना प्रासाद जाति शैली

Sthapati Prabhashanker O Sompura, Shilpa Visharad

भूमिज प्रासाद शिखर *Shikhara of Bhumija-Prāsāda*
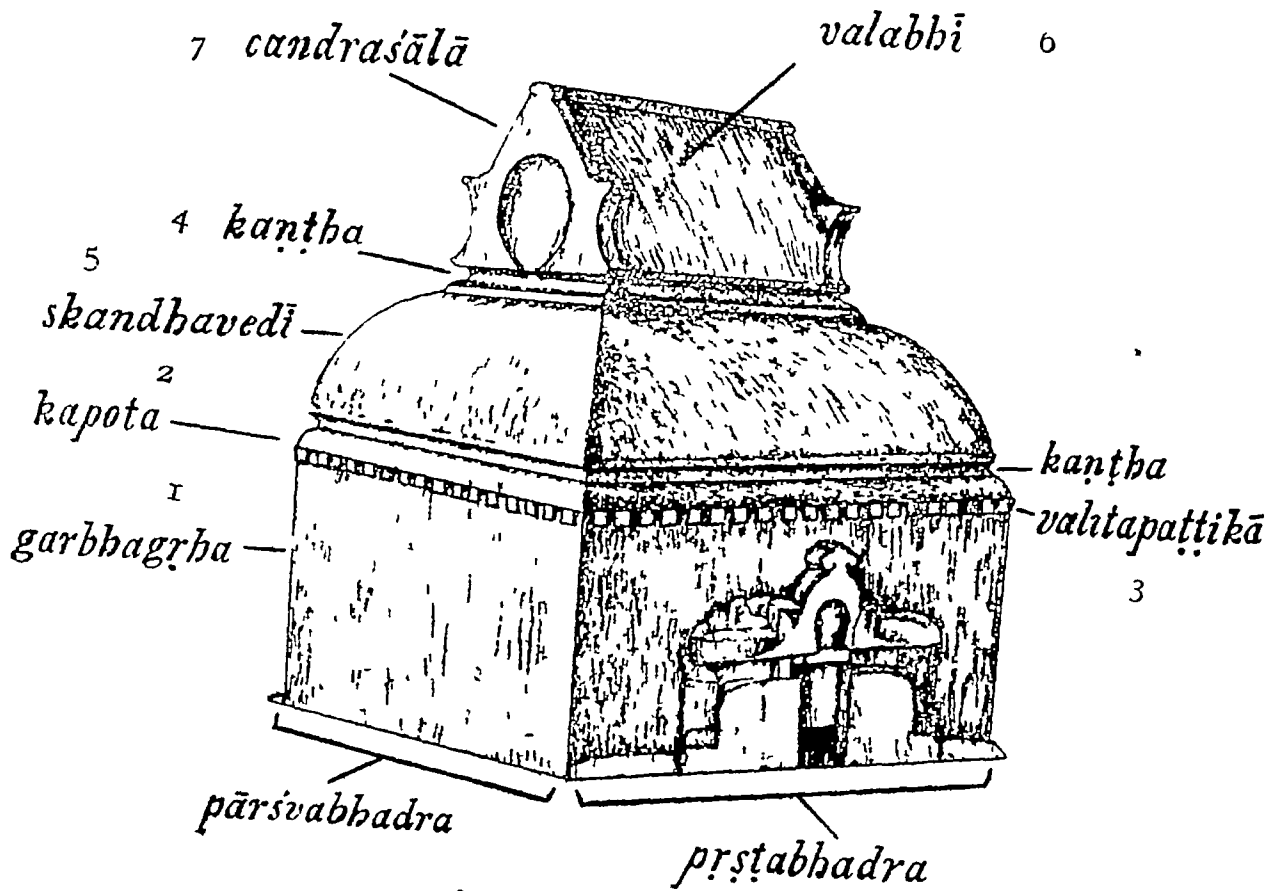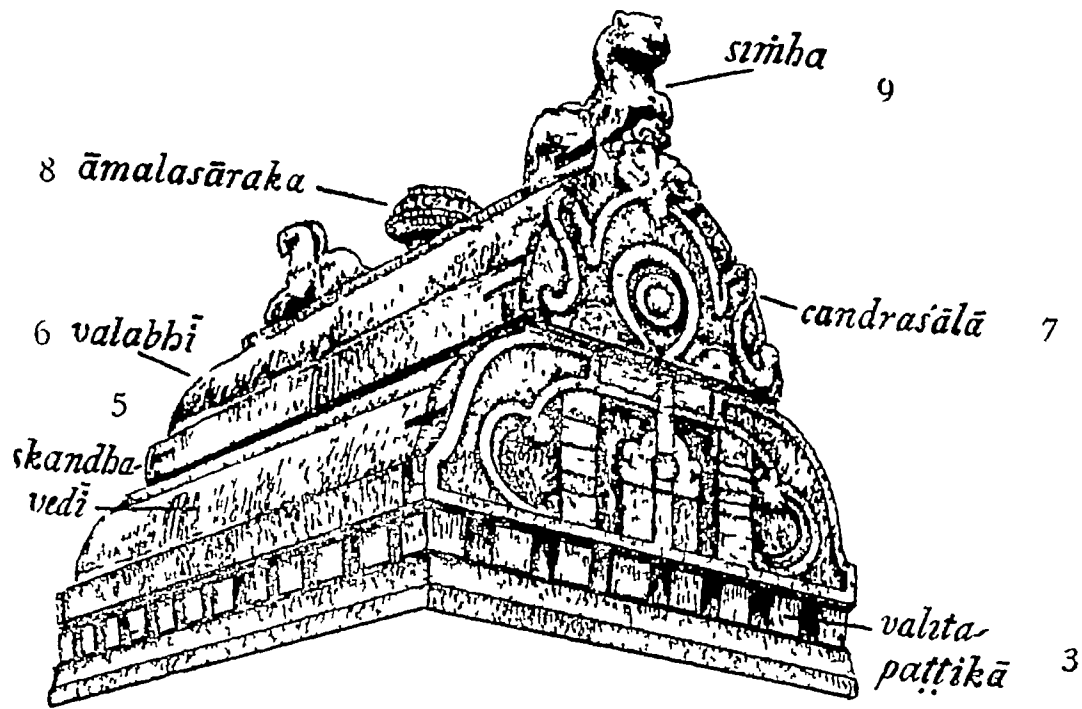
वलभी जाति का प्रासाद *Valabhi-Prāsāda*
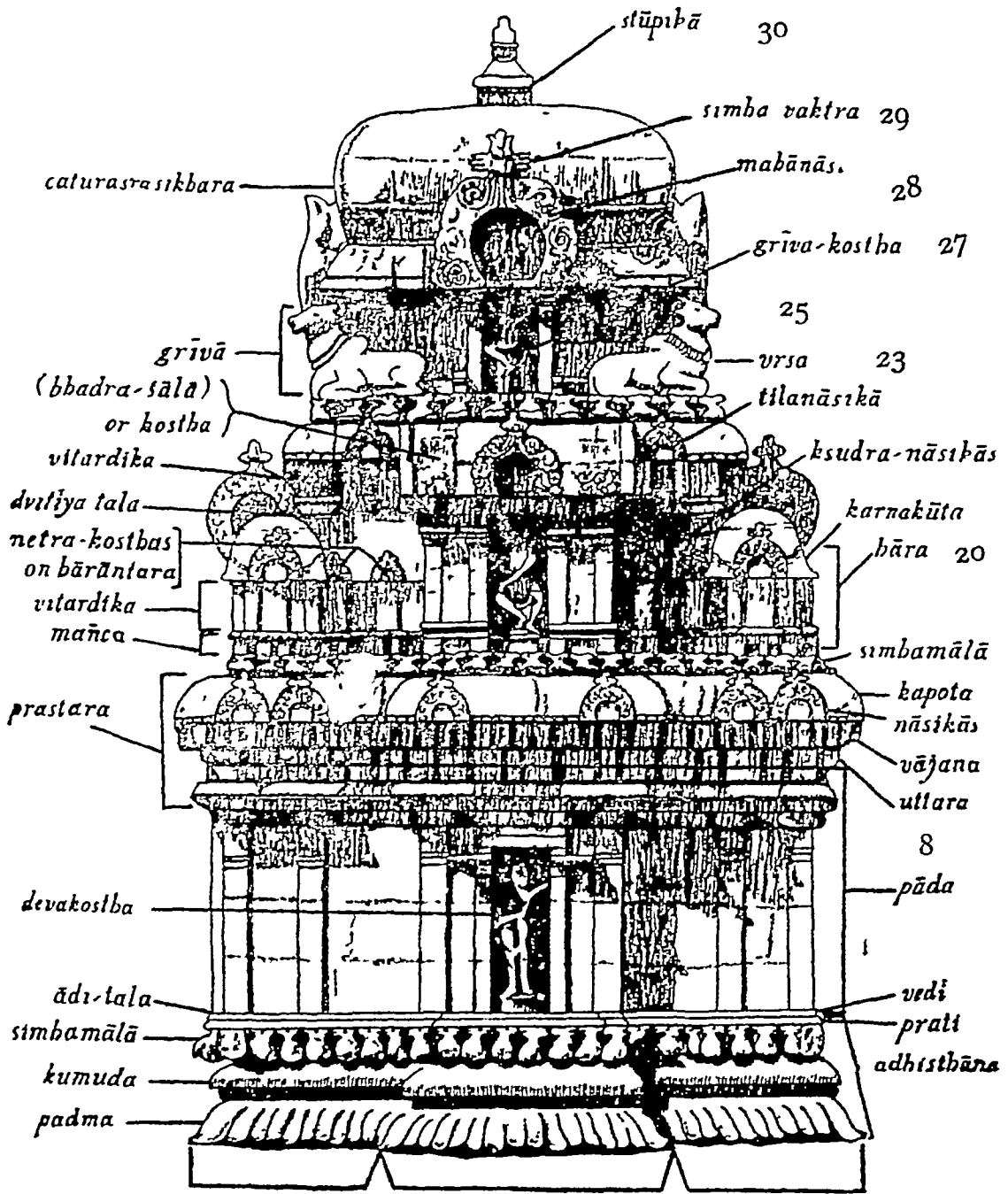
द्रविड जाति का चतुरस्त्र संपूर्ण प्रासाद *Dravida-Prāsāda*
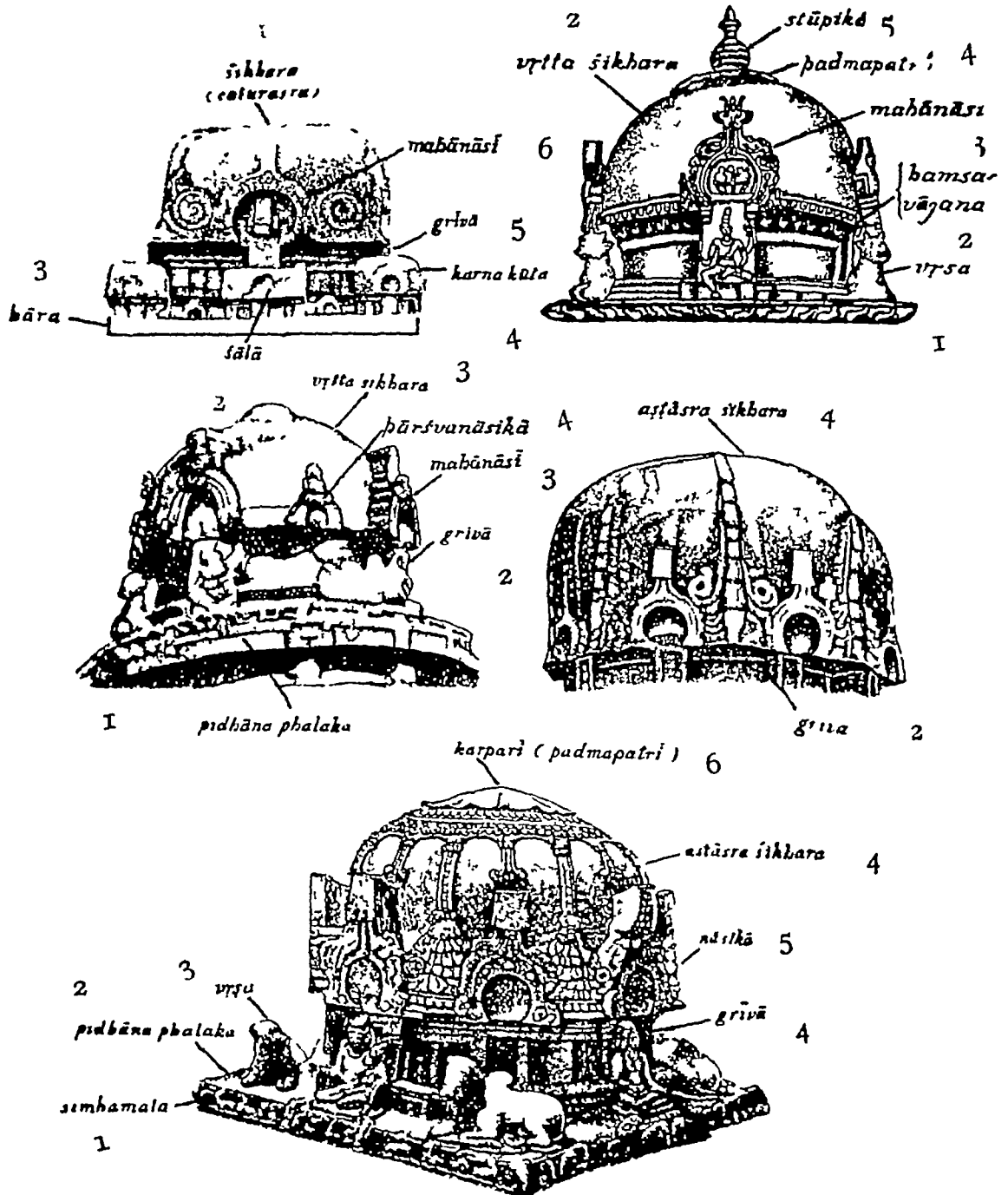
द्रविड शैली के चतुरस्र और गोलाकार प्रासाद के शिखर *Shrines of Dravida-Prāsāda (in Round and Square Shape)*
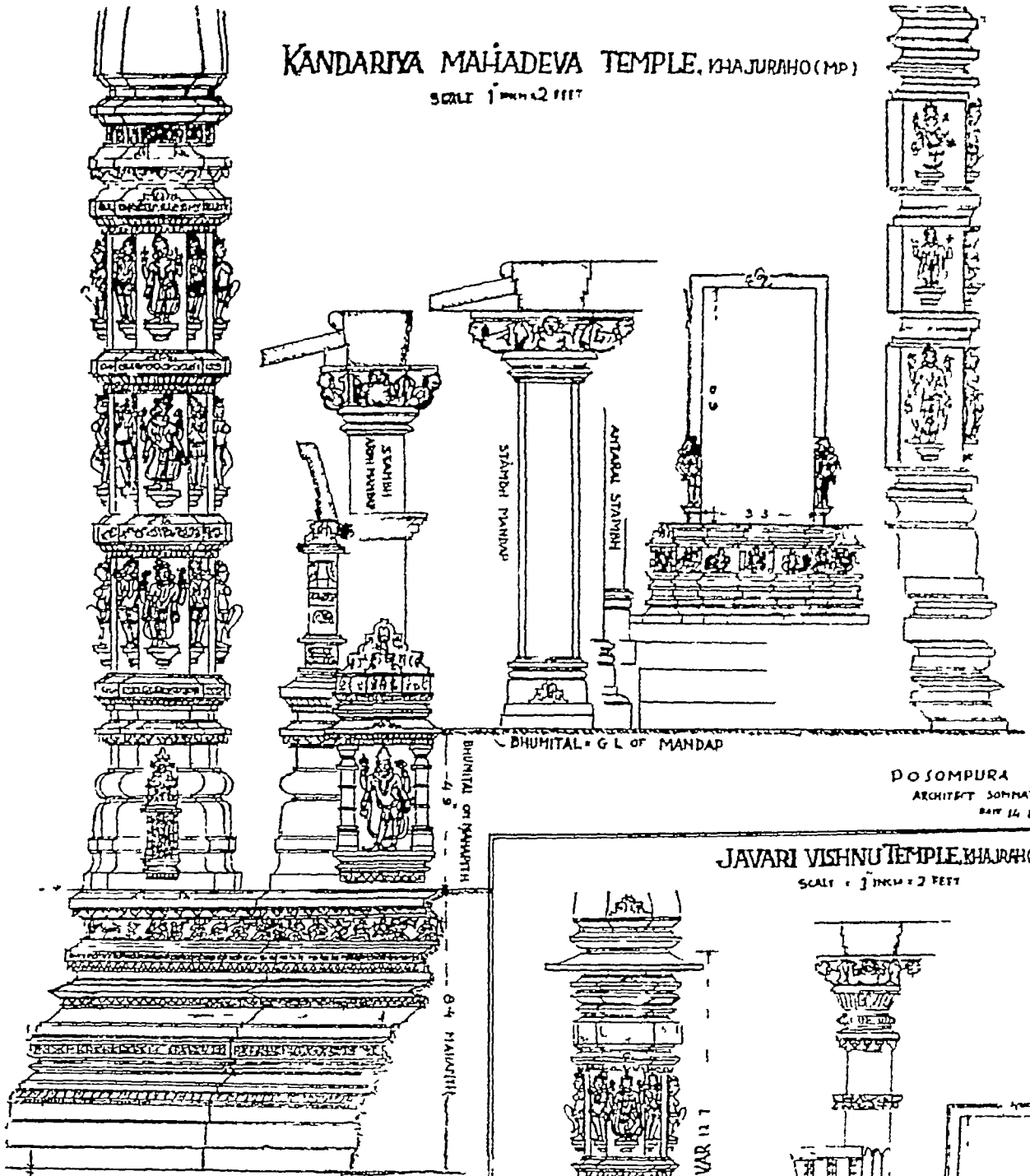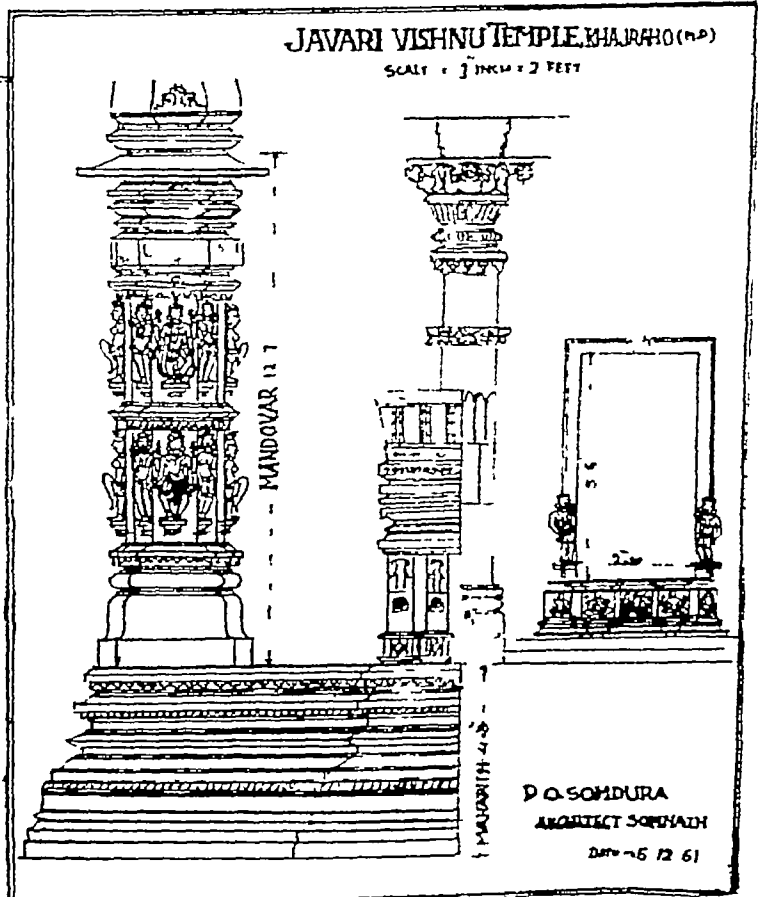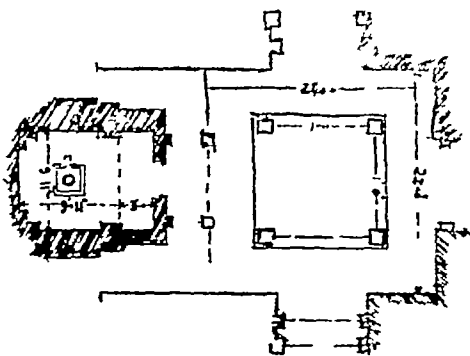
खजुराहो मंदिर के कुछ अंश (दसवीं सदी) *Several Plans of Khajuraho (10th Century)*

लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो *Laxman temple, Khajuraho*
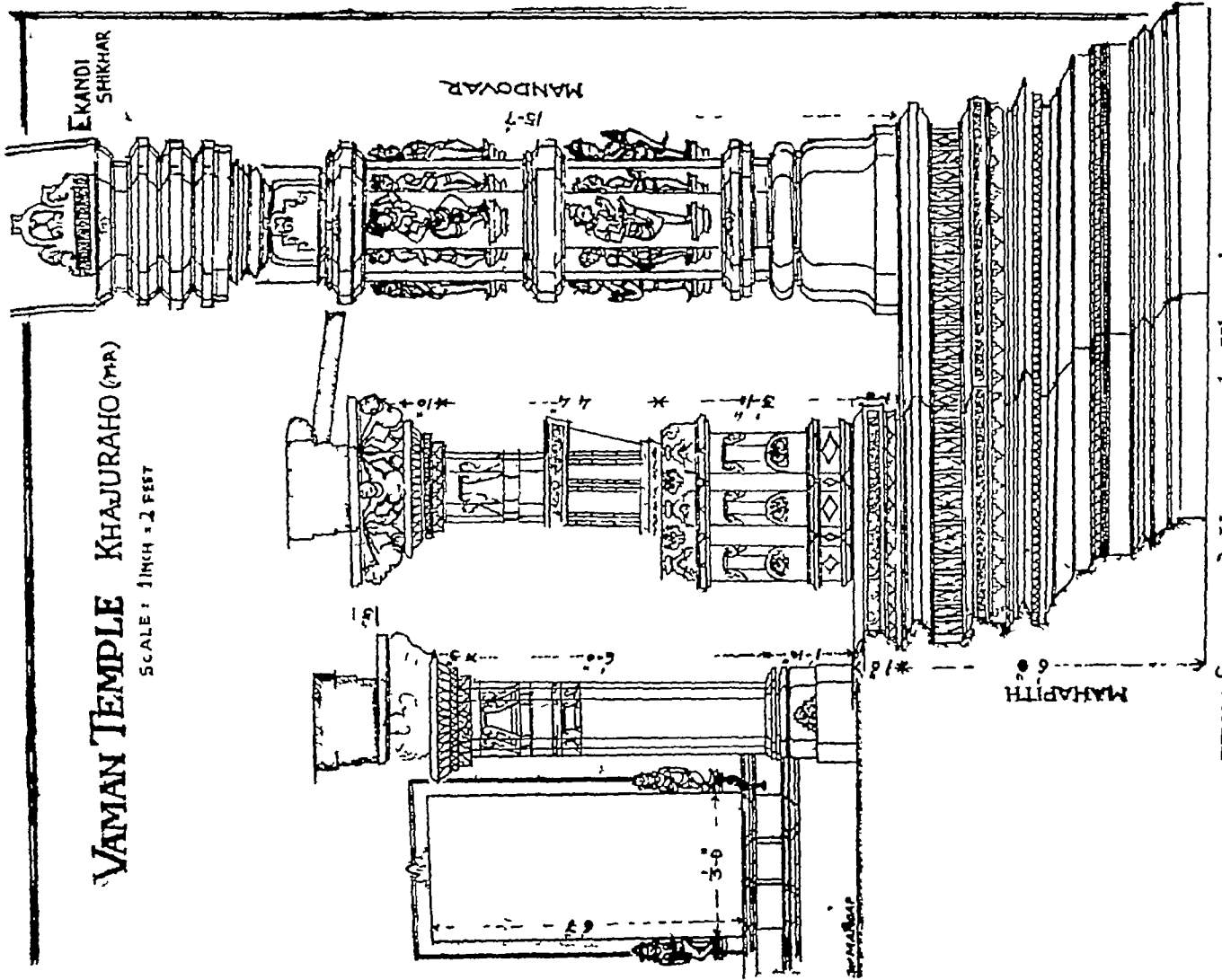
वामन मंदिर, खजुराहो *Vamana temple, Khajuraho*
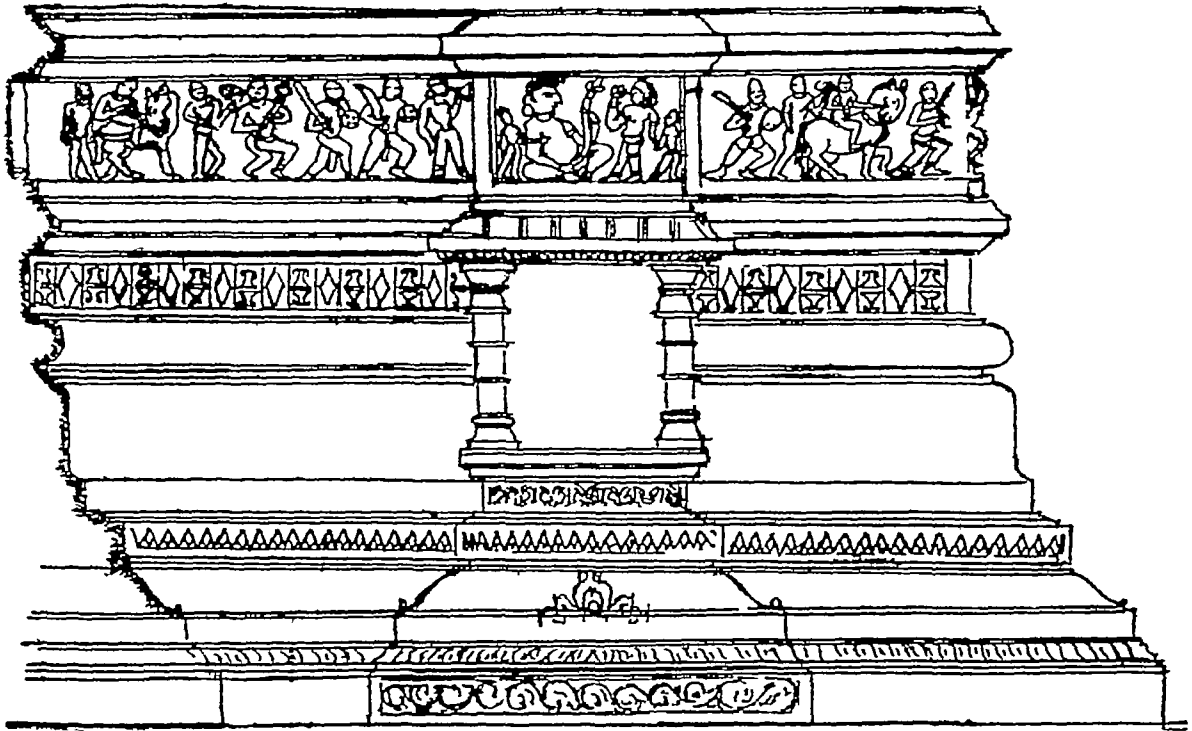
कंडर्य महादेव मंदिर की जगती, खजुराहो (दसवीं सदी)
Jagatı, the Plinth of Kandarya Māhadeo temple, Khajuraho (10th Century)
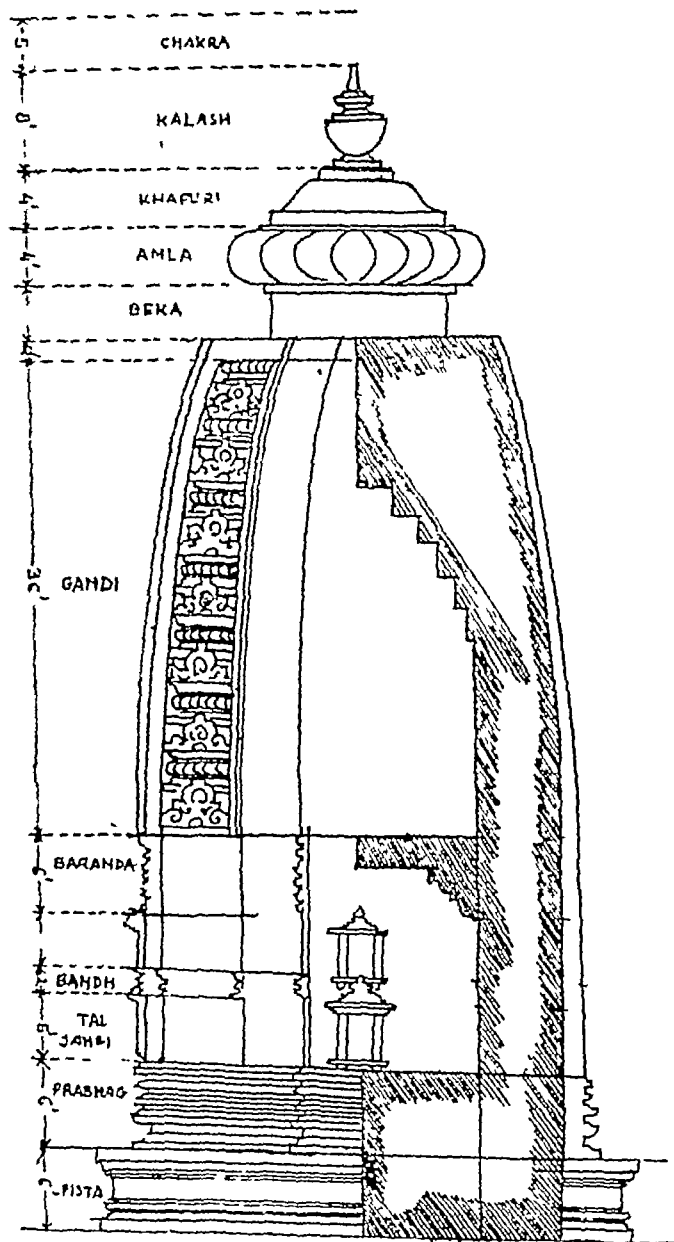
कलिंग प्रासाद, कलिंग शैली का शिखर (ओरिस्सा)
Kalinga Prāsāda, Shikhara of Kalinga Style (Orissa)
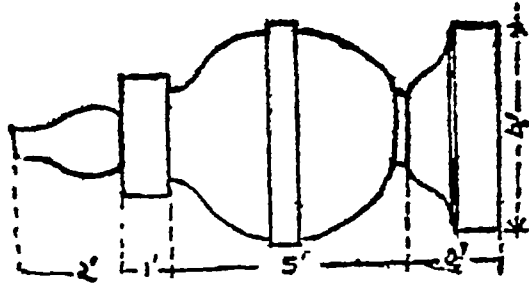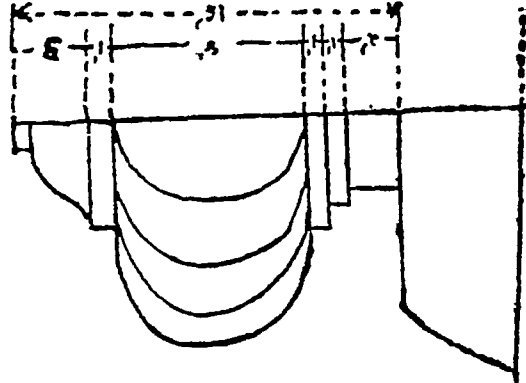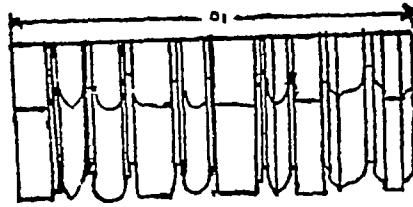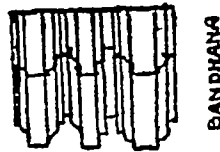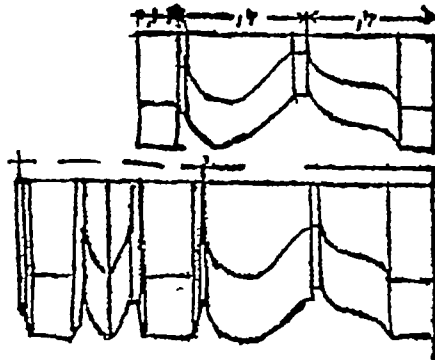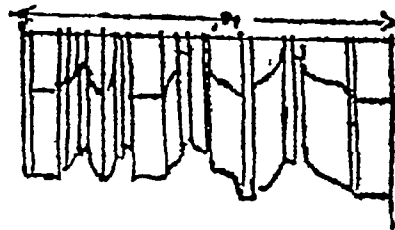
कलिंग (ओरिस्सा) प्रासाद के अंग
Details of Kalinga (Orissa) Prāsād
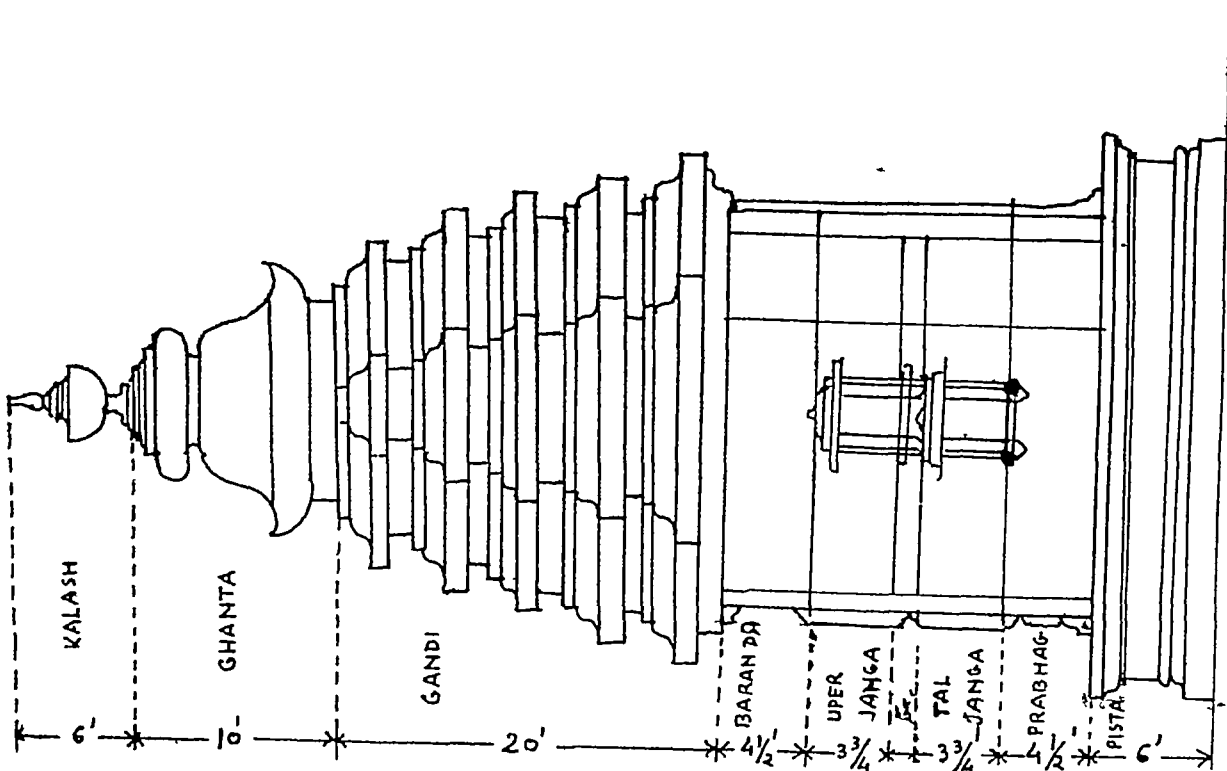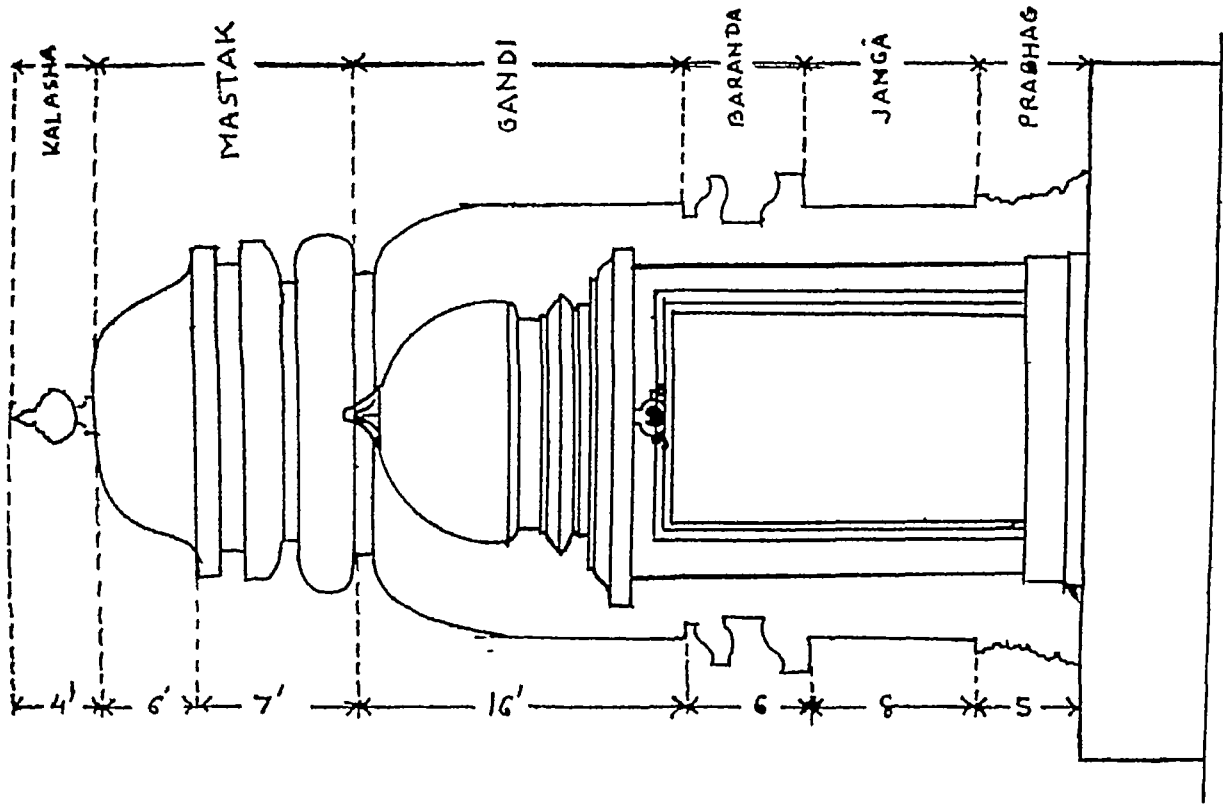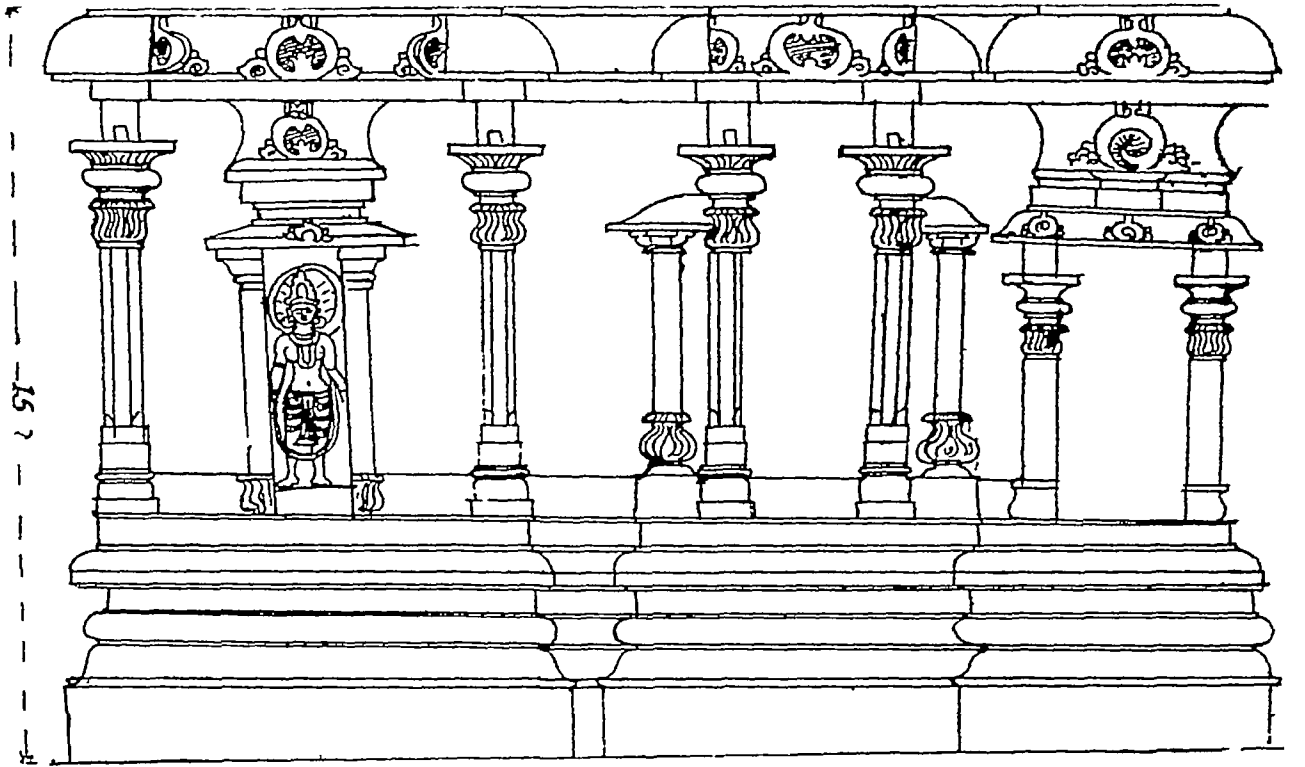
अलकृत भित्तिका, कुलपाकजी मदिर (आध्र प्रदेश) *Decorative Wall of Kulpakji Temple (Andhra Pradesh)*
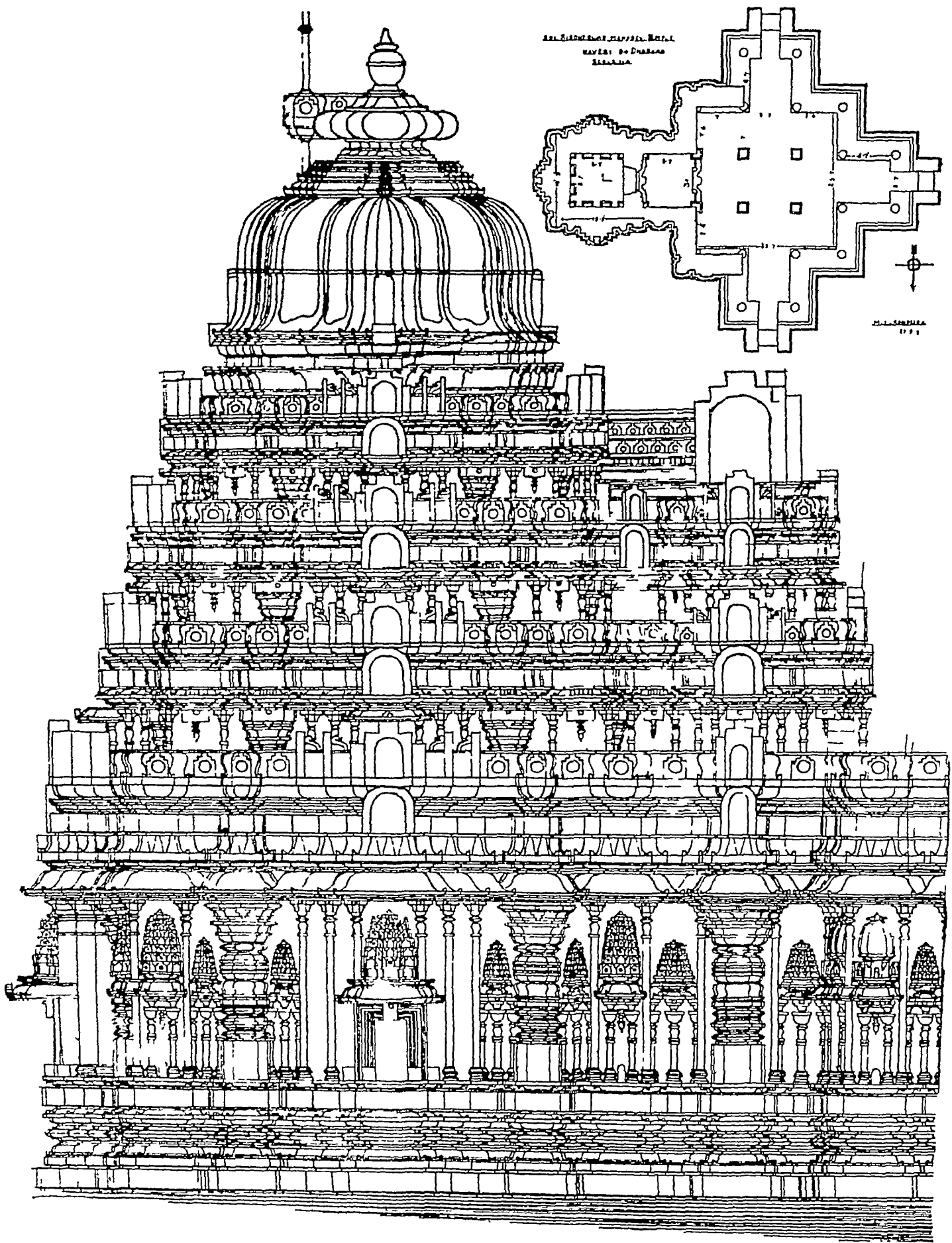
कर्नाटक प्रासाद शैली (धारवाड) *Karnātaka Prāsāda, Sidheshwar Mahādeo Temple, Hāveri (Dist Dhārwād)*
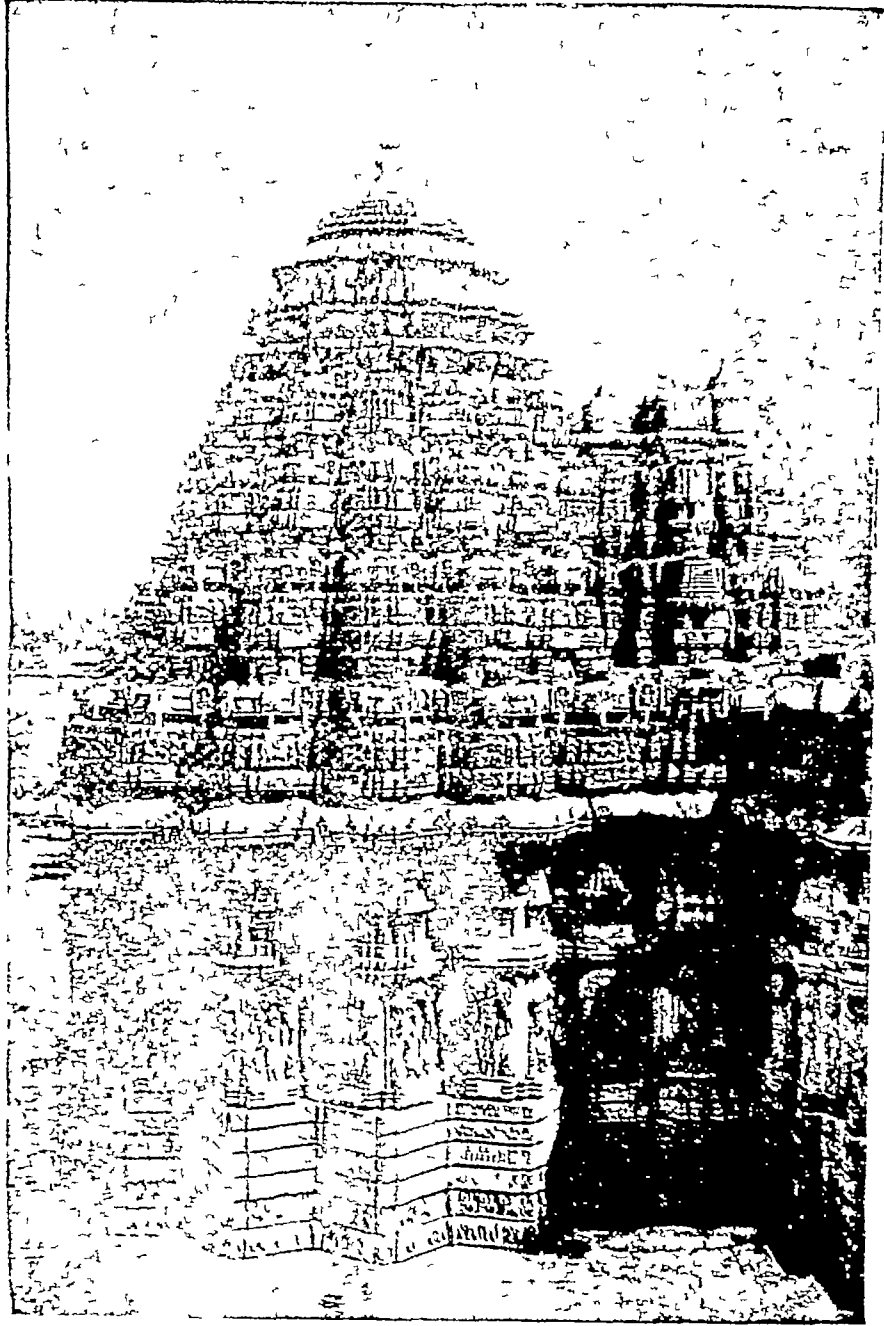
कर्नाटक शैली का प्रासाद *Prāsāda of Karnātaka style*

कुर्मशिला

जगती

प्रनाळ

मंडोवर

पीठ के स्तर और विभाग

मंडोवर के स्तर

महामंडोवर और स्तभ का समन्वय

Foundation Stone

Plinth of Temple

Gargoyle

Layers and Divisions of Plinth

Co-ordination of Pillars and

Multistorey Plinth (Mandovara)
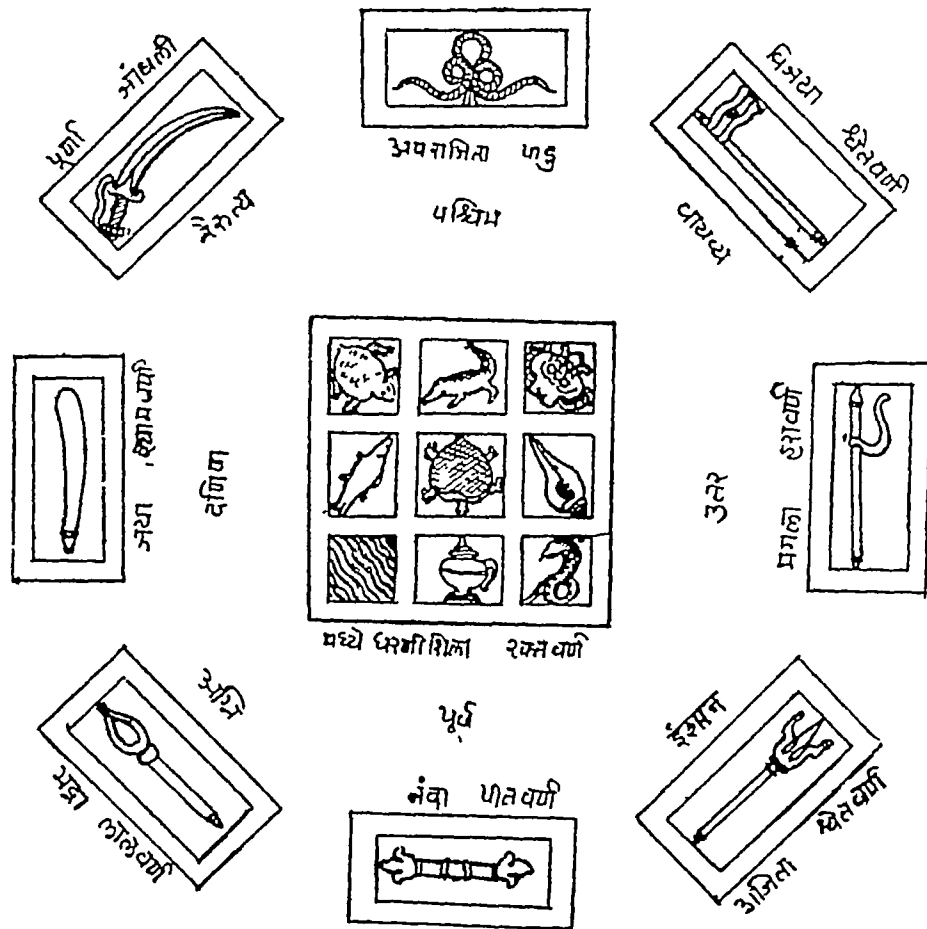
कुर्मशिला और अष्टशिला *Foundation Stone, Kurmasheelā*
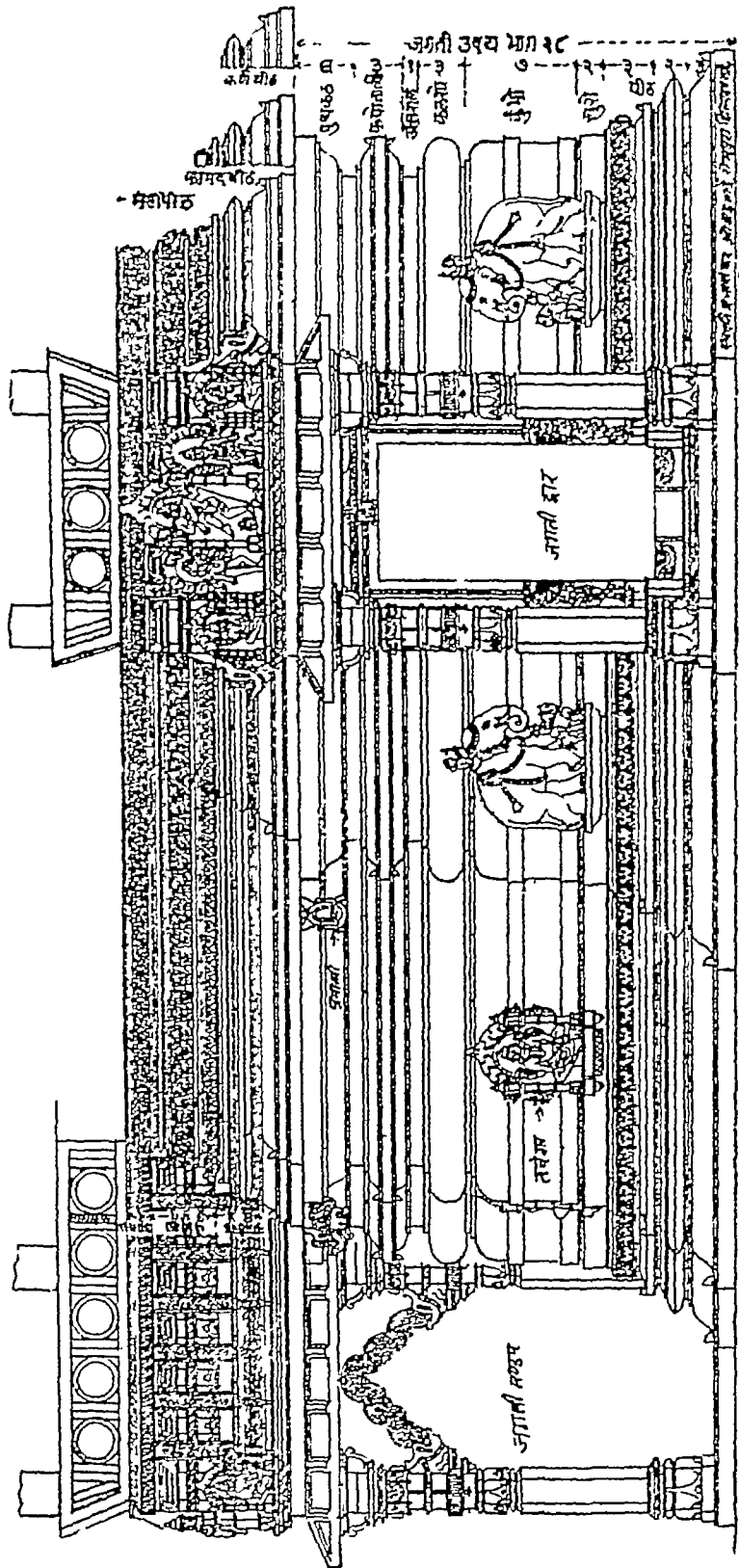
जगती *Jagati Plinth*
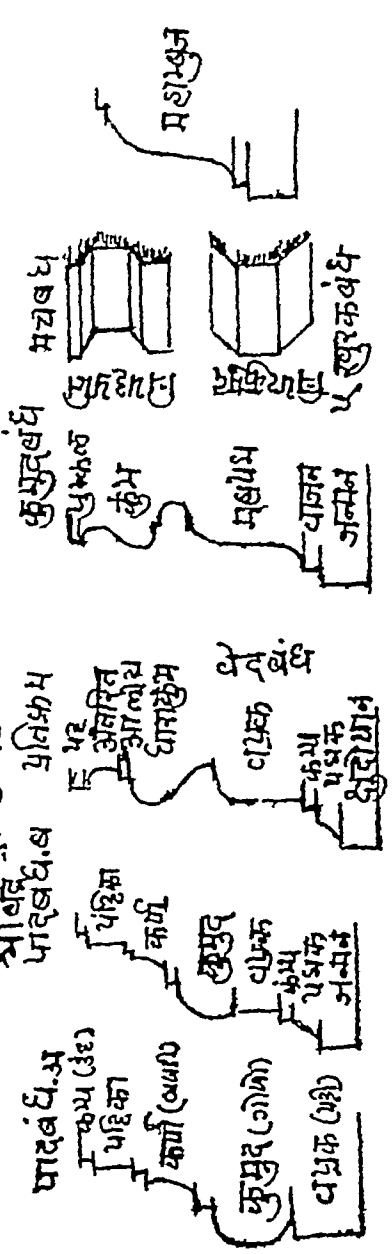
द्रविड प्रासाद की पीठ *Plinths of Dravida Prāsāda*
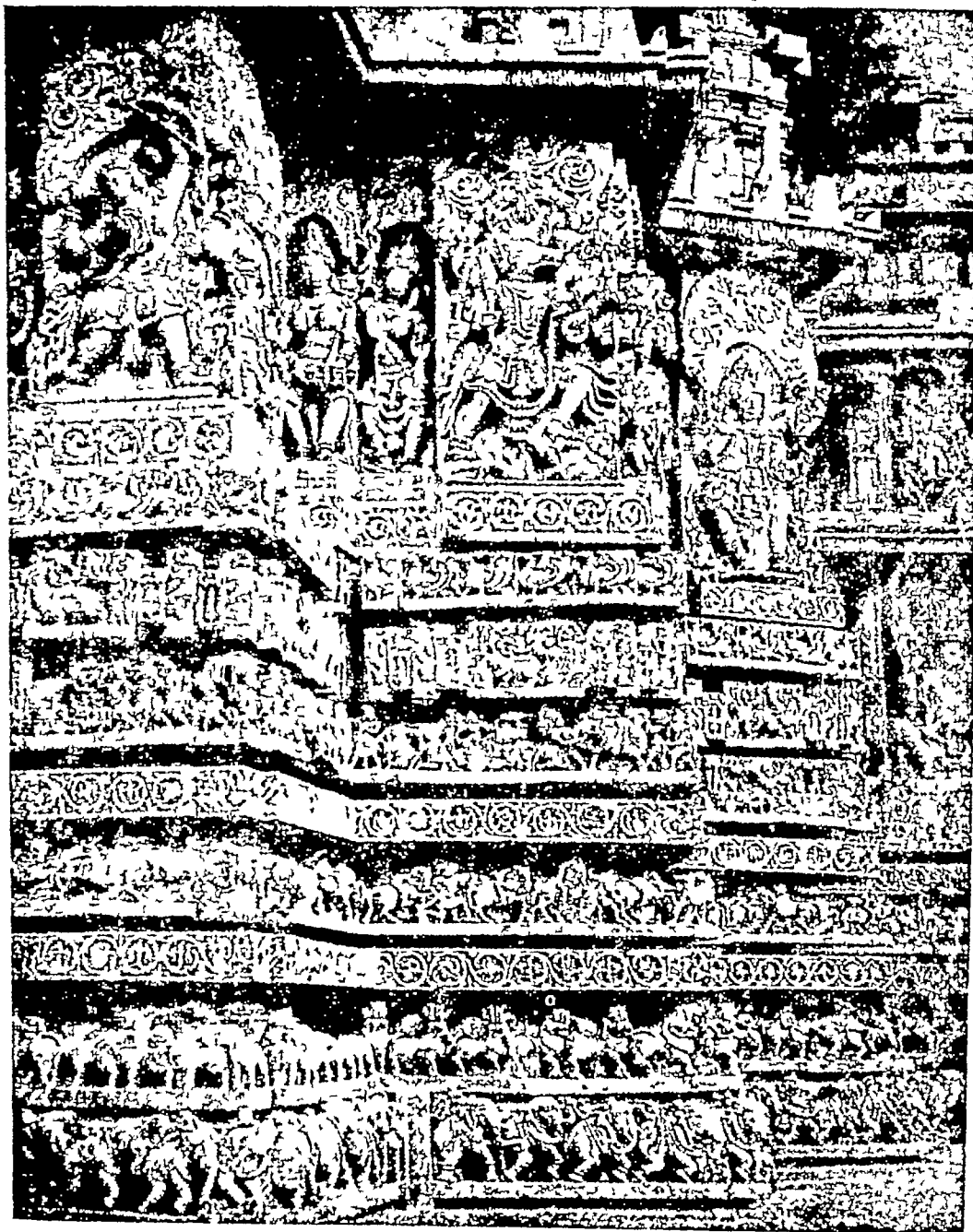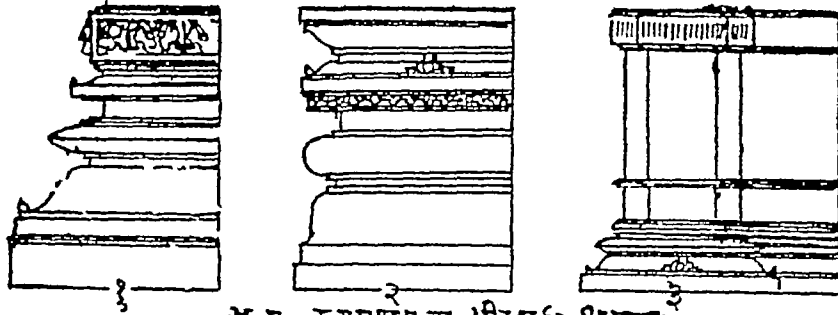
वेलुर (कर्नाटक) के प्रासाद का रूपयुक्त मडोवर और उत्कीर्ण महापीठ

मडप के तीन प्रकार के पीठ वध *Three Different Plinths of Mandapa*
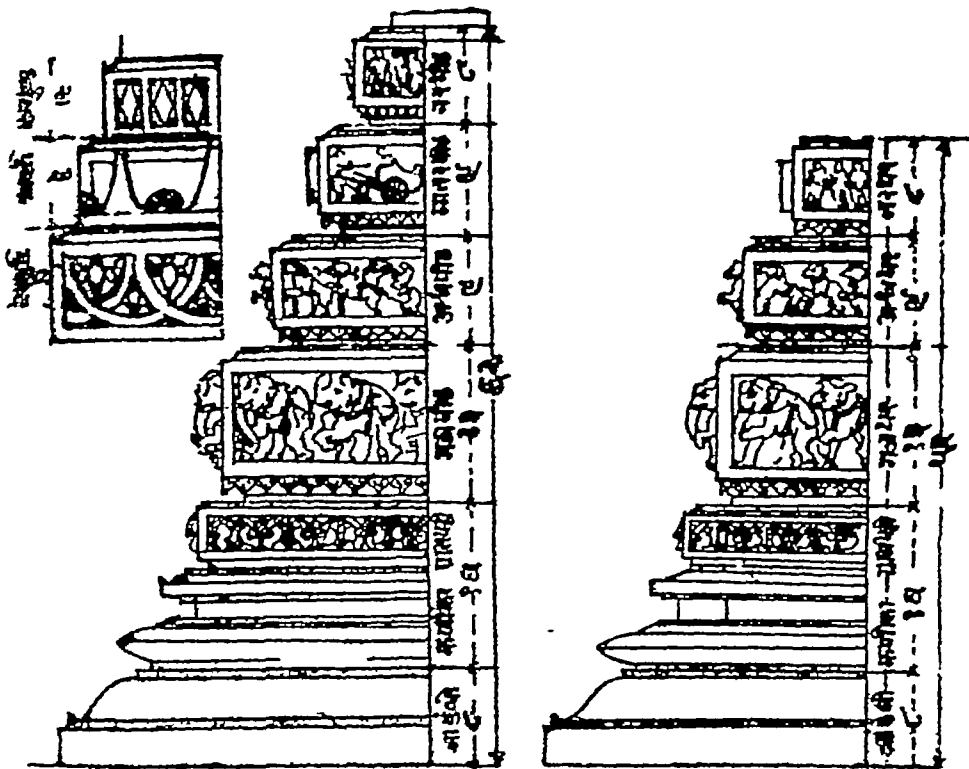
६२ विभाग की महापीठ
62 Divisions of Mahāpītha

५२ विभाग की महापीठ
52 Divisions of Mahāpītha
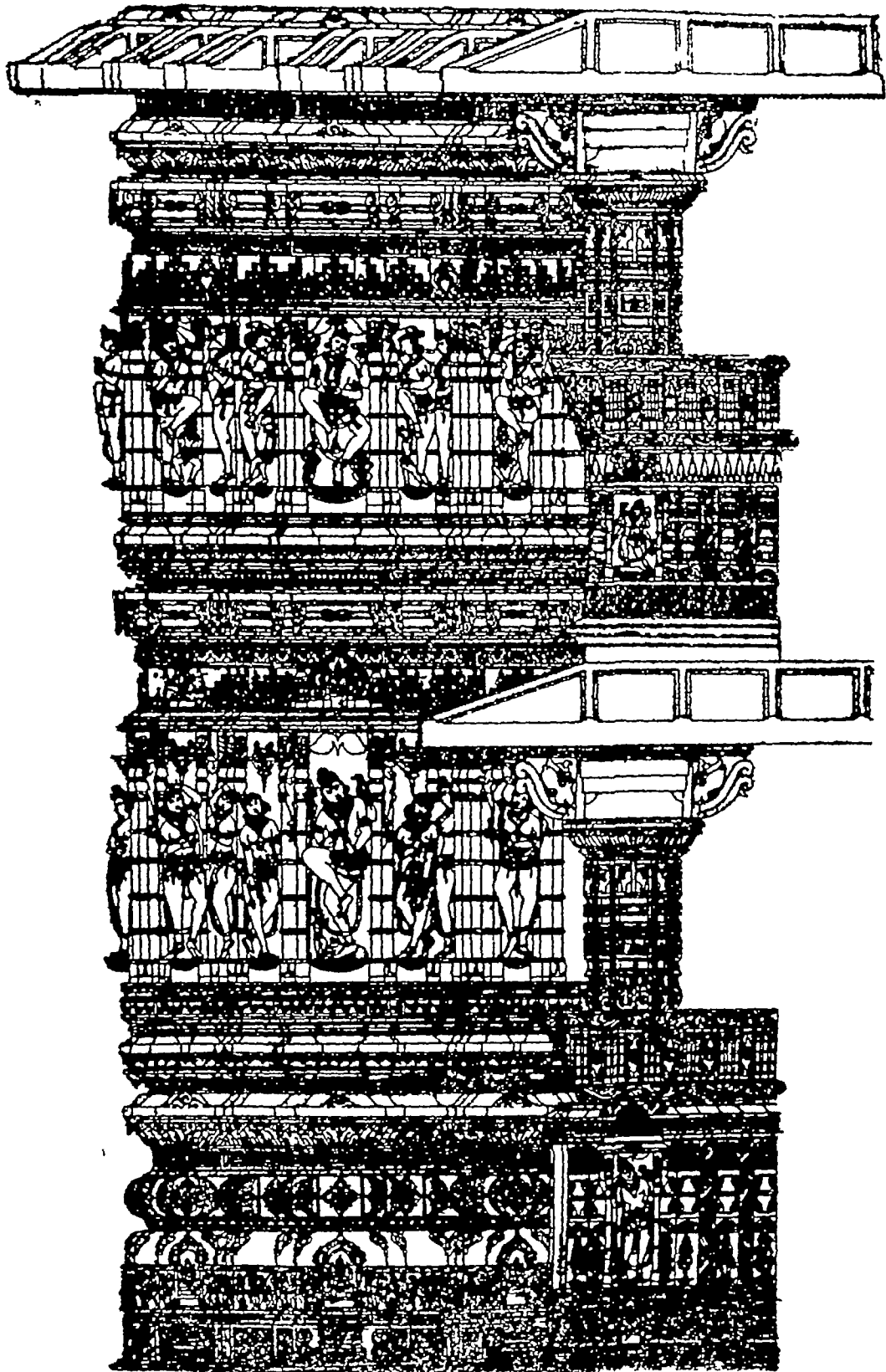
सांधार द्वीभूमि महामण्डोवर (सोमनाथ) *Large Two Storey Mandovara of Somnāth Temple*
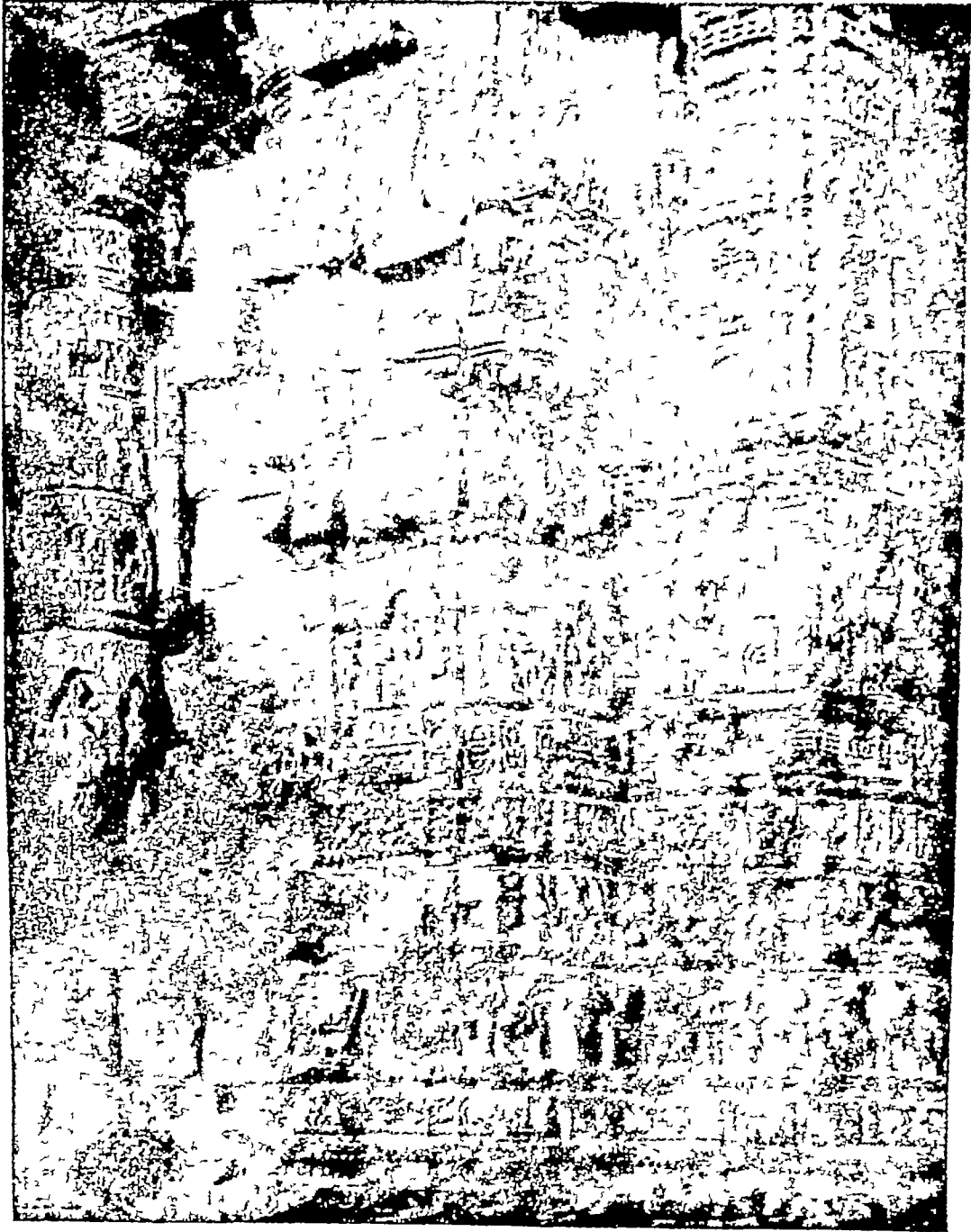
सोमनाथ के पुराने मंदिर के भग्नावशेष *Remains of old Somnāth Temple*

महापीठ के हस्त्यिस्तर *Layers of Elephant of Mahāpitha*
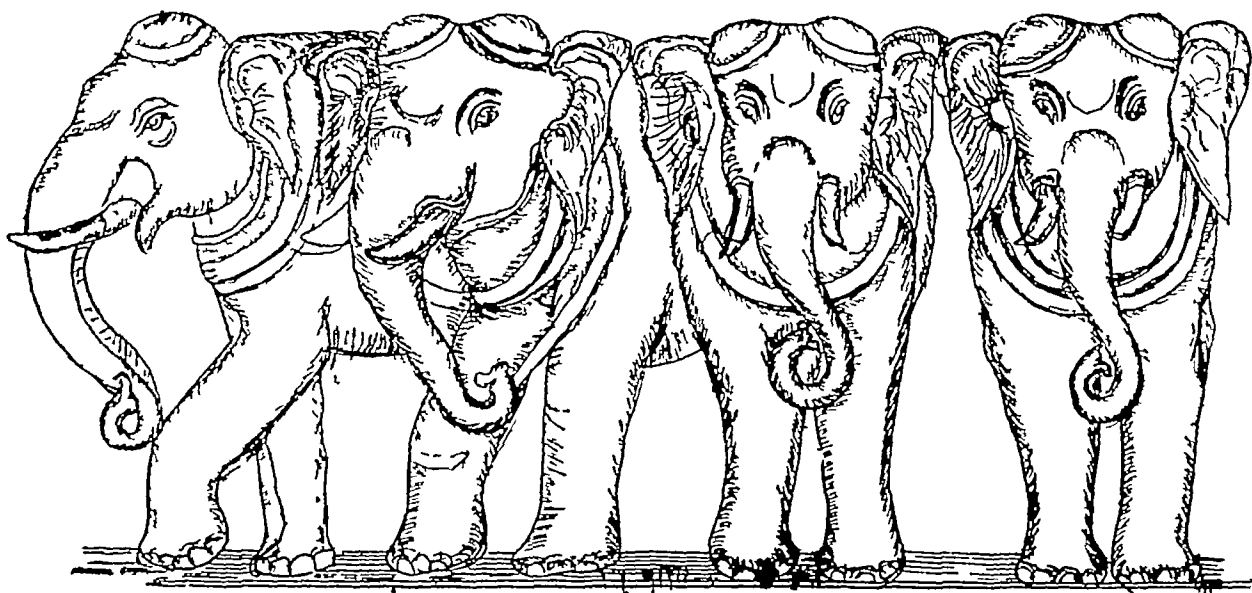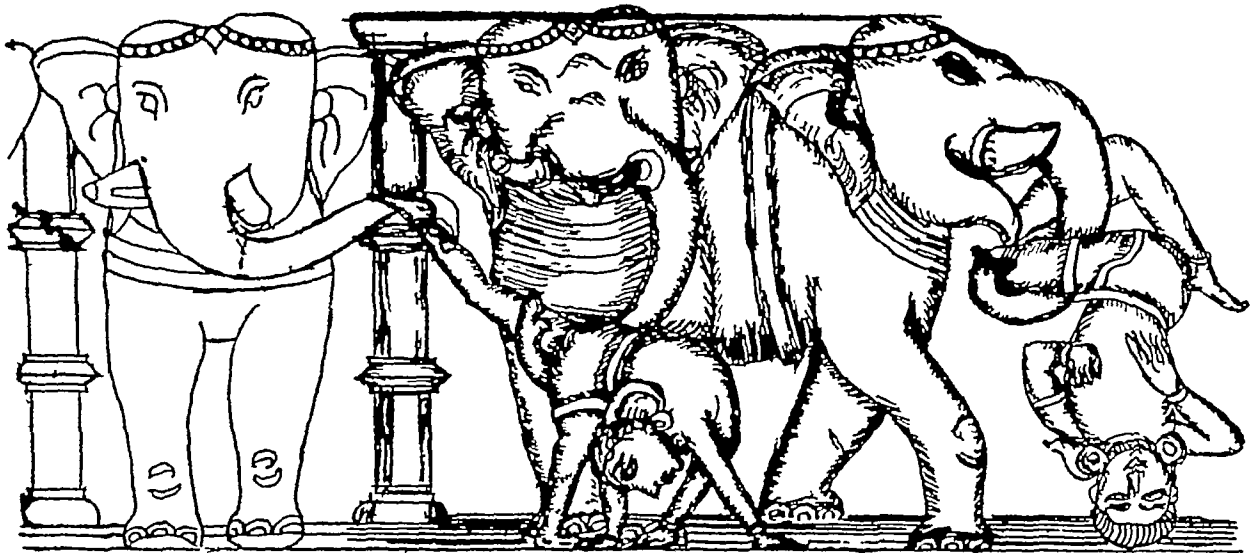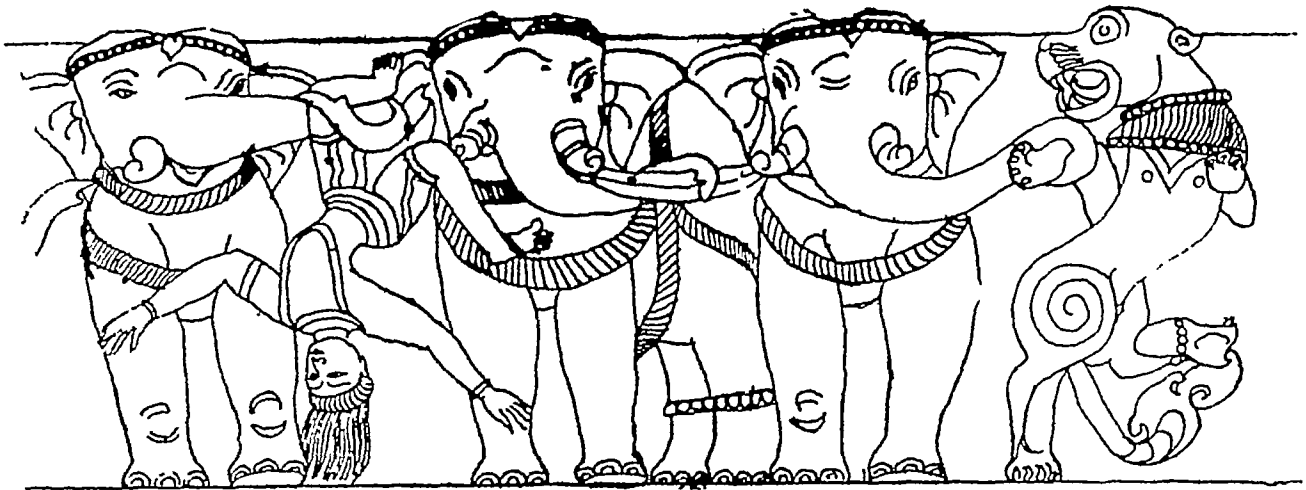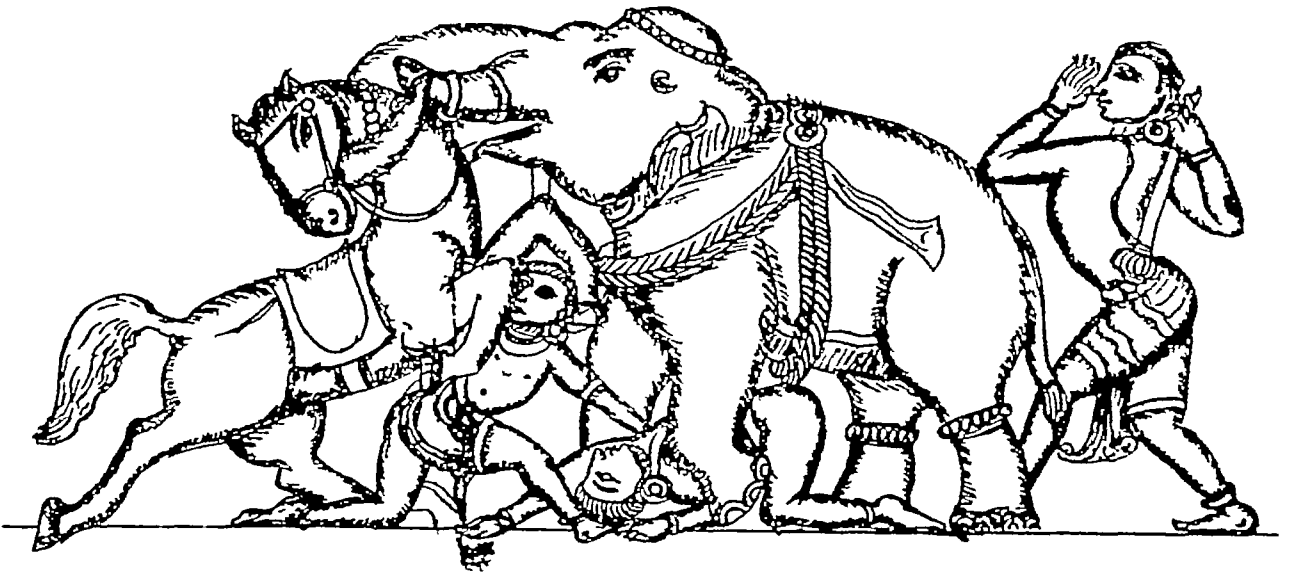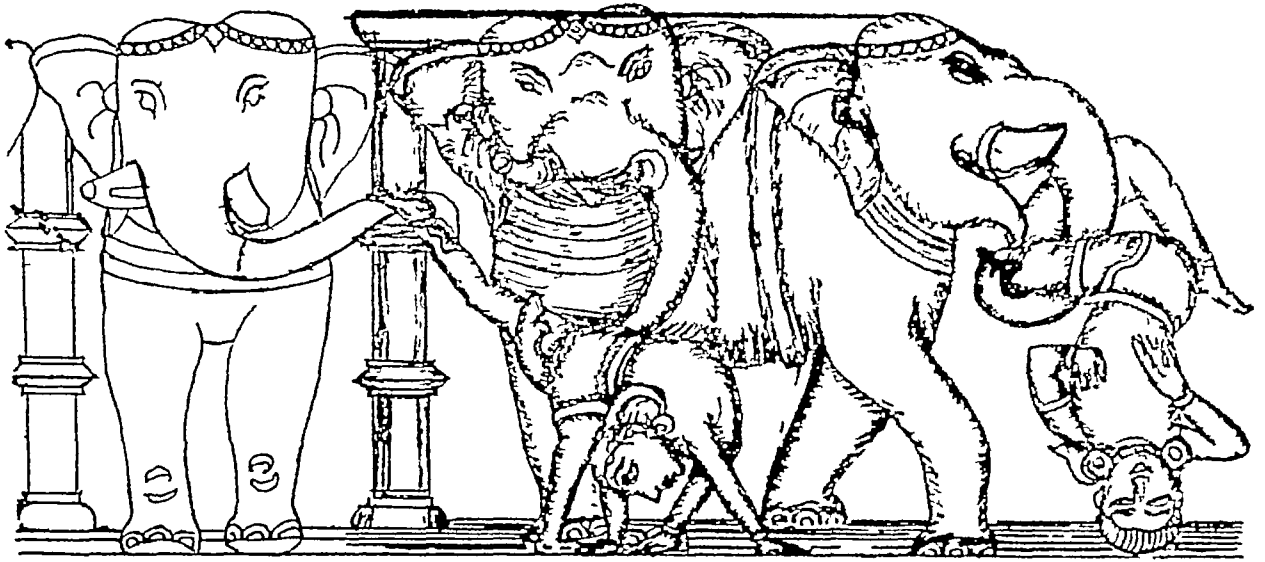
हस्यिस्तर *Layers of Elephant of Mahāpītha*

हस्तिस्तर *Layers of Elephant*
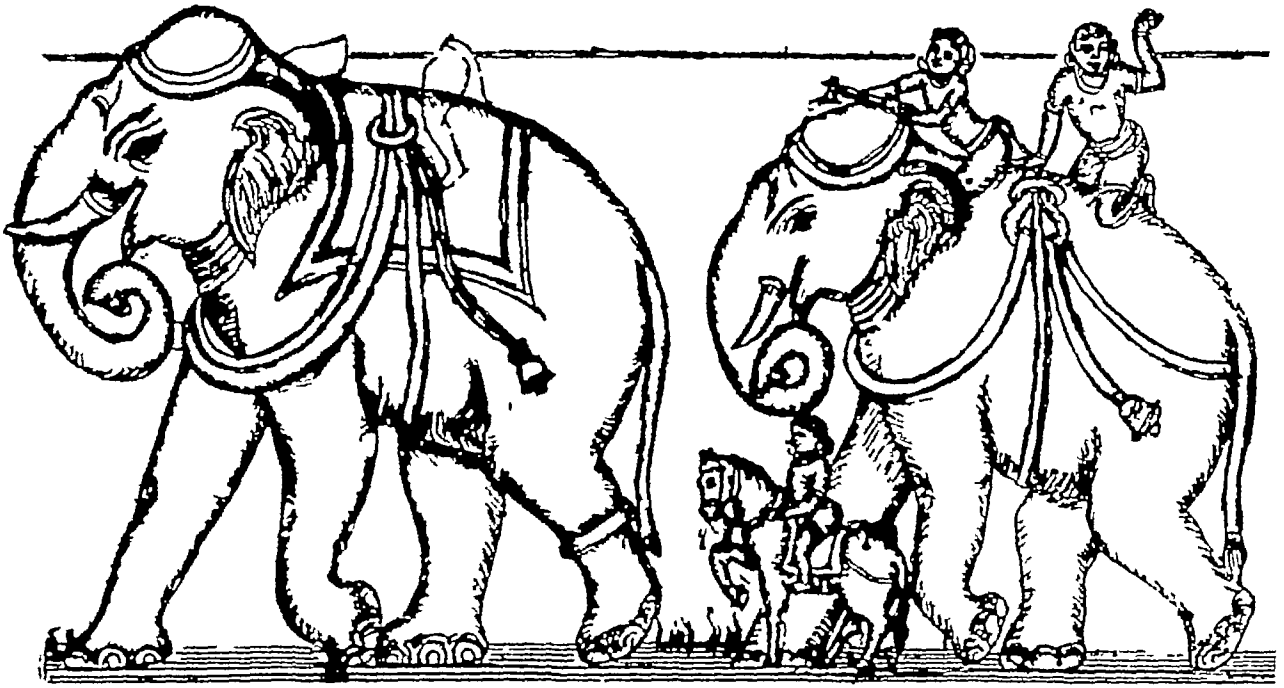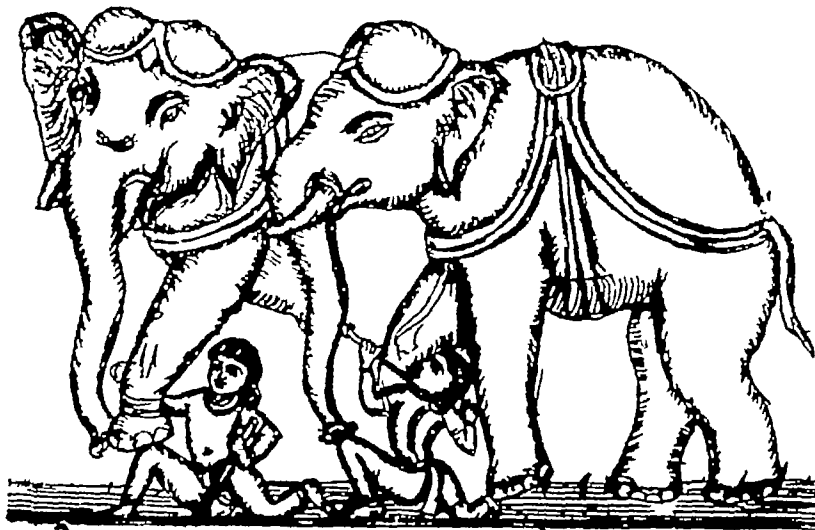
हस्तिस्तर *Layers of Elephant*

उद्गम में कपि
The Monkey in Pediment

व्याघ्र
Lion
P.O.SOMPURA
ARCHITECT SOMNATH
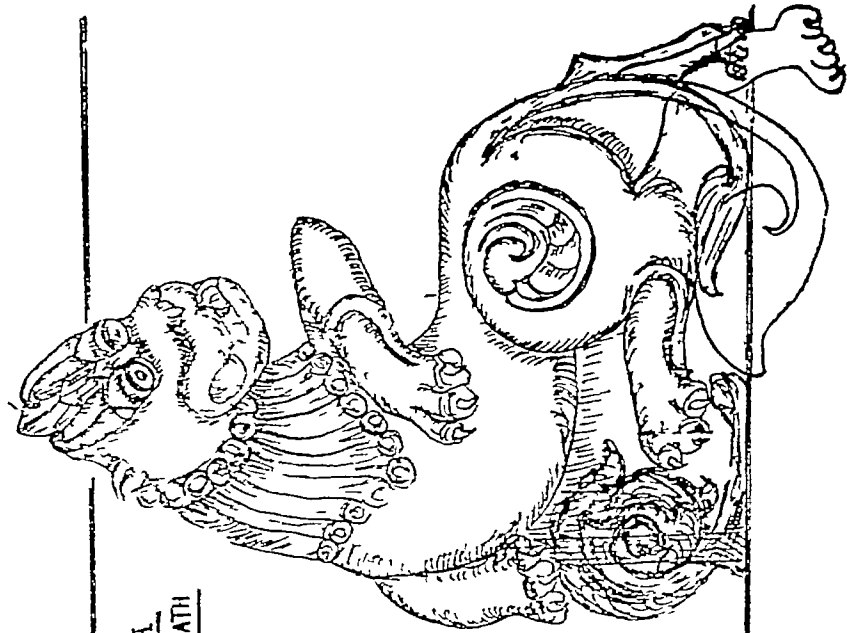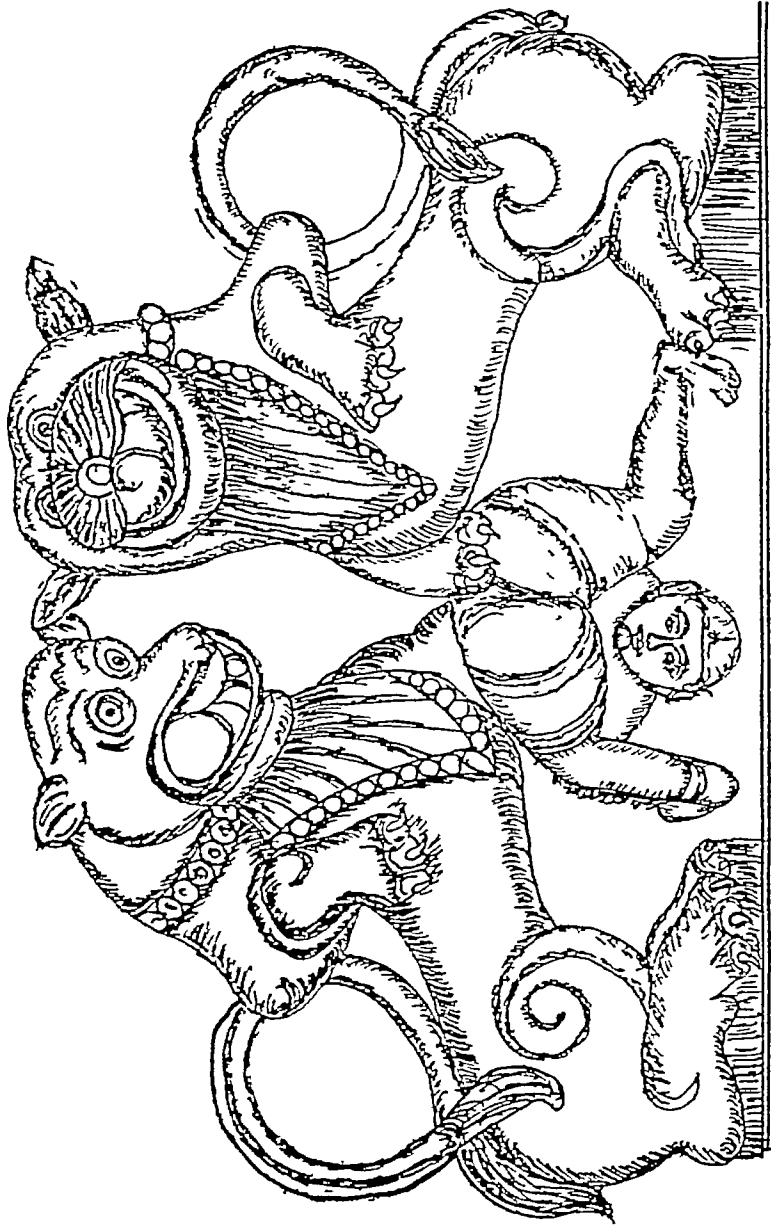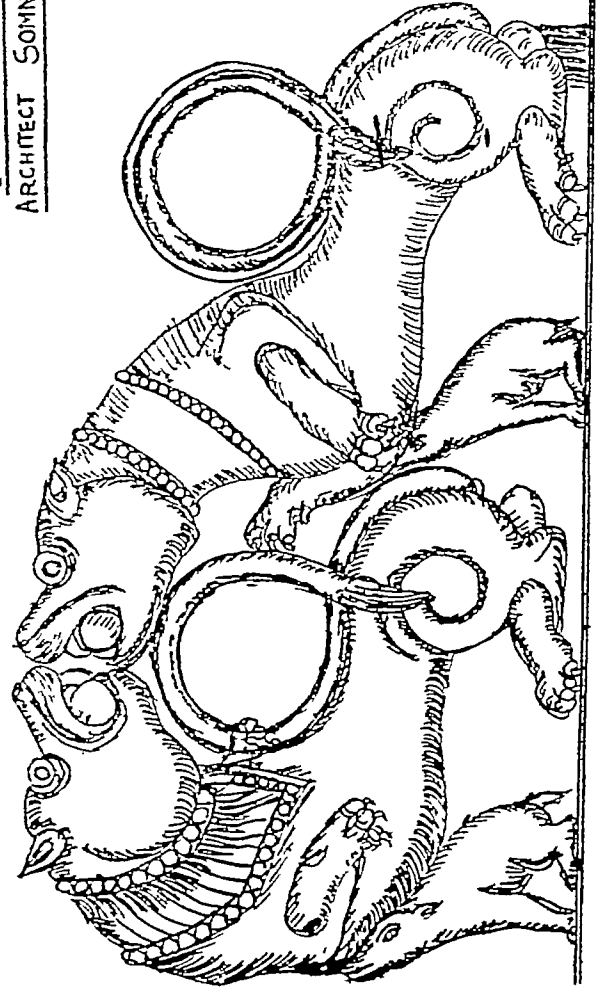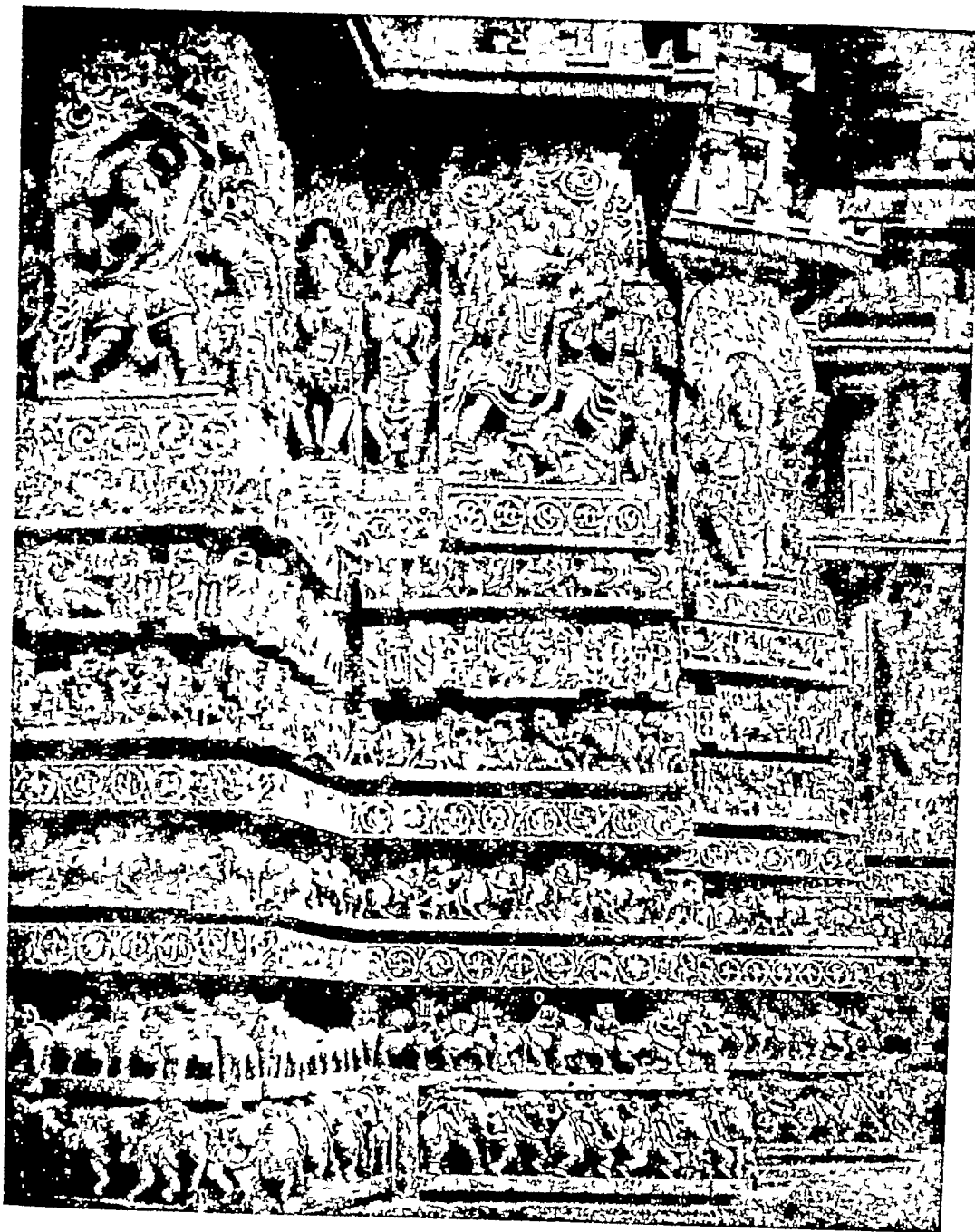
वेलुर (कर्नाटक) के प्रासाद का रूपयुक्त मंडोवर और उत्कीर्ण महापीठ
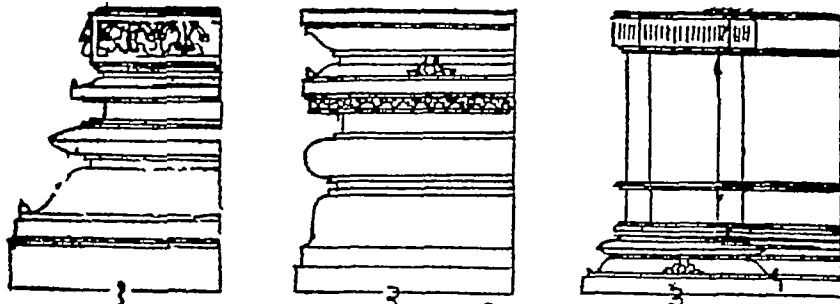
मडप के तीन प्रकार के पीठ वध *Three Different Plinths of Mandapa*
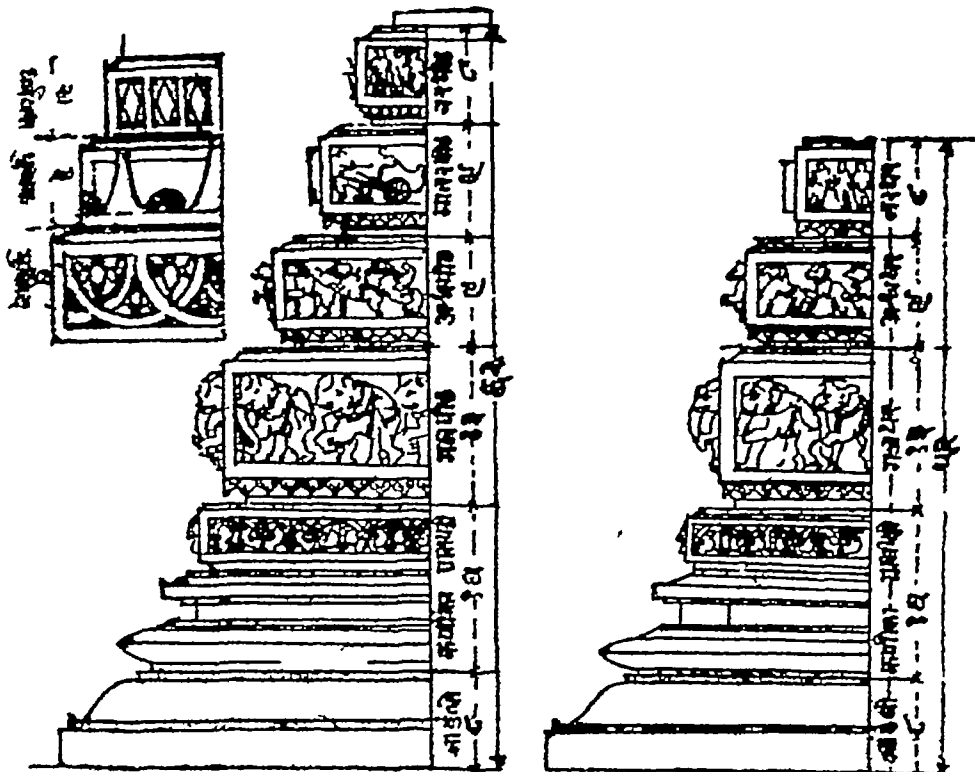
६२ विभाग की महापीठ
62 Divisions of Mahāpītha

५२ विभाग की महापीठ
52 Divisions of Mahāpītha
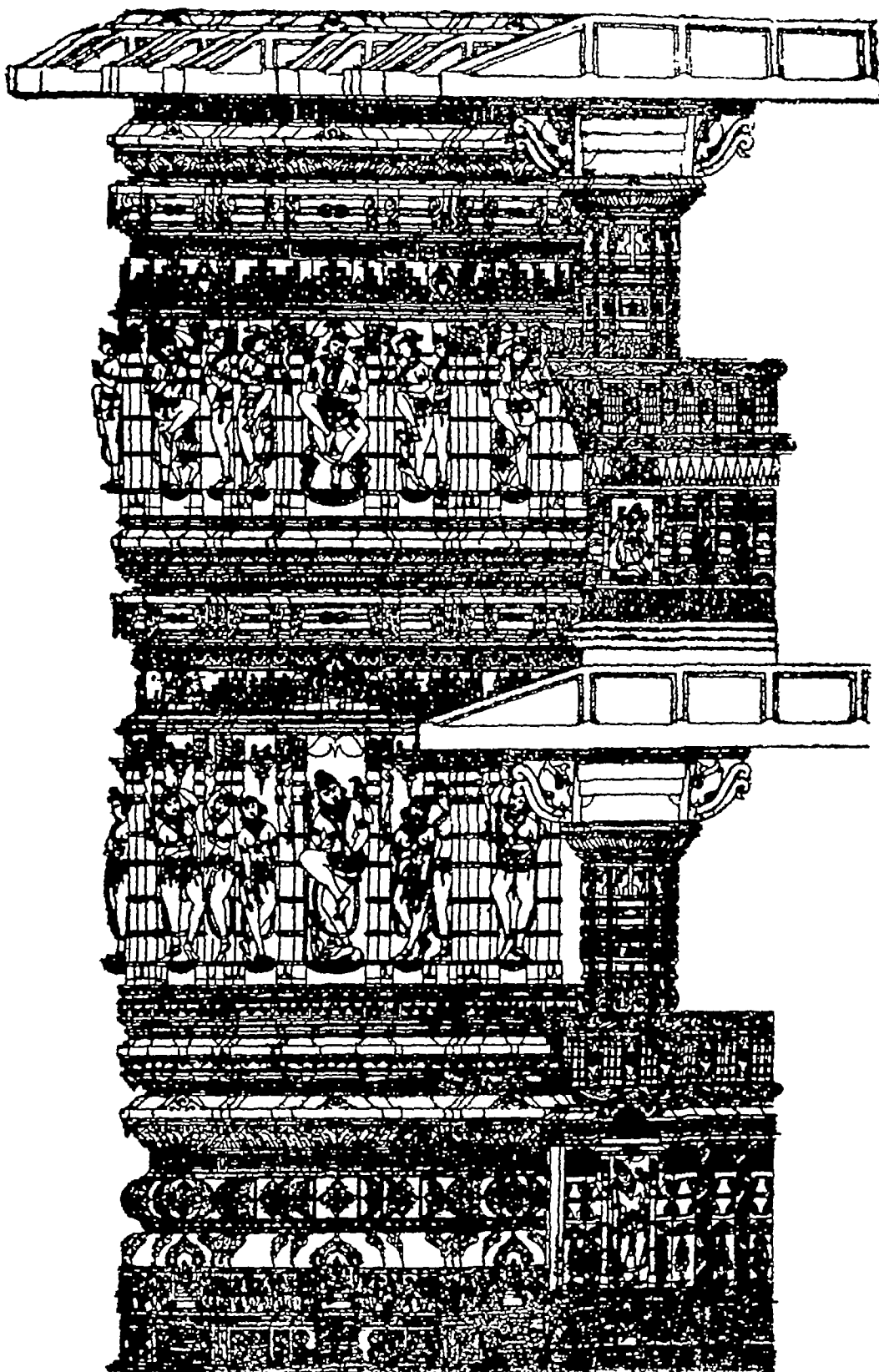
साधार द्वीभूमि महामडोवर (सोमनाथ) *Large Two Storey Mandovara of Somnāth Temple*
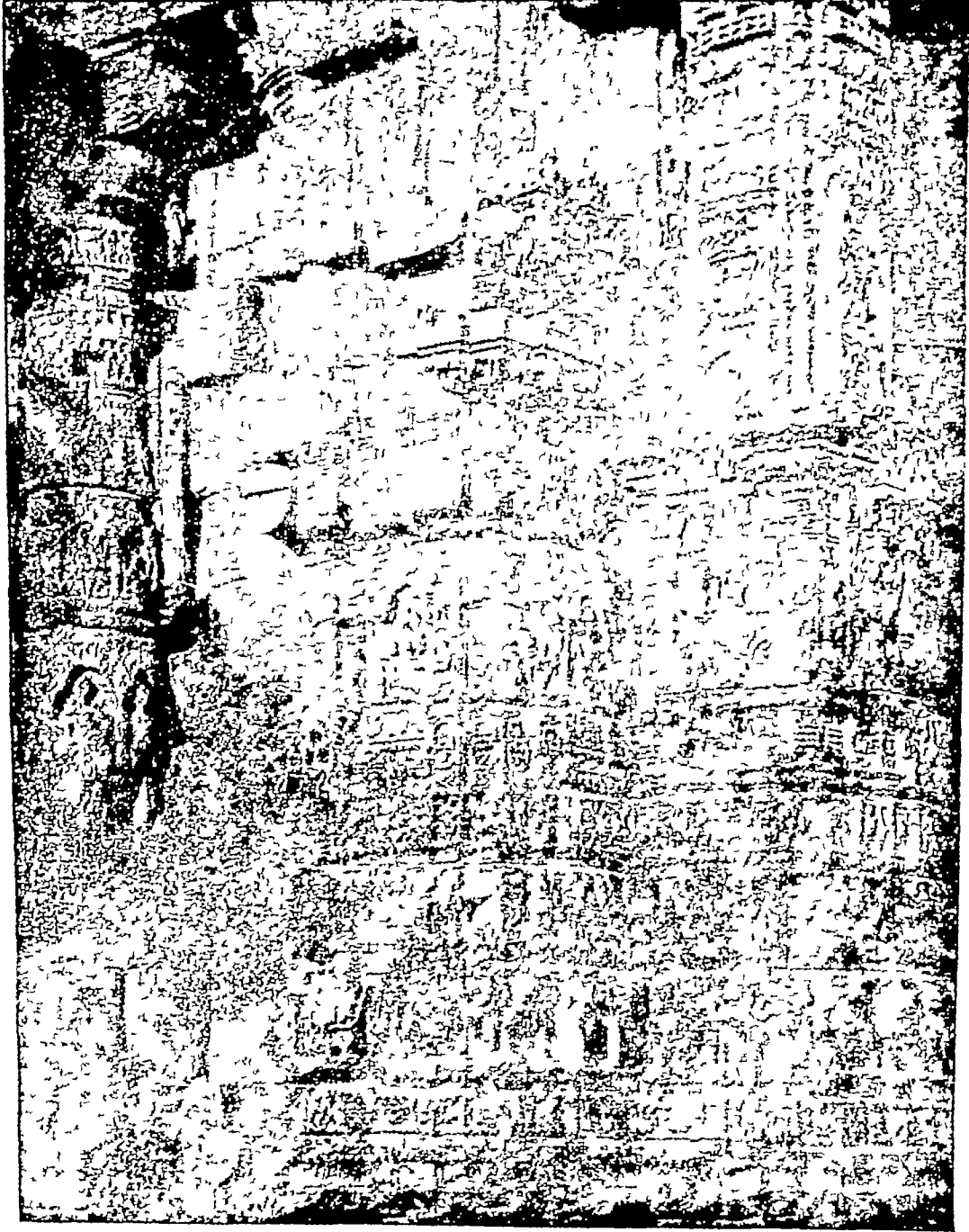
सोमनाथ के पुराने मंदिर के भग्नावशेष *Remains of old Somnāth Temple*
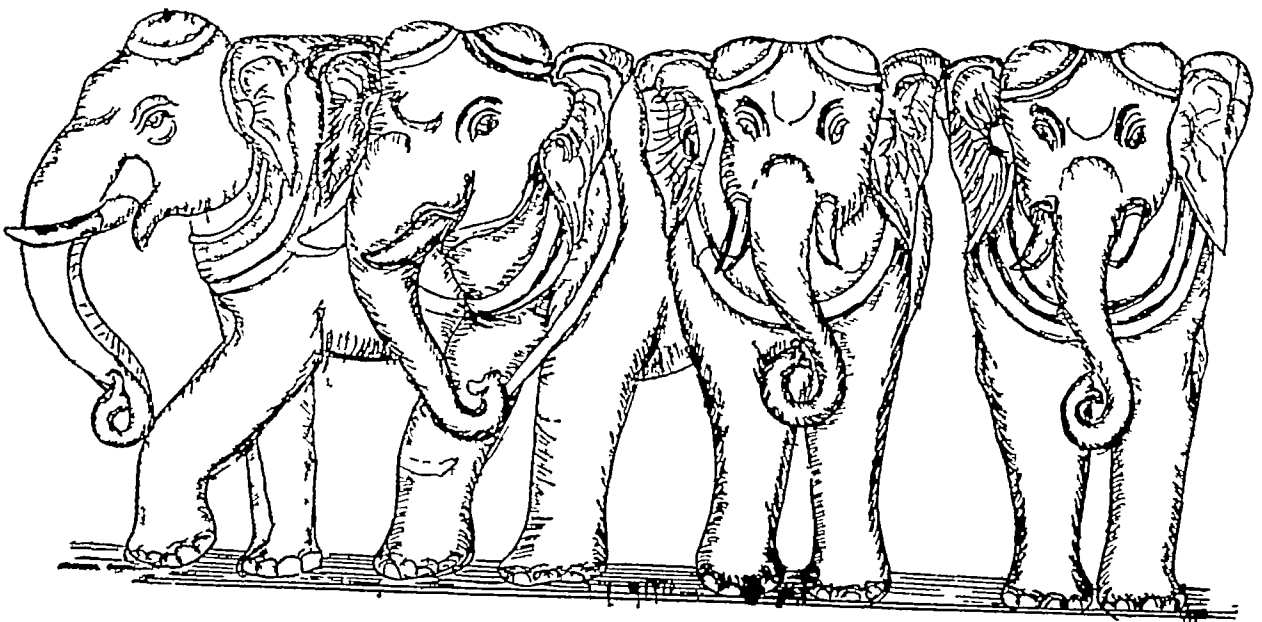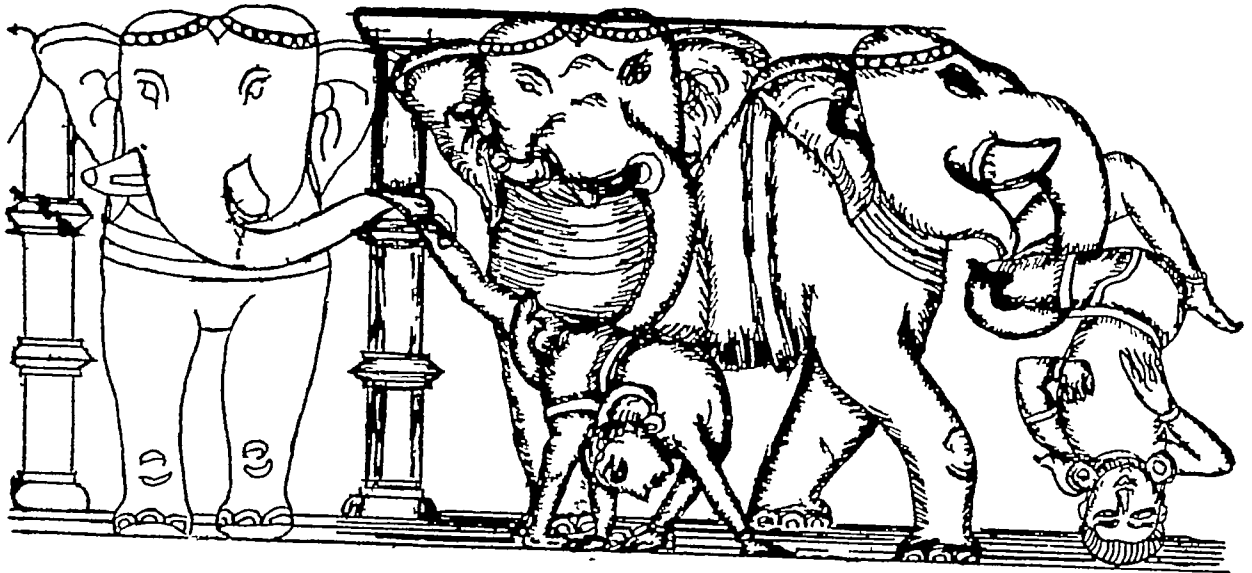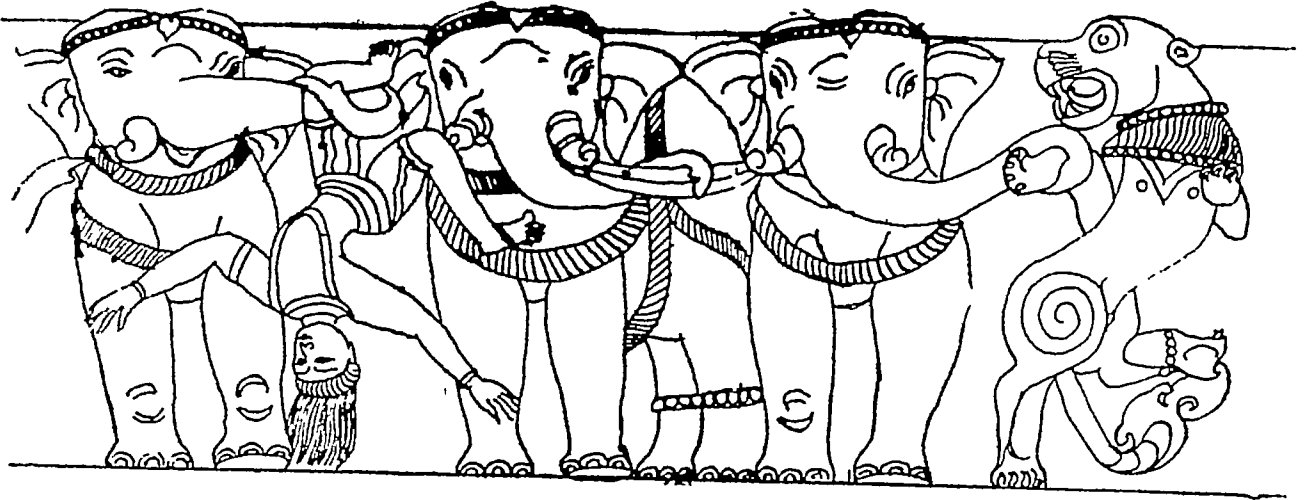
महापीठ के हस्तिस्तर *Layers of Elephant of Mahāpītha*
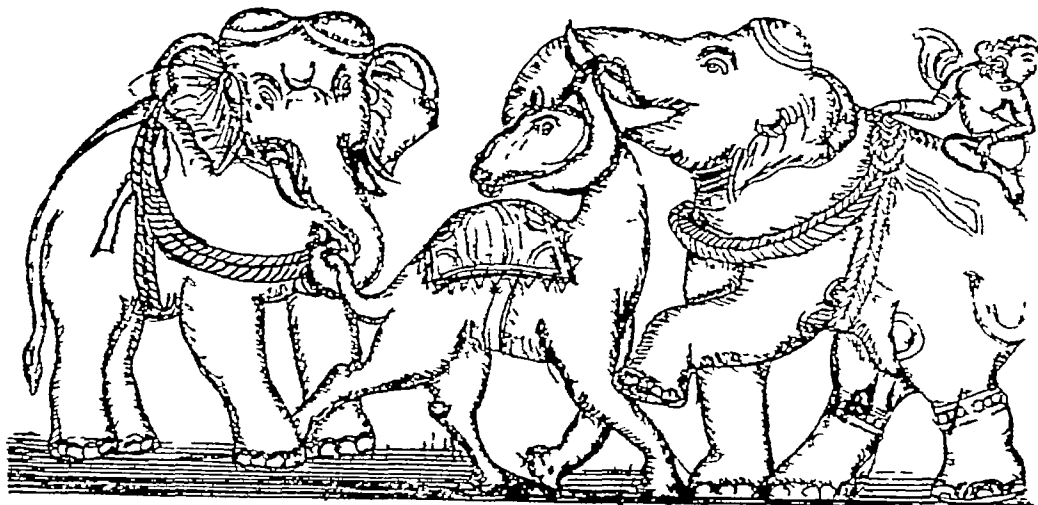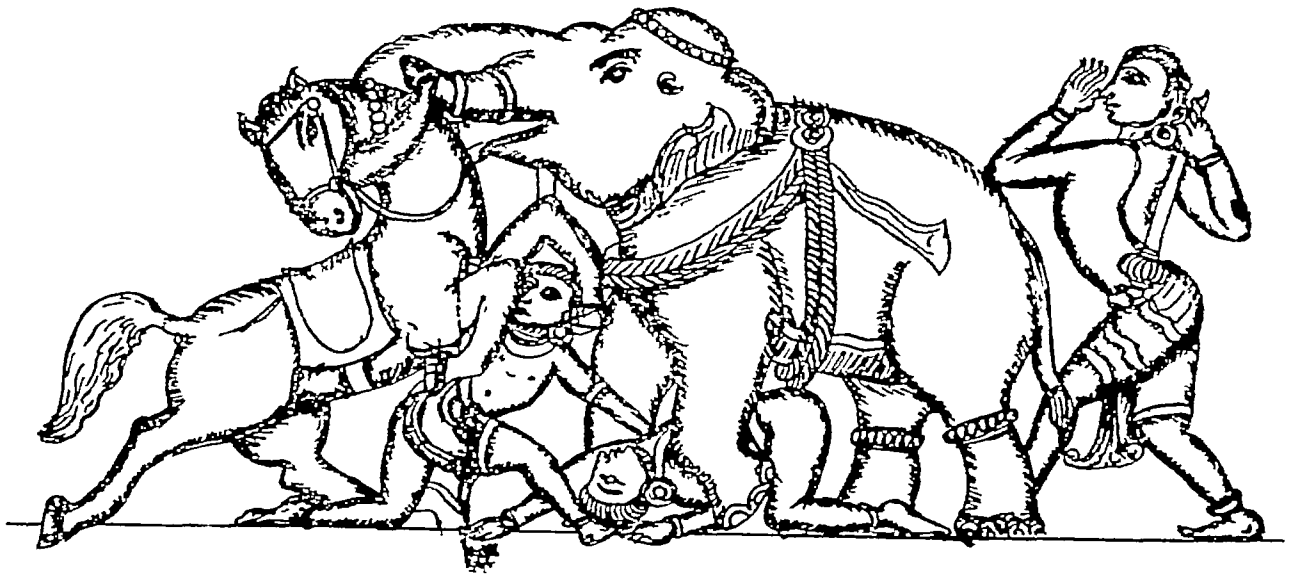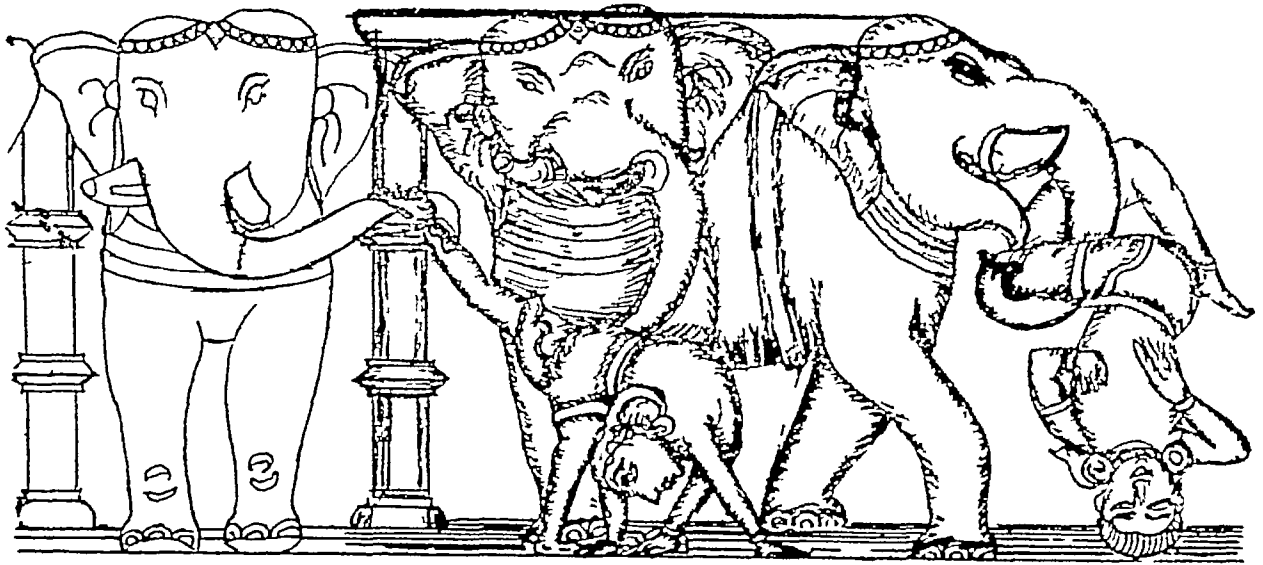
हस्त्यस्तर *Layers of Elephant of Mahāpitha*
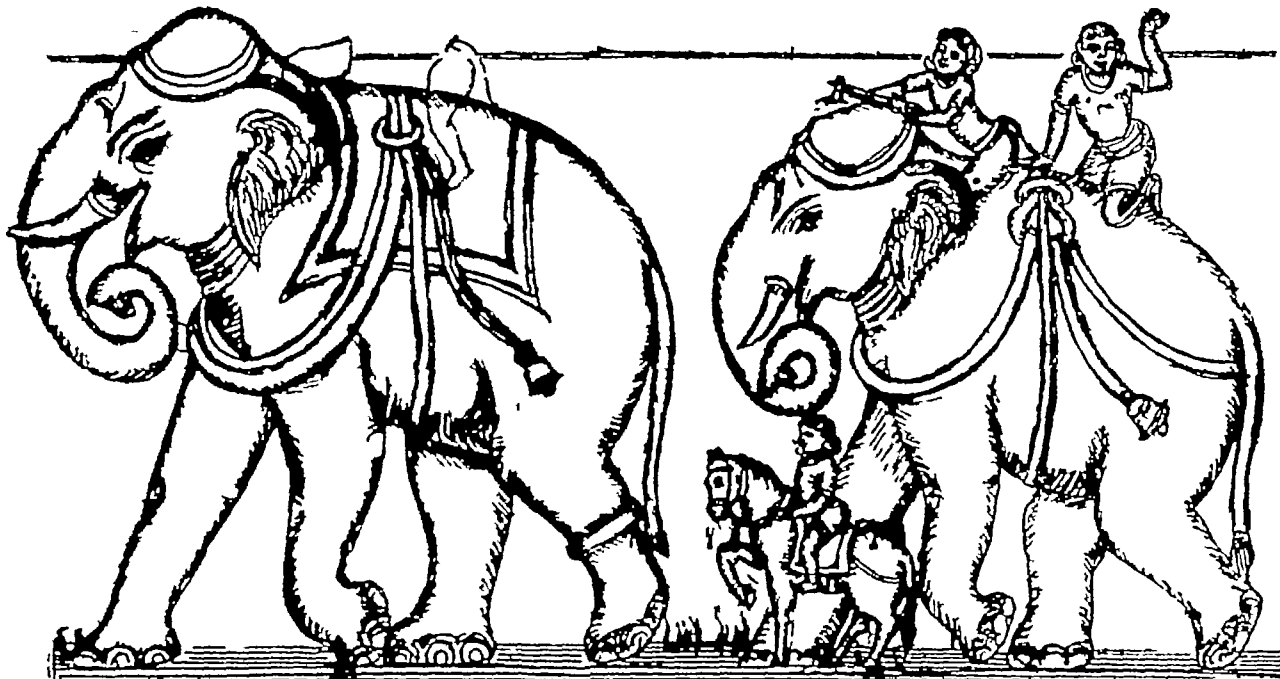
हस्तियस्तर *Layers of Elephant*
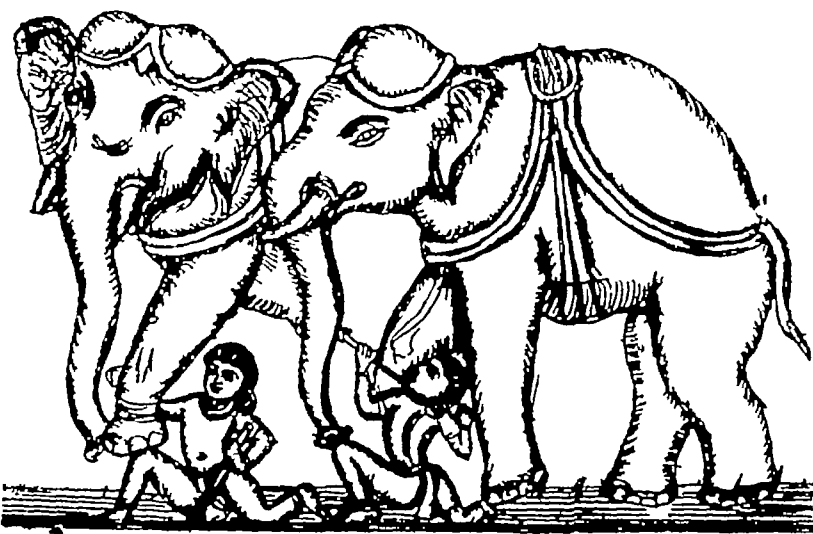
हस्तियस्तर *Layers of Elephant*

उद्गम में कपि
The Monkey in Pediment
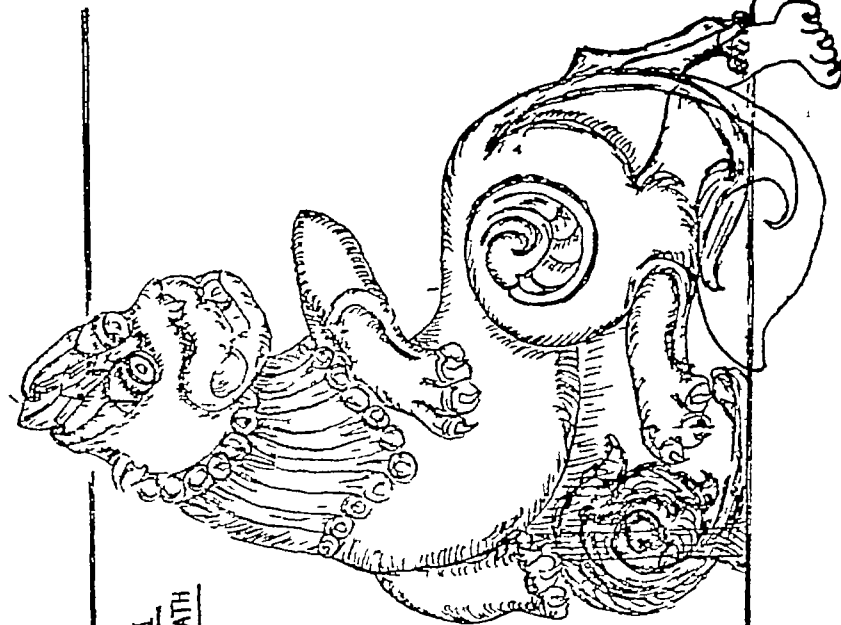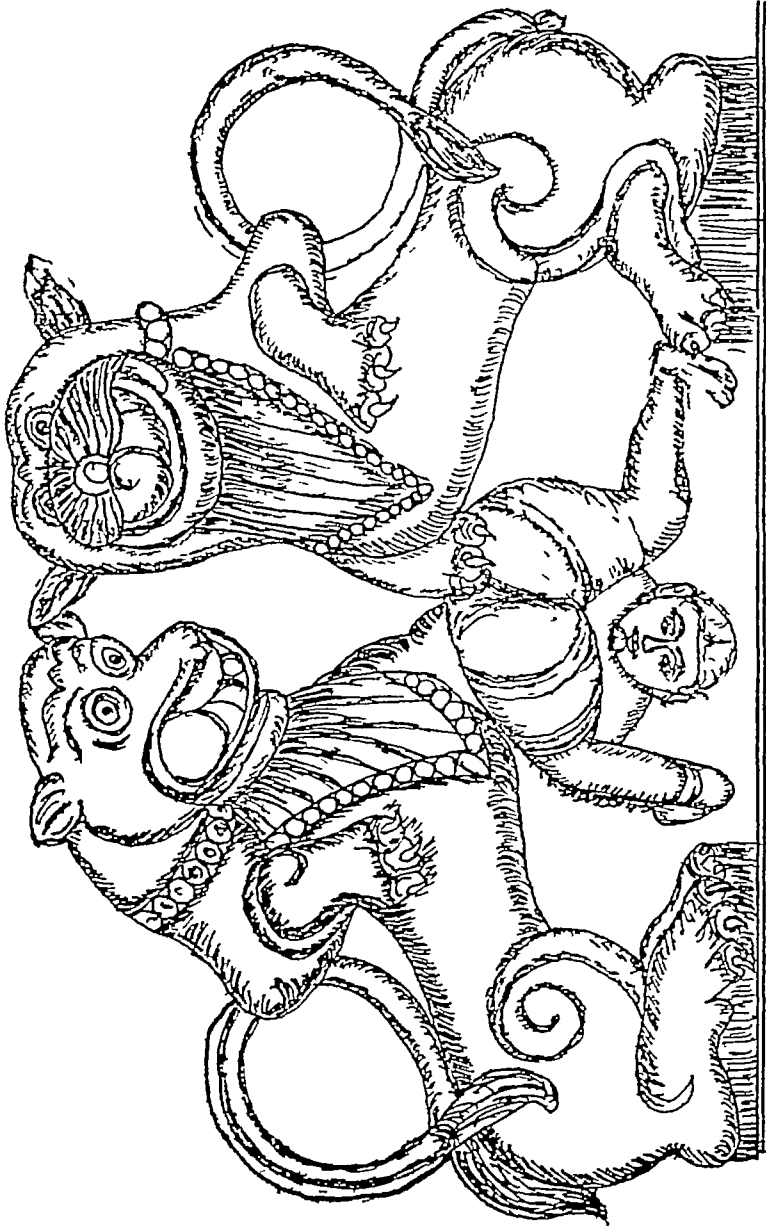
व्याघ्र
Lion
POSOMPURA
ARCHITECT SOMNATH
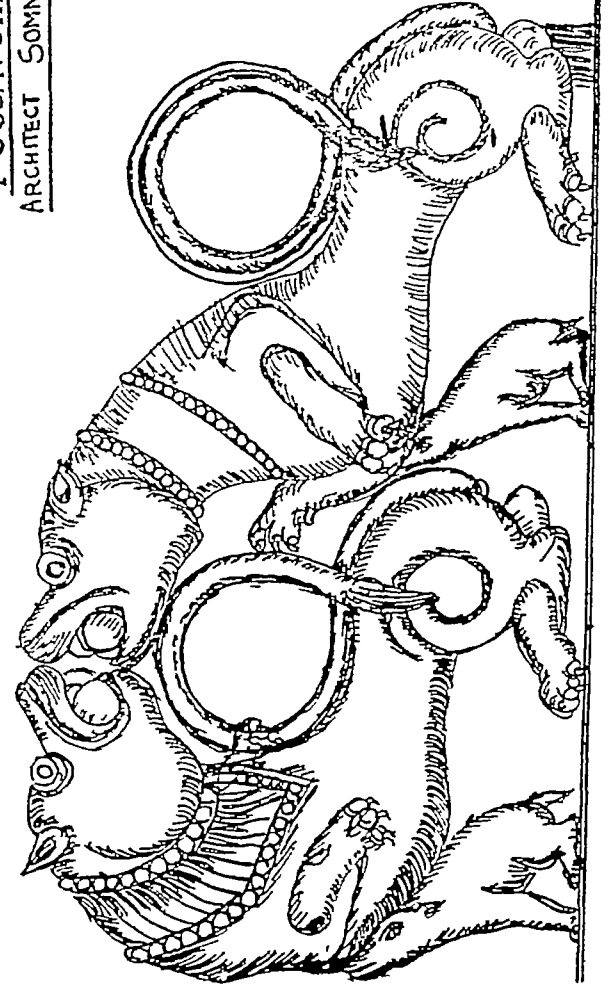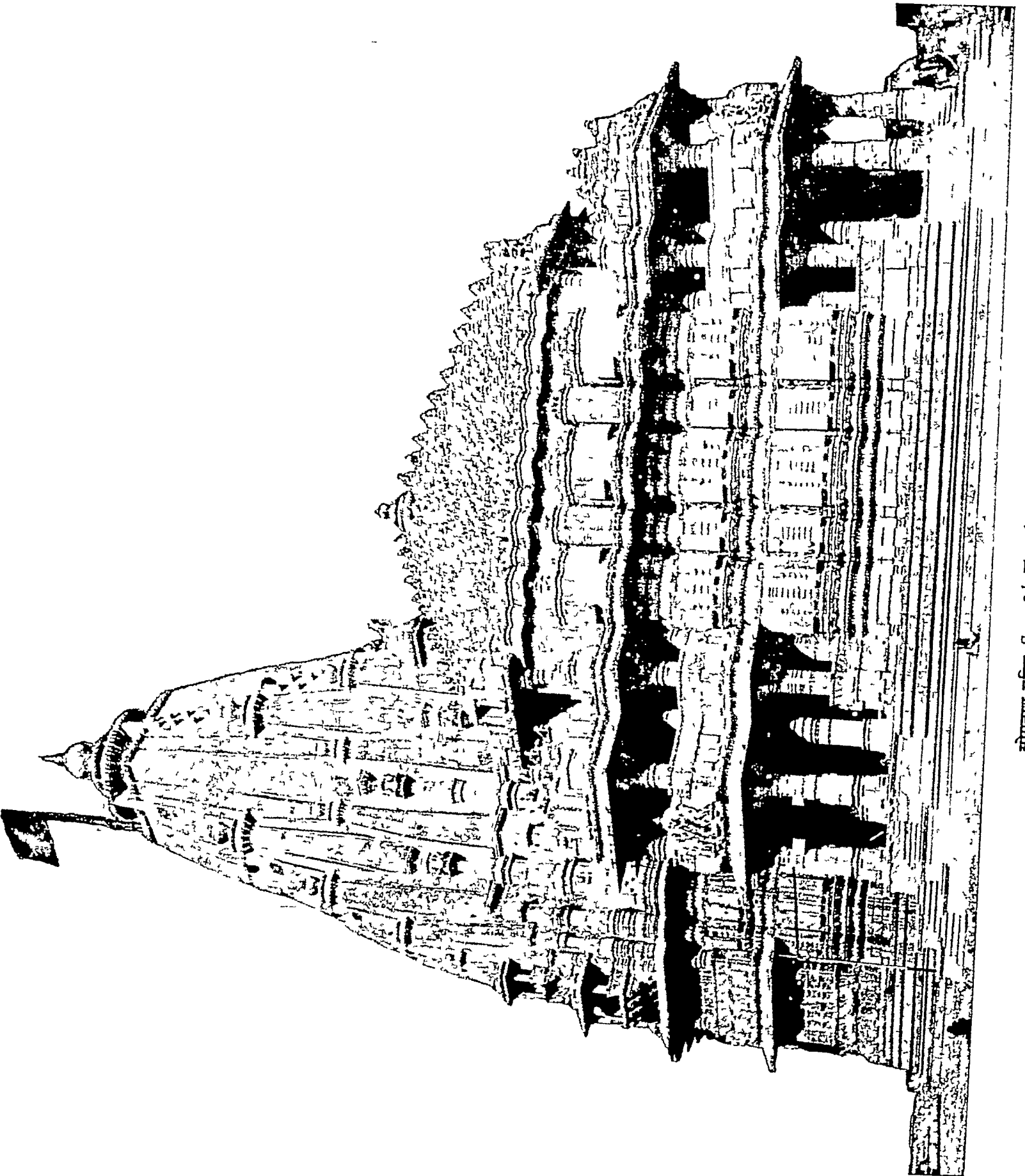
सोमनाथ मंदिर *Somnāth Temple*
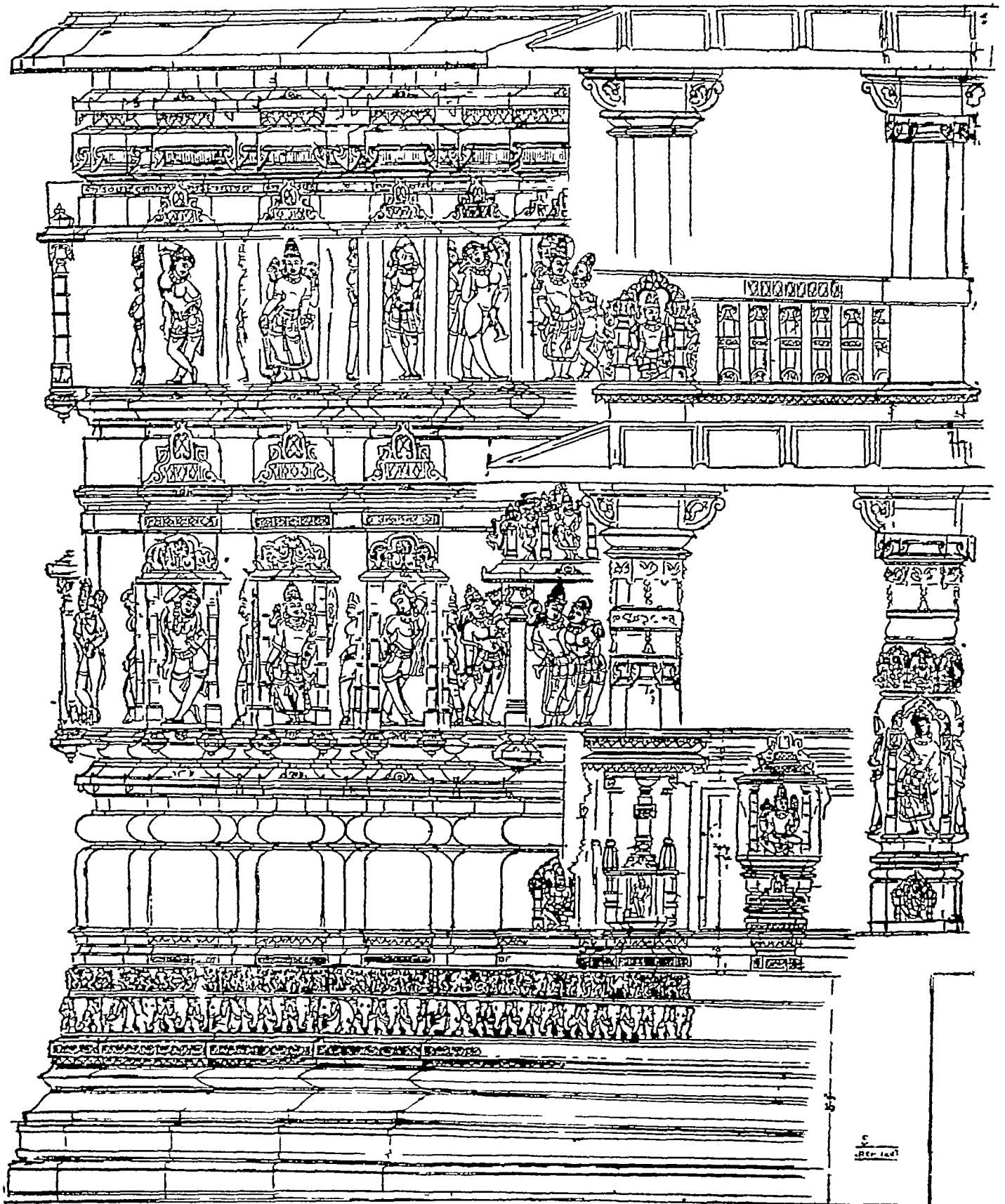
महापीठ युक्त द्वोमूनि अलकृत मडोवर, बिरलाग्राम, नागदा (मध्यप्रदेश)
Two storey Mandovara with Ornamented Mahāpitha Birlagram, Nagada (M P)
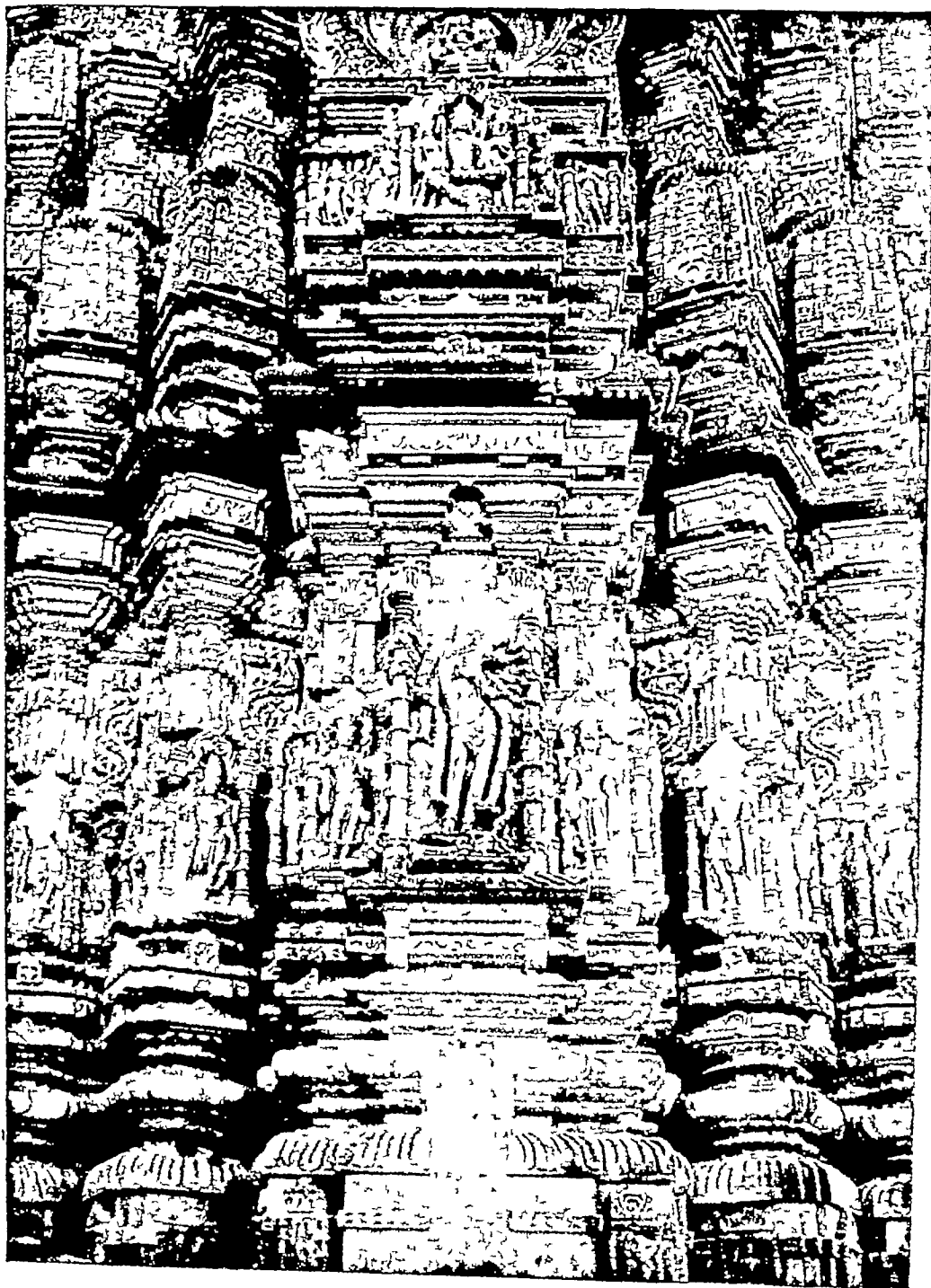
उदेश्वर मंदिर का मंडोवर (मालवा) *Mandovara of Udeshwar Temple (Malwa)*
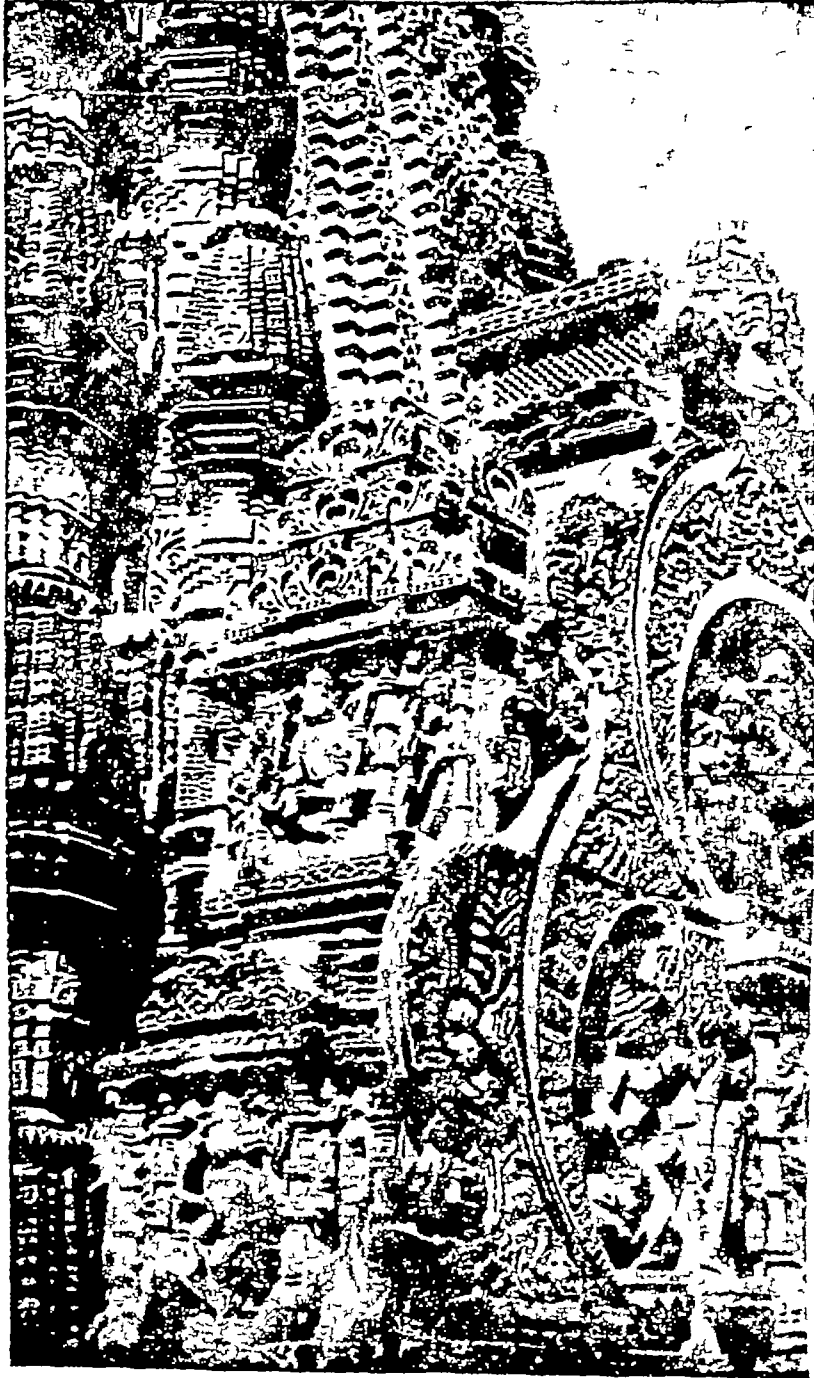
भूमिजप्रासाद के शिखर के शुरसेन (शुकनास) (उदयपुर–मालवा)
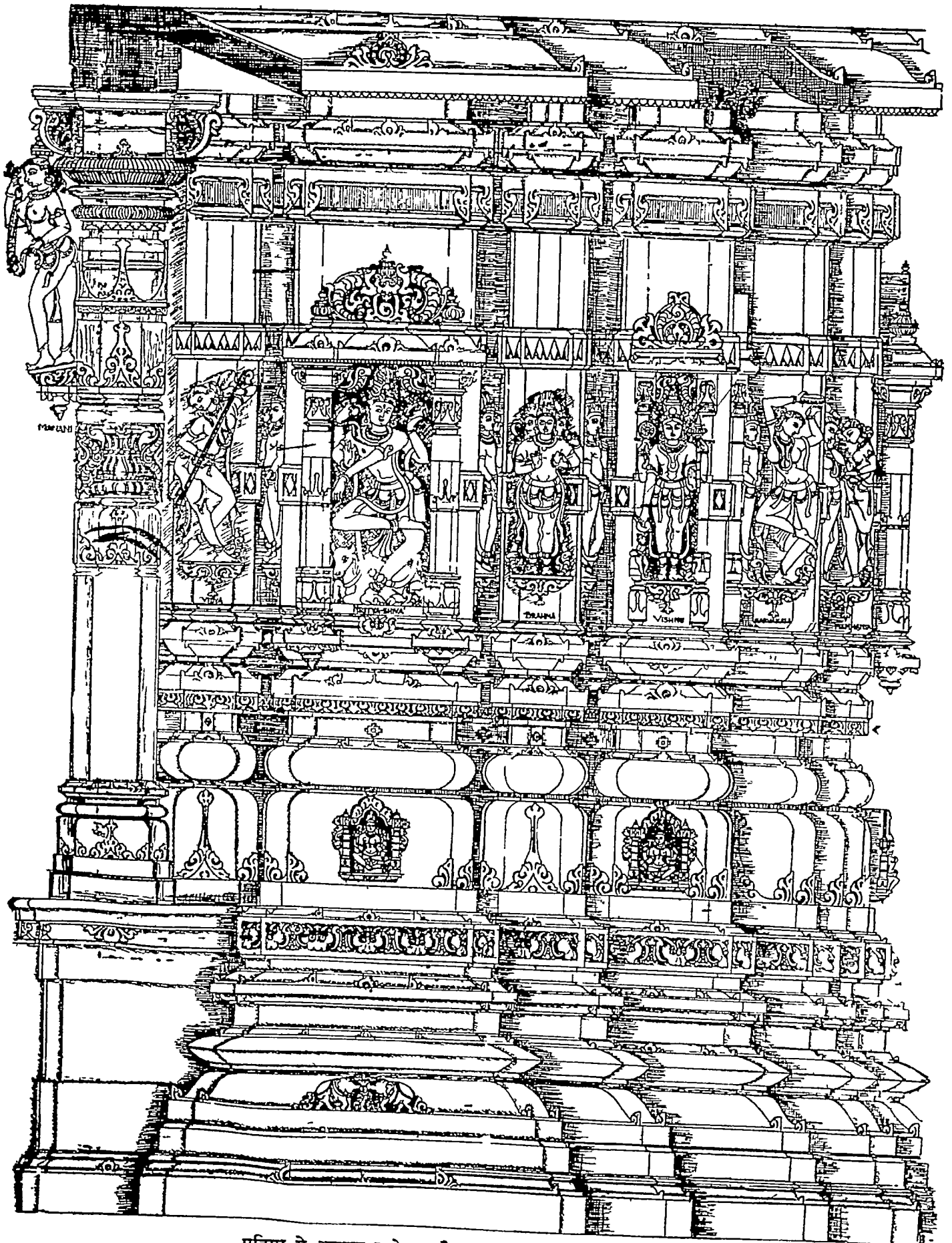
प्रतिमा से अलङ्कृत मडोवर और स्तम्भ, विठोवा मदिर (कल्याण)

Pillar and Mandovara Decorated with Images, Vithoba Temple (Kalyan)

मडोवर का मुखभद्र *Mukhabhadra of Maudovara*
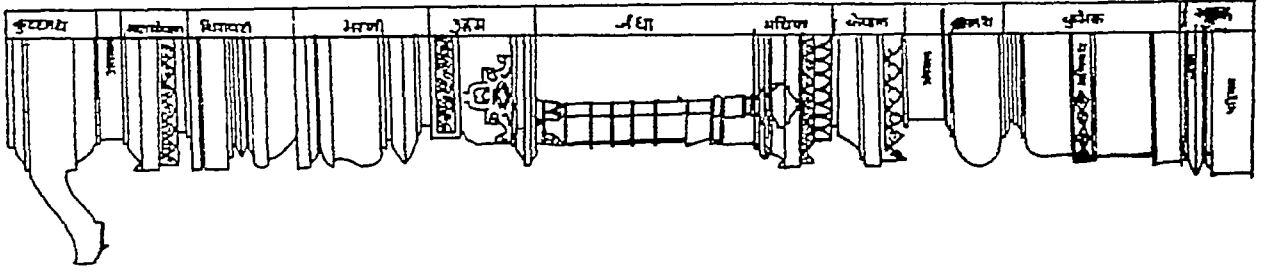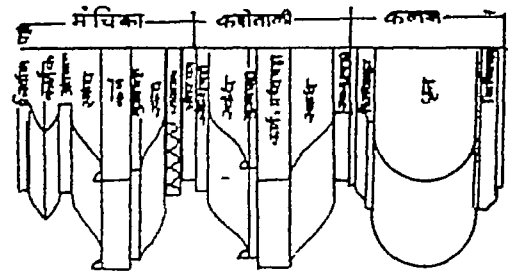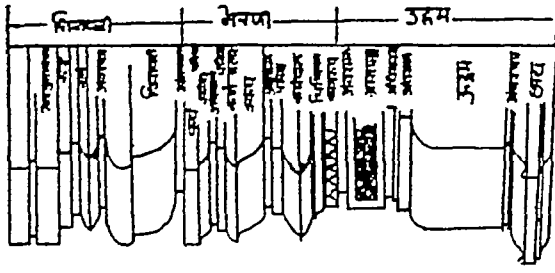
मडोवर का स्तर विभाग *Details of Maudovara*

स्तम्भ और मंडोवर का समन्वय *Co-ordination of Mandovara and pillar*
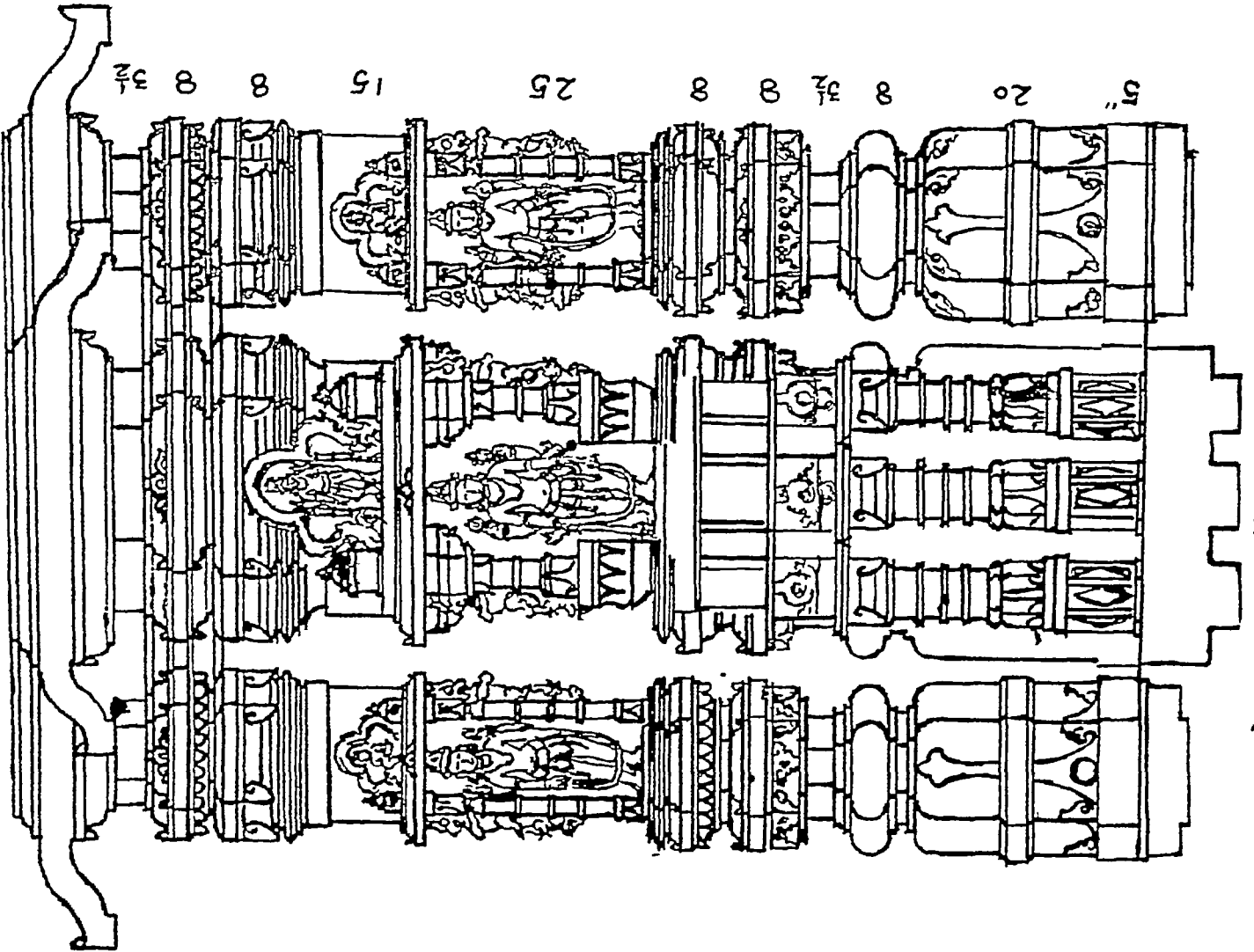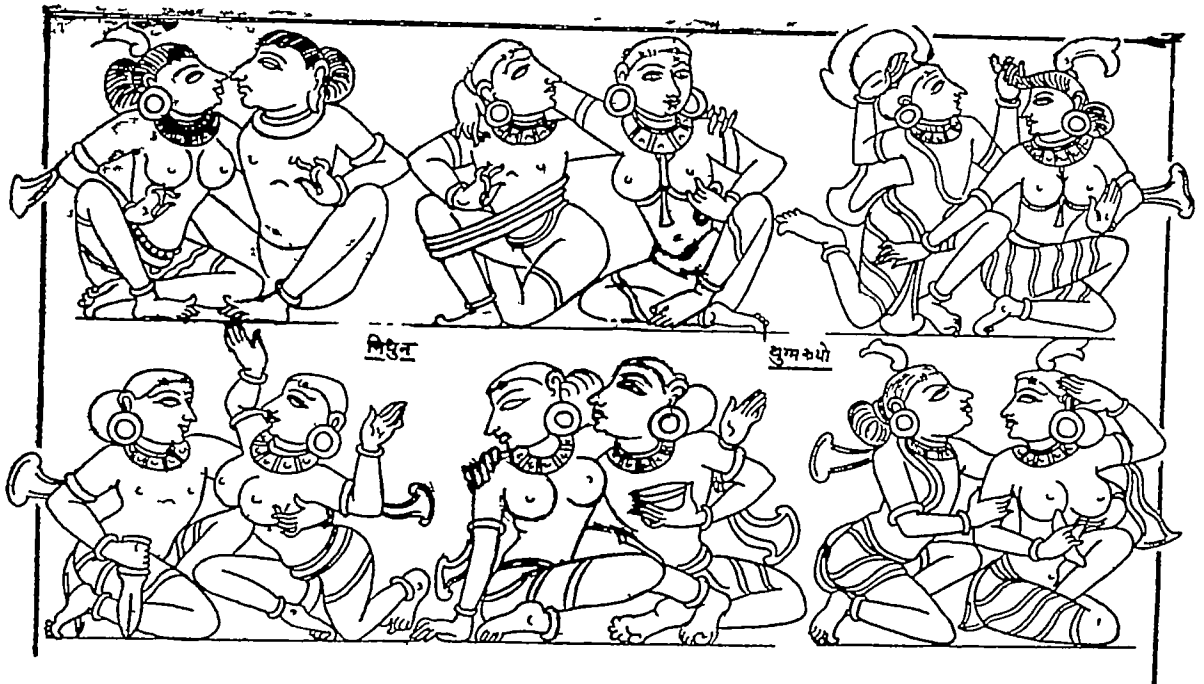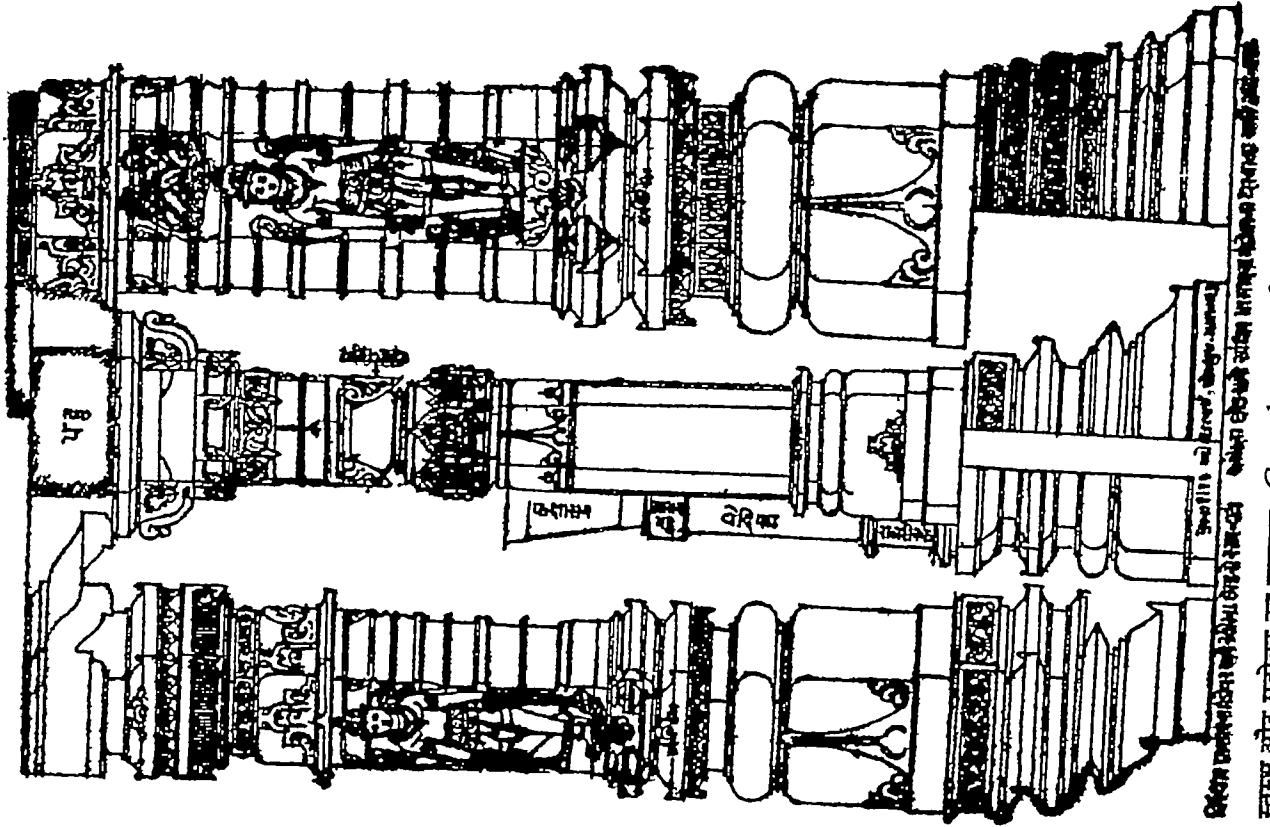
मंडोवर के जंघोर्ध्व युग्मस्वरूप *Couples on Upper Portion (Janghā)*

मंडोवर और महापीठ के सुक्ष्म विभाग

उत्तरंग

द्वारशाख

मालाधर

शंखोद्वार

नवशाखद्वार

कक्षासन

Details of Mandovara and Mahapitha (Plinth)

Door-Lintel

Door-Jamb

Maladharas

Shankhodwar, Basement of Door

Navshakhdwar

Kakshasana (Door-Ways)

अलङ्कृत उत्तरंग *Decorated Uttaranga, Door-Lintel*
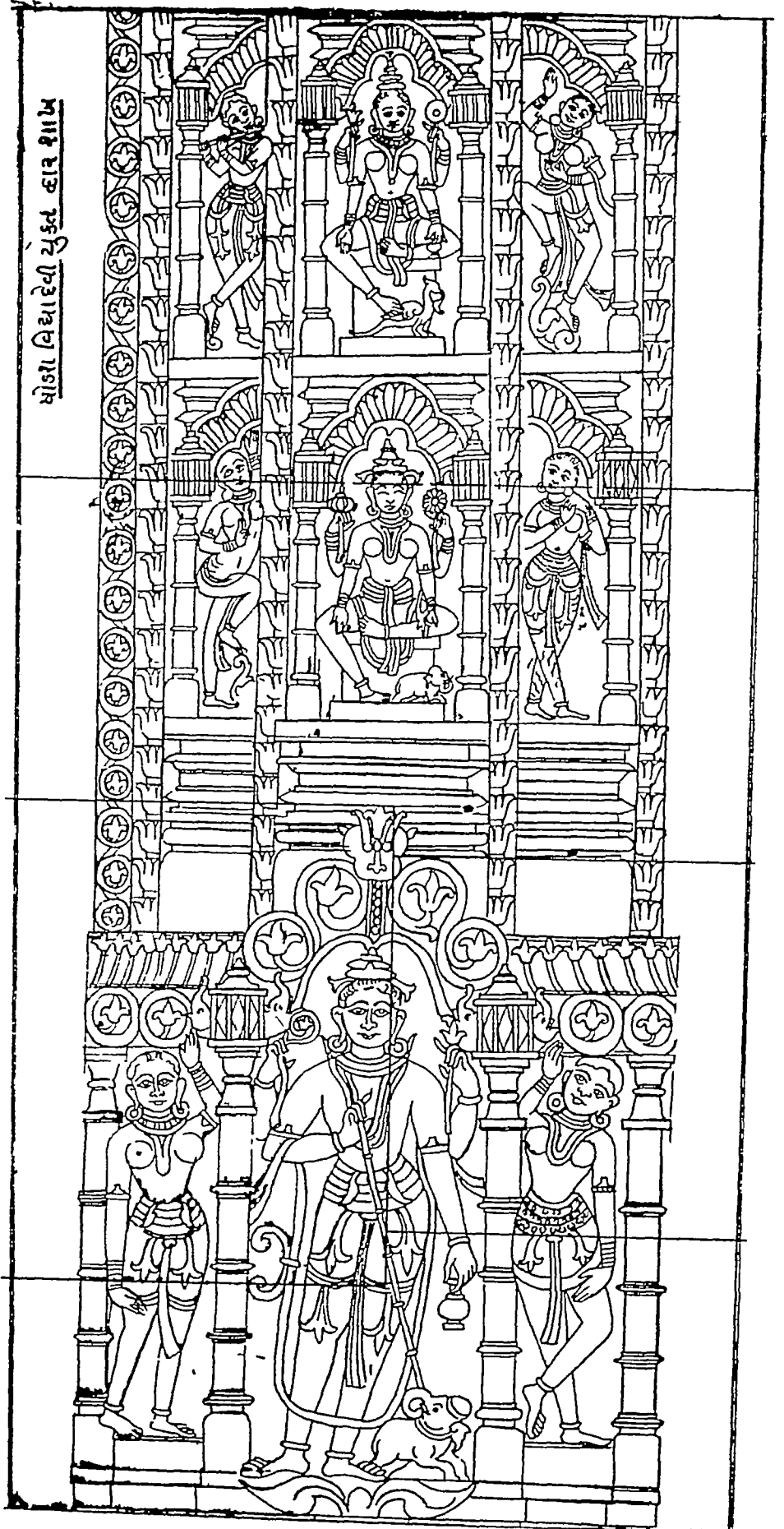
अलङ्कृत द्वारशाख *Dwārashākha, Door-Jamb*
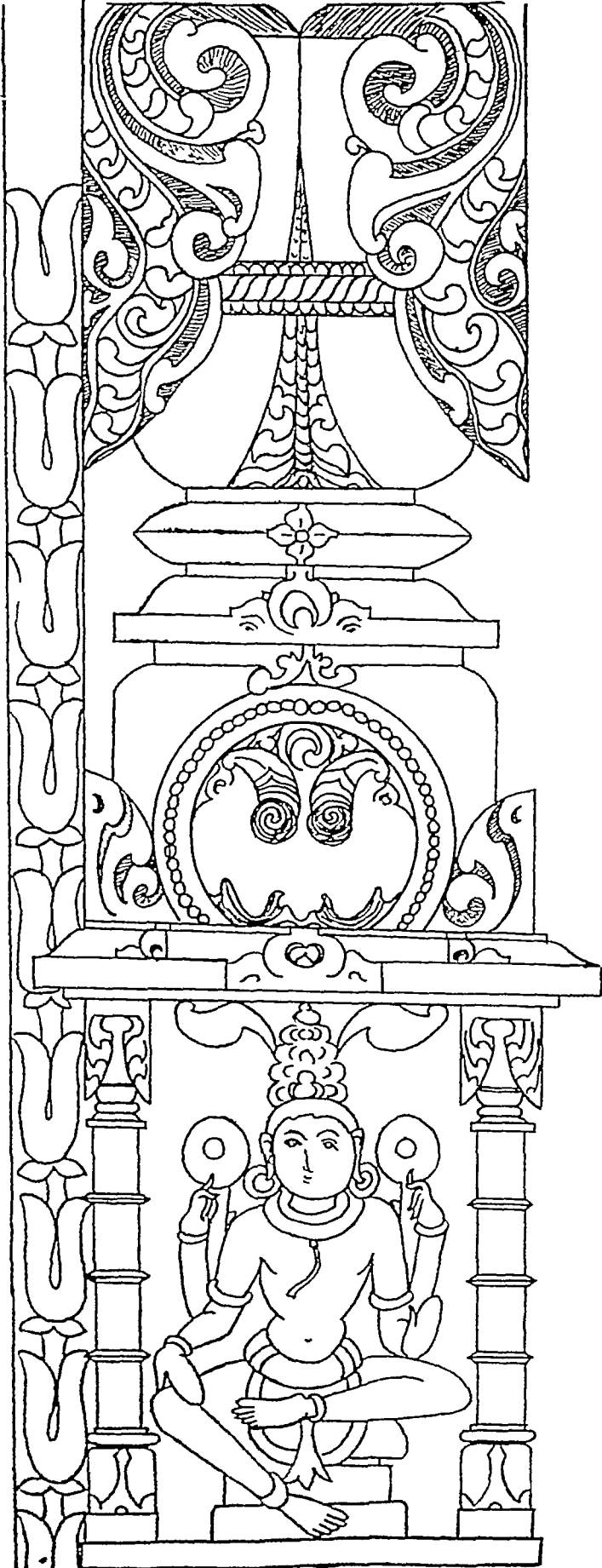
द्वारशाख *Door-Jamb*
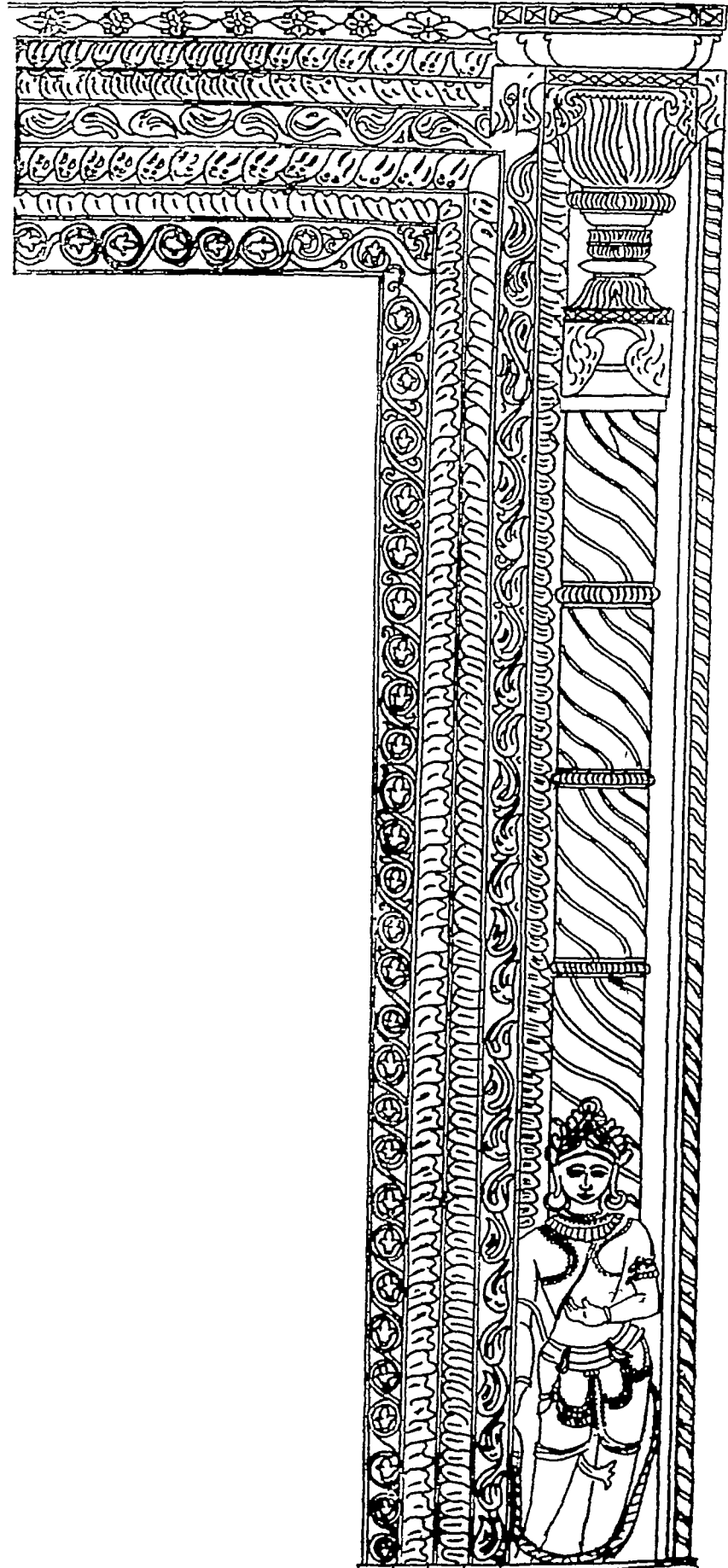
अलंकृत द्वारशाख, किल्ला, ग्वालियर *Ornamented Door-Jamb, Gwalior Fort*
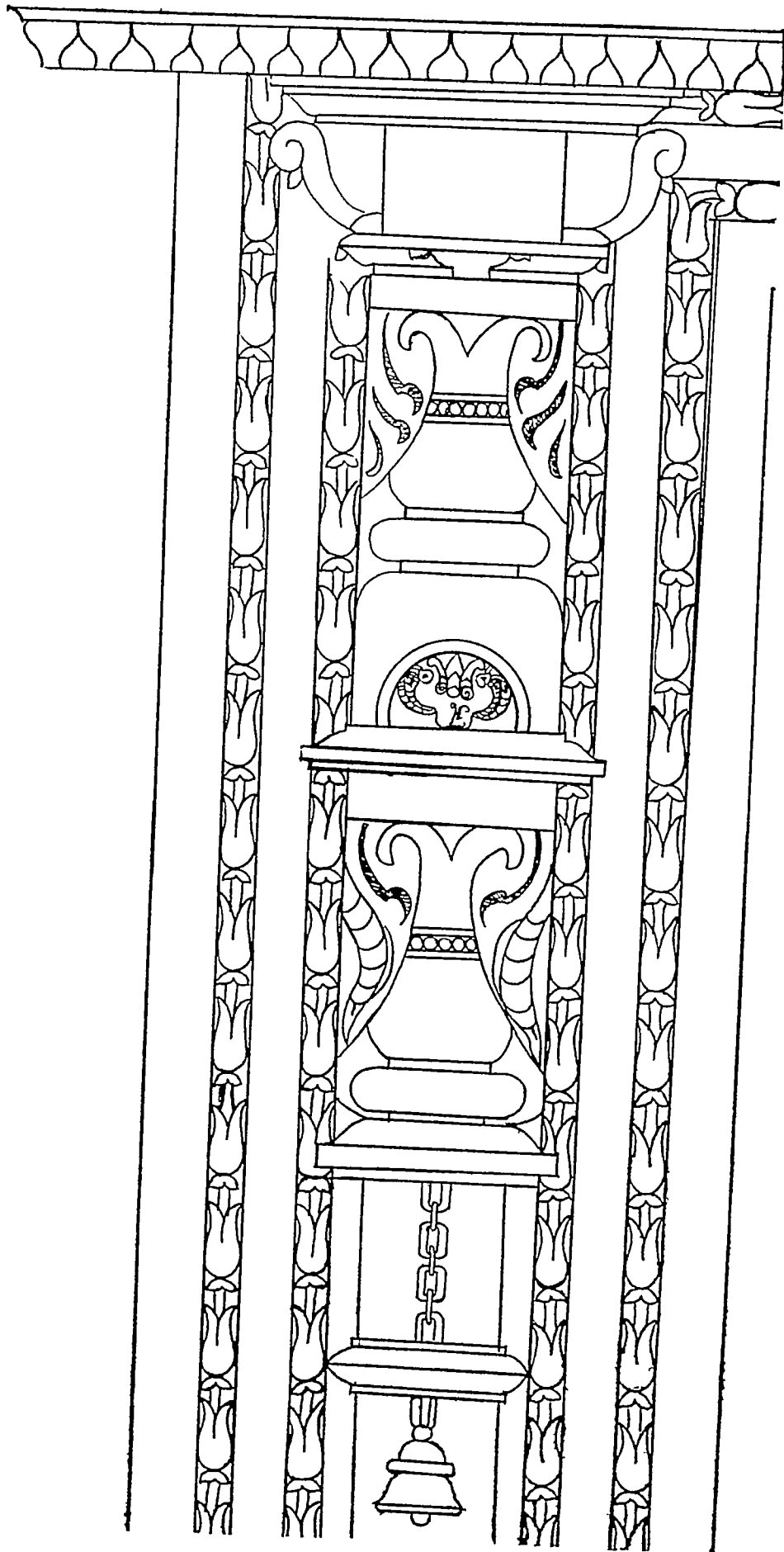
अलंकृत द्वारशाख *Ornamented Dwārashākha*
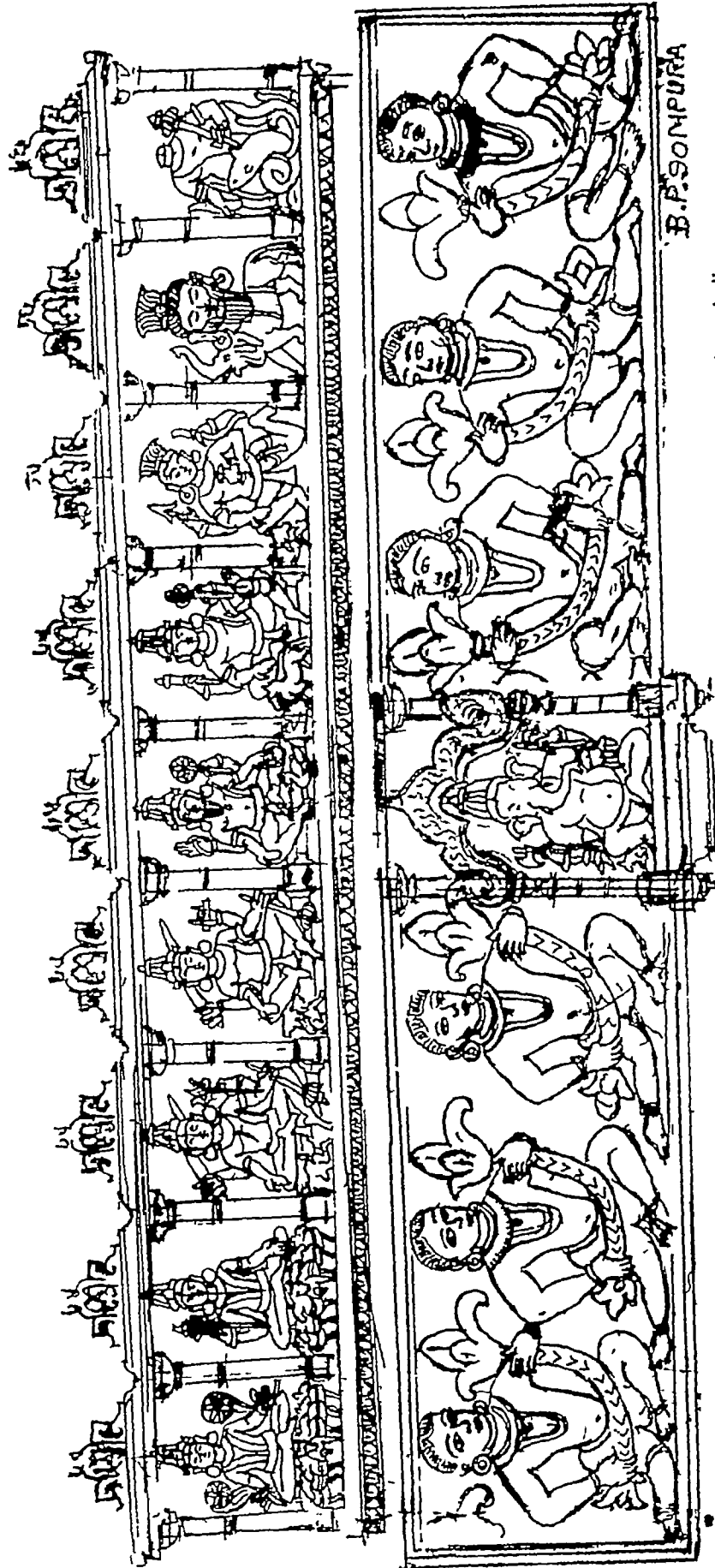
मालाधर और नवग्रह से अलंकृत द्वारोपरी उत्तरंग Upper Part of Door-Lintel Decorated with Nine Planets and *Mālādharas*
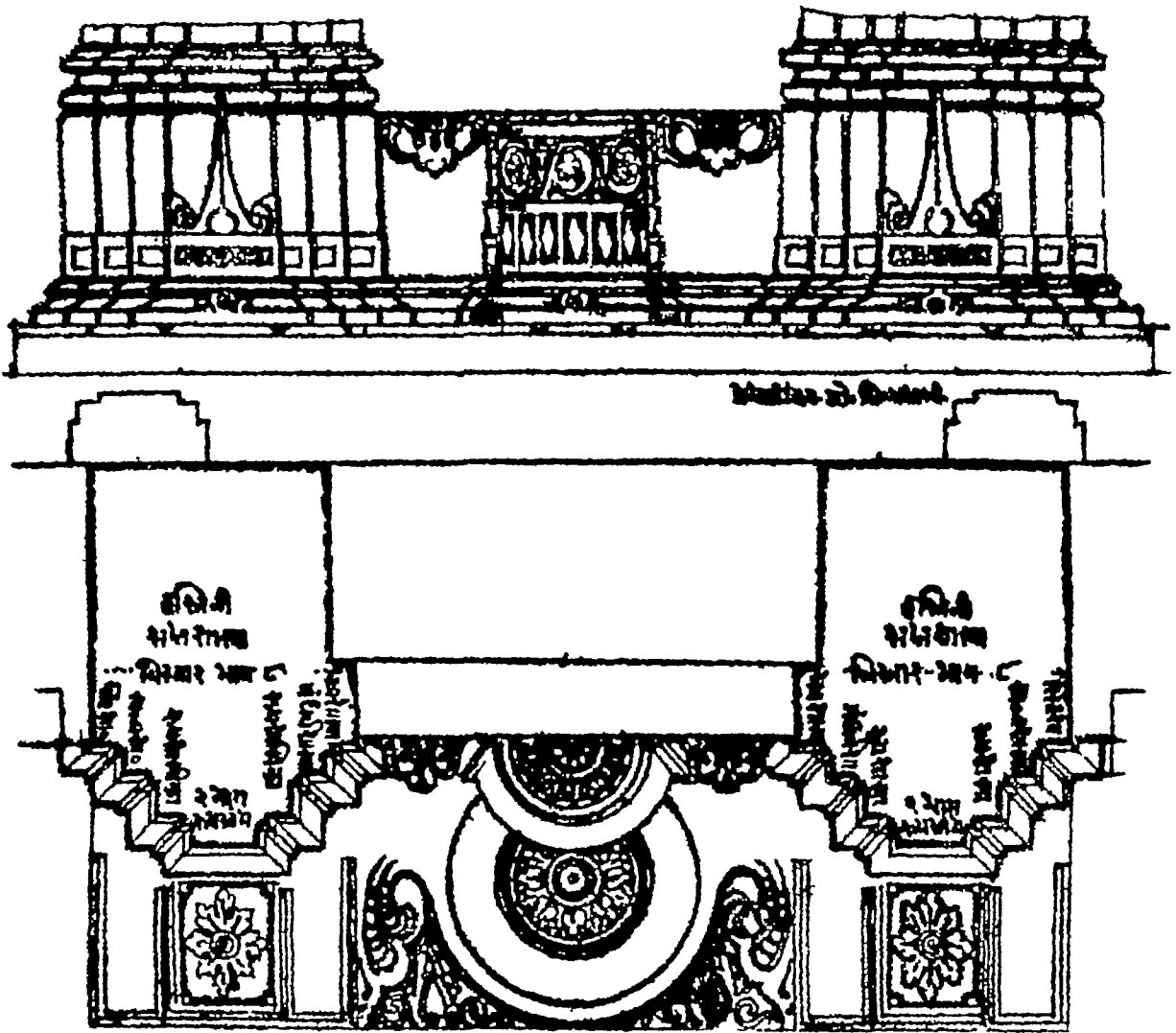
सप्तशाखा तल, उदम्बर और शखोद्धार *Saptashākhā Tal, Udambara and Shankhodwāra, the Basement of Door*
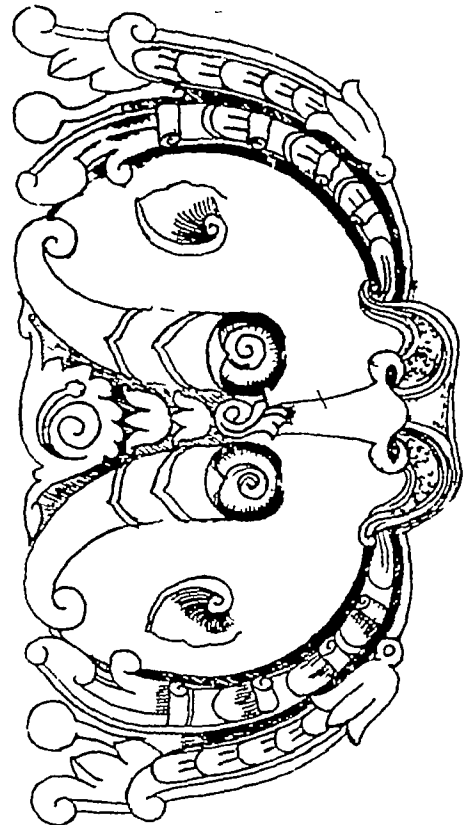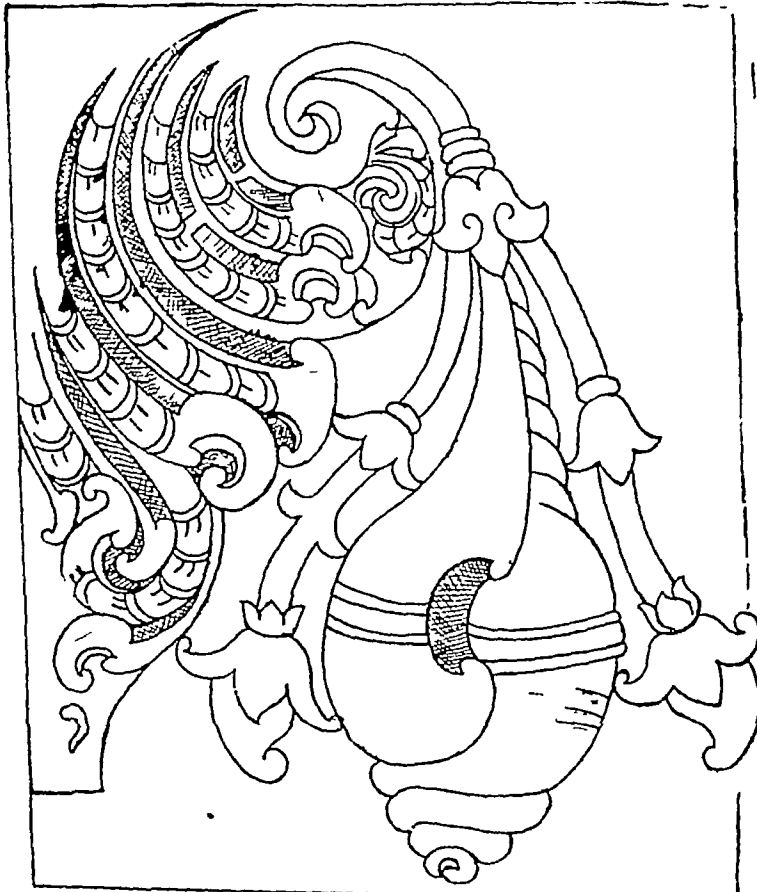
शखोद्धार का गगारक और शख *Gāgāraka of Shankhodwāra and Conch-Shell*
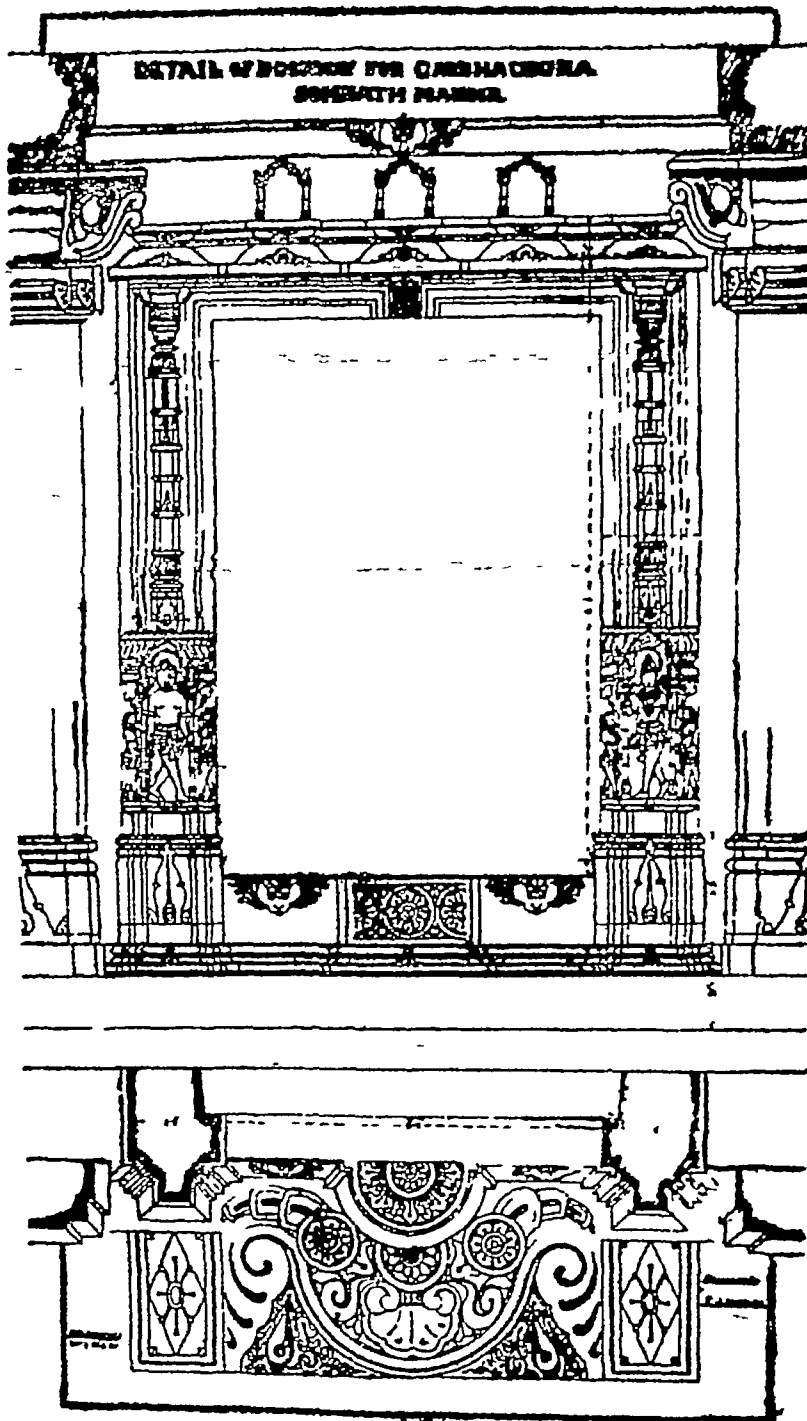
नवशाख द्वार *Navashākha Dwāra*
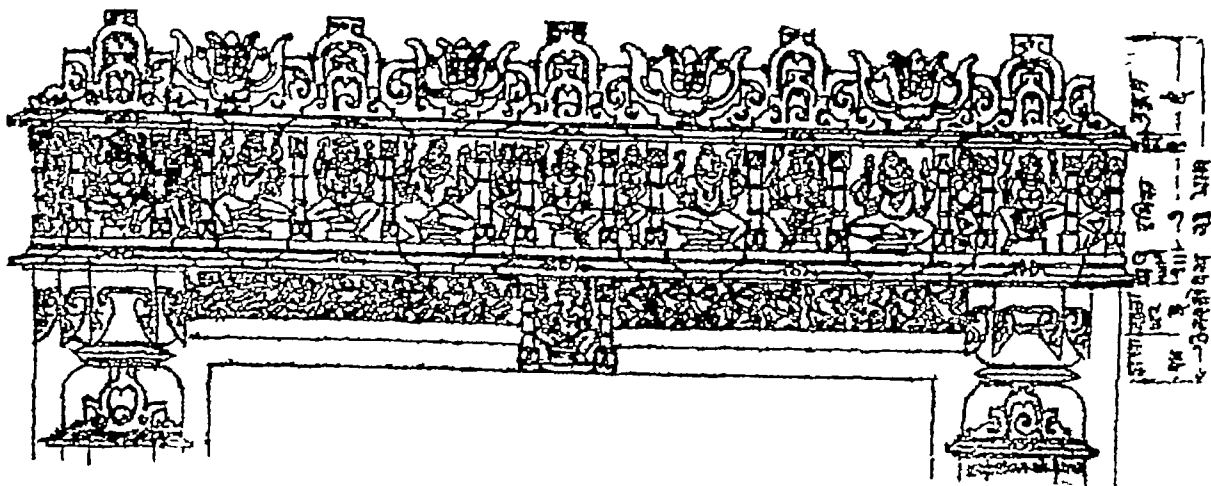
द्वारोपरी उत्तरंग *Uttaranga, Upper part of Door-Lintel*
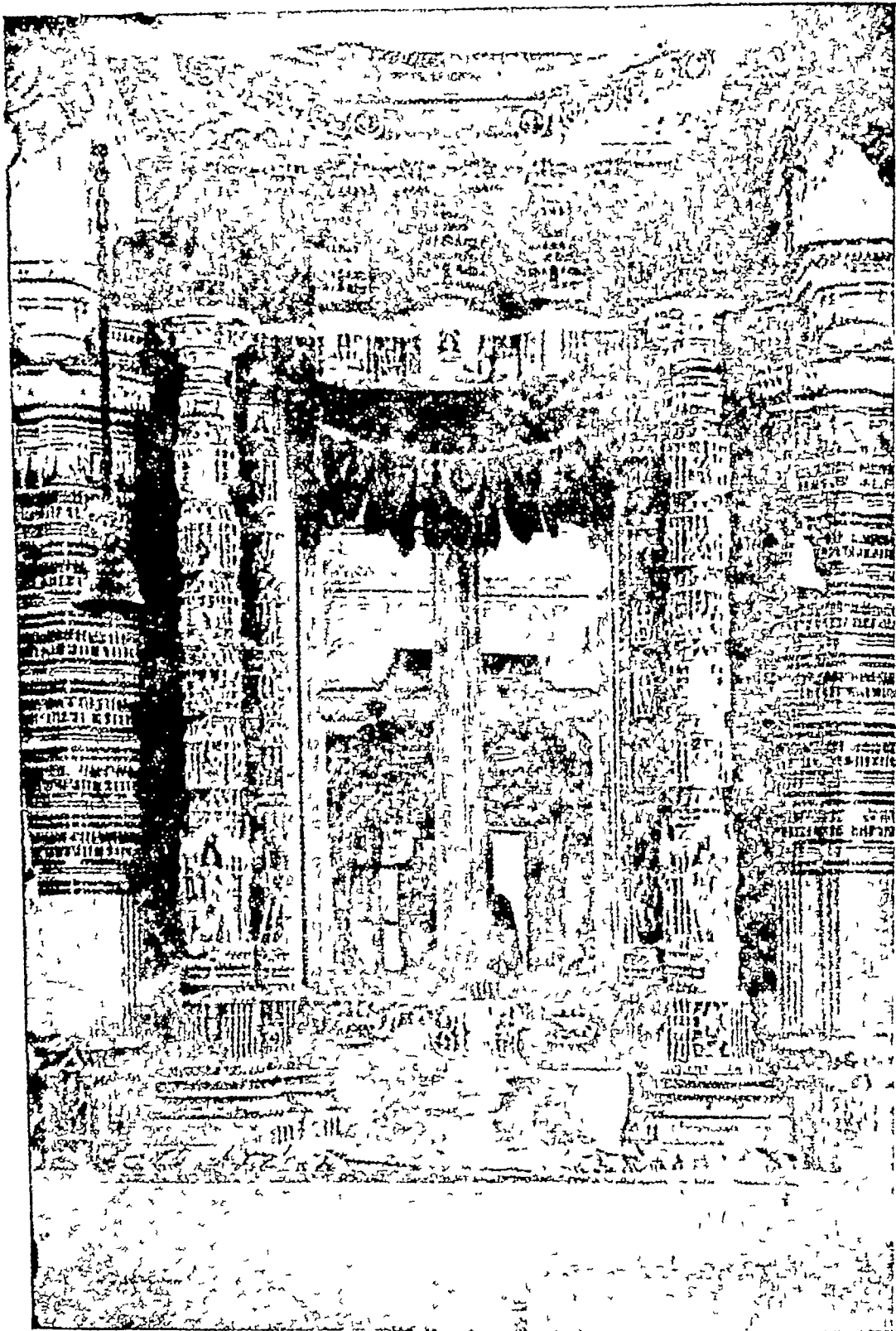
समदल रूपस्तभ–रूपशाखायुक्त कलामयद्वार, उदम्वर–उत्तरग लुणींग वसही–देलवाडा–आवु

रूपशाखायुक्त द्वार उदम्बर–उत्तरग–मध्य मे परिकर साथ प्रतिमा देलवाडा आबु
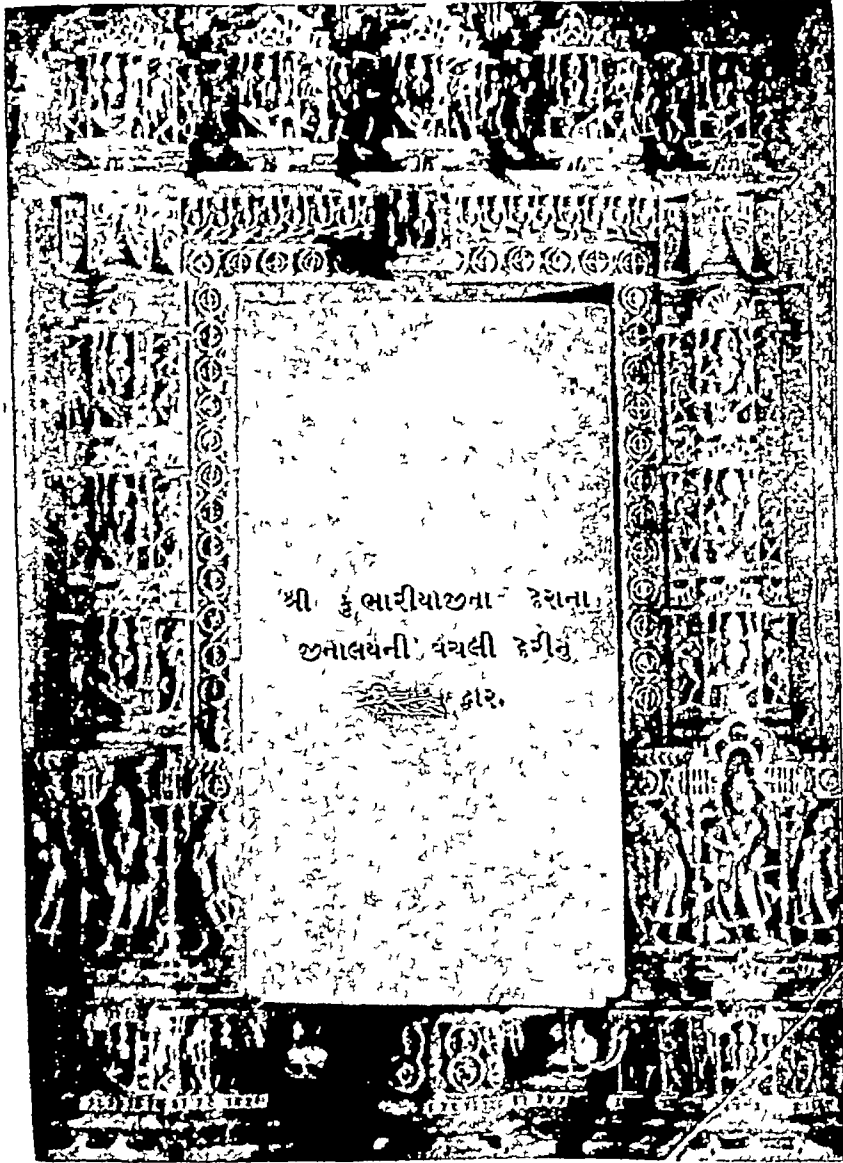
रूपशाखायुक्त पचशाखा द्वार उदम्बर उत्तरग—आरासणा (अबाजी)
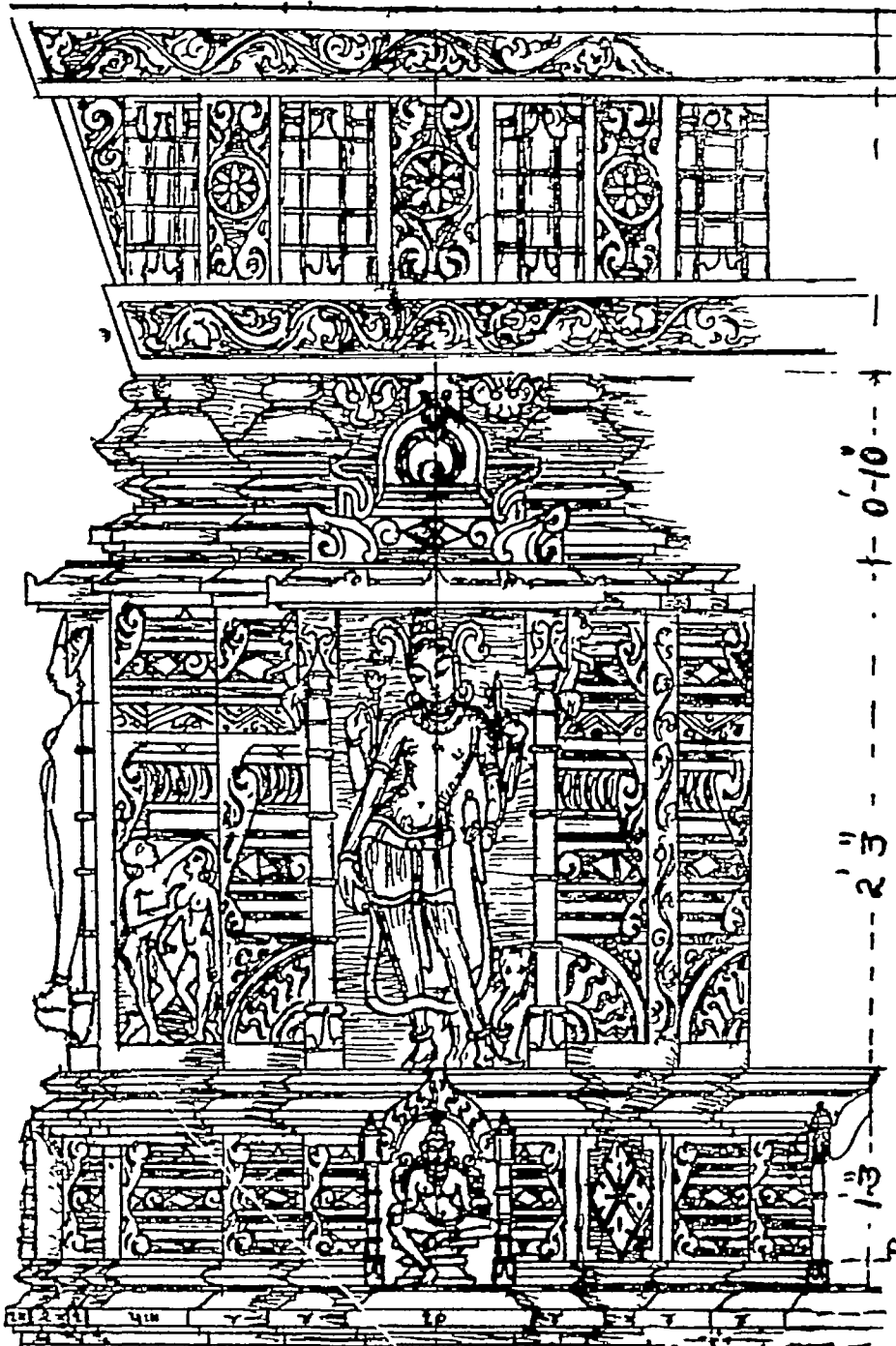
KAXAGAN
ASANAPATT
0'-10"
VEDIKA
2'3"
RAJSENAK
1'3"
सुखासन
Sukhāsana
आसनपट
Āsanapata
वेदिका
Vedikā
राजसेनक
Rājasenaka
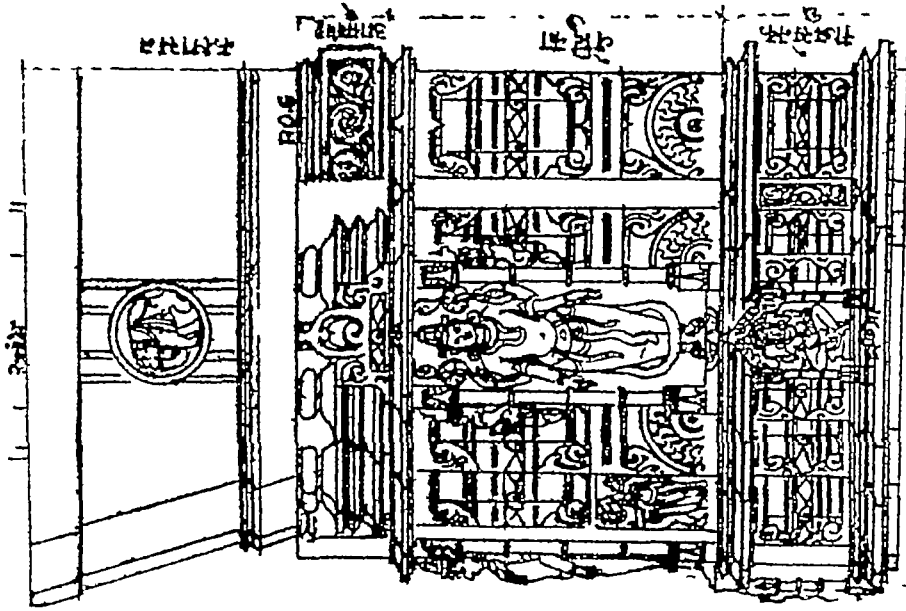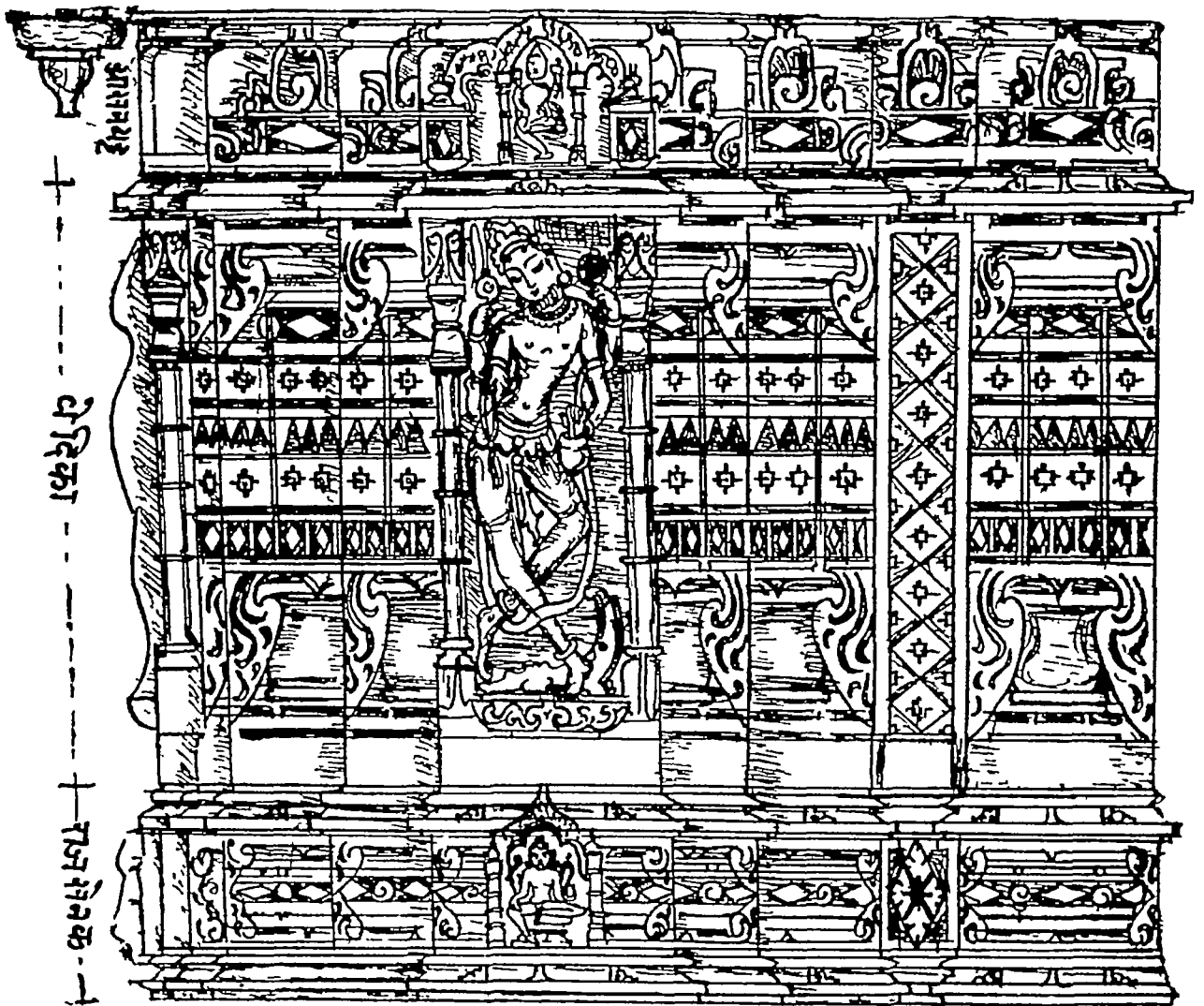
कक्षासन *Kakshāsana*
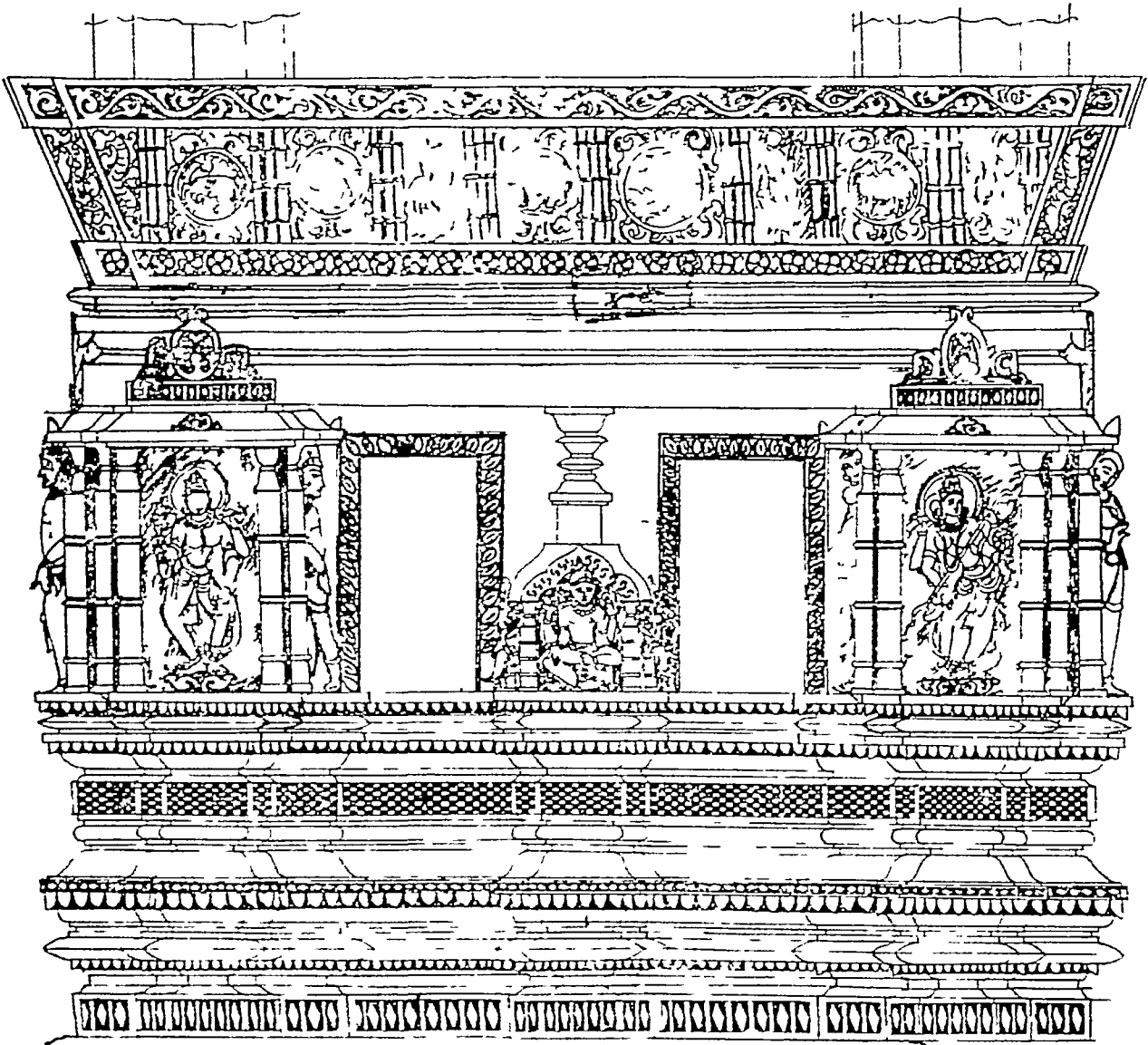
कक्षासन *Kakshāsana*

कक्षासन, ग्वालियर किल्ला *Kakshāsana, Gwalior Fort*
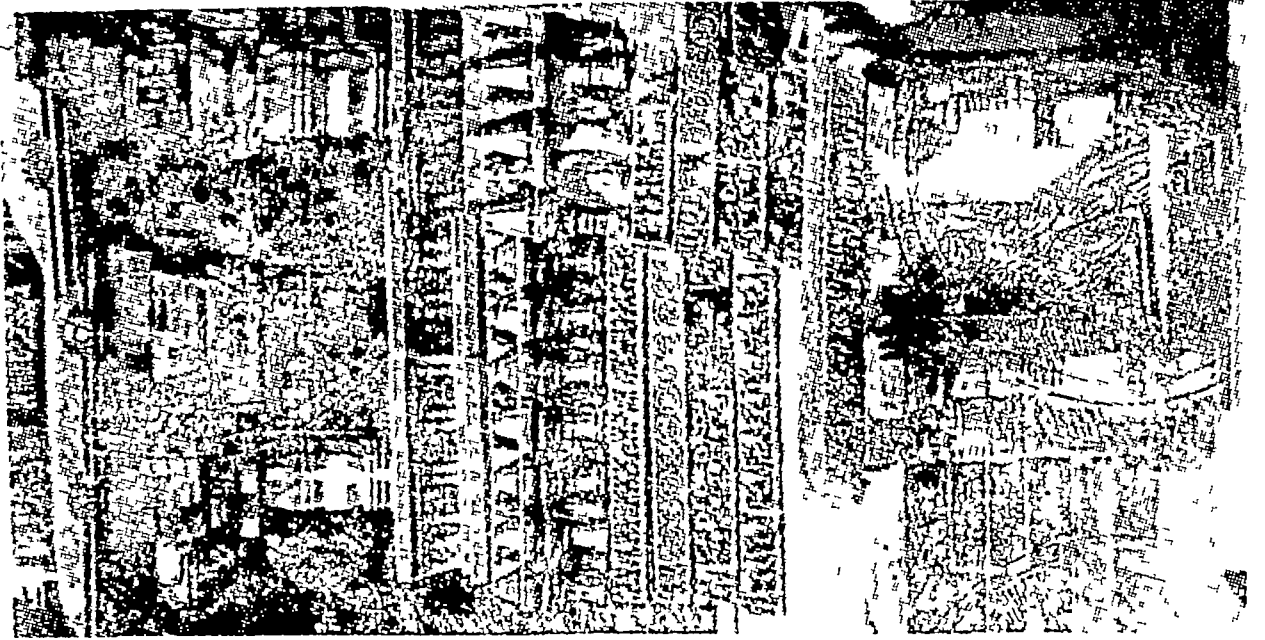
कक्षासन, होयसल मदिर, बेलूर *Kakshāsana, Hoysal Temple, Belur*
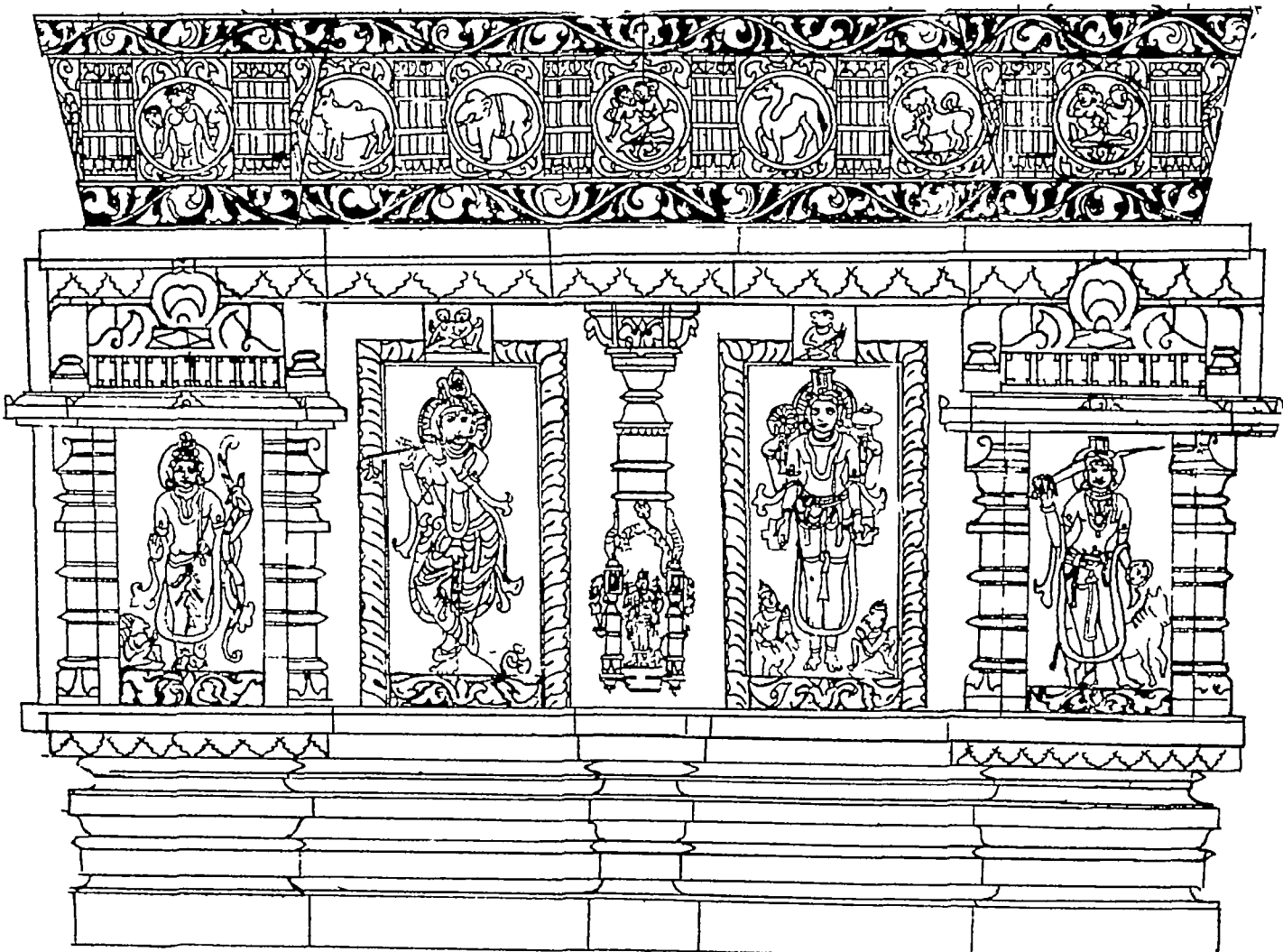
कक्षासन, ग्वालियर रेयोन मदिर, नागदा *Kakshāsana Gwalior Rayon Temple, Nāgadā*
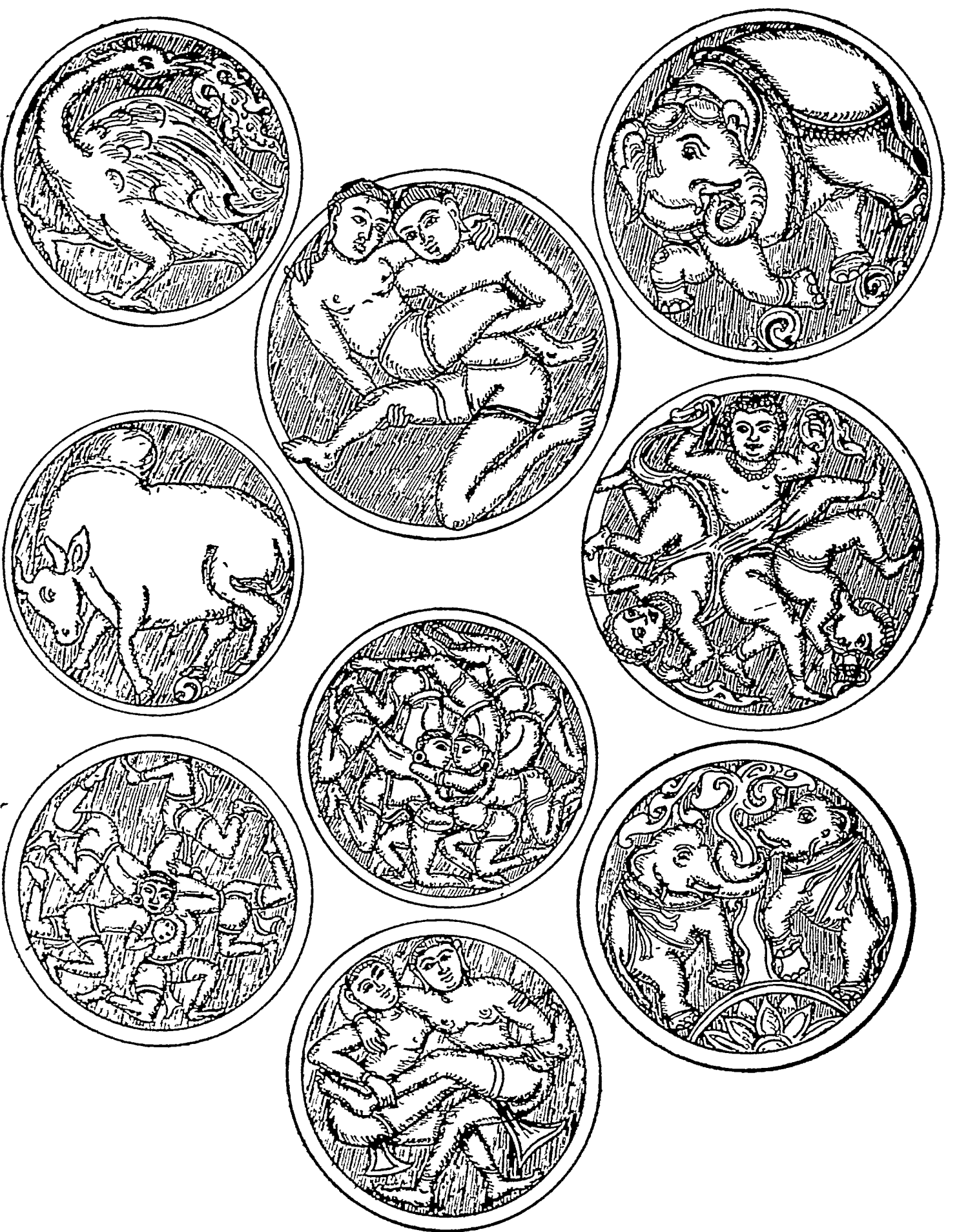
सुखासन में वृत्ताकृत प्रतिमा *Details of Sukhāsana*

तोरण और स्तभ के प्रकार

कुँभी

घट पल्लव

प्रतोल्या

उद्गम

दोढीया

मदल

दातरडी

दावडी

सोपान

Types of Toranas and Pillars

Kumbhi

Ghat Pallava, Leaves Like Ornaments

Gates

Pediments

Madalas

Dataradis

Dabadi

Decorative Elements

Sides of Steps, Sopana
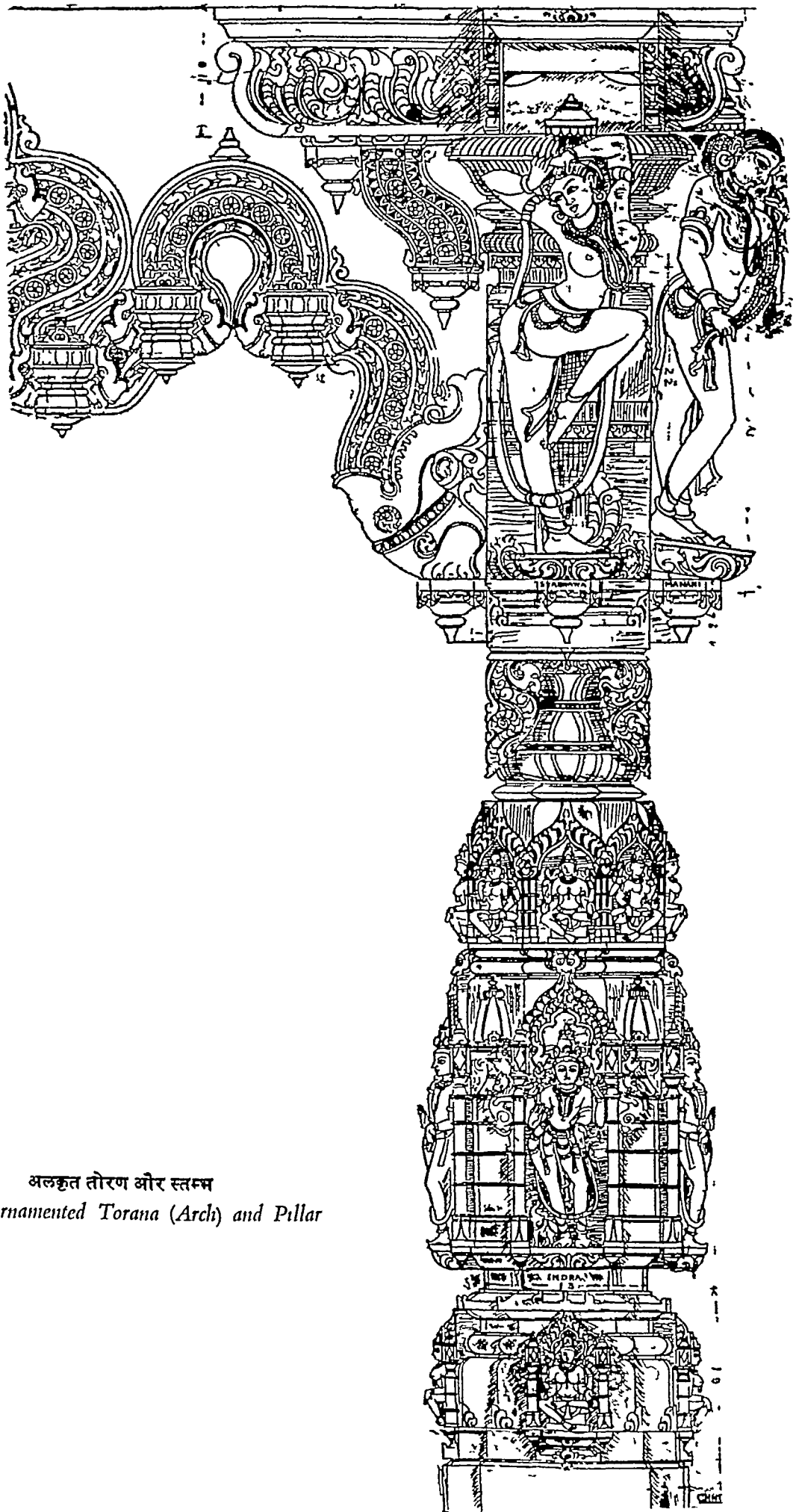
अलङ्कृत तोरण और स्तम्भ
Ornamented Torana (Arch) and Pillar
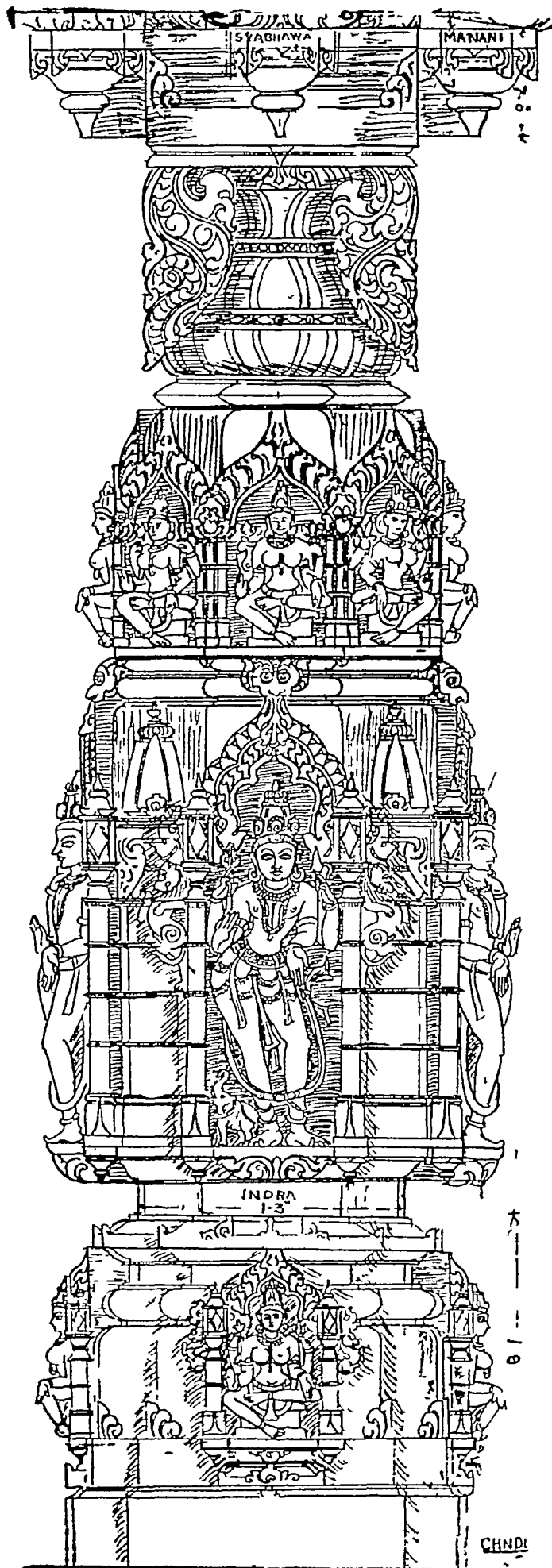
कुंभी, घटपल्लव युक्त रूप स्तम्भ
Adorned Pillar with Kumbhi and Ghatpallava
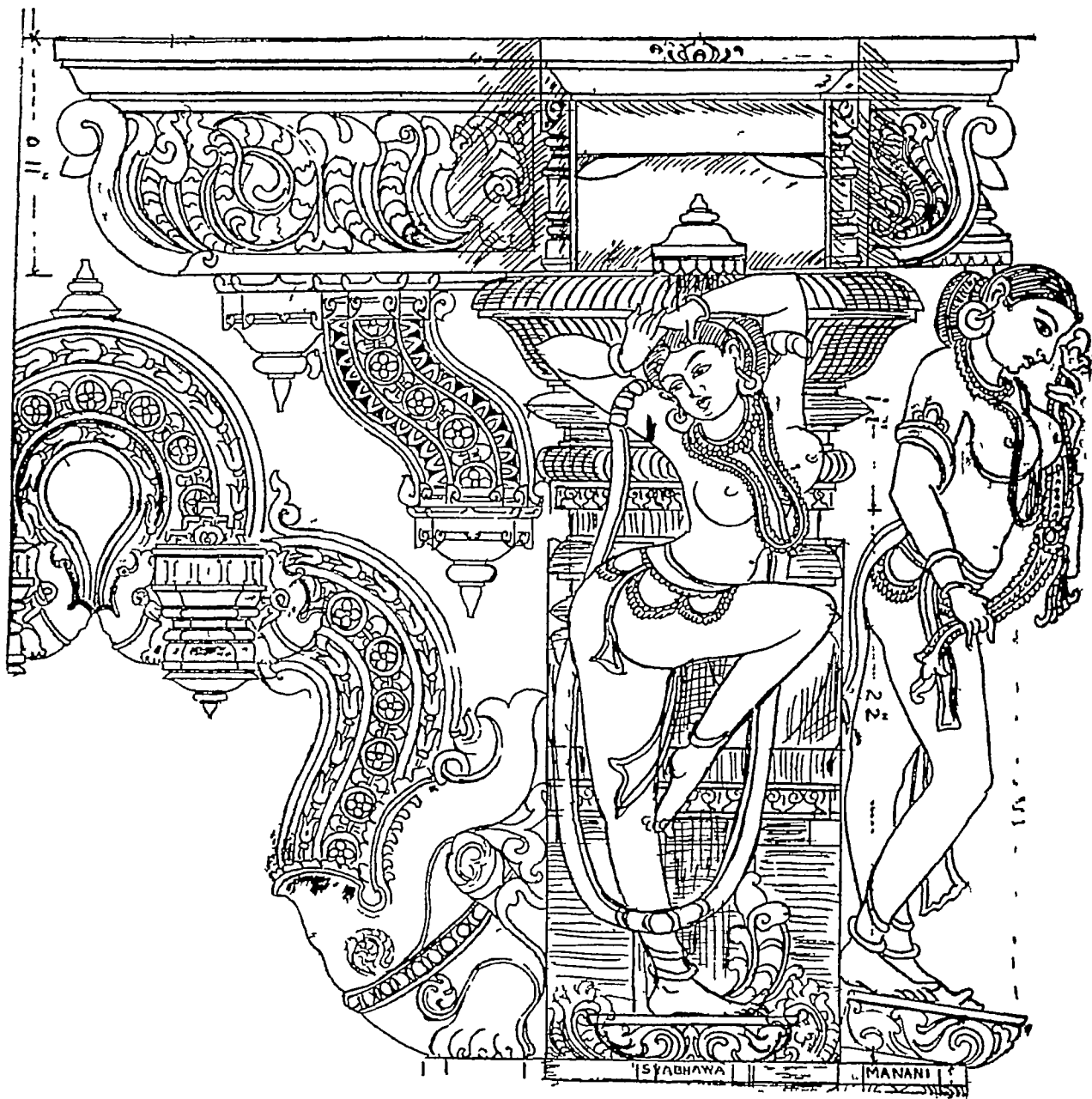
पदल तोरण और देवांगना युक्त स्तम्भ का शीर्ष *Upper Part of Pillar Ornamented with Madal Toran and Nymphs*
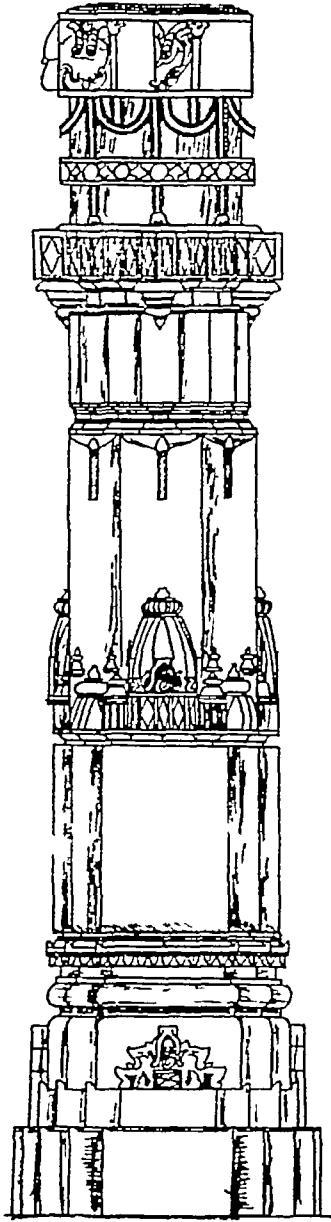
स्तम्भ *Pillar*
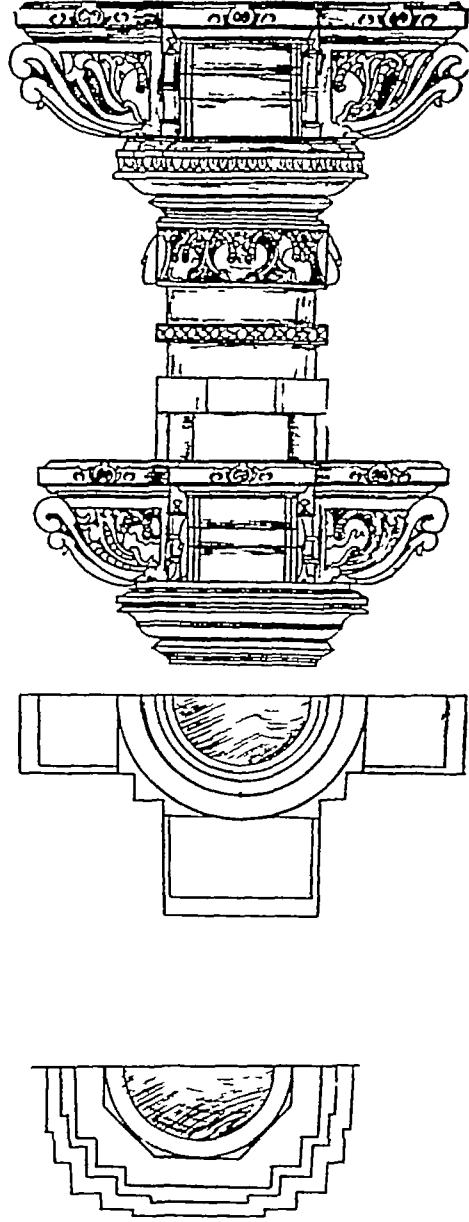
स्तम्भशीर्ष *Upper Portion of Pillar*

पृथक शैली के स्तम्भ *Pillars in Various Styles*
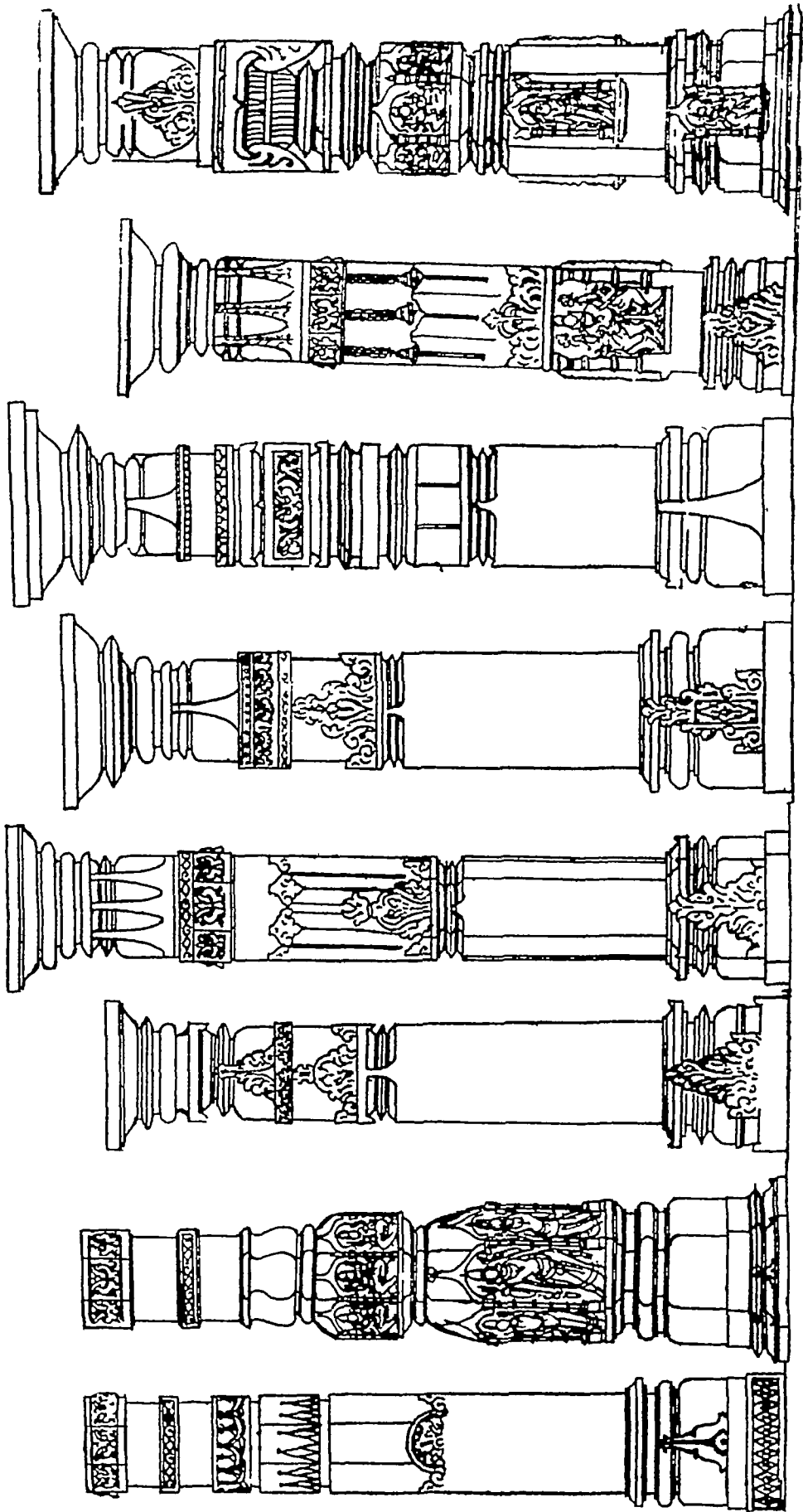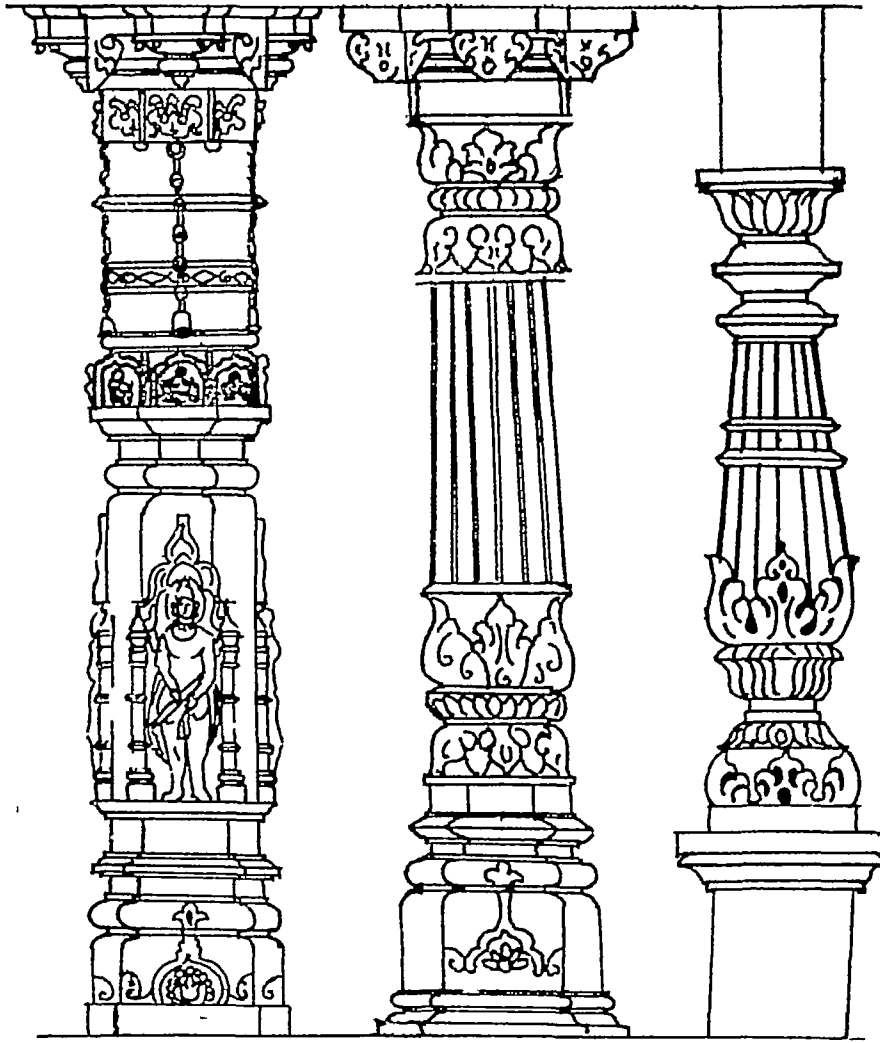
शिरोही घटा स्तम्भ *Shirohi Ghatā Stambha (Pillars)*
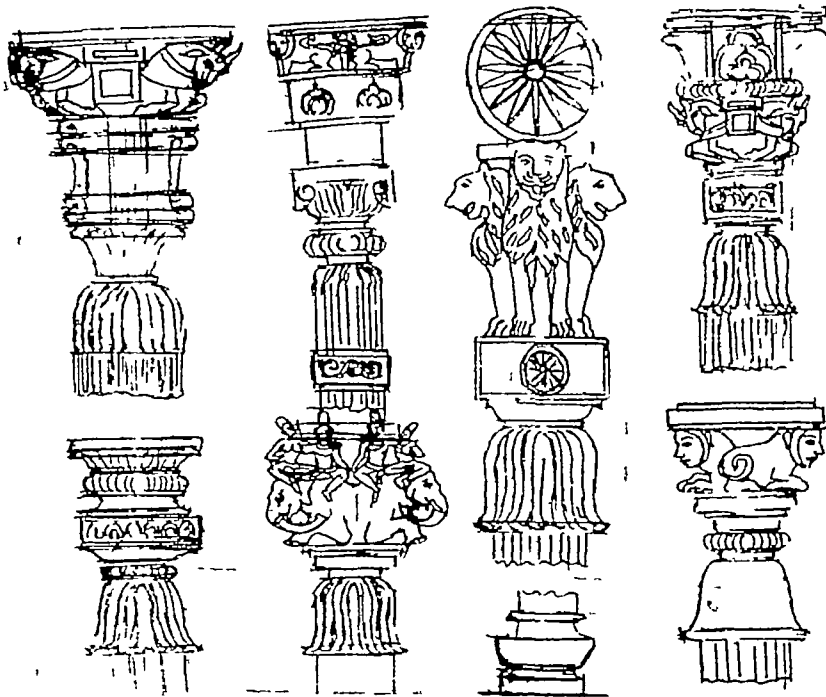
गुफा मंदिर के स्तम्भ शीर्ष *Upper Portion of Pillars in Cave-Temple*

आबु के मडप के स्तम्भ
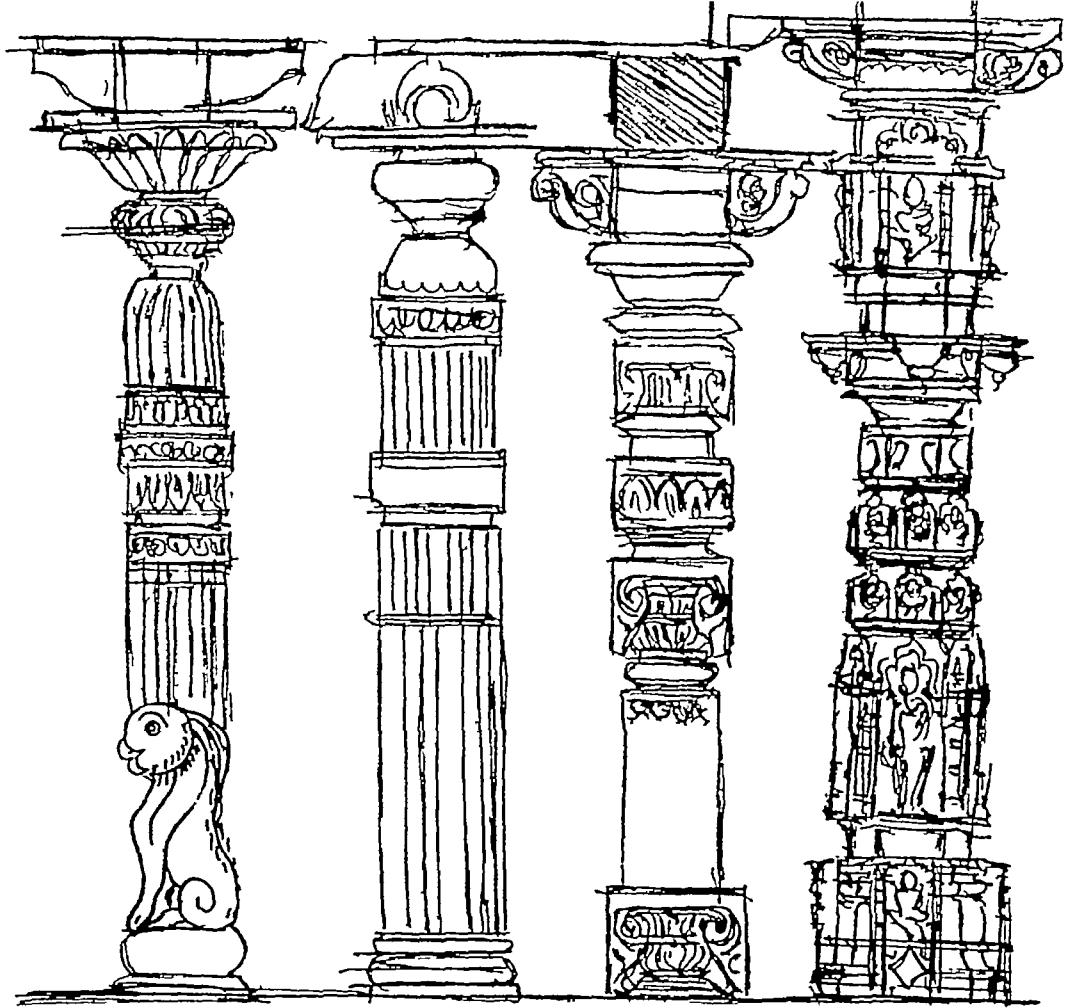
स्तम्भ *Pillars*
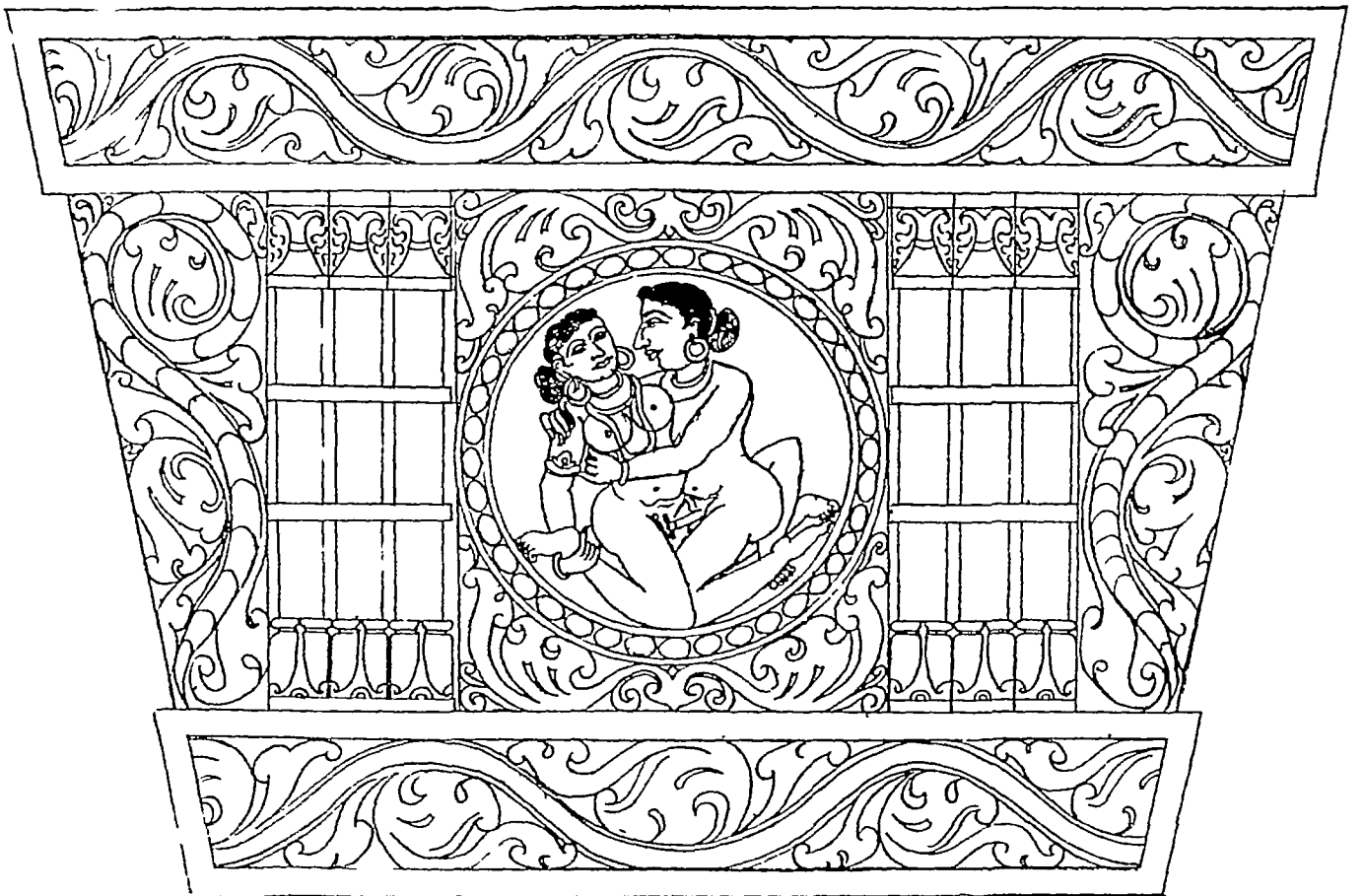
सुखासन *Sukhāsana*
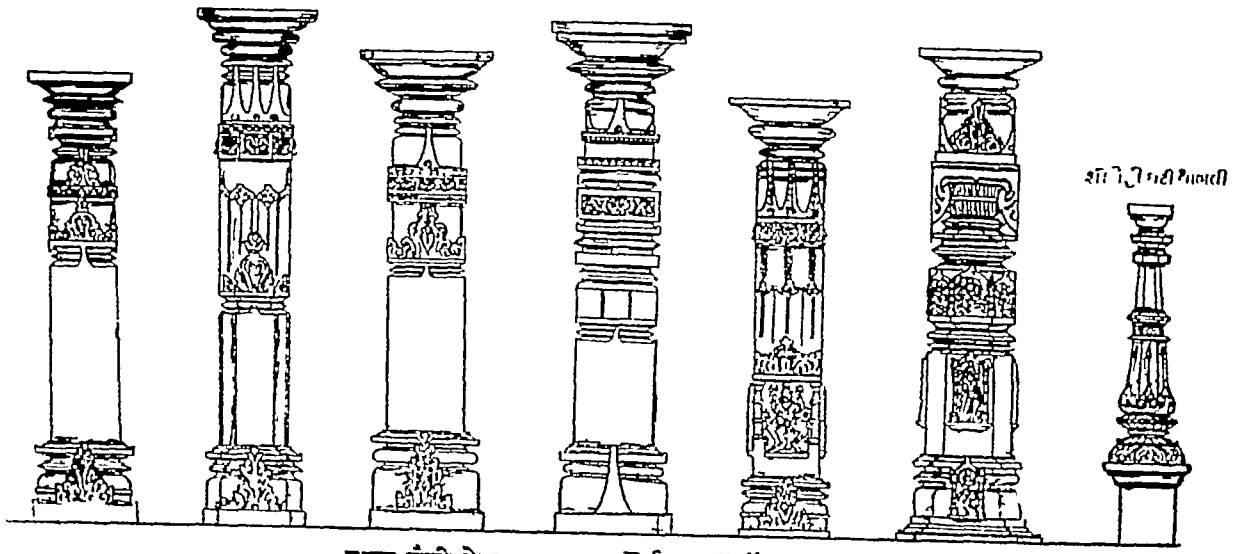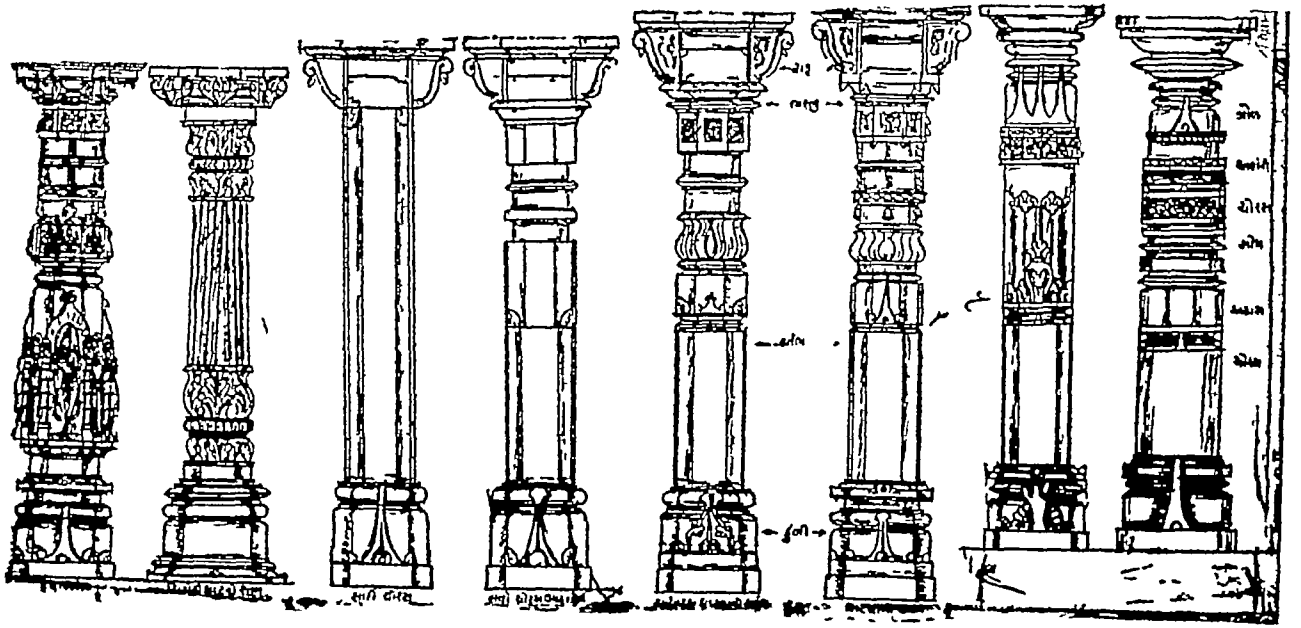
पृथक शैली के पद्रह स्तम्भ *Fifteen Pillars in Various Styles*
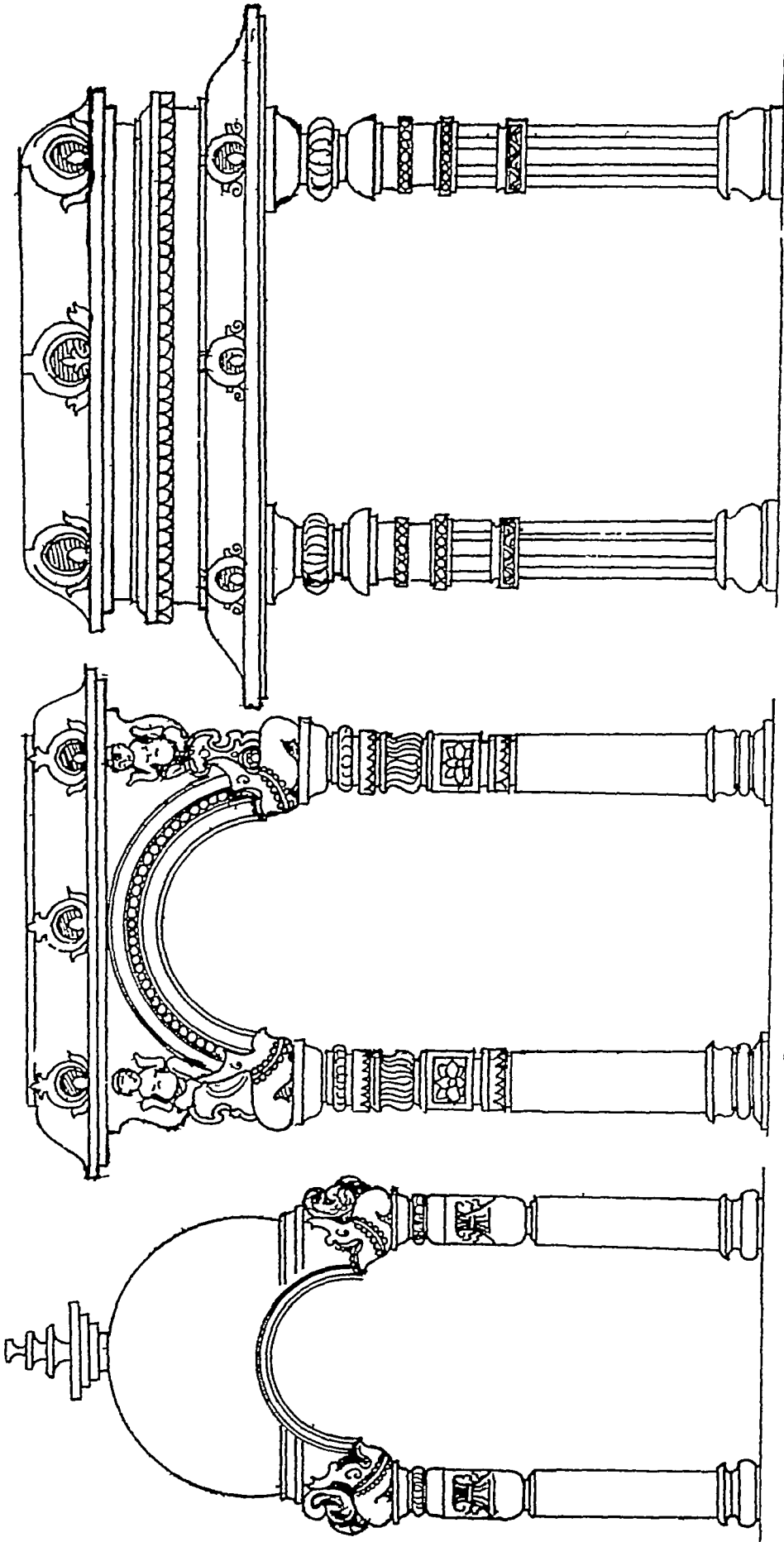
बुद्धकालिन प्रतोल्या (उत्तर भारत) *Gates of Buddha's Period (North India)*
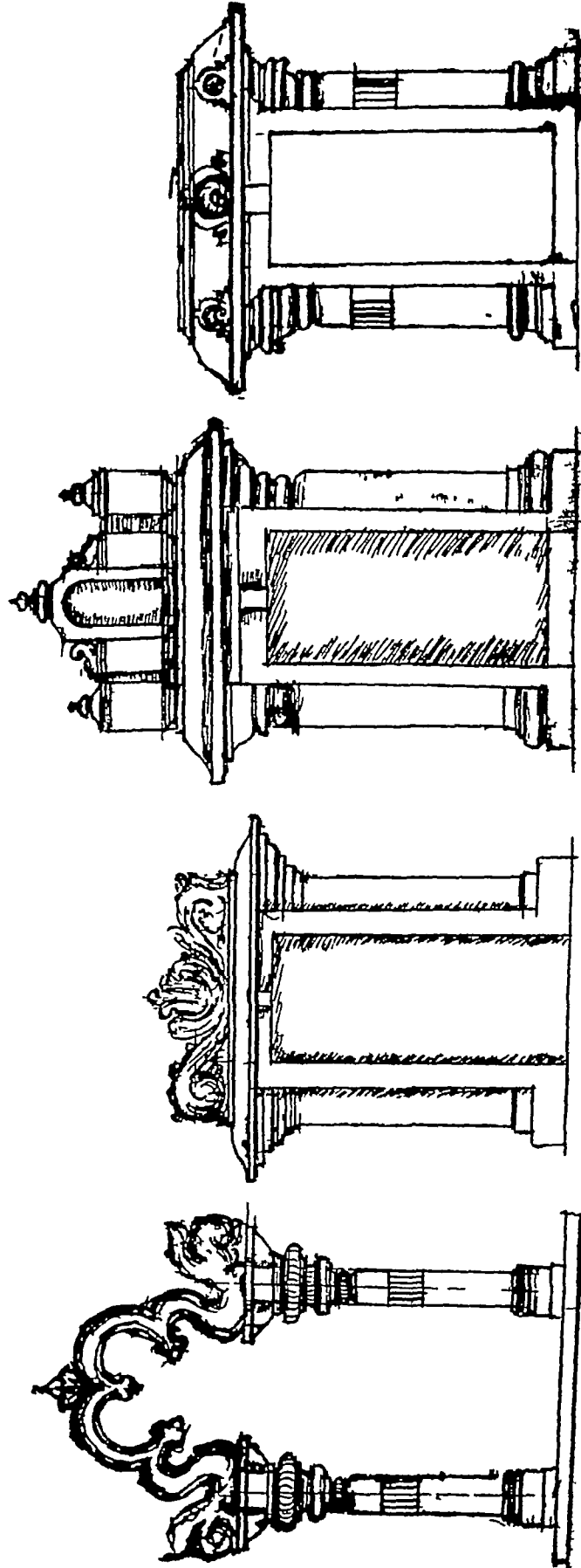
नौवीं–दसवीं शताब्दी के प्रतोल्या और प्रवेशद्वार (दक्षिण भारत) *Gates and Main Entrances of South Indian Style (9th & 10th Century)*
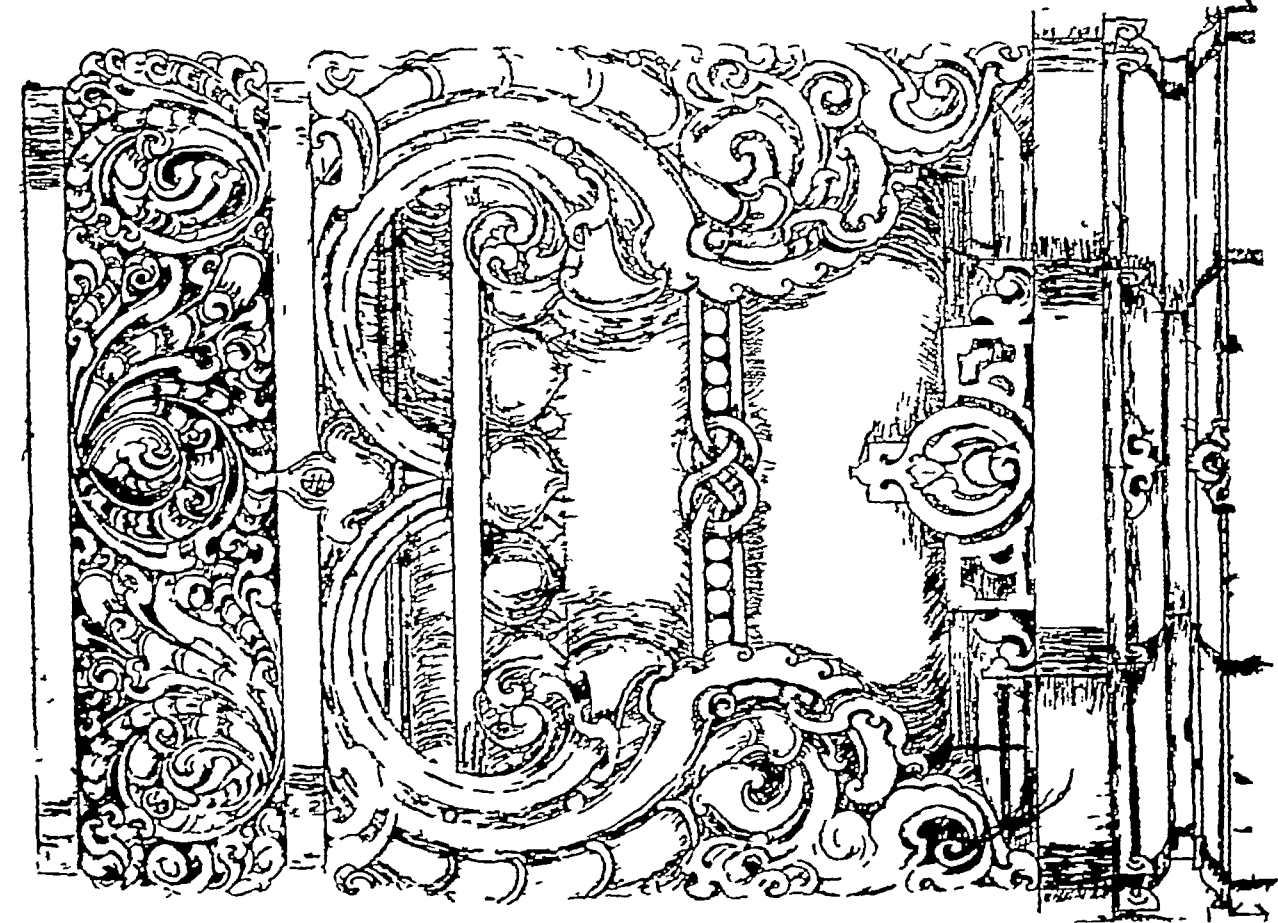
स्तम्भ के घटपल्लव *Ghatapallava* of Pillars (leaves like Ornaments)

स्तम्भ मे ग्रासपत्ती और पल्लव *Detailed Ornaments of Pillars*
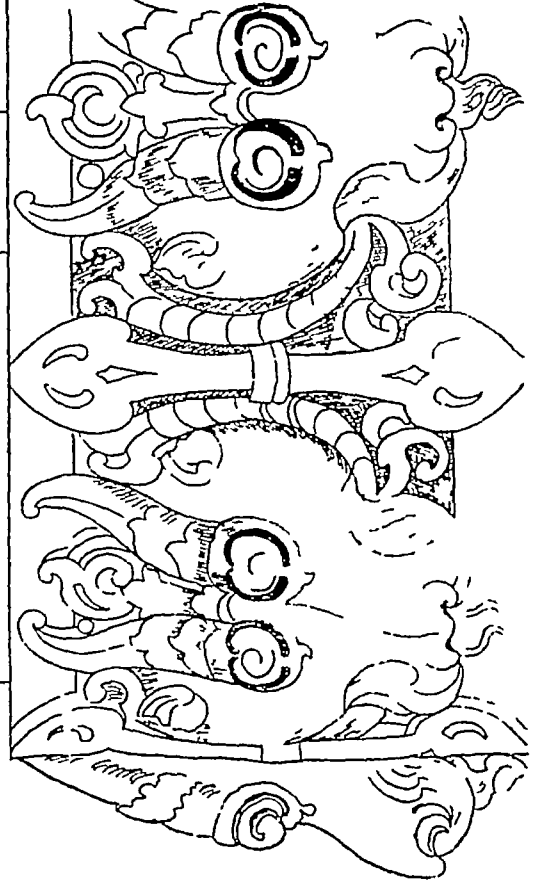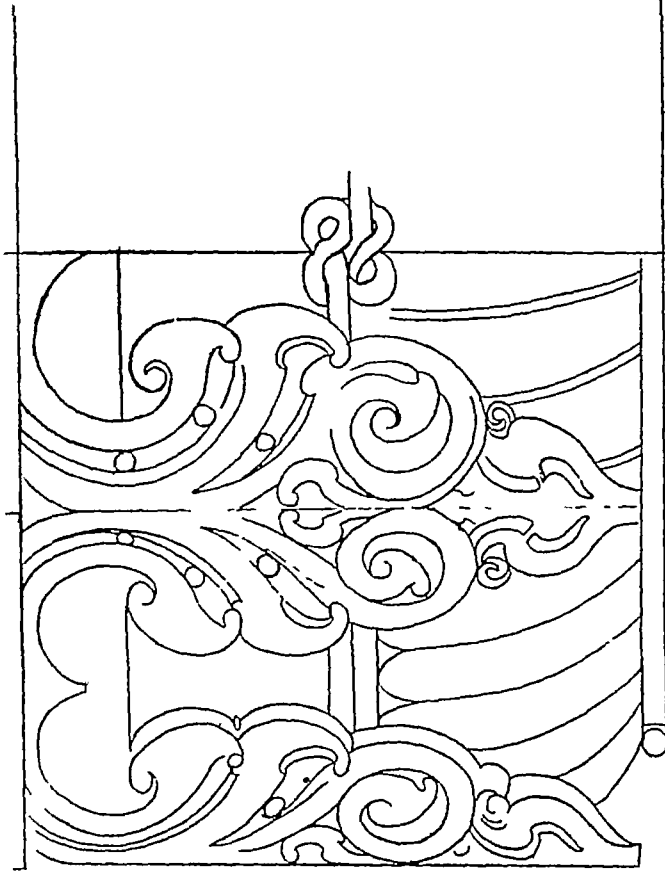
शीरा का पक्ष

ग्रास पत्ती *Grās Patti*
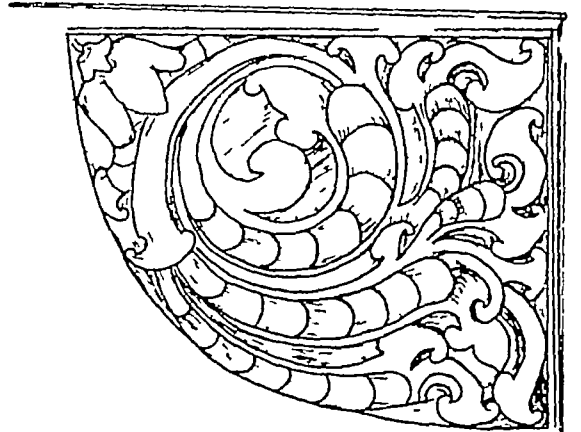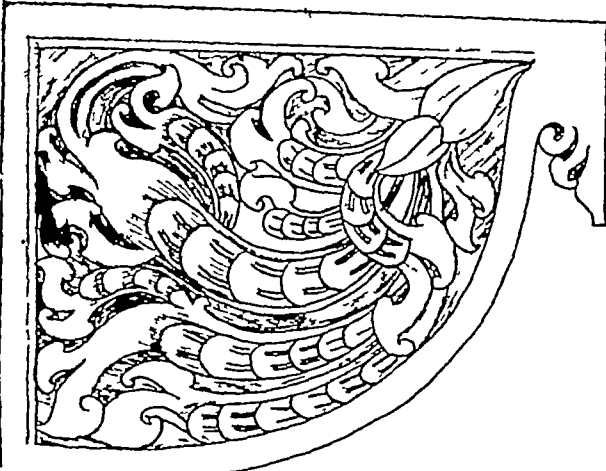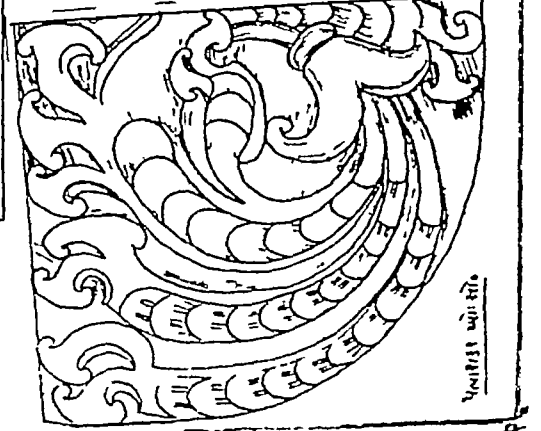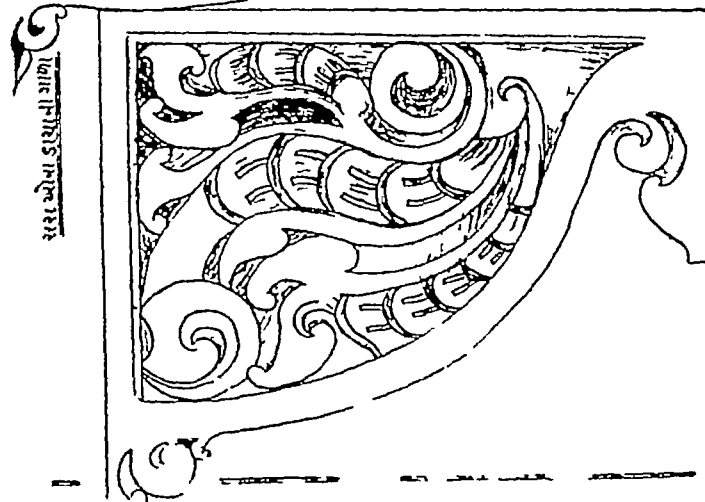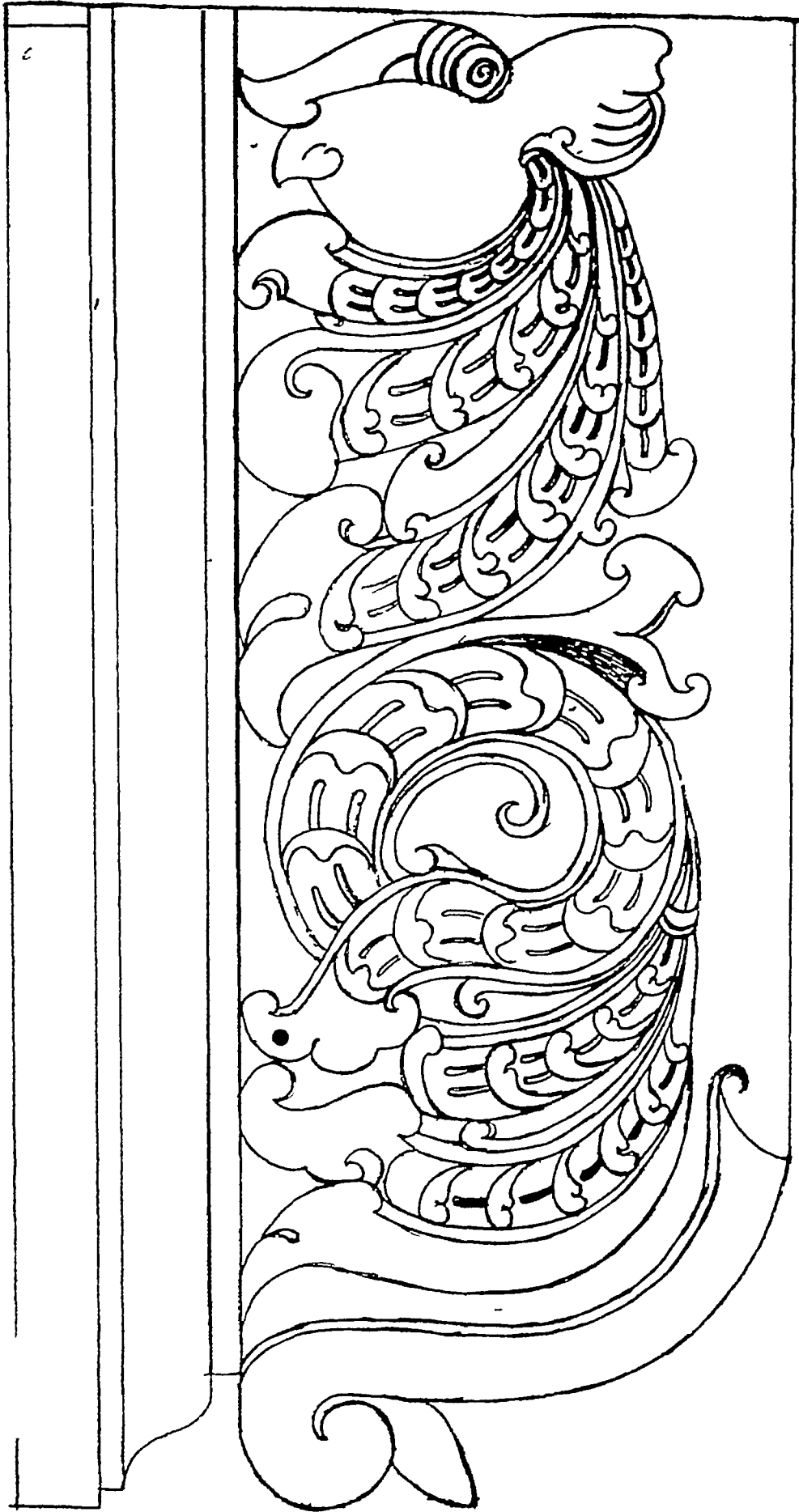
स्तम्भ-परिशिरी का अलकरण—बेलपत्र *Decoration of Upper Part of Pillar*
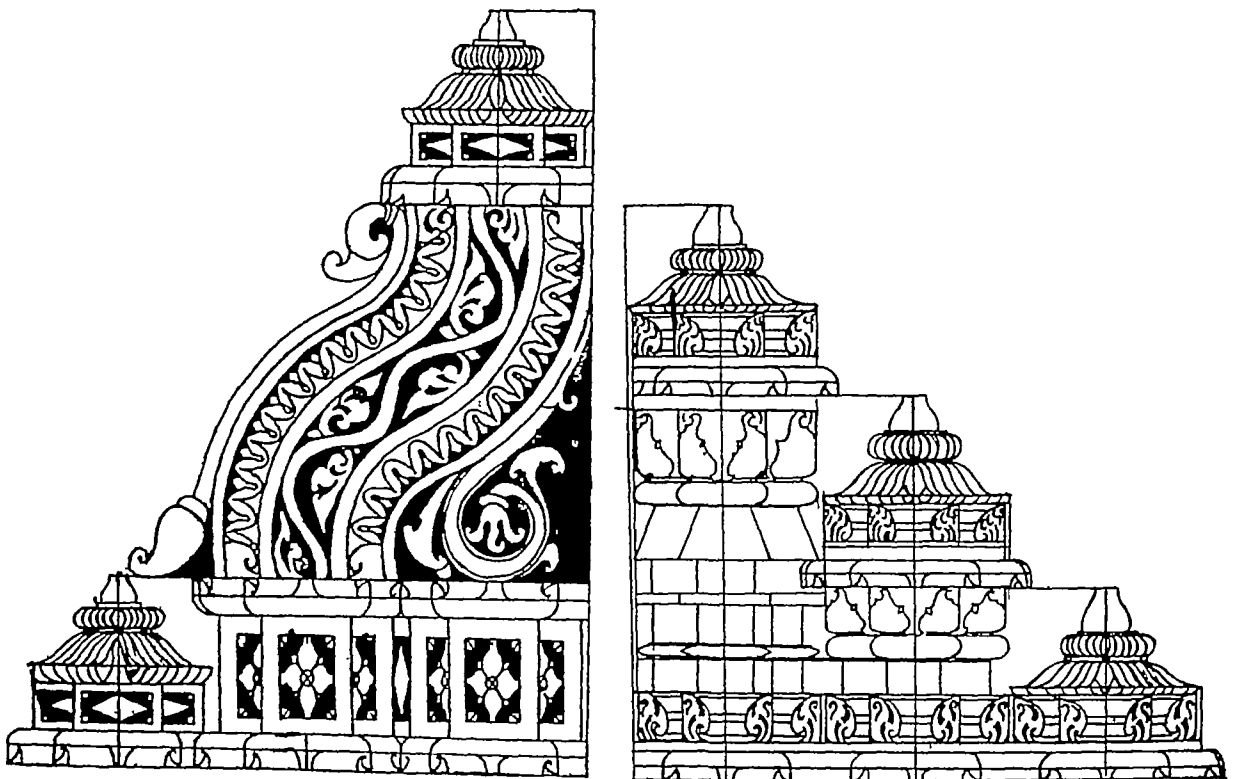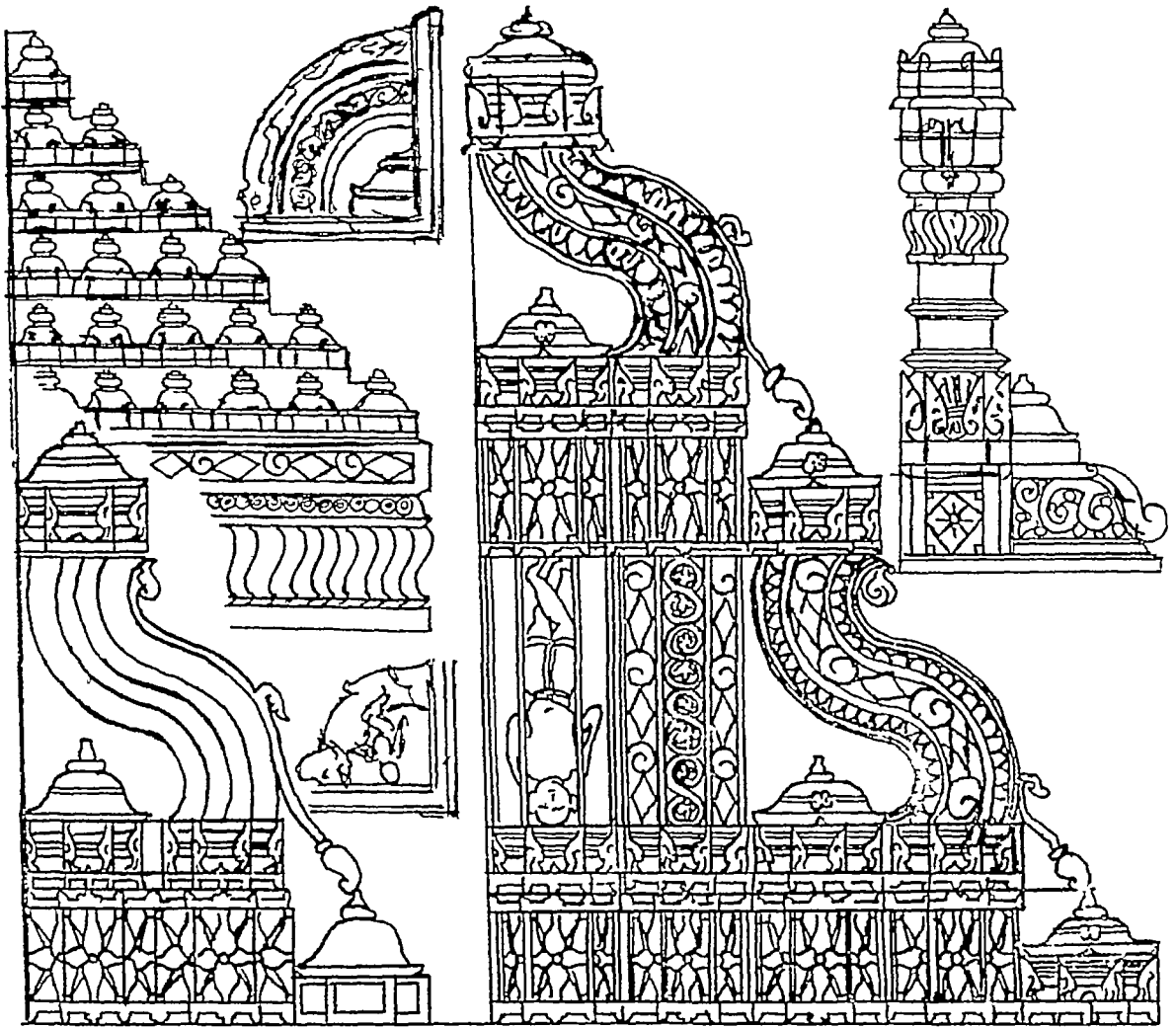
मदल *Madala Brackets*
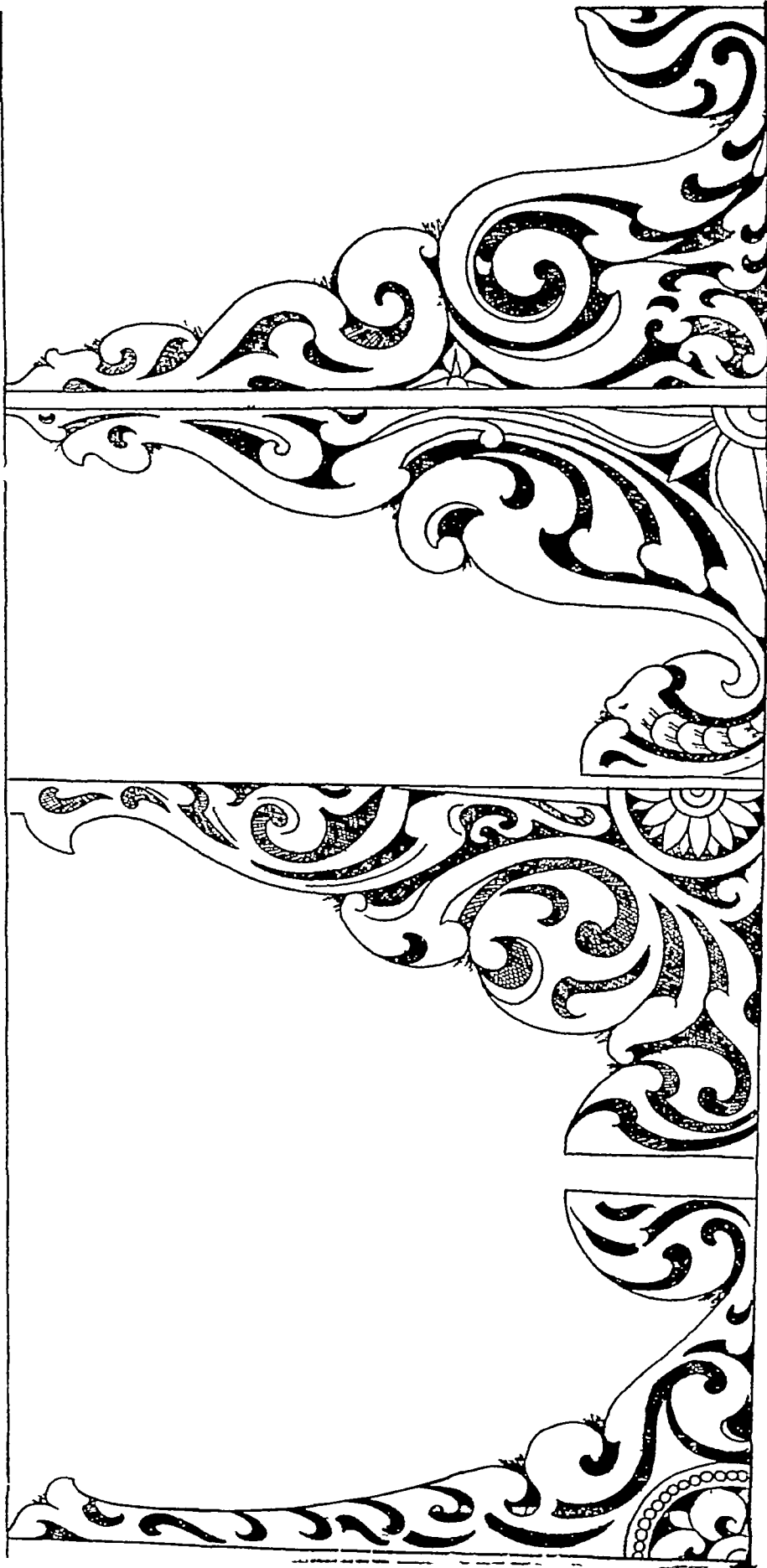
वातरडी *Dātaradi (Decorating Elements of Lowest part of the Pillar)*

दातरडी *Dātaradi*
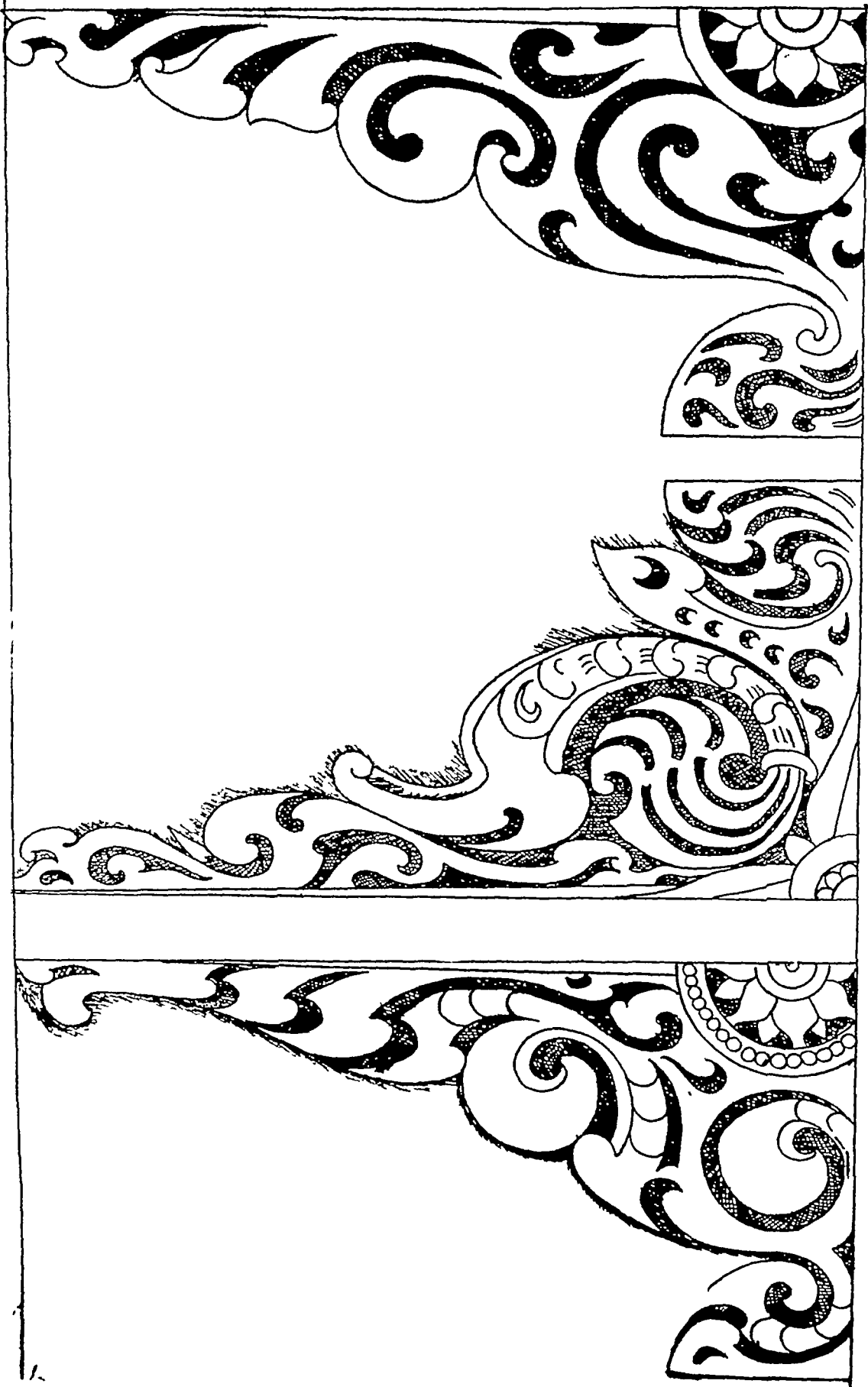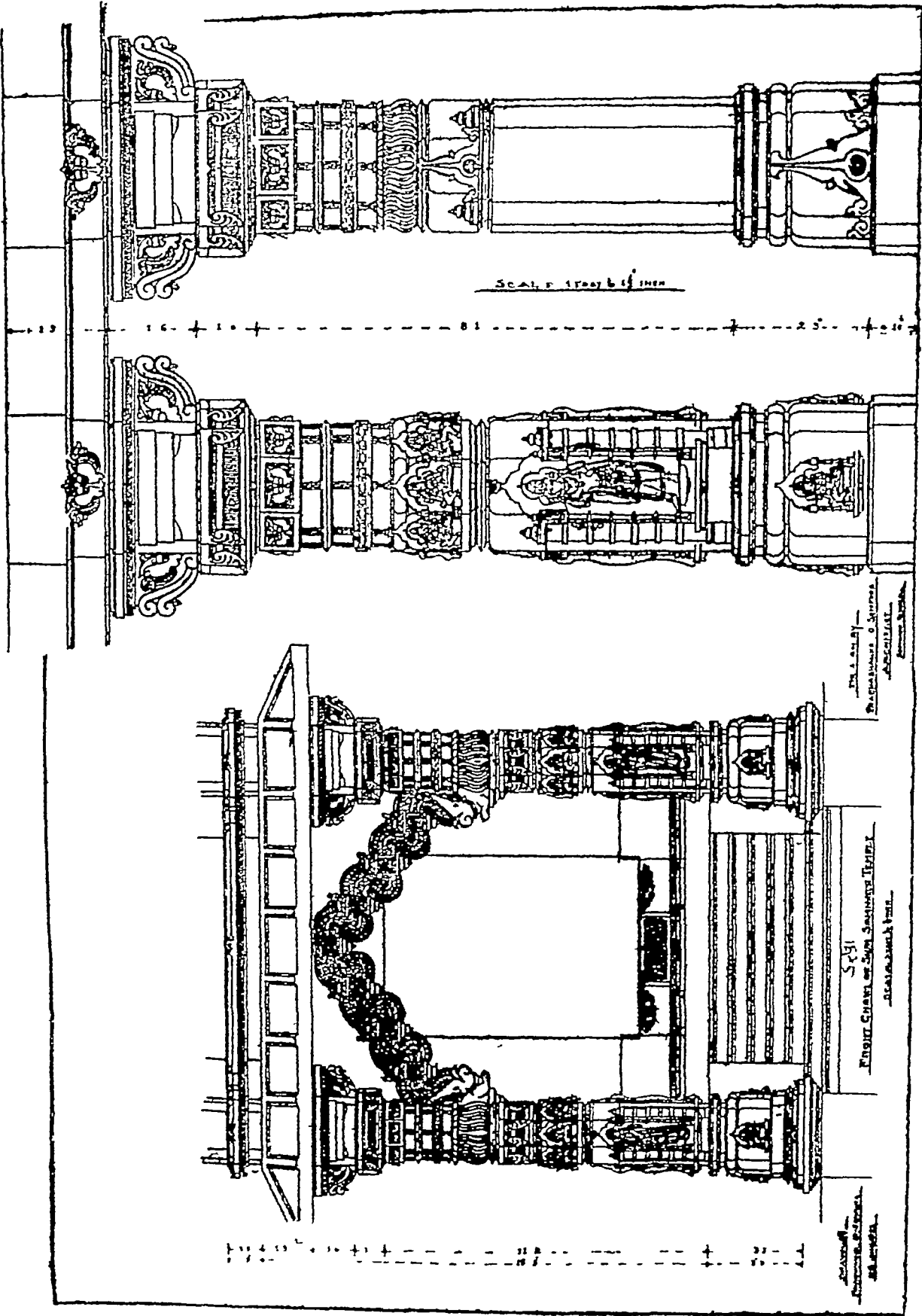
चतुष्किका और स्तम्भ *Chatushkika and Pillar*
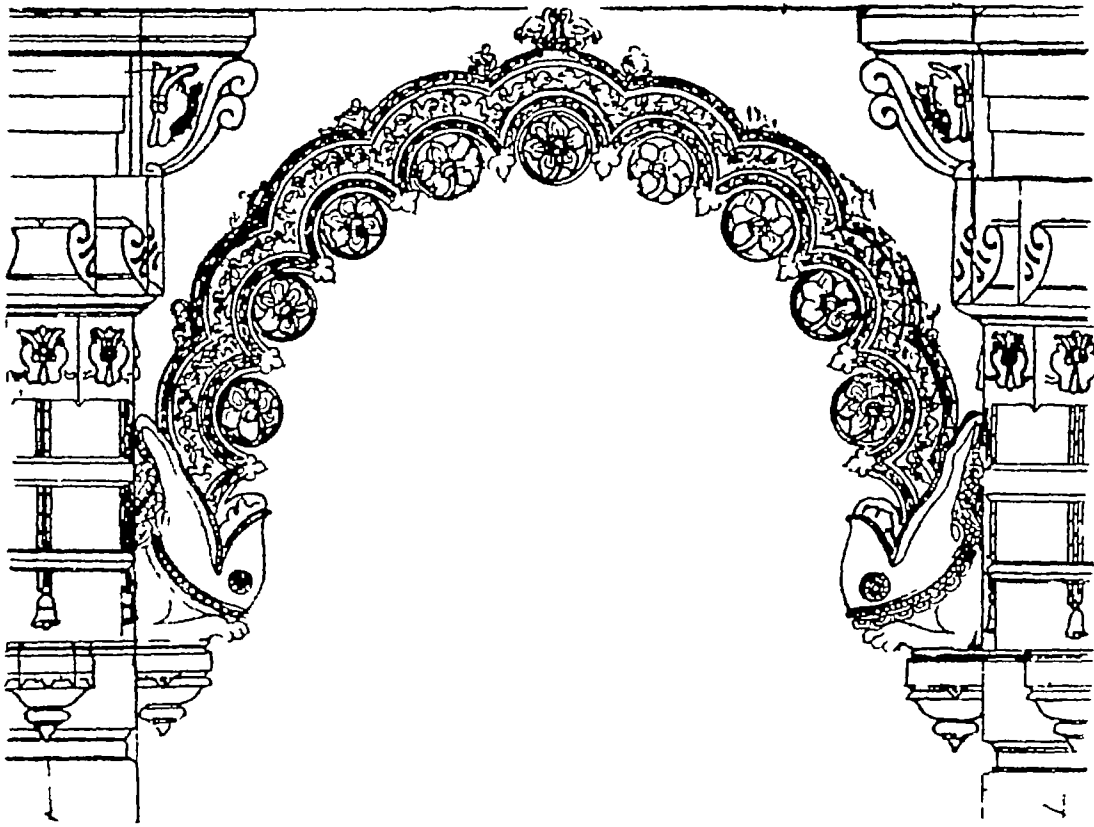
गवाक्ष युक्त तोरण
Torana
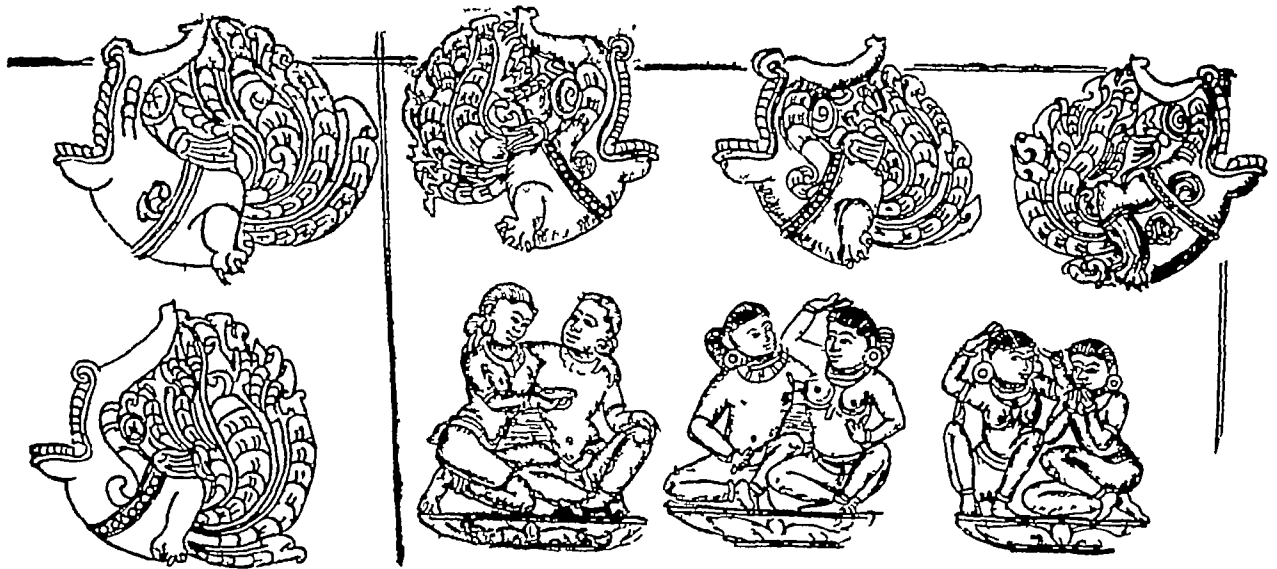
मकरमुख और युग्मरूप *Makaramukha and Couples*
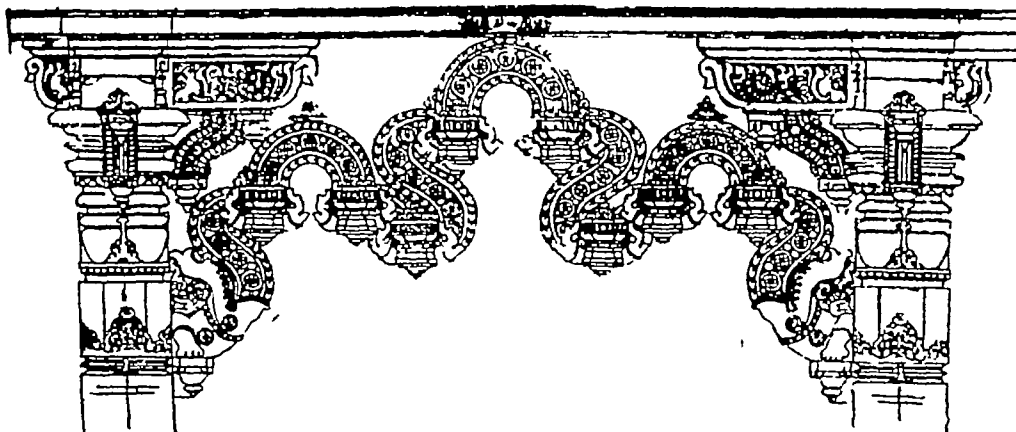
हिन्डोलक-तोरण
Hindolaka-Torana
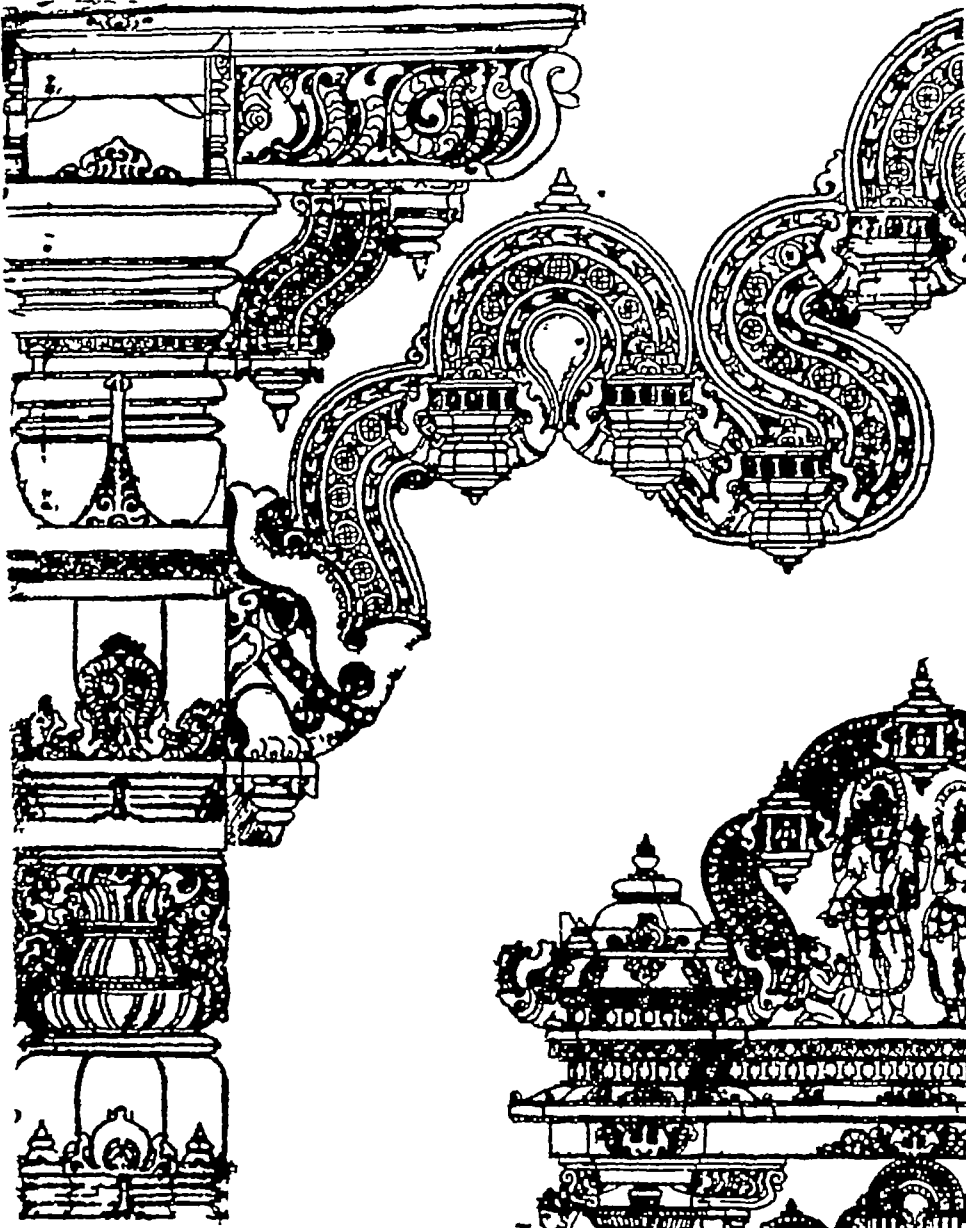
स्तम्भ और हिन्डोलक तोरण
Pillar and Hindolaka Torana
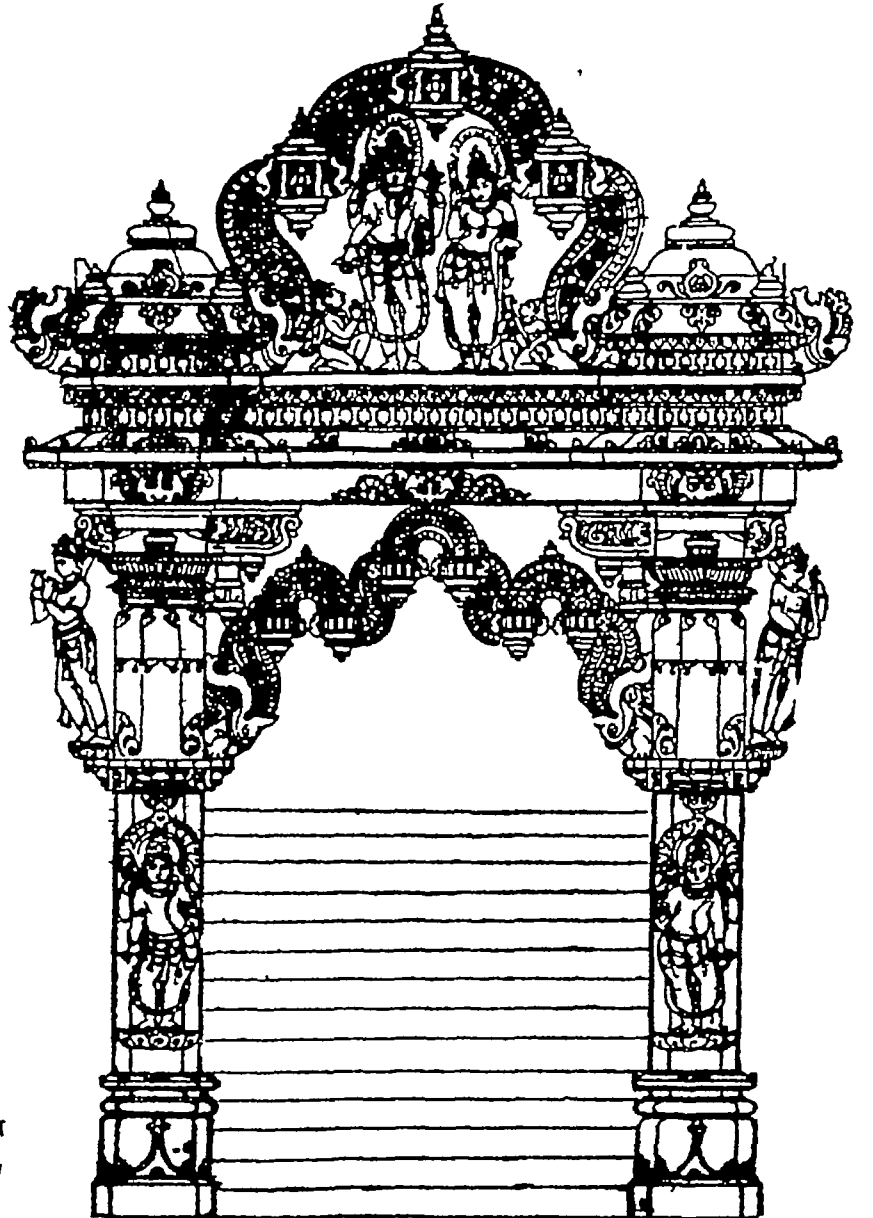
प्रतोल्या–प्रवेश द्वार, कल्याण
Gate of Vithoba Temple, Kalyan
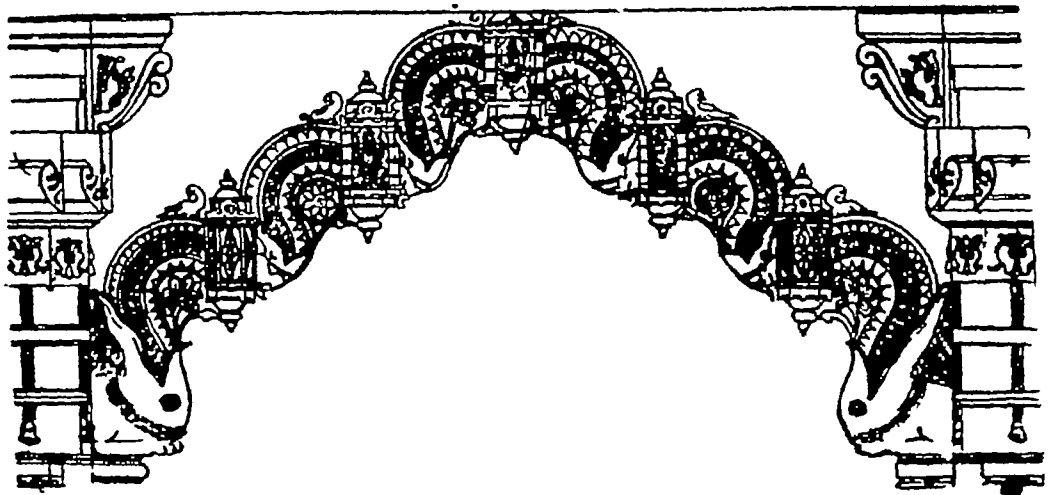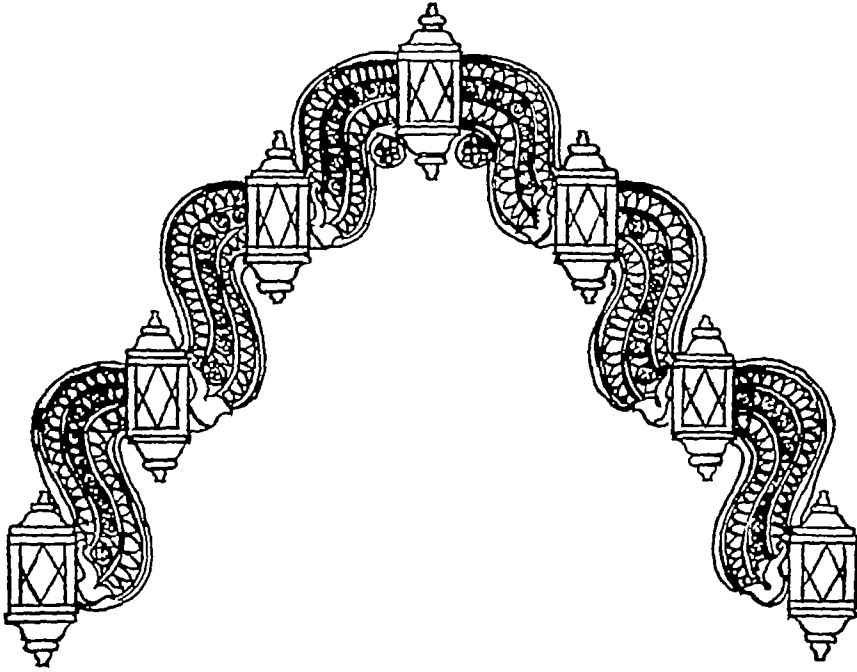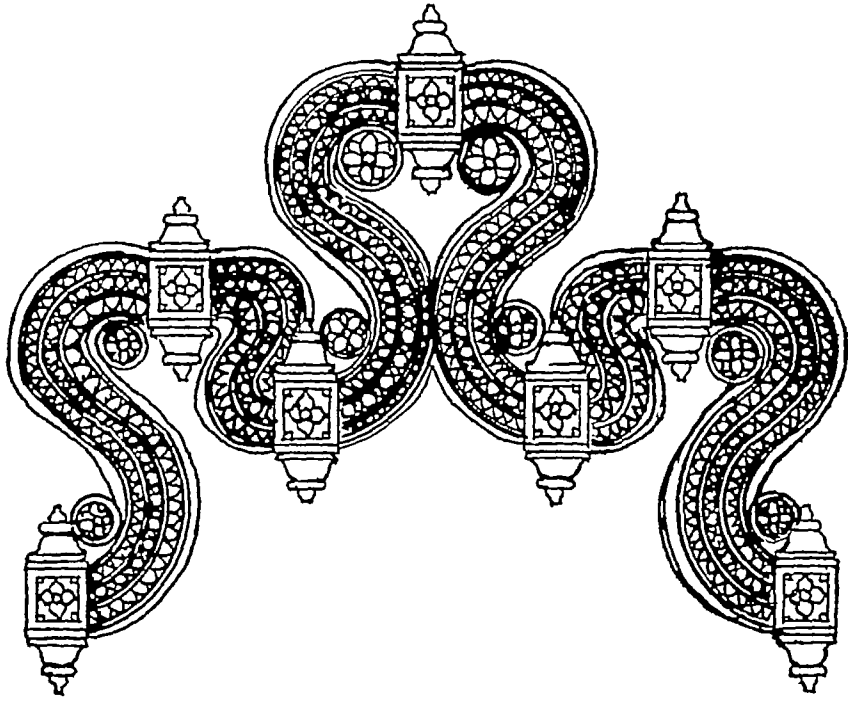
तोरण *Toranas (Ornamented Arches)*
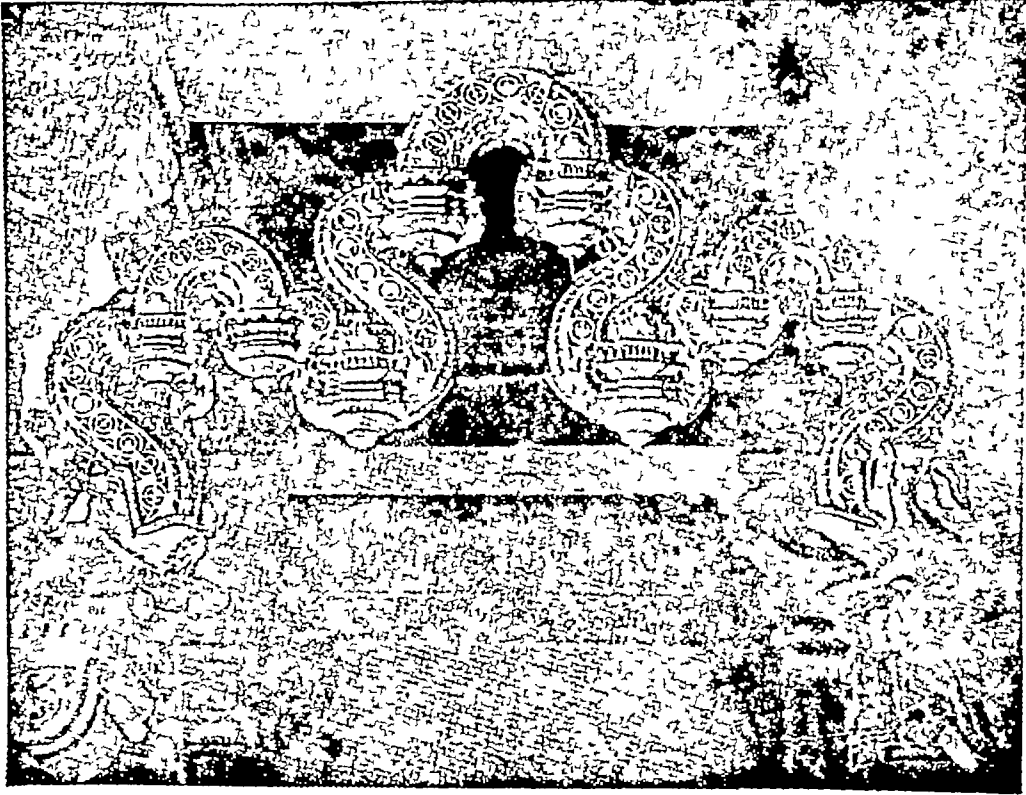
हिन्डोलक तोरण *Hindolaka Torana*
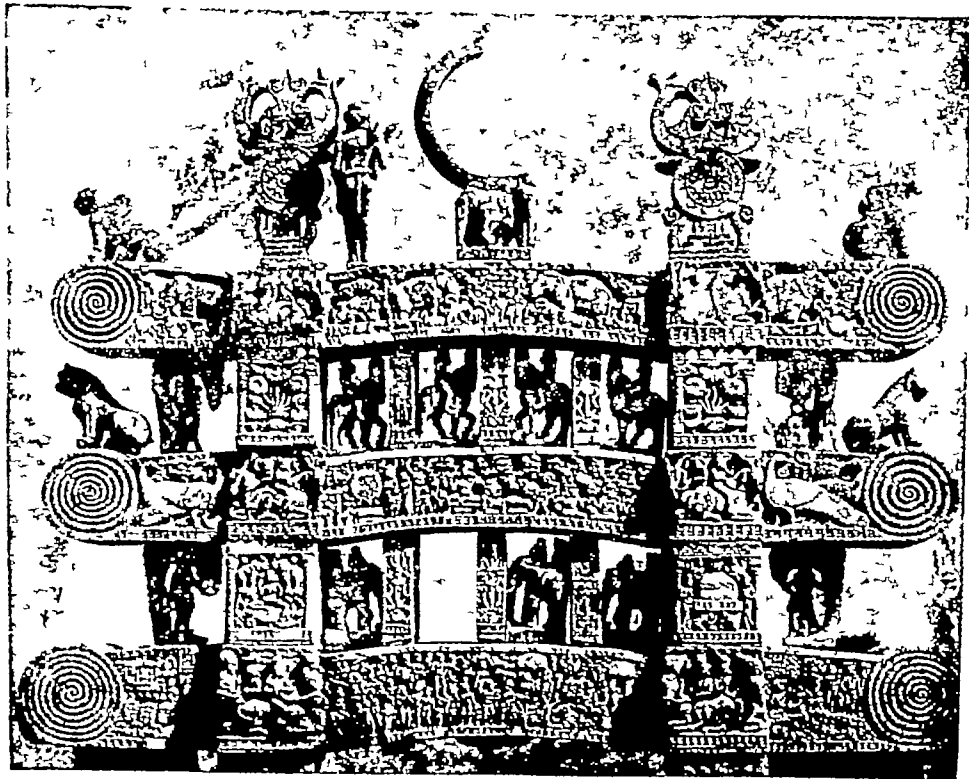
बुध्द स्तुप का तोरण *Torana of Buddha Stup*
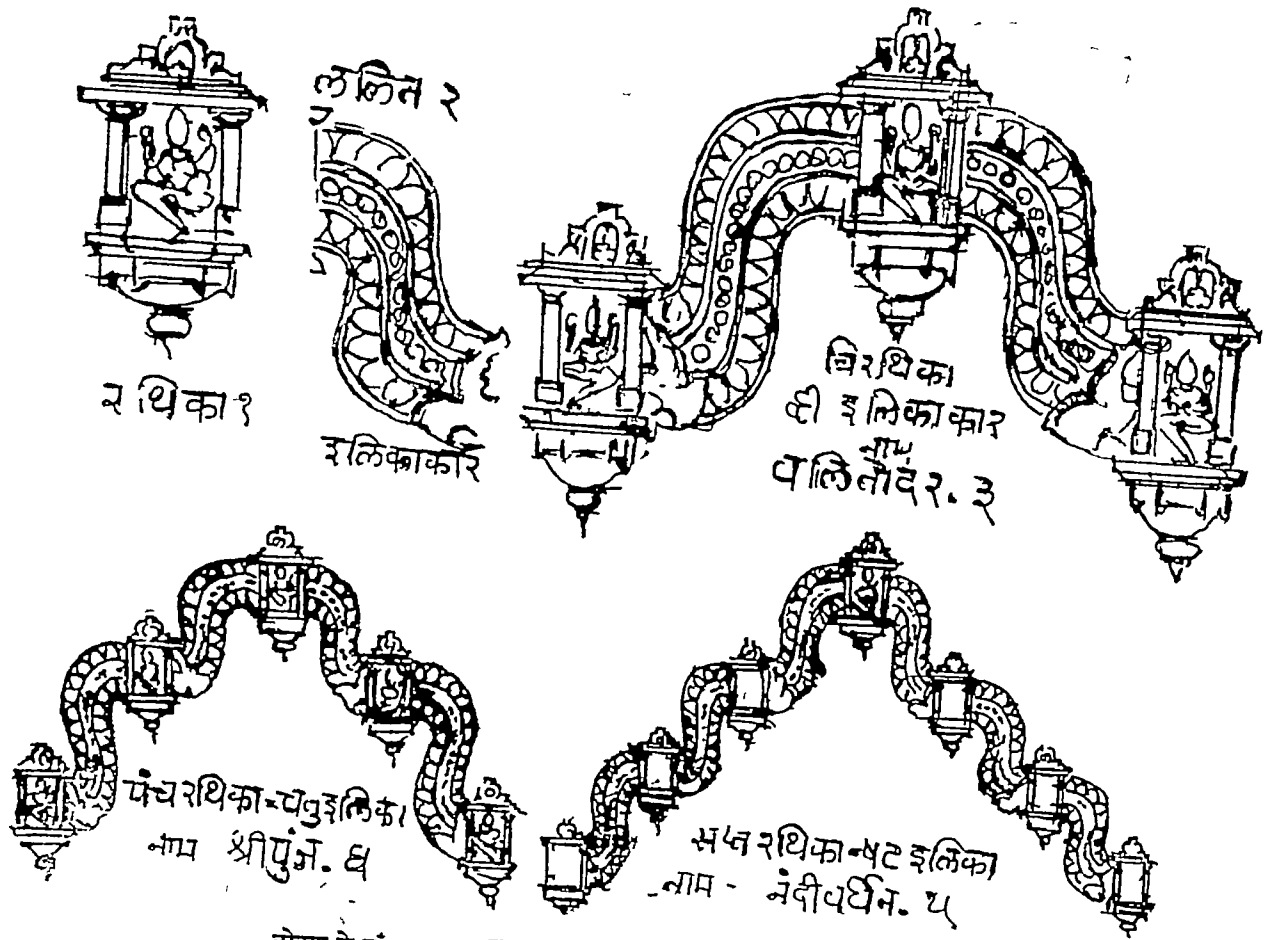
तोरण के पांच प्रकार *Five Different Kinds of Toranas*

1 *Rathikā*
2 *Lalita (Ilikakara)*
3 *Valitodara*
4 *Shripunja*
5 *Nandi Vardhana*
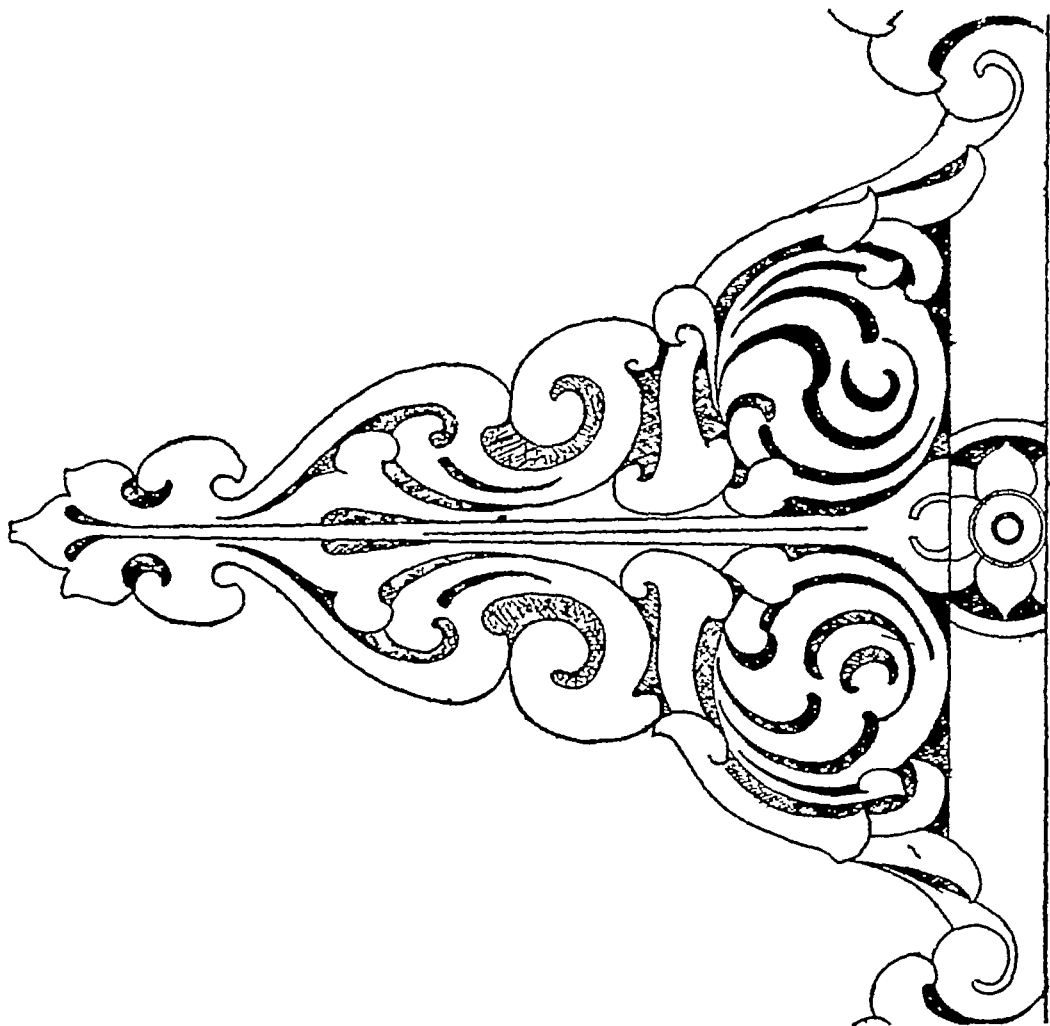
टेकरा *Tekarā*

कुँभी की दातरड़ी *Dātaradi of Basement of Pillar*
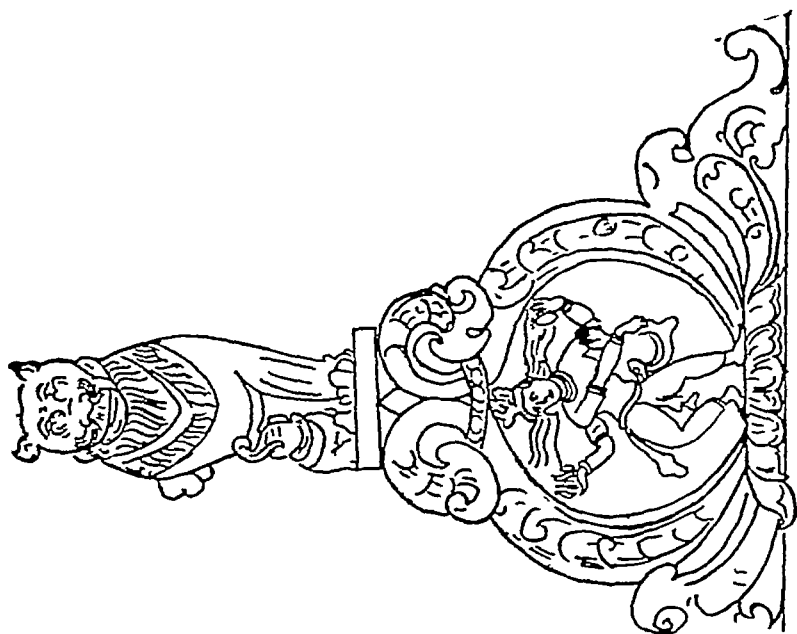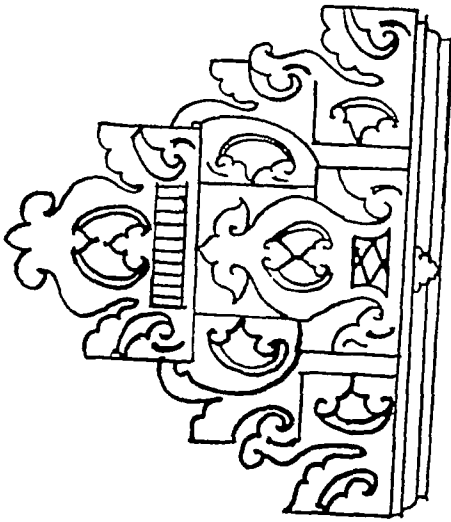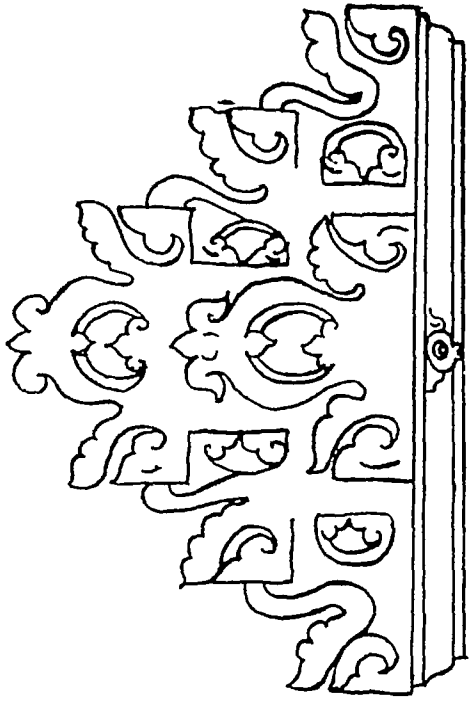
उद्गम *Udgamas, The Pediments*

अलकृत पट्टी *Ornamental Band, Fillet*
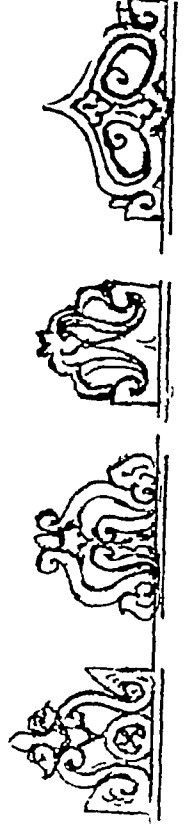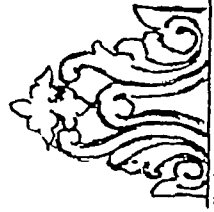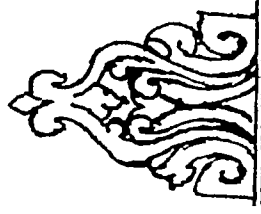
दातरडी *Dātaradi*
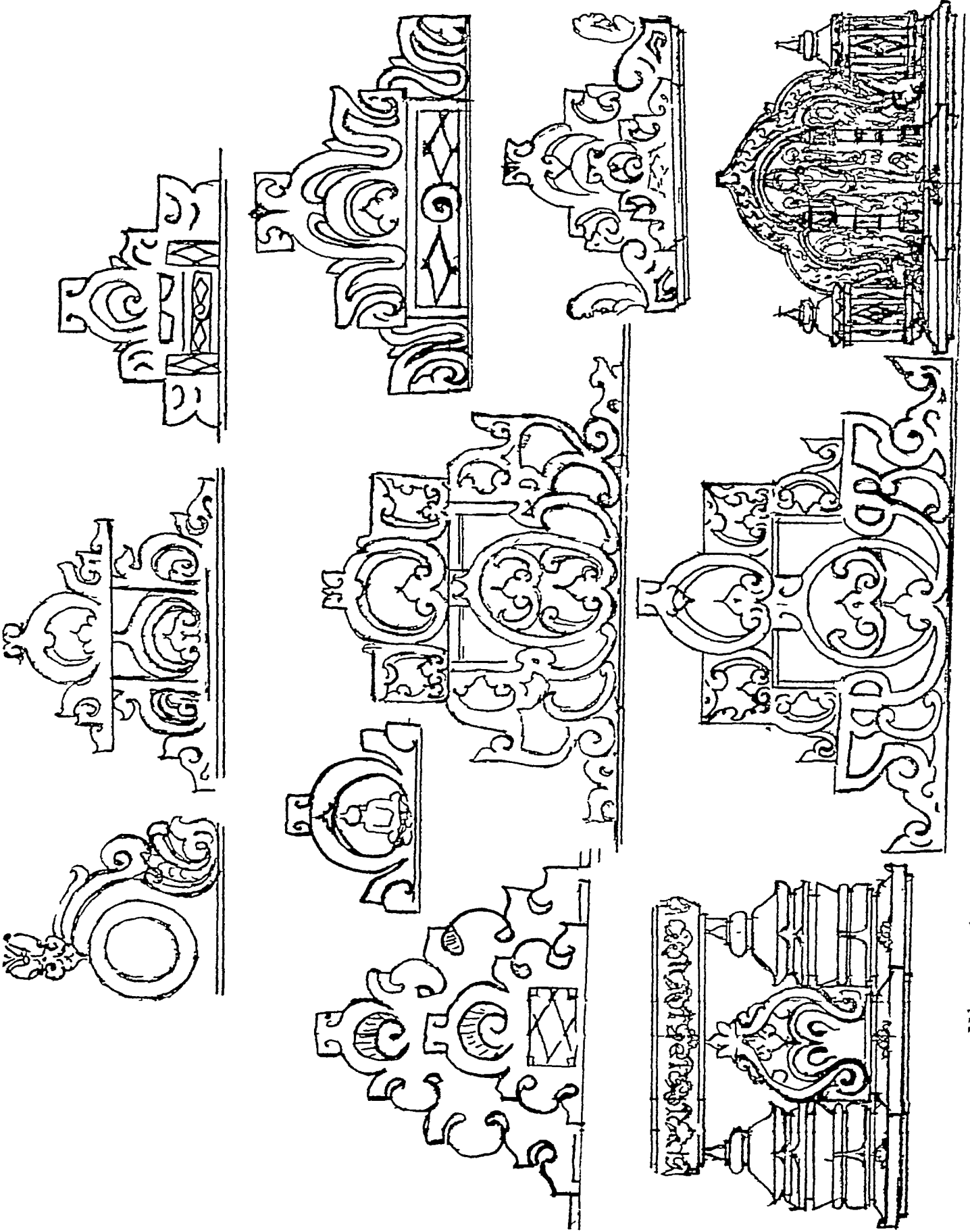
उद्गम *Udgamas, Pediments*

गेबल *Gable*
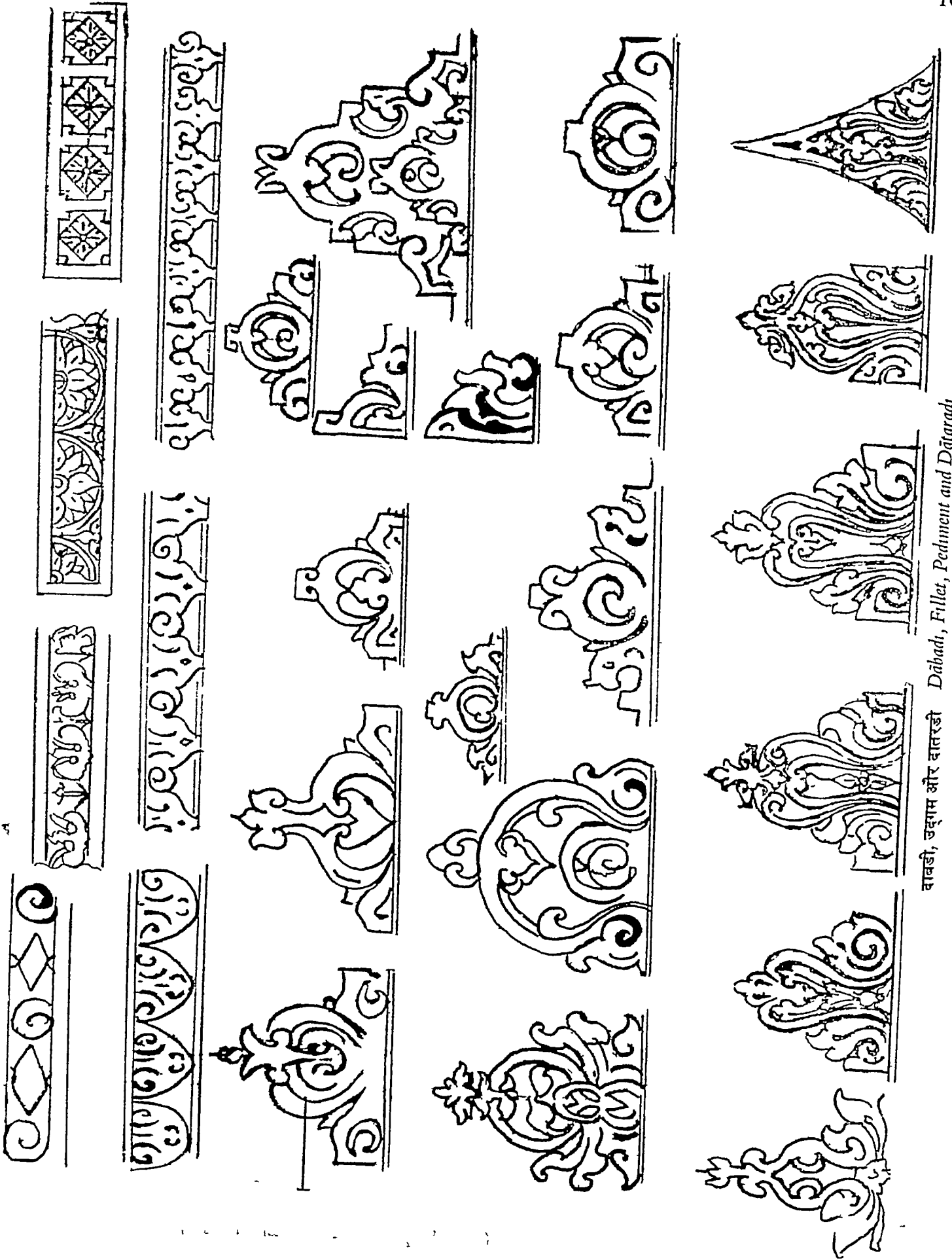
दाबडी, उद्गम और दातरडी *Dābadi, Fillet, Pediment and Dātaradi*
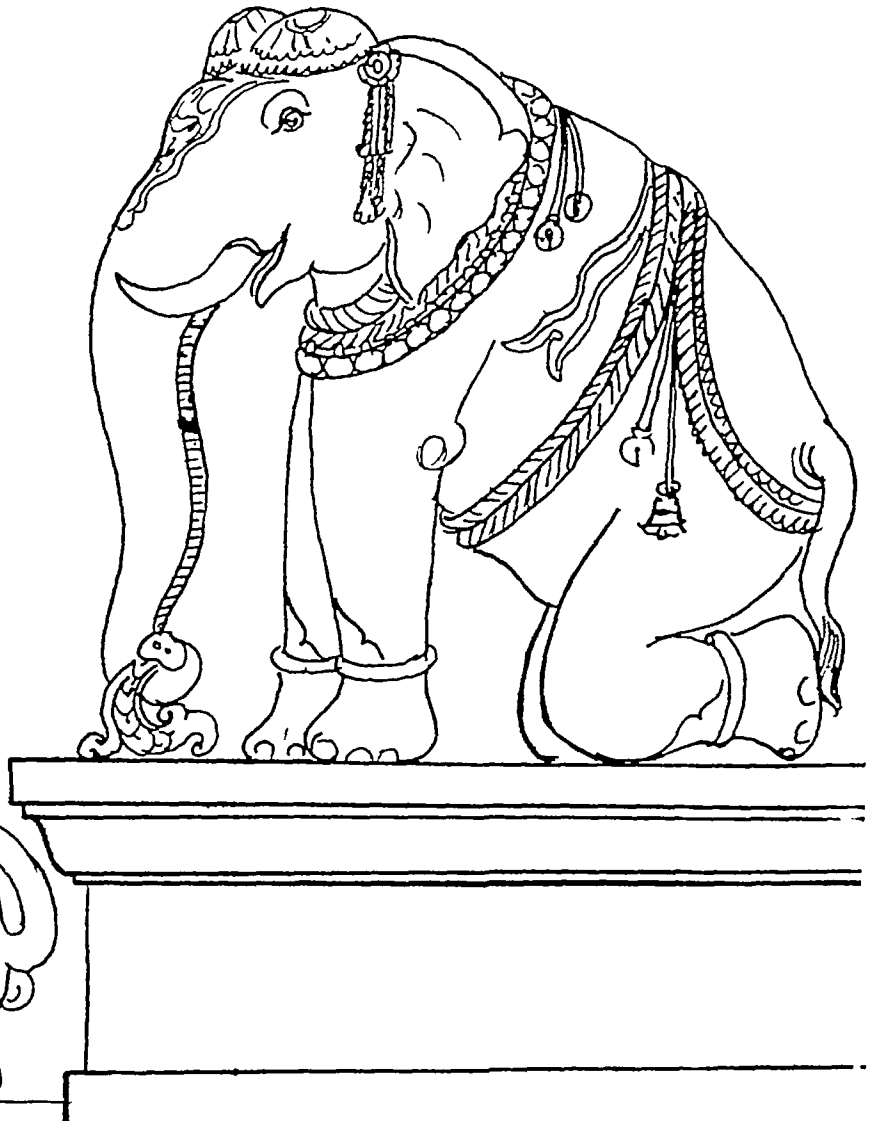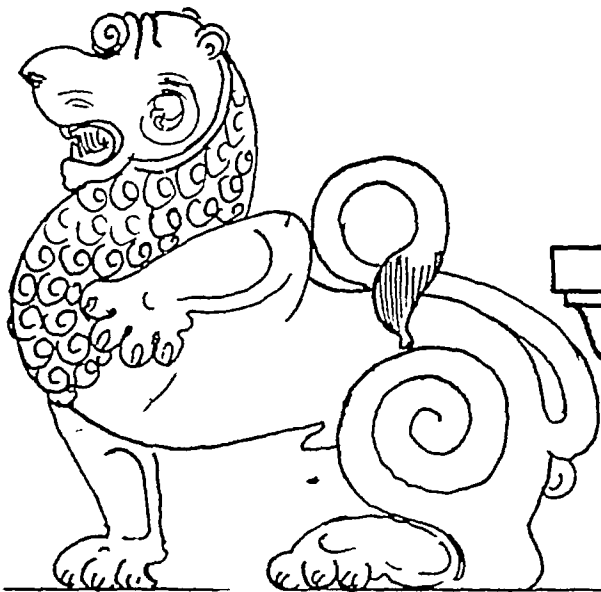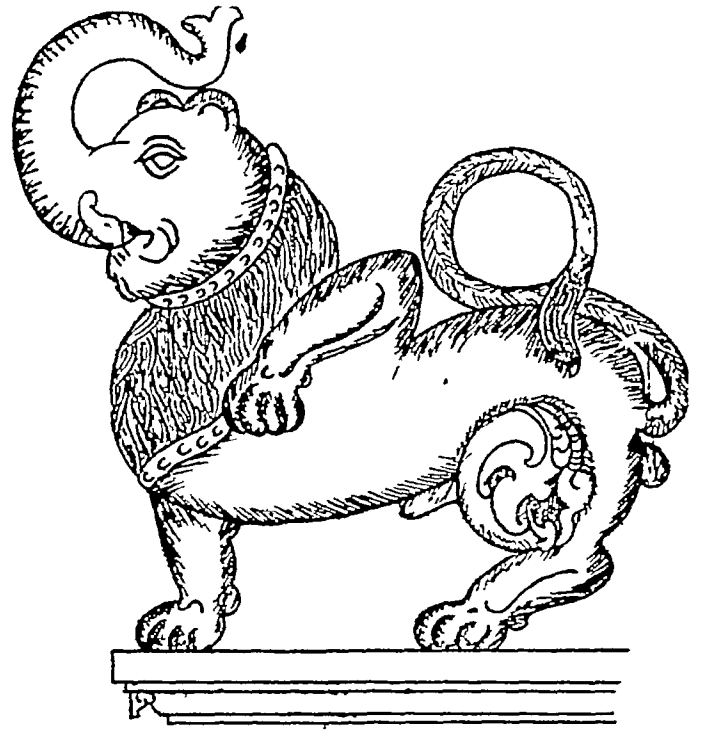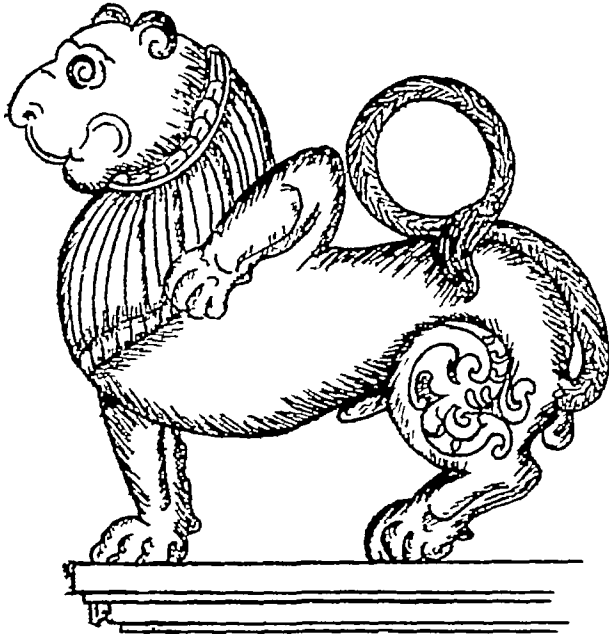
हस्ति और व्याघ्र से अलंकृत सोपान *Sopāna (sides of steps) Adorned with Lion and Elephant*
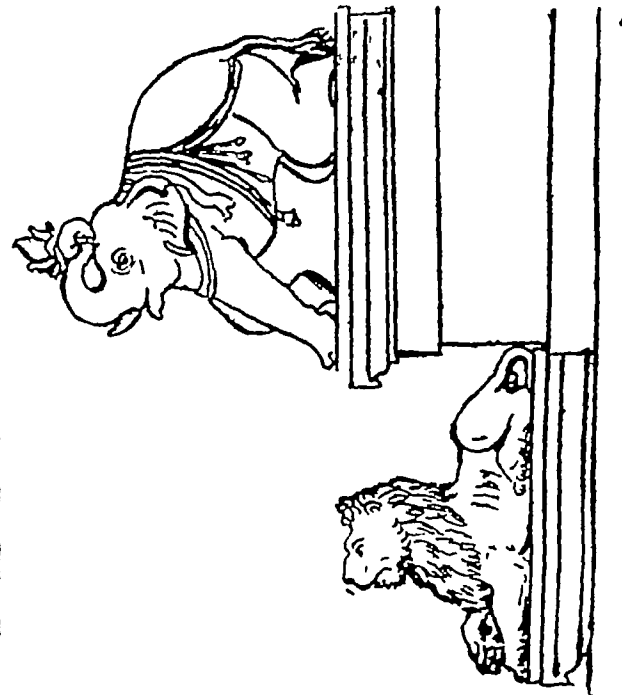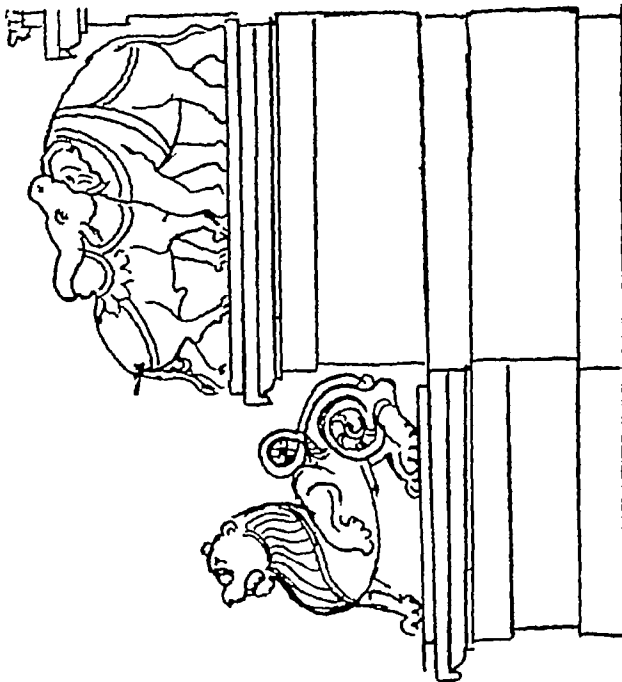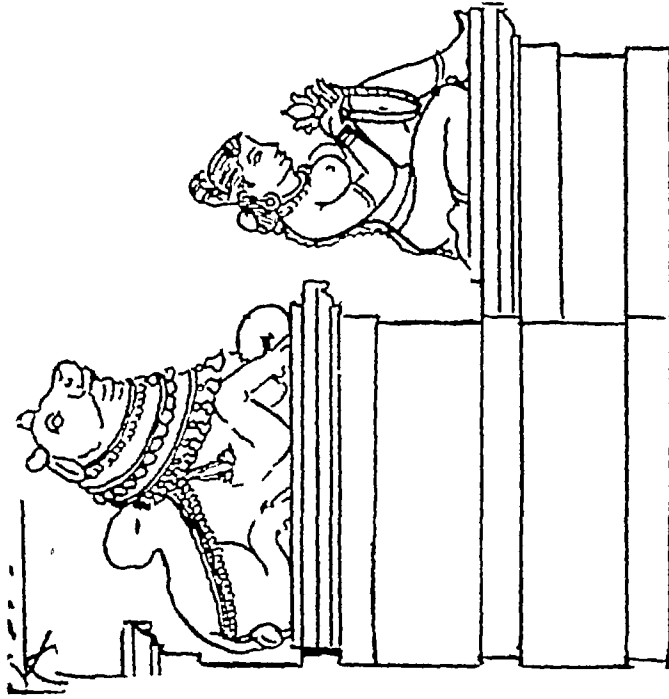
अलङ्कृत सोपान *Sopāna (Decorated sides of Steps)*

उद्गम *Udgamas, Pediments*
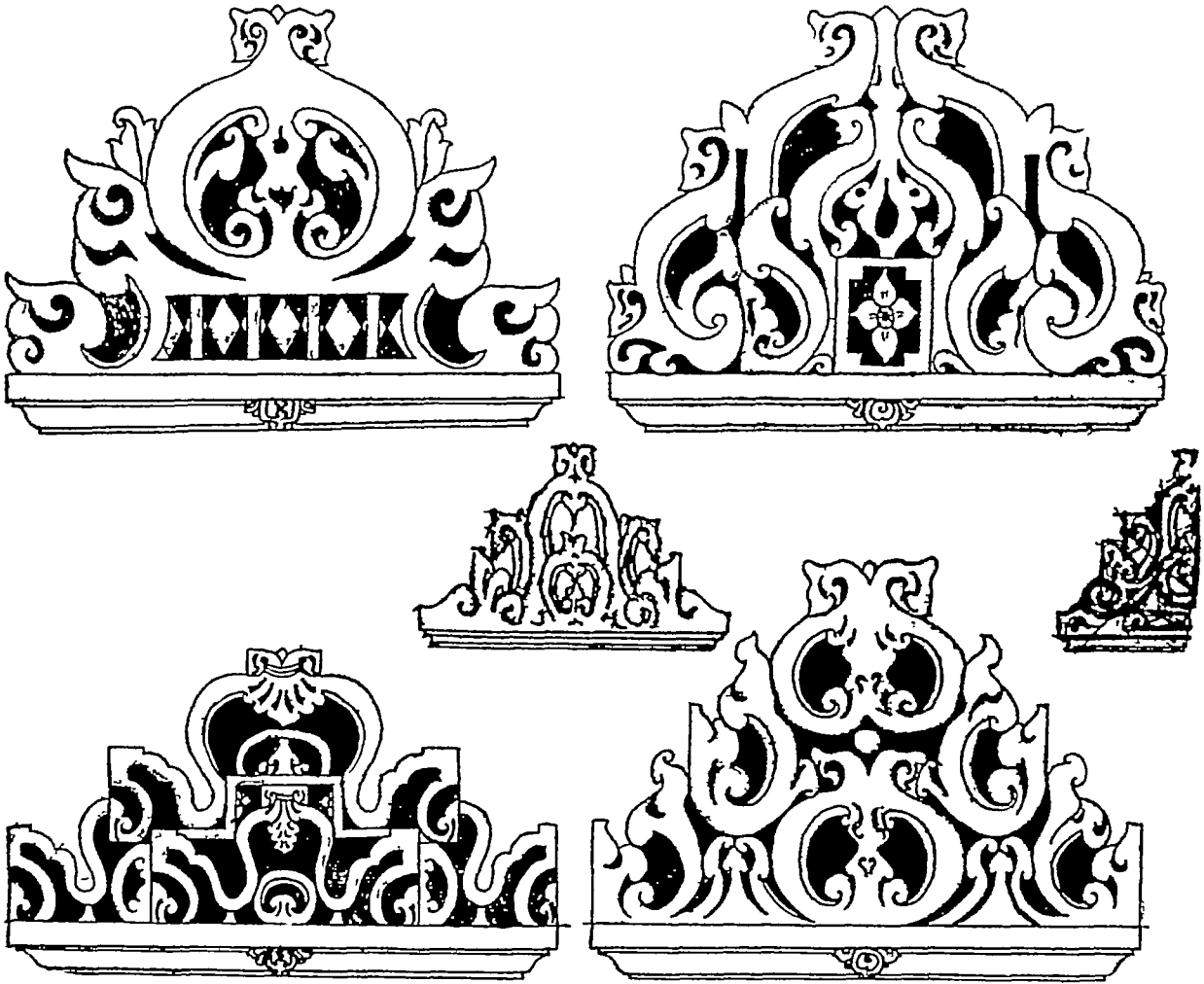
दोढीया और उद्गम *Udgamas*
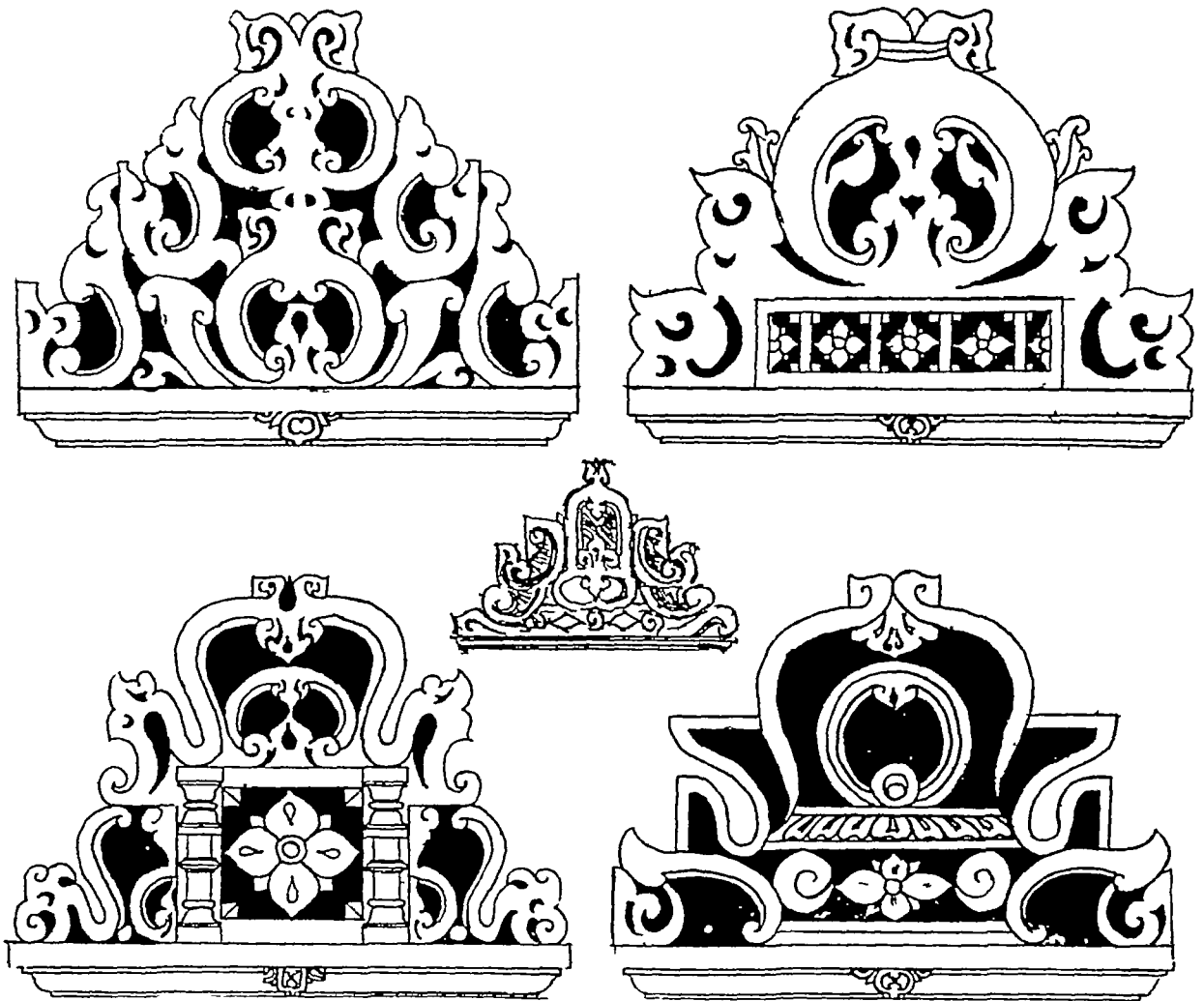
उद्गम *Udgamas, Pediments*
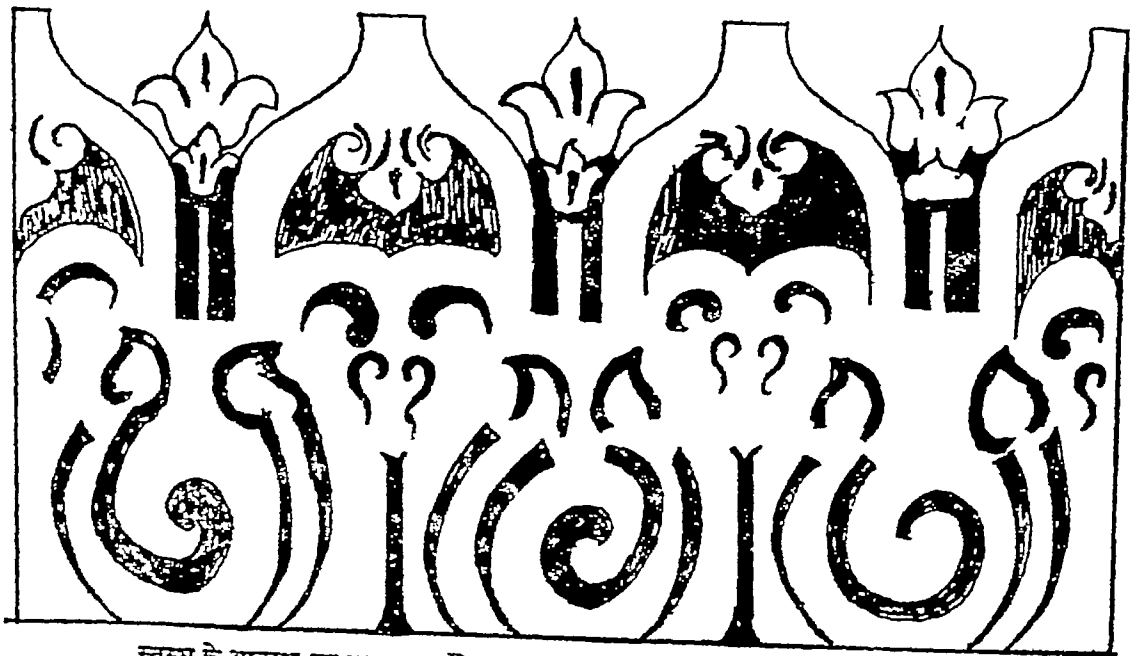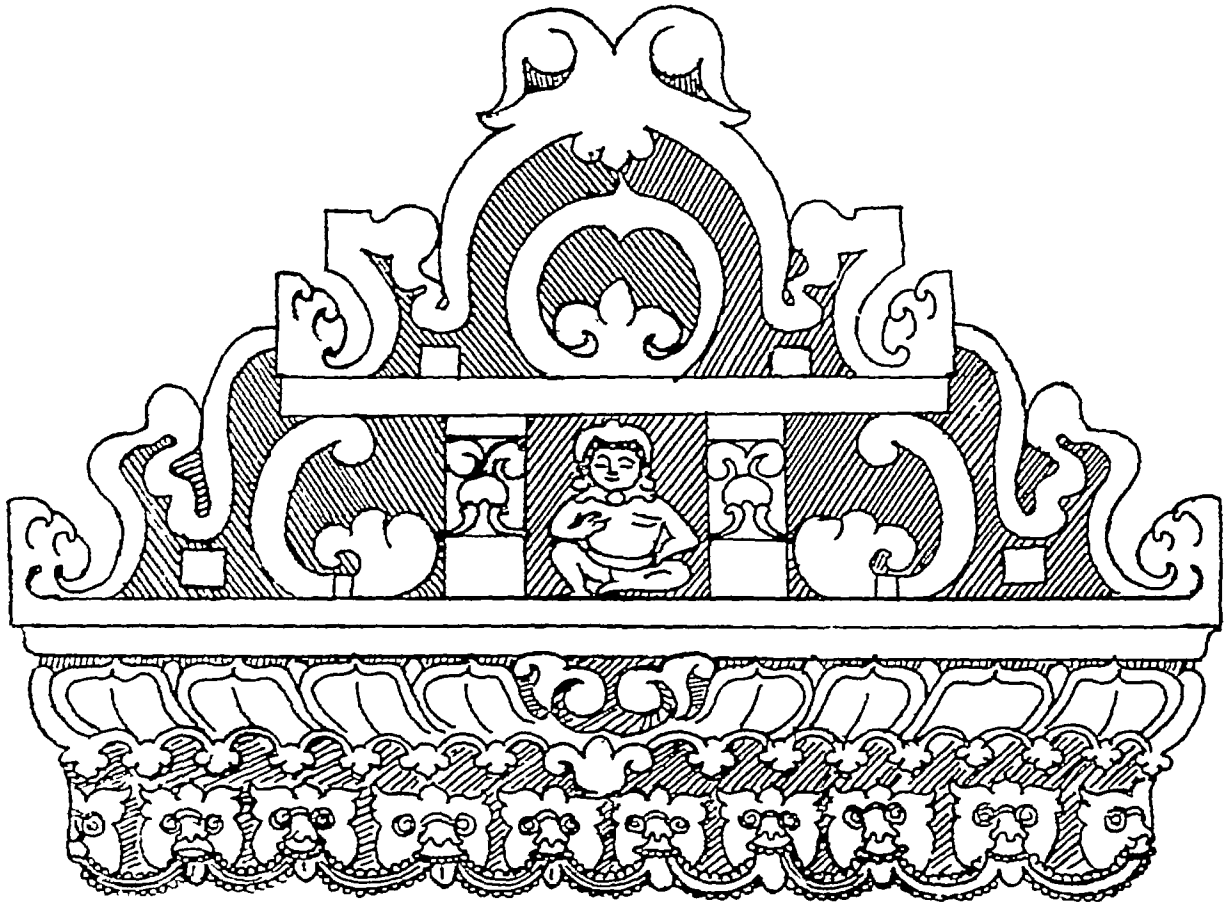
स्तम्भ के अष्टाश्र का अलकरण *Decoration of Ashtanshra of Pillars*
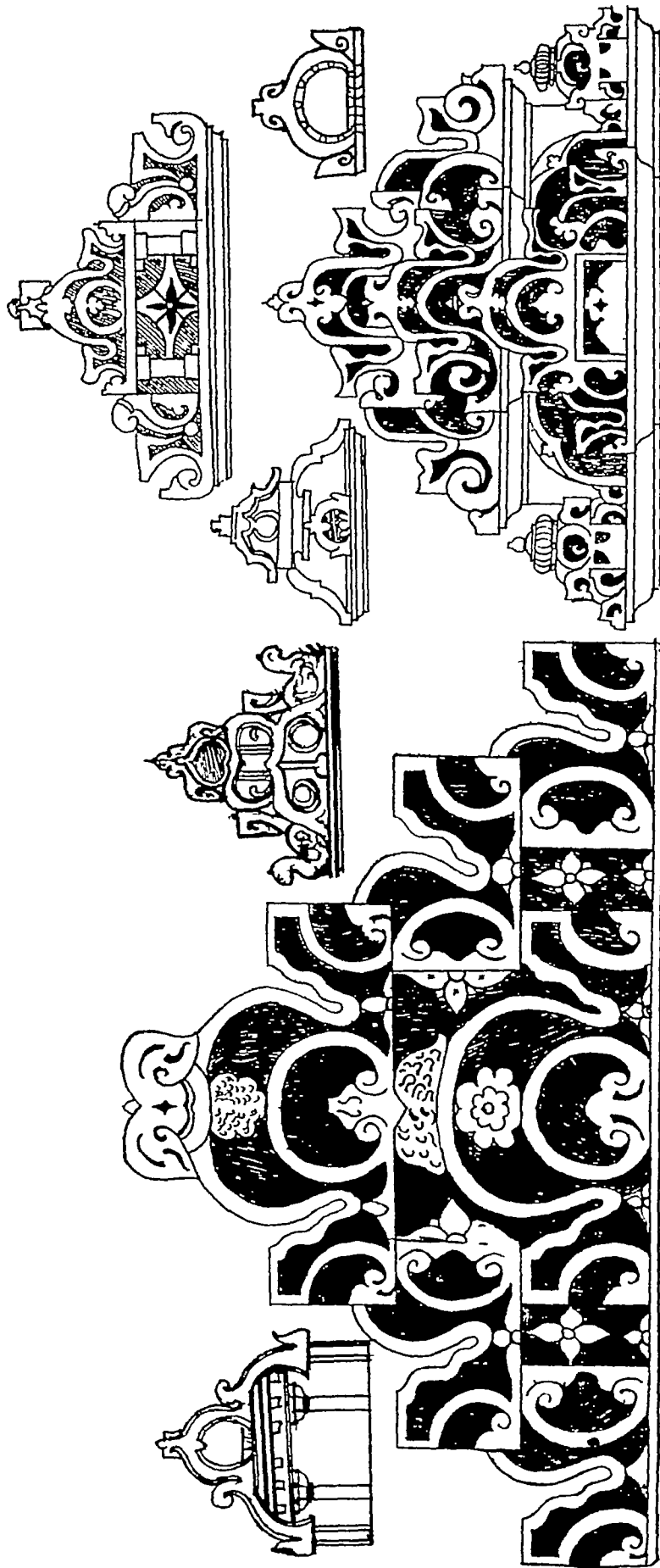
वोवोया और उद्गम *Udgamas, Pediments*

गवाक्ष के प्रकार

मंडोवर के गवाक्ष

छत्री, स्तुप

गुप्तकालिन शिखर

Different Mullioned Windows

Niche of Mandovara

Small Temple, Chhatri, Stupas

Shikhars (Spires) of Gupta Period
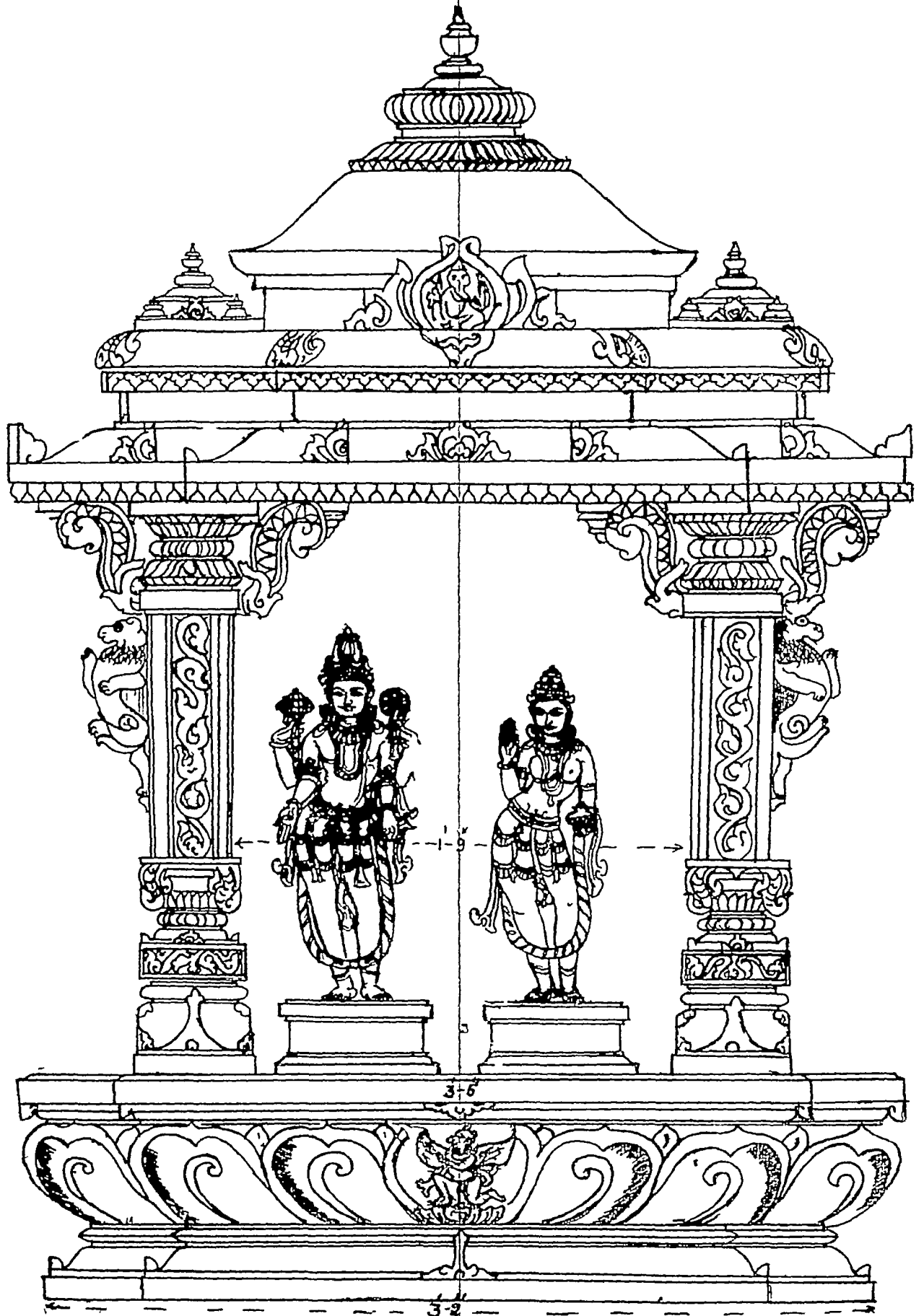
पूजा गवाक्ष और पूजागृह *Pujagruha*
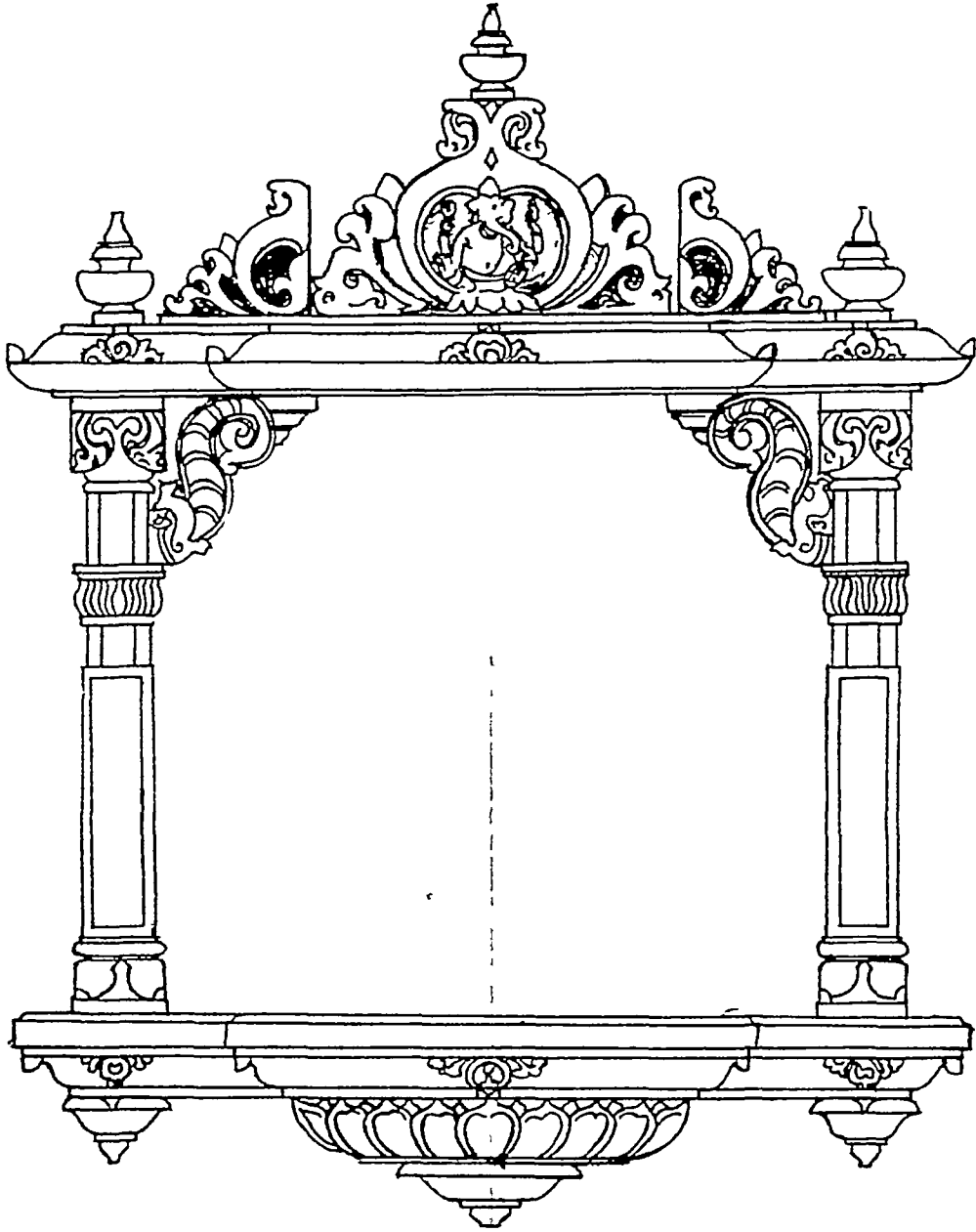
गवाक्ष *Gavāksha, Mullioned Window or Niche*

(१)	त्रिपताक	*Tripatāka*
(२)	उभय	*Ubhaya*
(३)	स्वस्तिक	*Swastika*
(४)	नन्दावर्तक	*Nandāvartaka*
(५)	प्रियवक्रा सुमुख	*Priyavakrā Sumukha*
(६)	सुवक्र	*Suvakra*
(७)	प्रियग	*Priyanga*
(८)	पद्मनाभ	*Padmanābha*
(९)	दिपचित्र	*Dipchitra*
(१०)	वैचित्र	*Vaichitra*
(११)	सिंह	*Simha*
(१२)	हंस	*Hamsa*
(१३)	मतिद	*Matida*
(१४)	बुध्यर्णव	*Budhyarnava*
(१५)	गरुड	*Garuda*
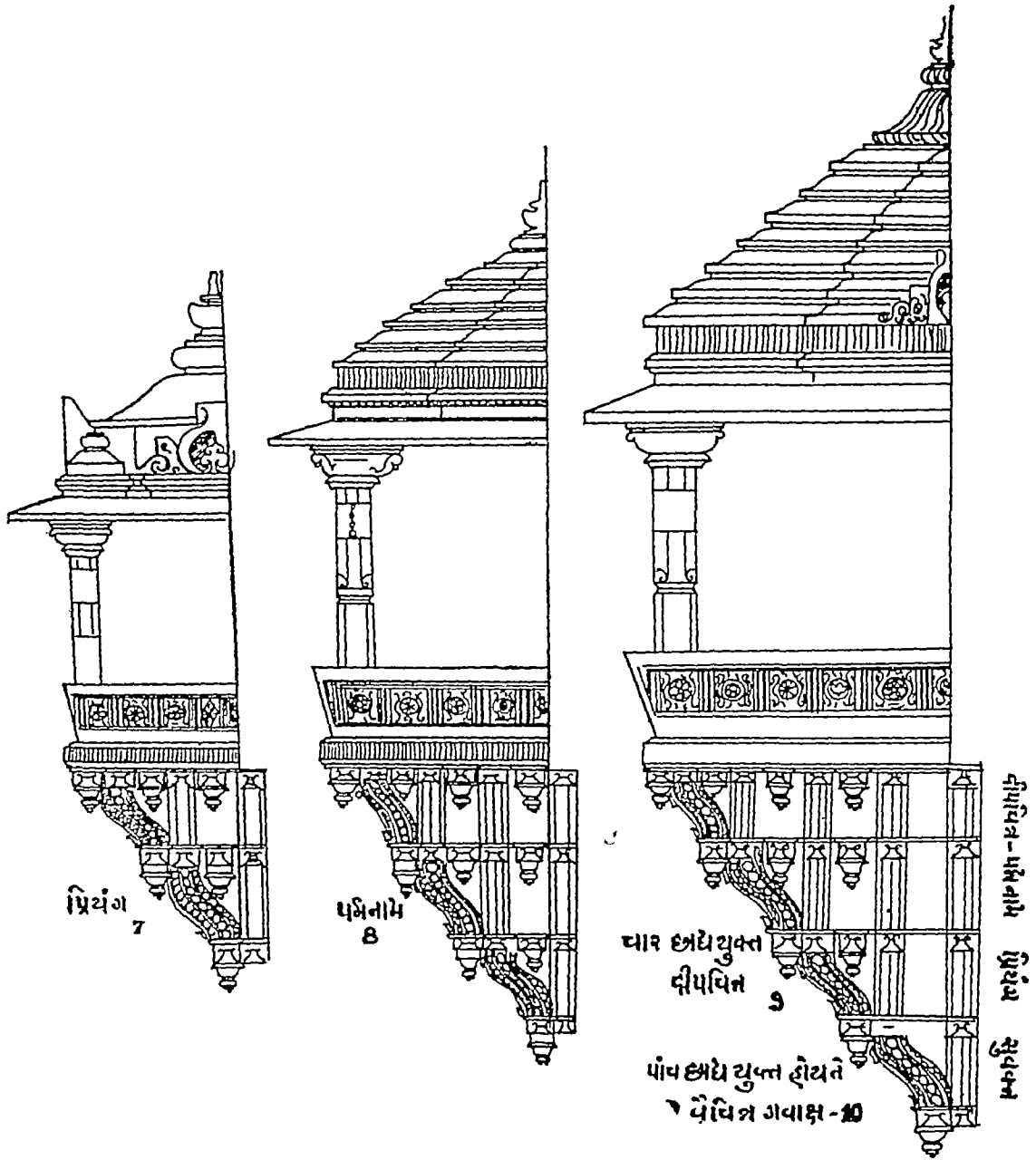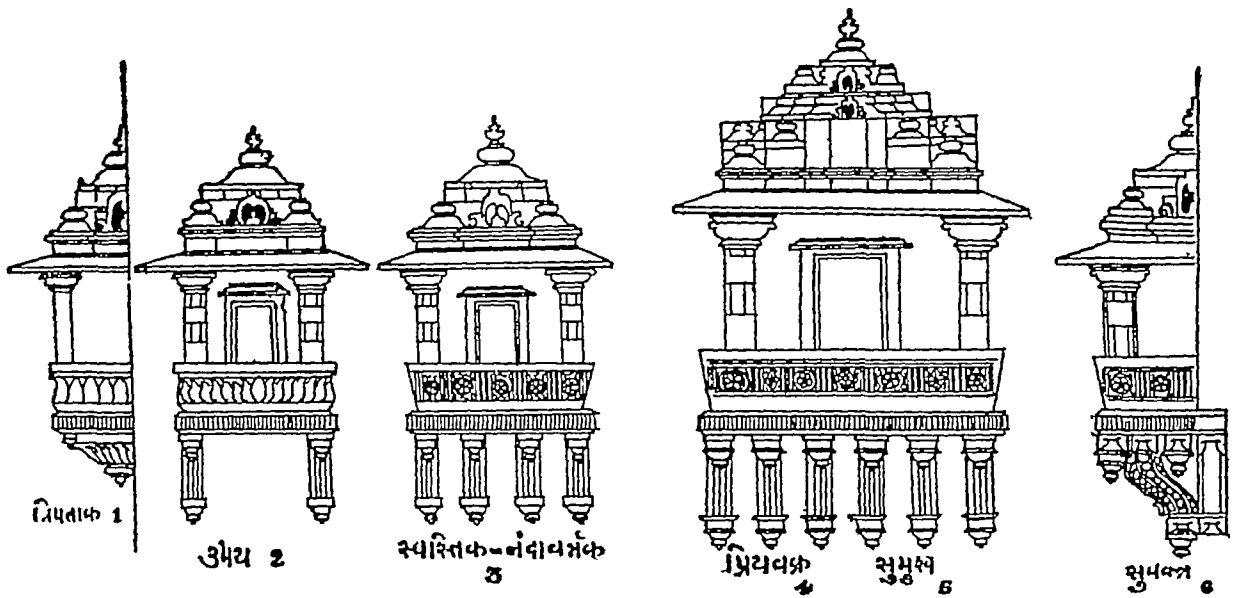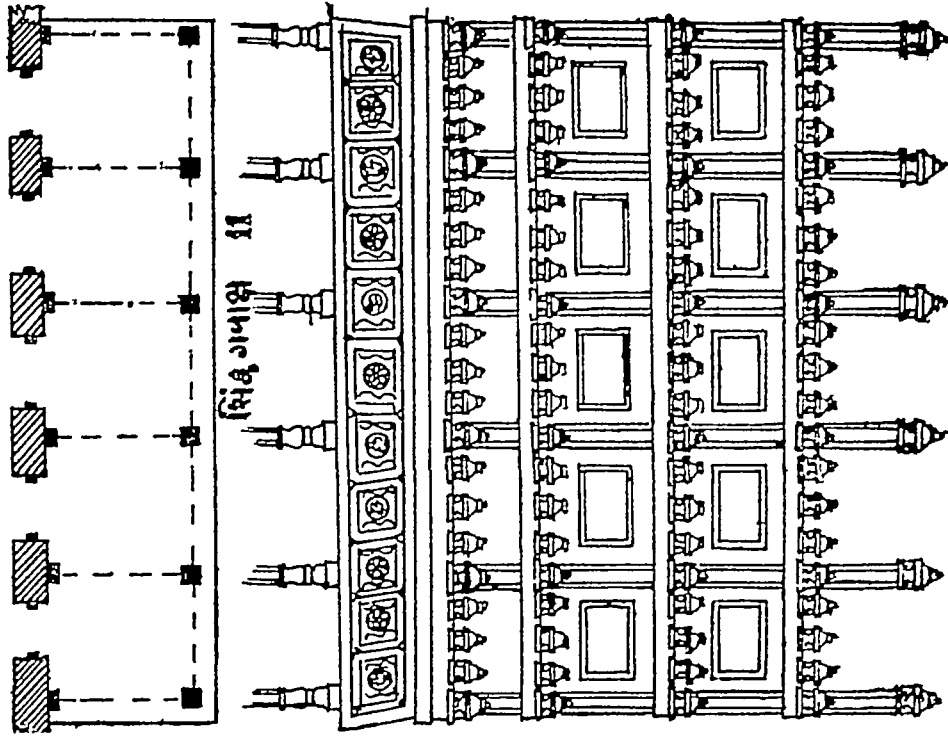
પ્રિયંગ 7
પમિનામ 8
ચાર છાદ્યે યુક્ત દીપચિત્ર 9
પાંચ છાદ્યે યુક્ત હોયતે વૈચિત્ર ગવાક્ષ - 10
ત્રિપતાક 1
ઉભય 2
સ્વસ્તિક-નંદાવર્તક 3
પ્રિયવક્ત્ર 4
સુમુખ 5
સુવક્ત્ર 6
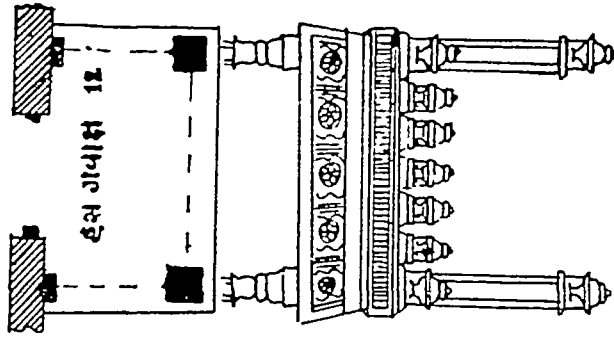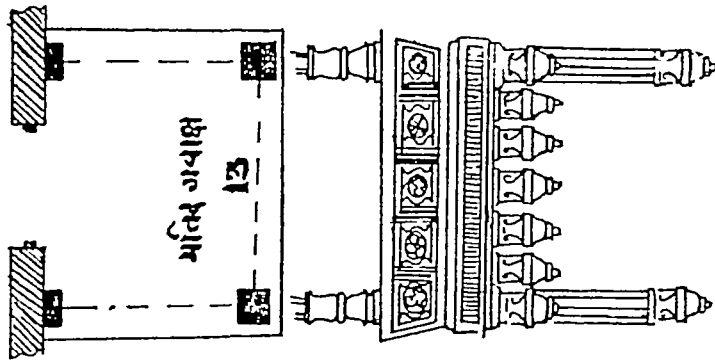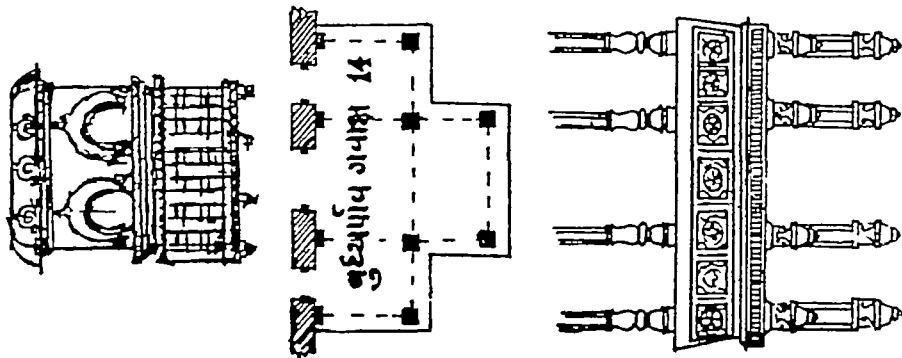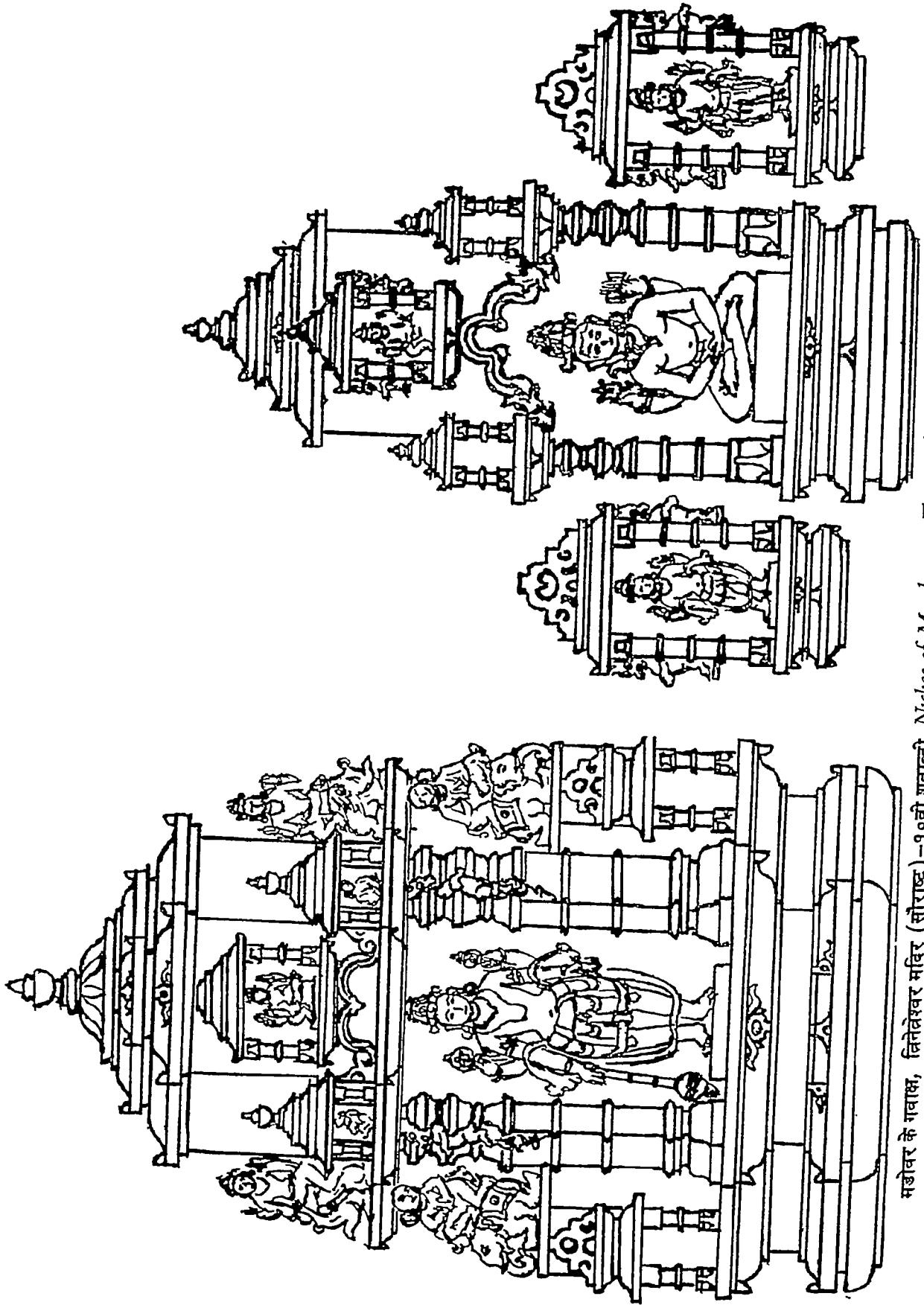
मण्डोवर के गवाक्ष, त्रिनेत्रेश्वर मंदिर (सौराष्ट्र)–१०वीं शताब्दी *Niches of Mandovara, Trinetreshwar Temple (Saurāshtra–10th Century)*
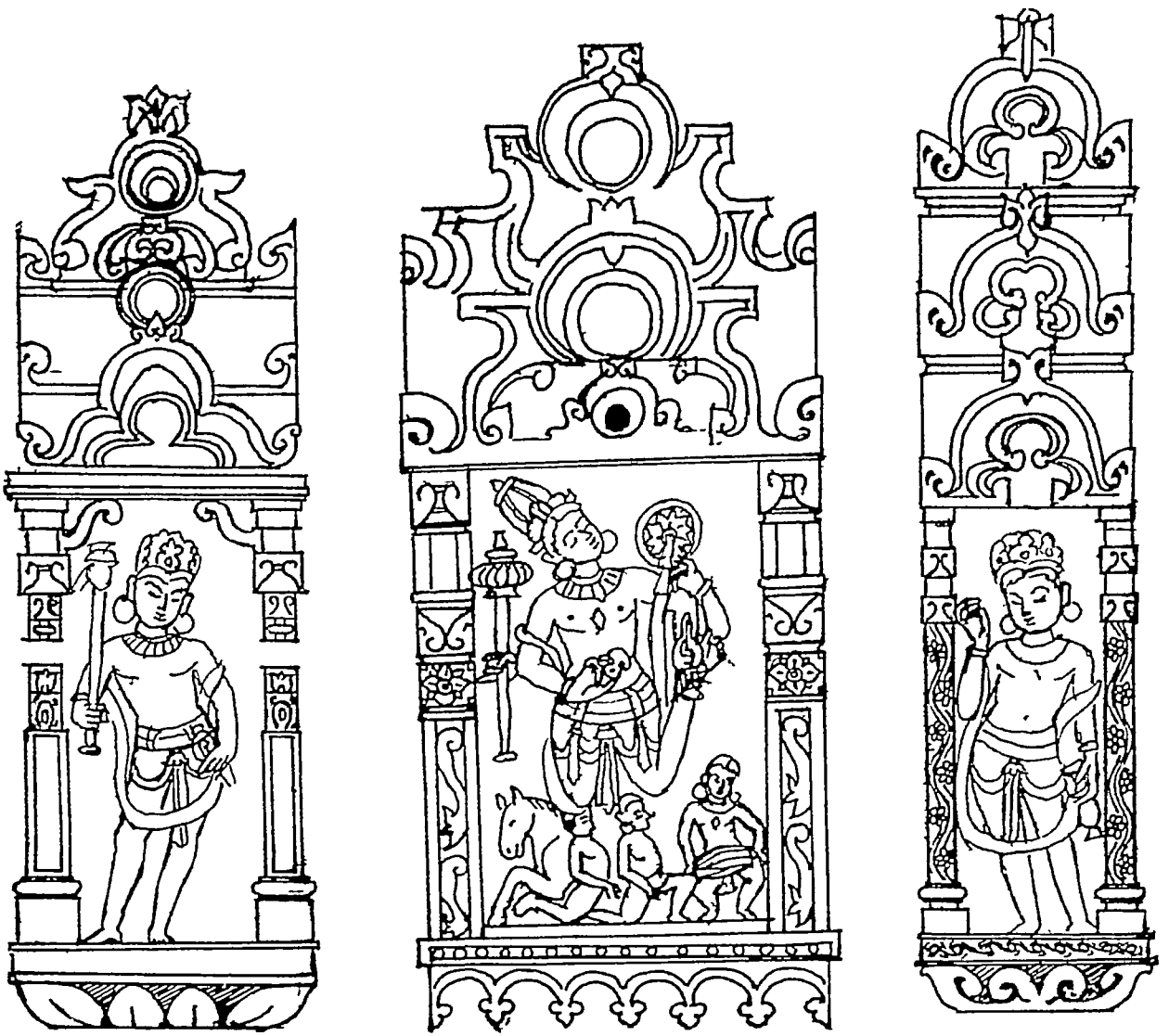
मडोवर के गवाक्ष, १० वी सदी *Niches of Mandovara, 10th Century*
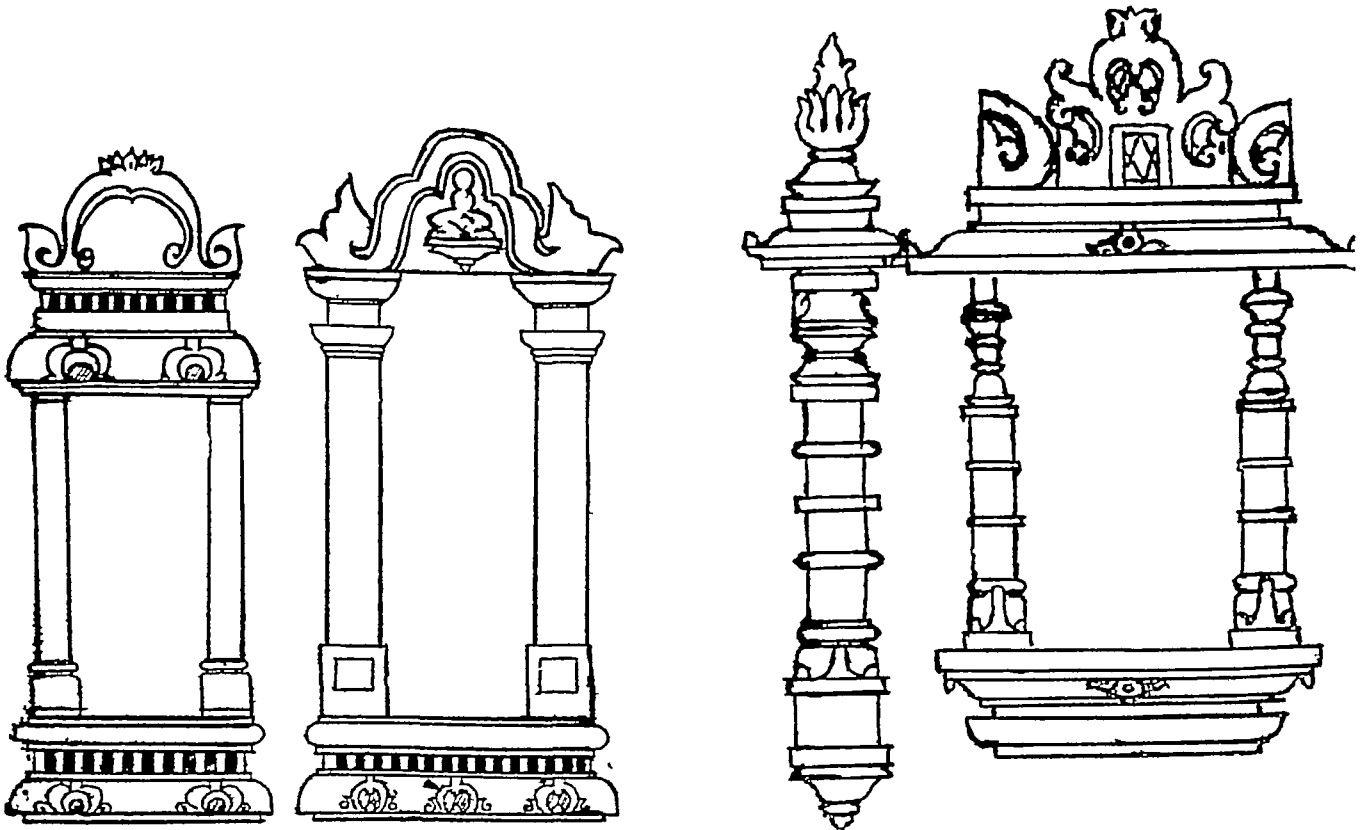
मण्डोवर के गवाक्ष, १० वी सदी *Gavākshas of Mandovara (10th Century)*
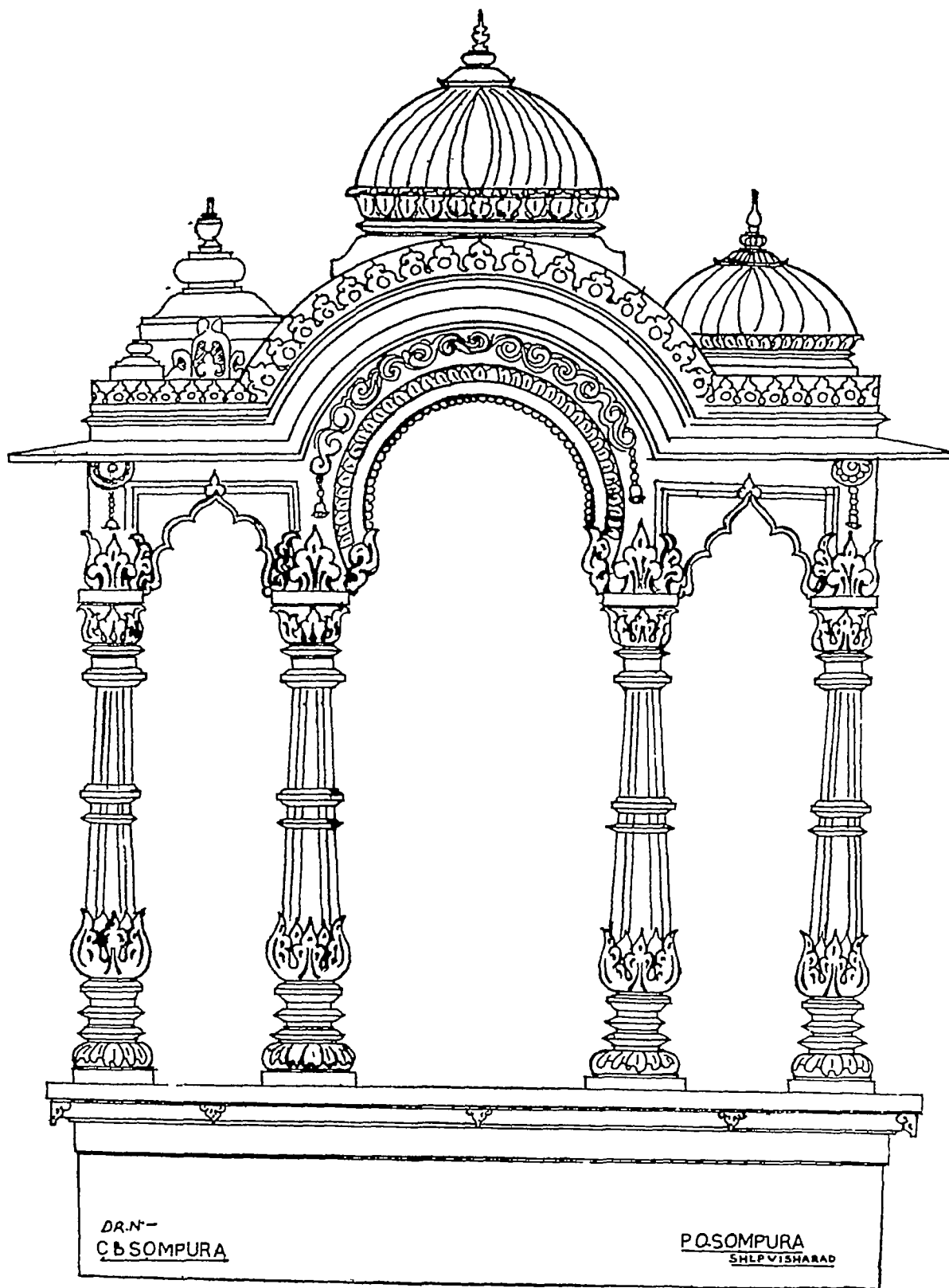
छत्री, राजपुताना शैली *Chhatri, Rajputana Style*
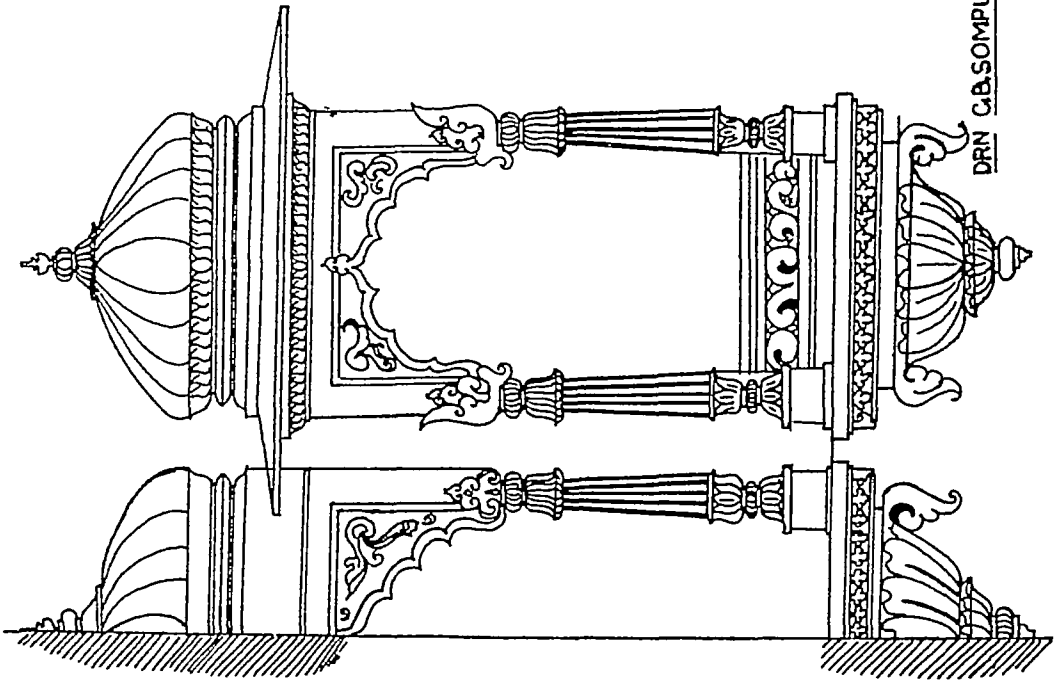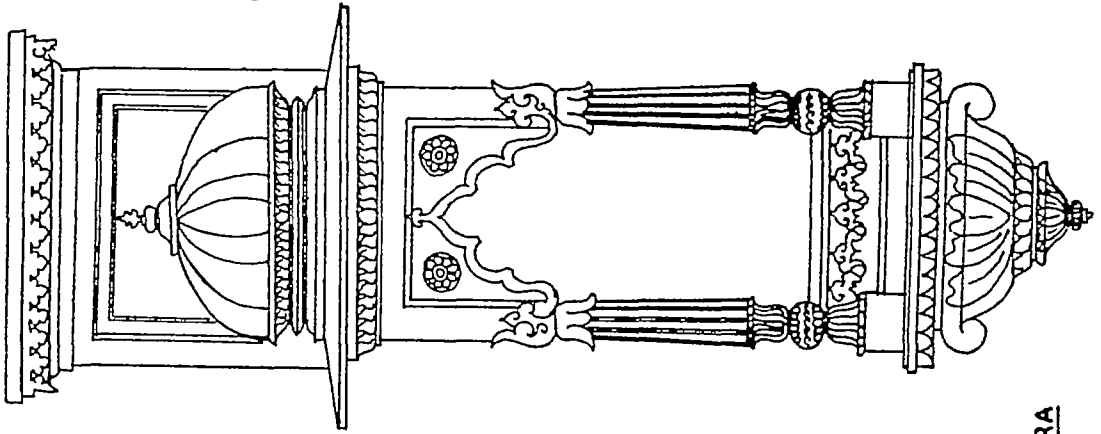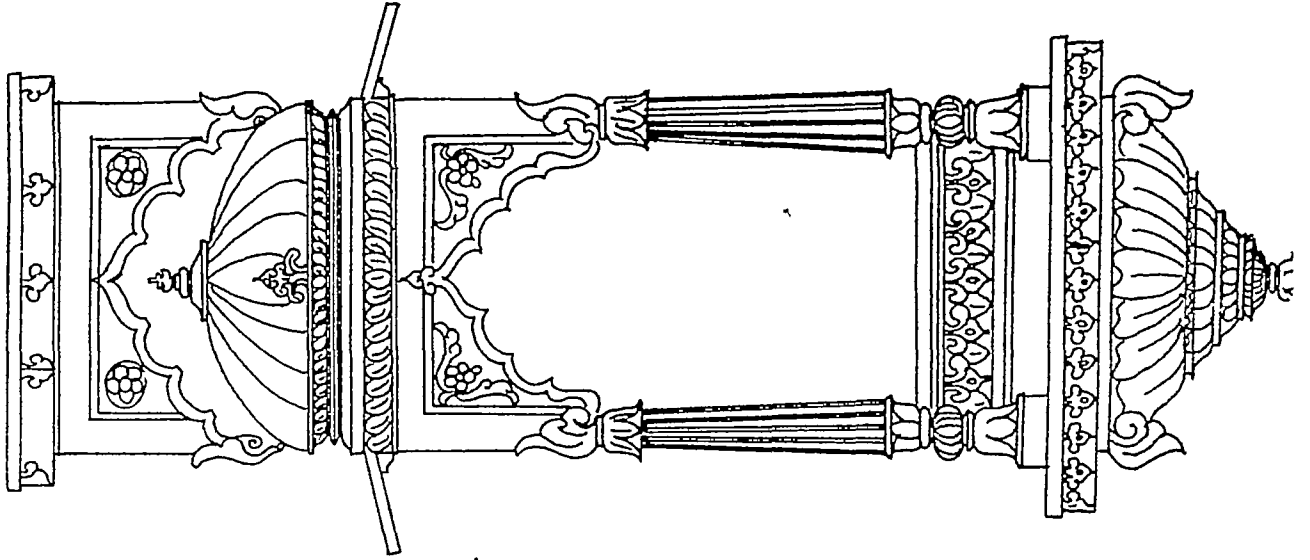
राजपुताना शैली के गवाक्ष *Niches in Rajputānā Style*

बौद्ध और जैन स्तूप *Buddha and Jain Stupa*
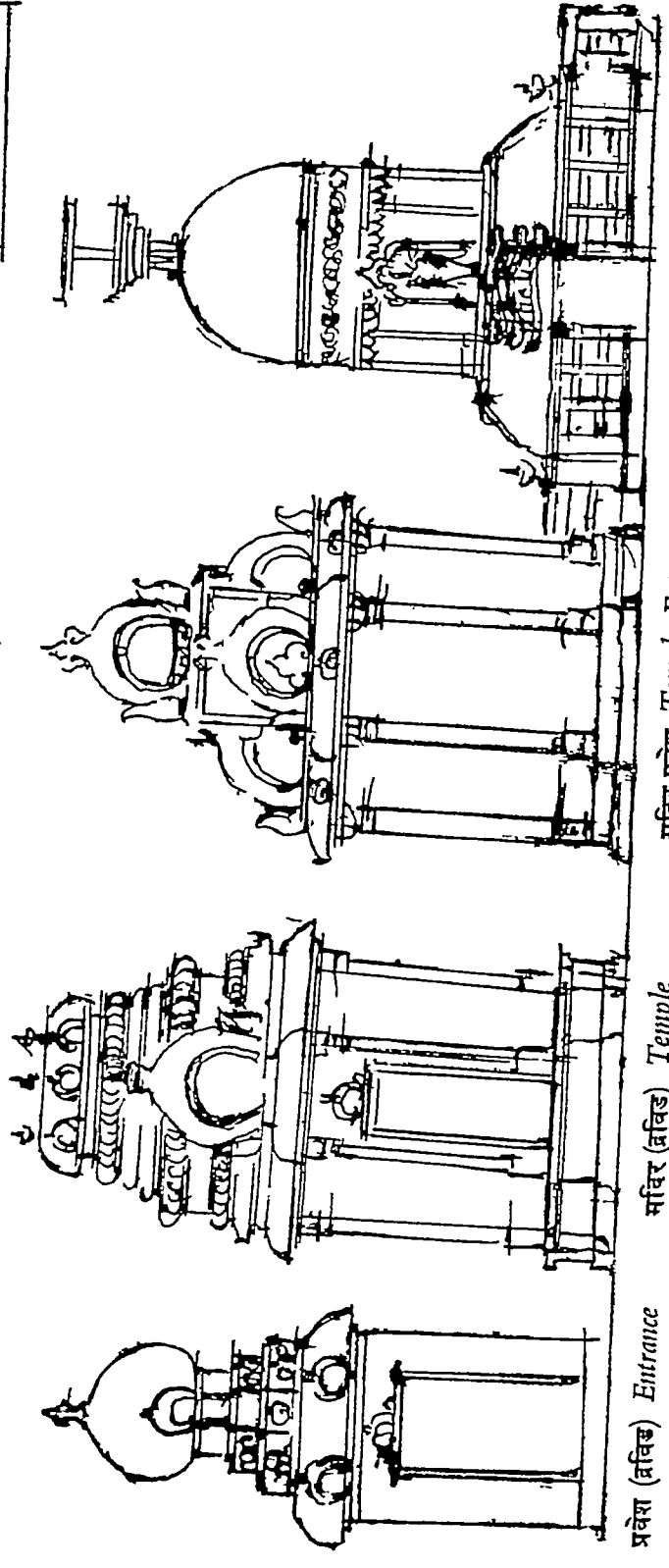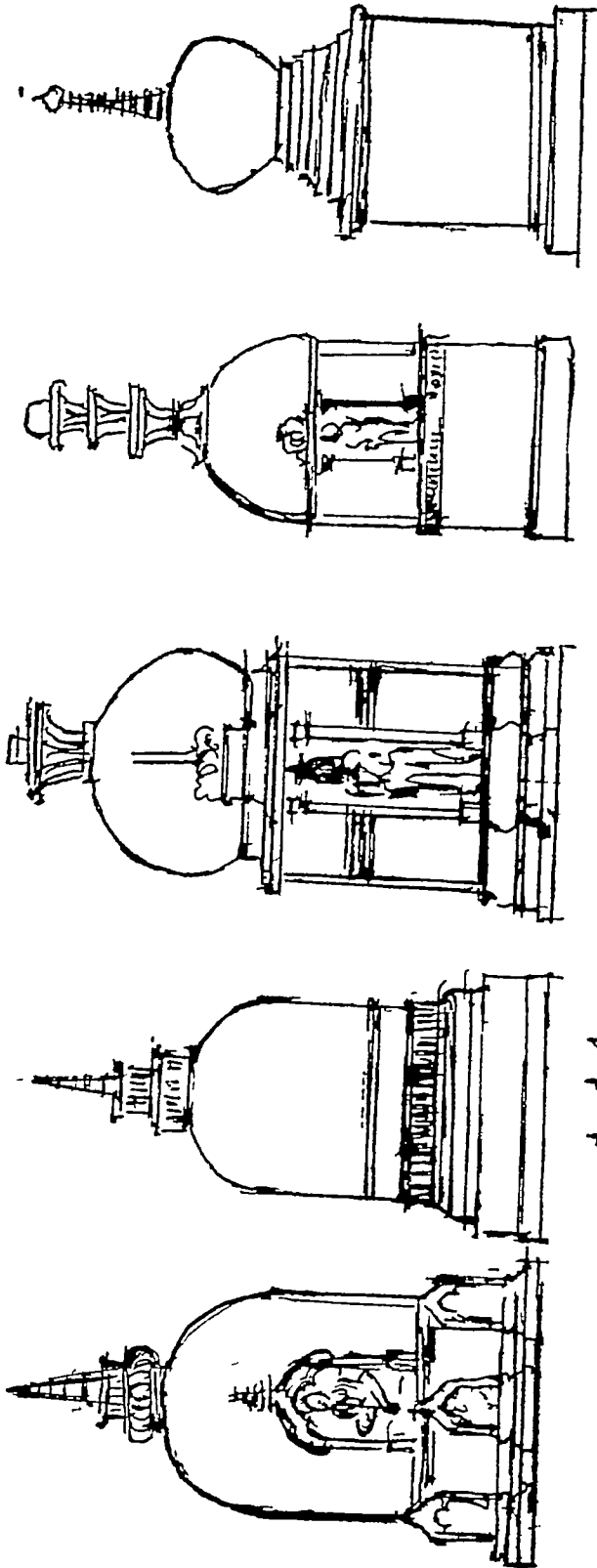
प्रवेश (द्रविड़) *Entrance*

मंदिर (द्रविड़) *Temple*

मंदिर प्रवेश *Temple Entrance*
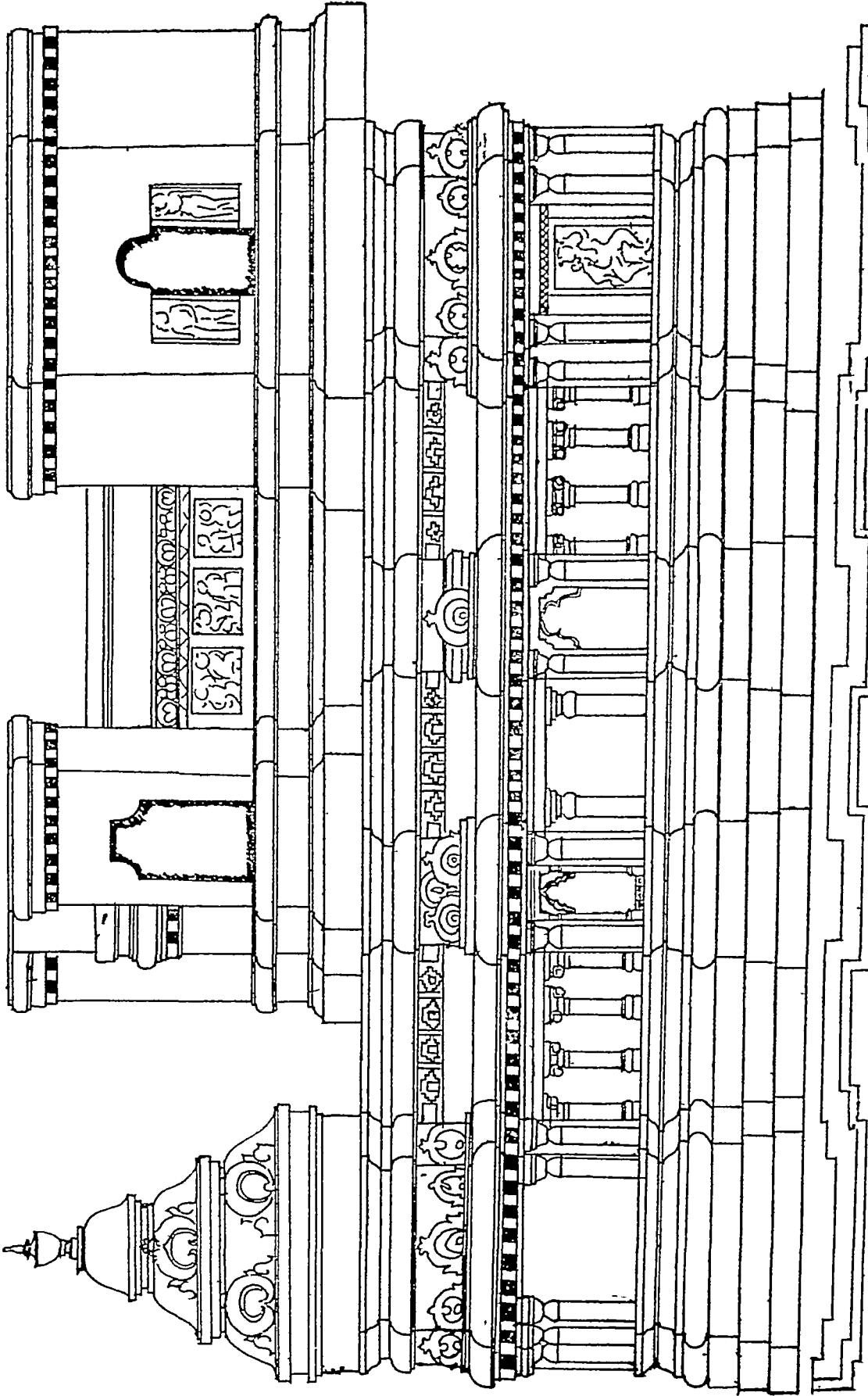
स्तूप *Stupa*

गोप मंदिर की जगली (सौराष्ट्र), पाचवी शताब्दी Plinth of Gop Temple (Saurashtra), 5th Century
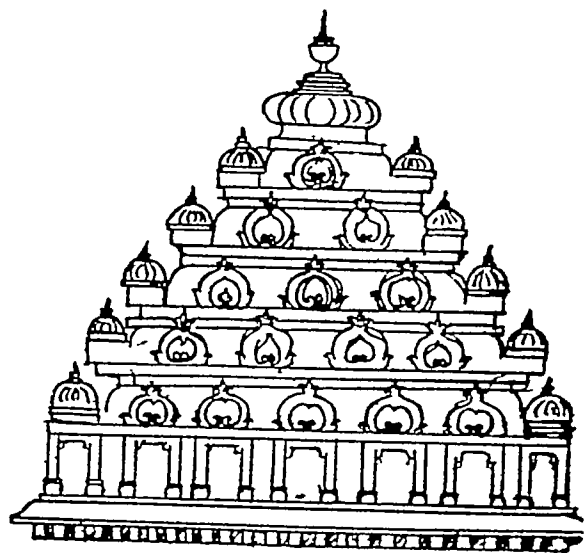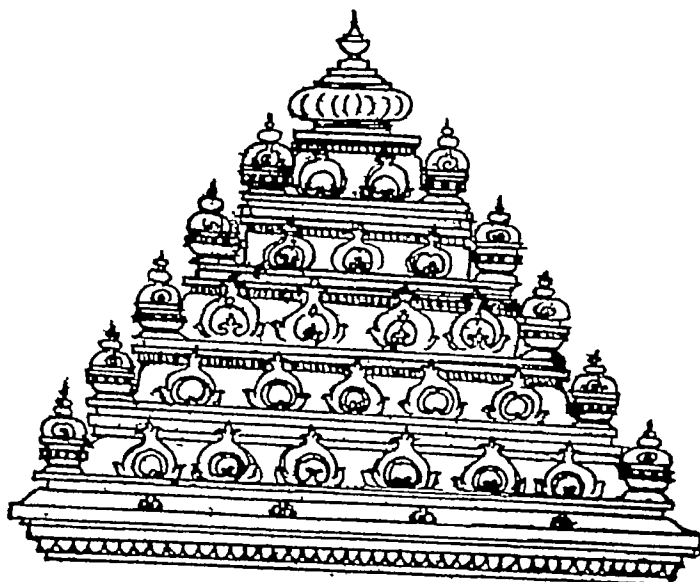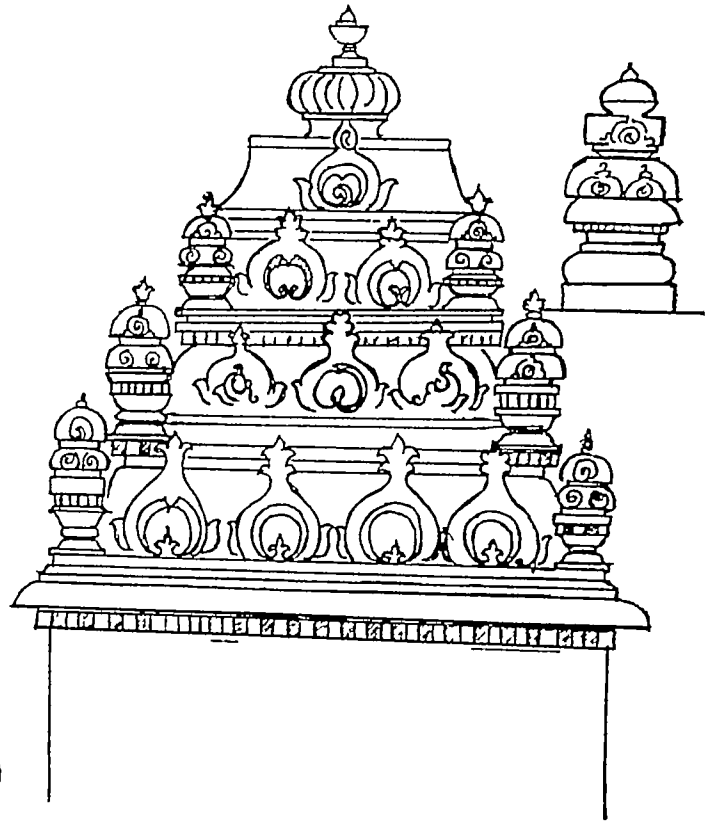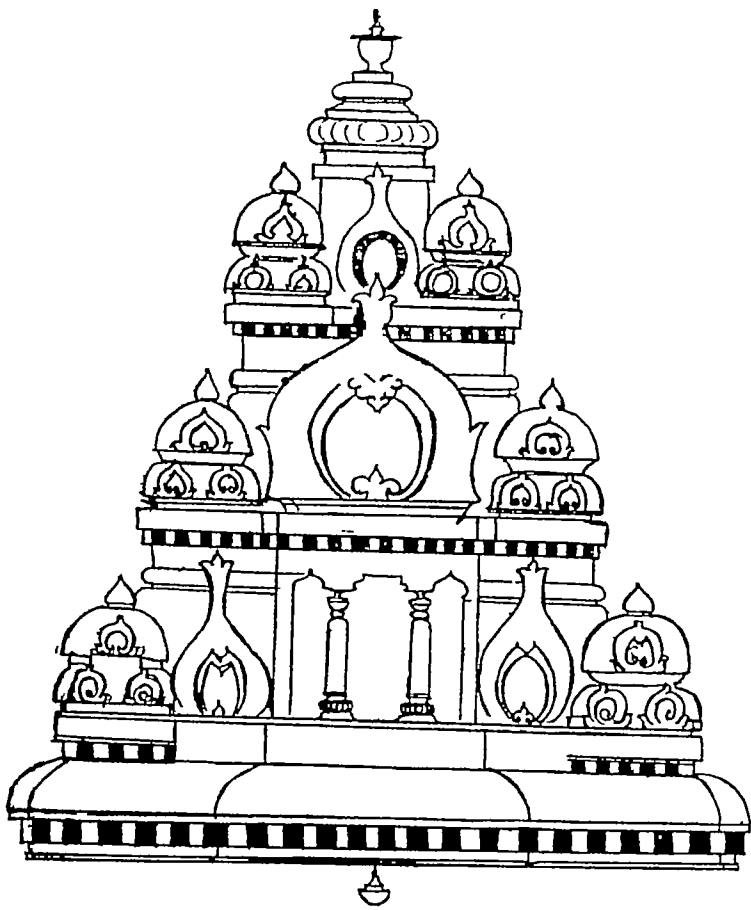
गुप्तकालिन सौराष्ट्र के शिखर *Different Types of Shrines in Saurashtra of Gupta Period*
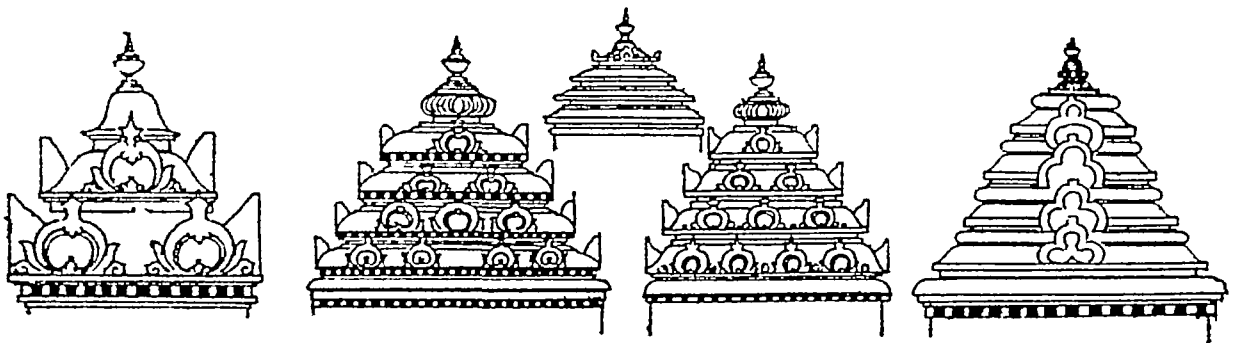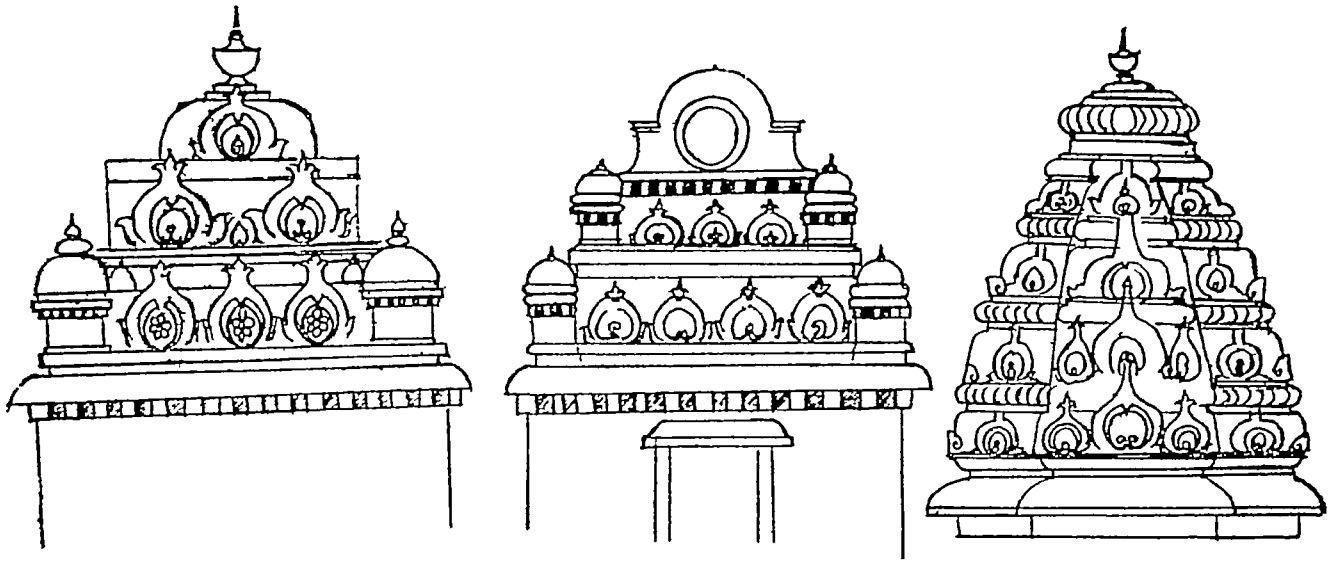
गुप्तकालिन सौराष्ट्र के शिखर *Different Types of Shrines in Saurāshtra of Gupta Period*

मकर मुख

सिंहासन

टेकरा

वितान

विद्याधर स्वरूप

विकर्ण वितान

छत

शिखर के भाग

कलश

आमलसारक

ध्वज दंड

सम्वर्णा

कुडचला

Gargoyle

Throne

Dome

Vidyadharas

Corner ceilings

Parts and Details of spire

Kalasha

Amalsaraka

Samvarna

Kudchala, Decorative Element
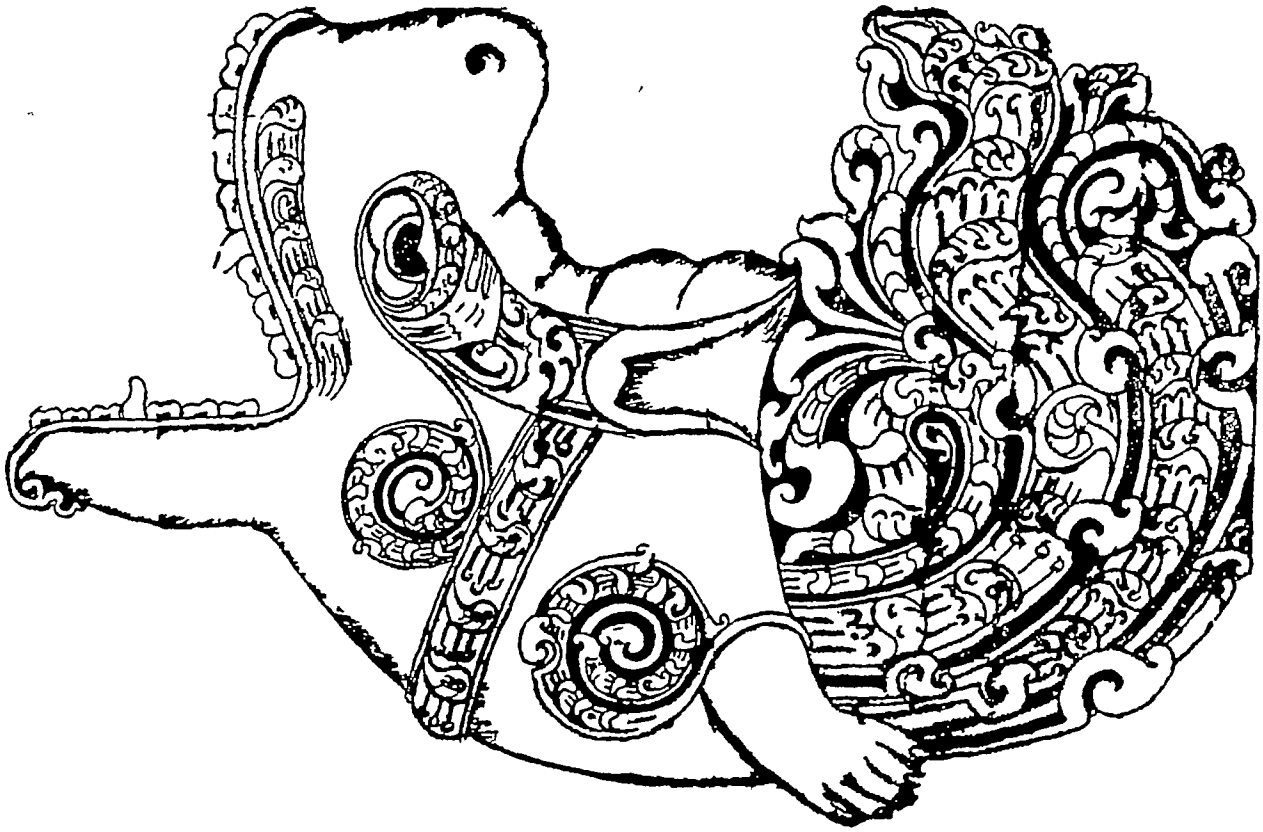
गर्भगृह का जल निर्गम *Gargoyle*
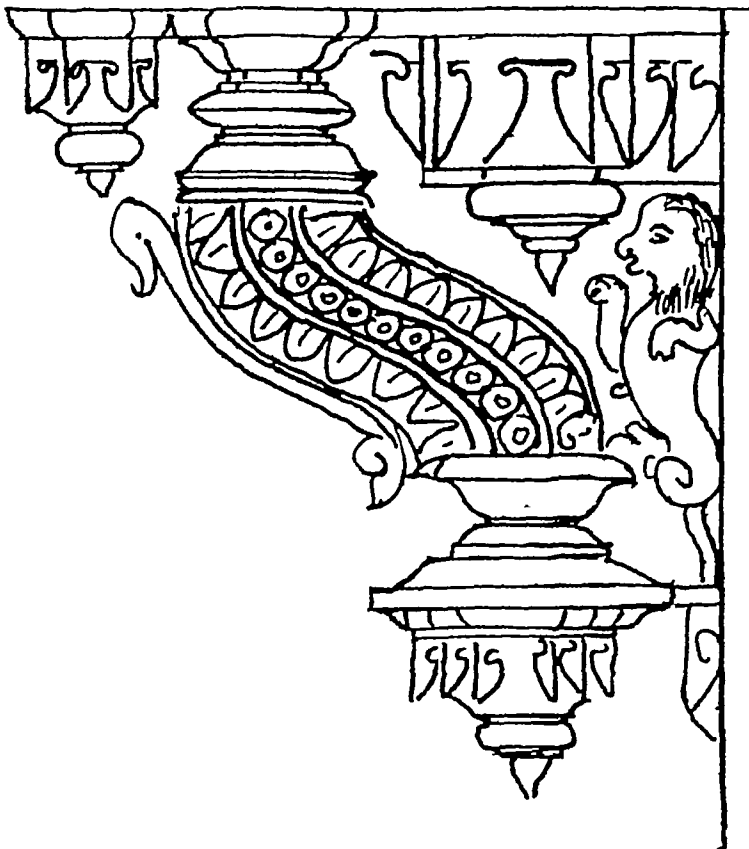
मदल *Madal, Bracket*
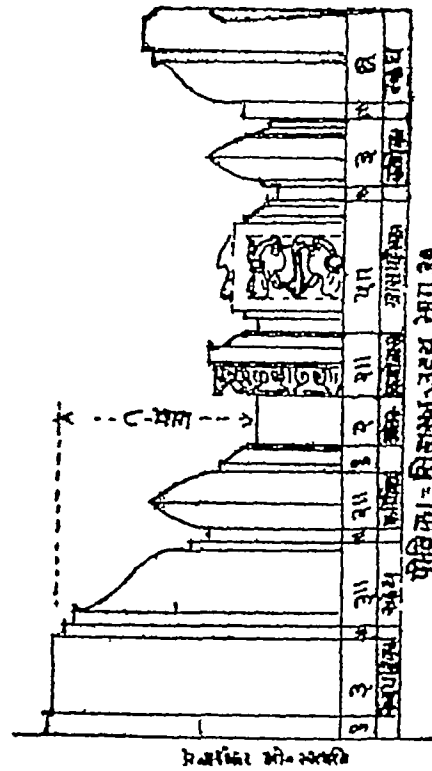
सिंहासन के घाट *Details of Simhasana, Throne*
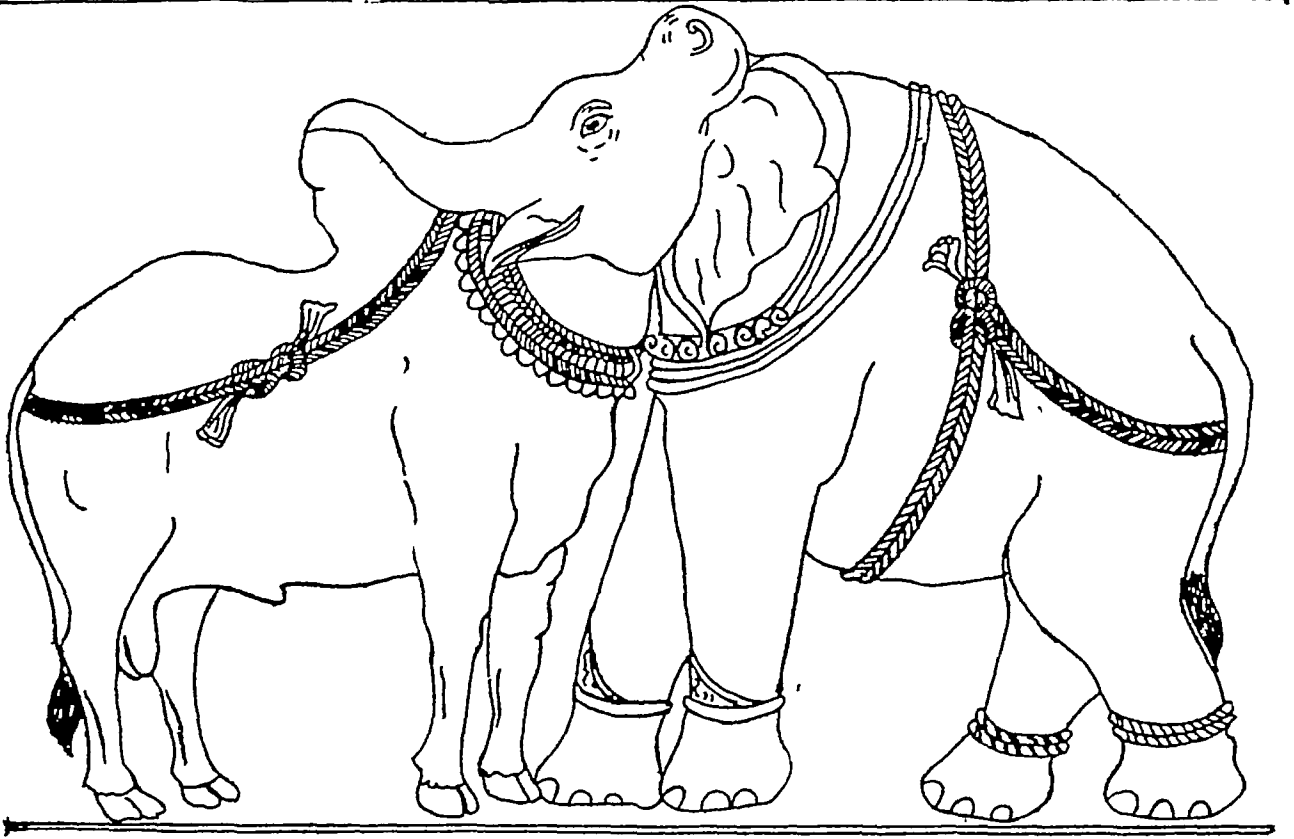
वृषभ-हस्ति युग्म *Elephant & Bullock*
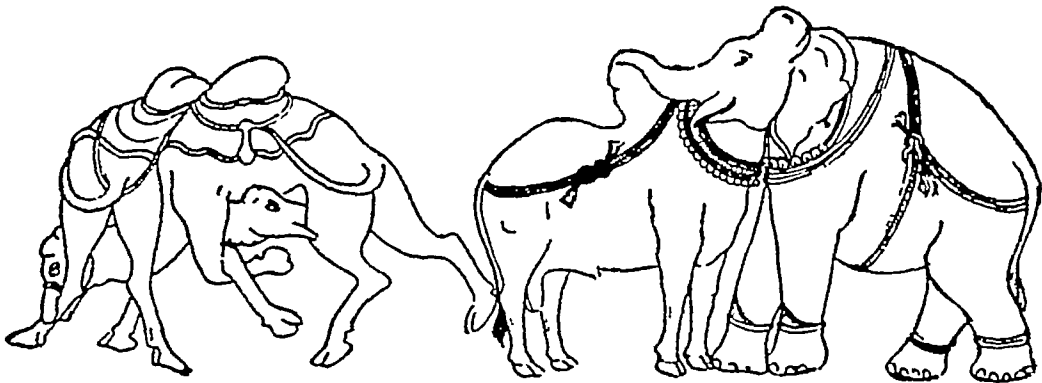
उँटयुद्ध *Camel fight*

वृषभ-हस्ति युग्म
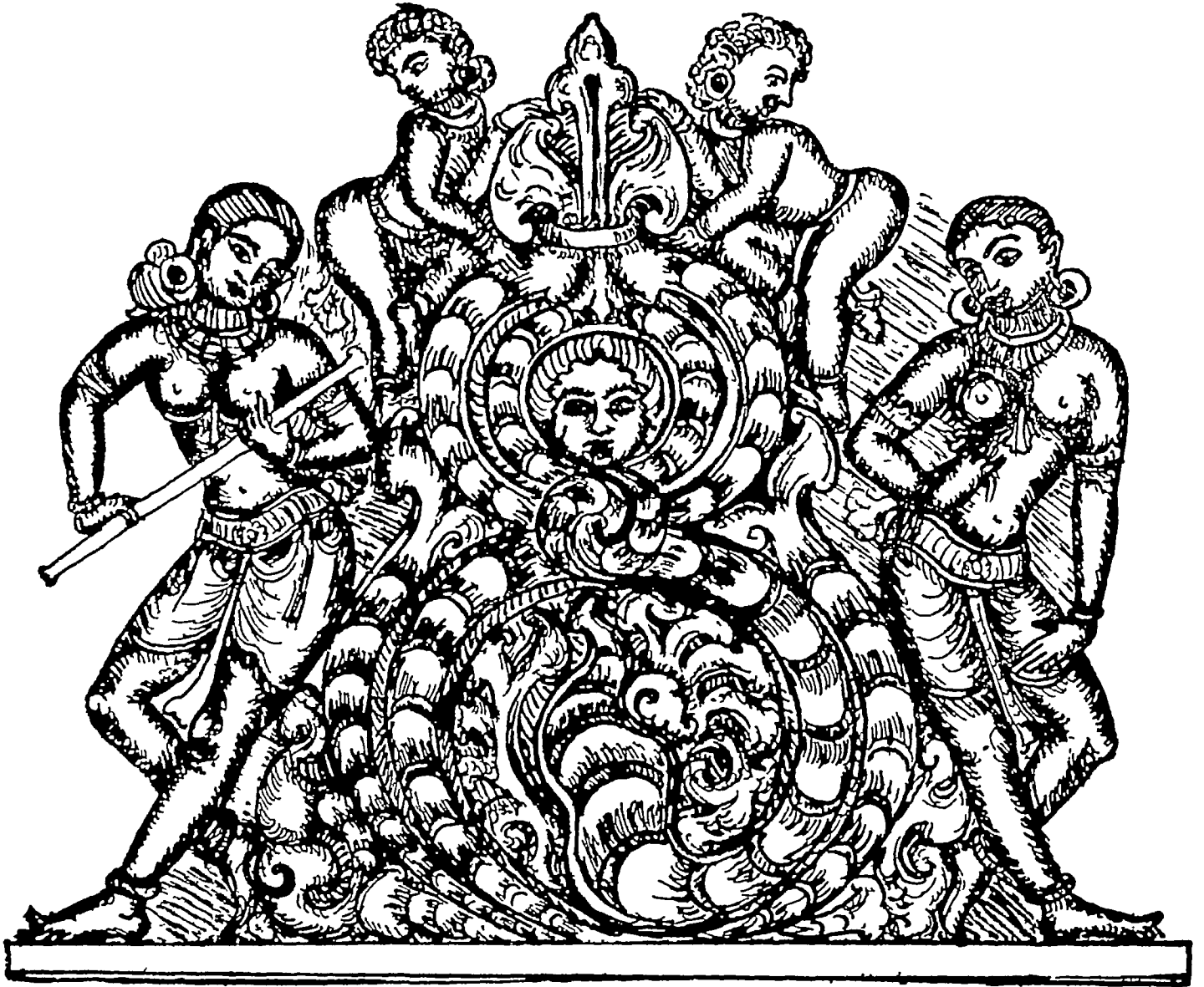
टेकरा–राजाराणी मदिर, भुवनेश्वर *Rajaram Temple, Bhuvaneshwar*

त्रिकोण छत *Ceilings of Corner*
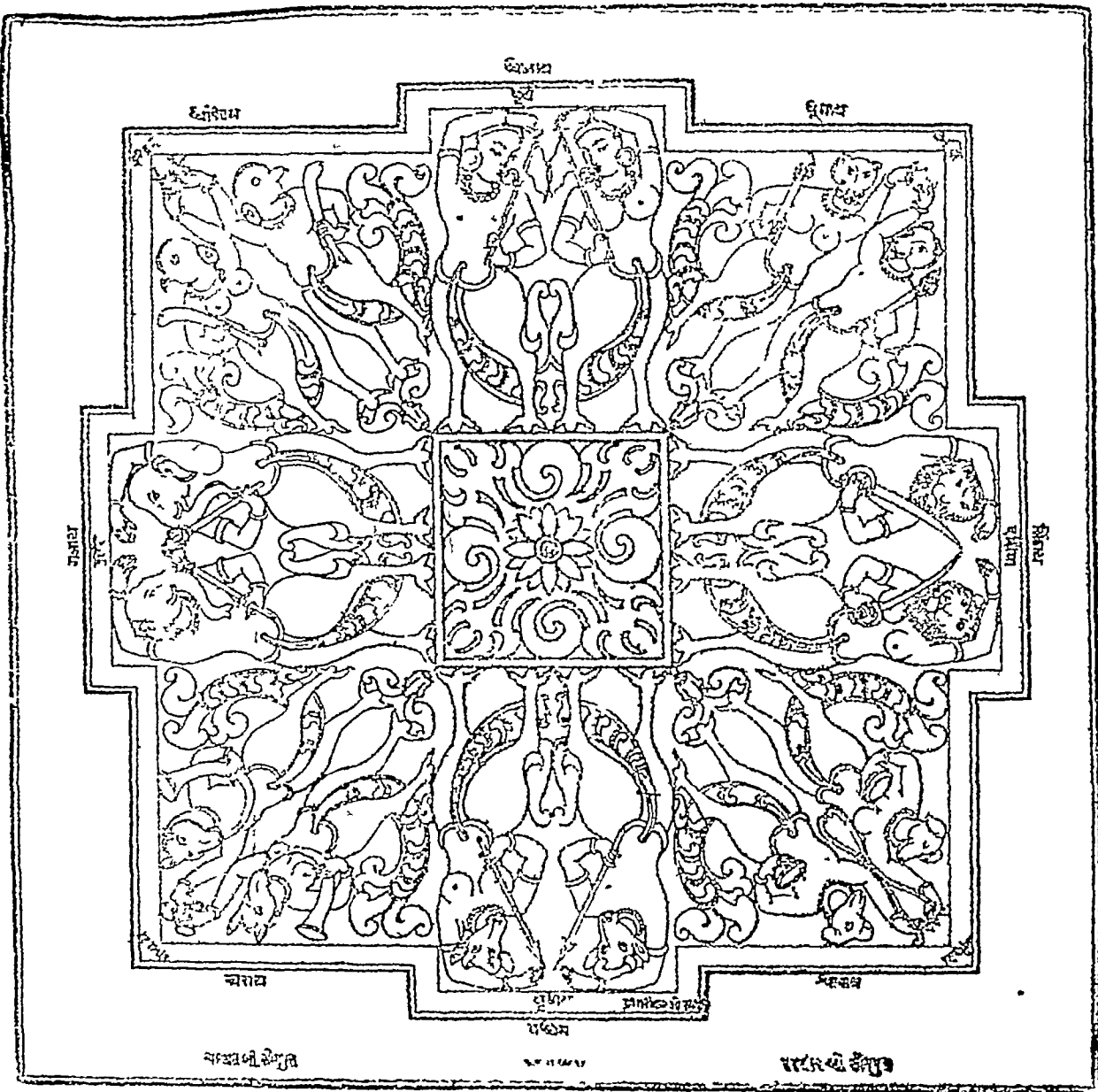
अष्ट आय छत *Ceiling*
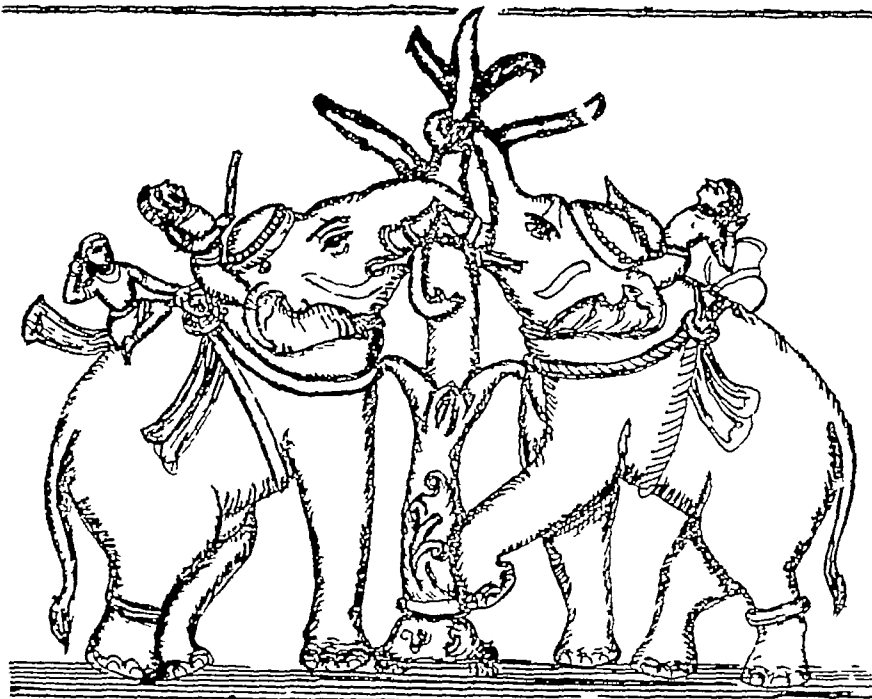
हस्ति युग्म
Elephant Couple
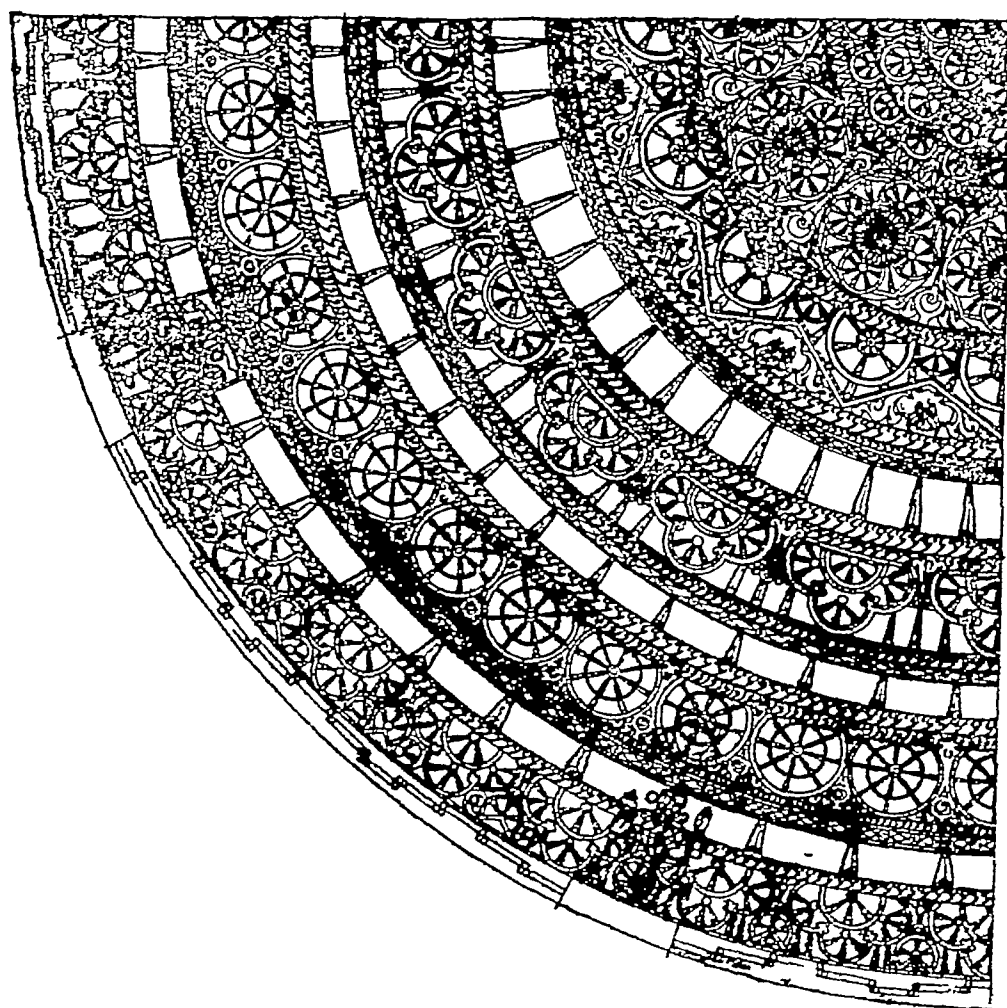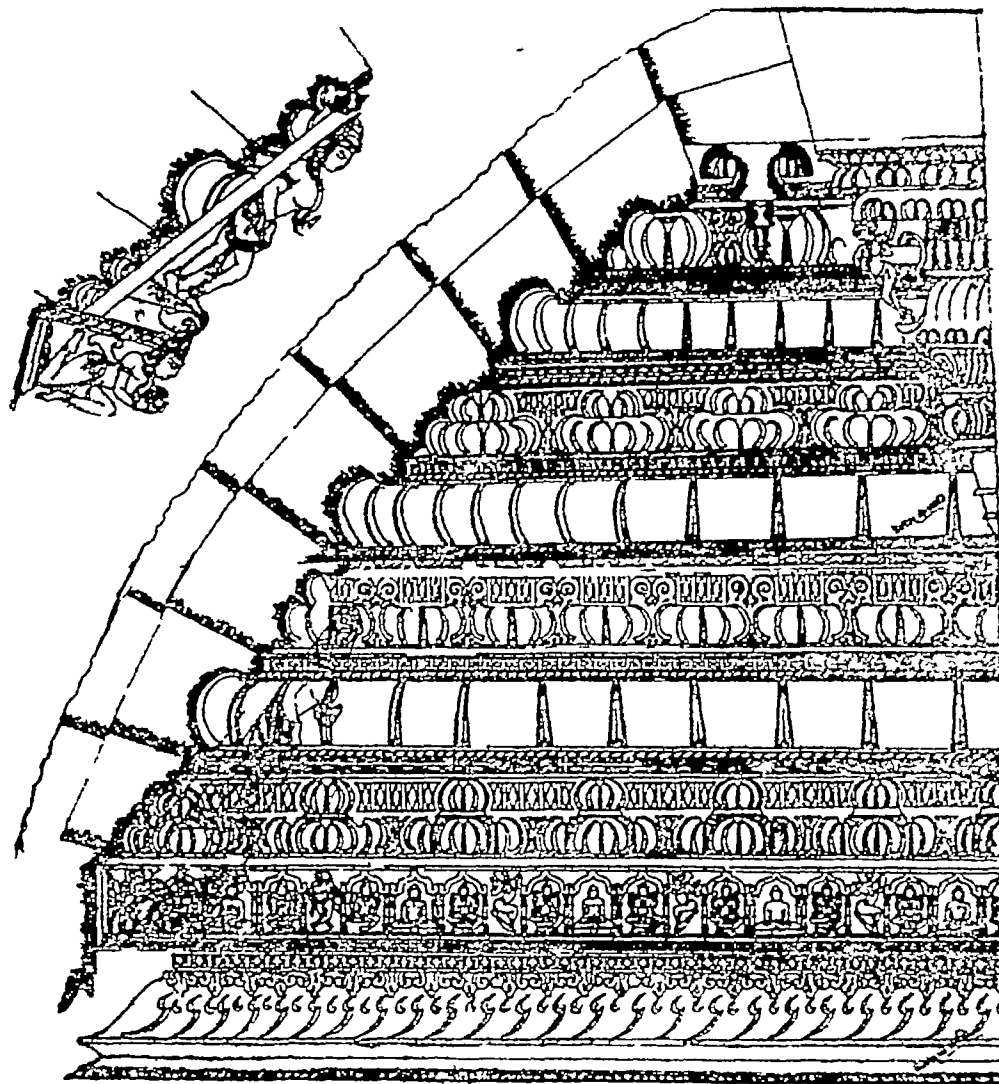
वितान के विभाग और तल दर्शन
Section and Elevation of Dome
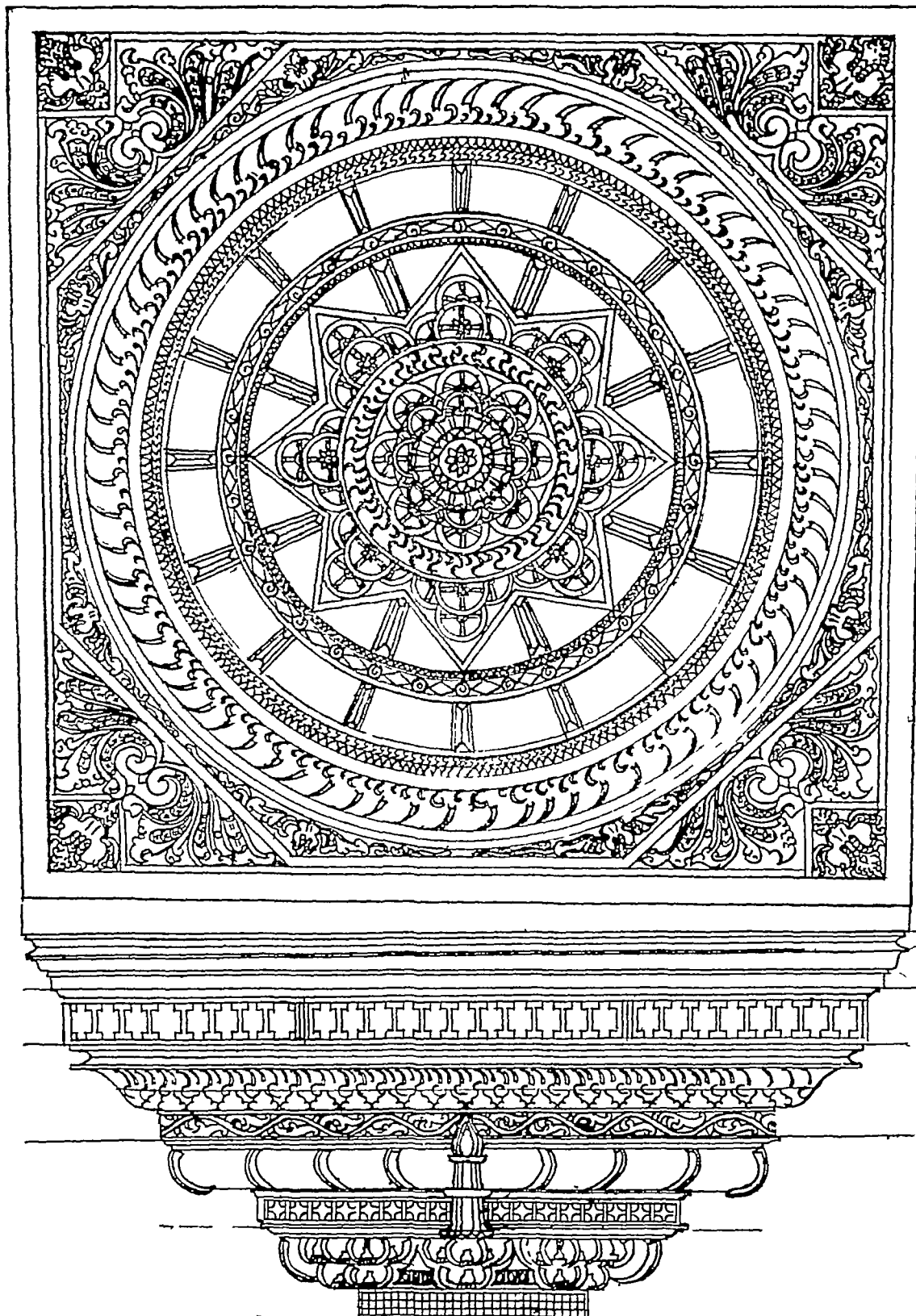
वितान के तल दर्शन और विभाग *Section and Elevation of Small Dome*
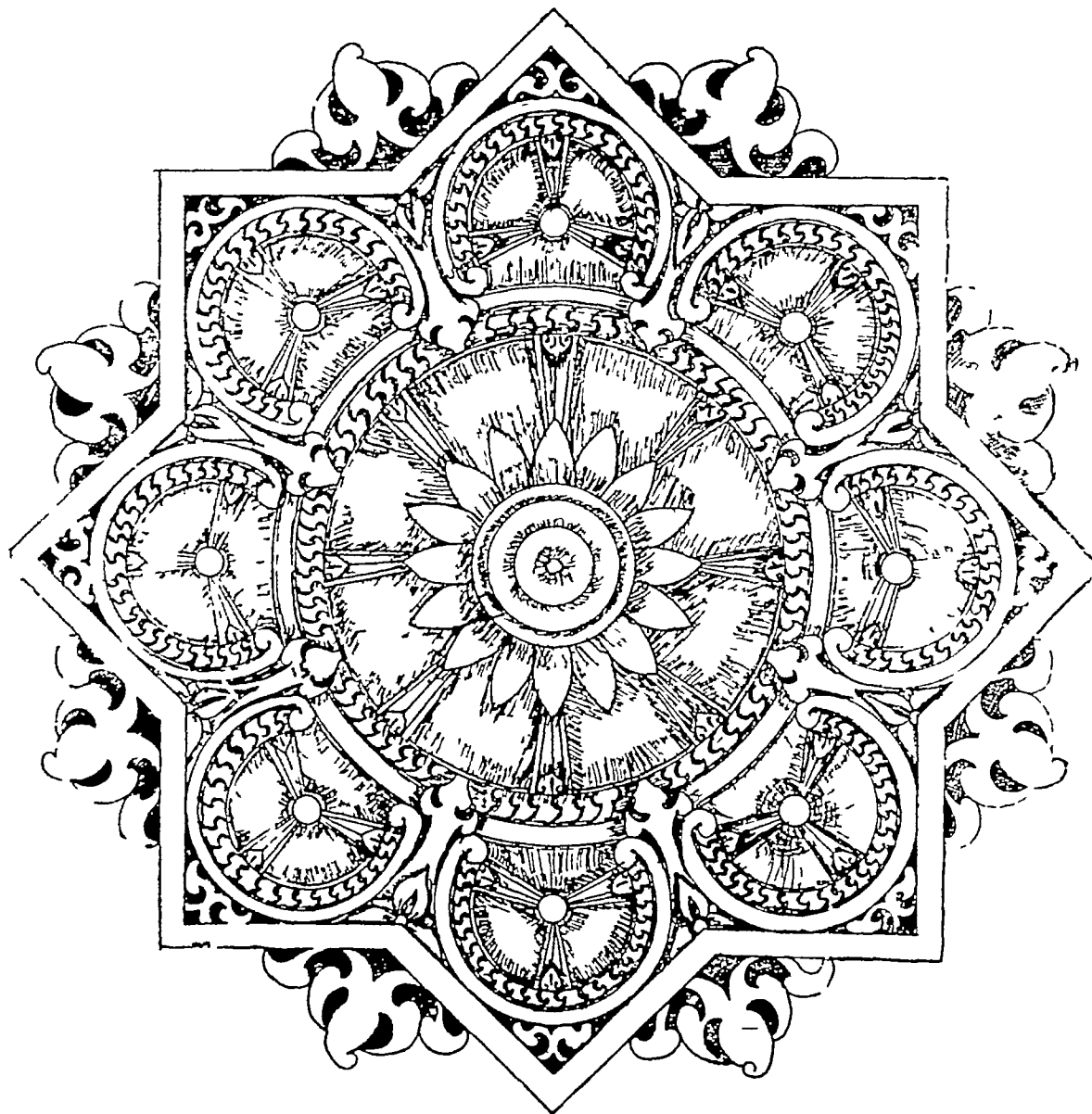
गवाल्-छत *Ceiling-Flowers*
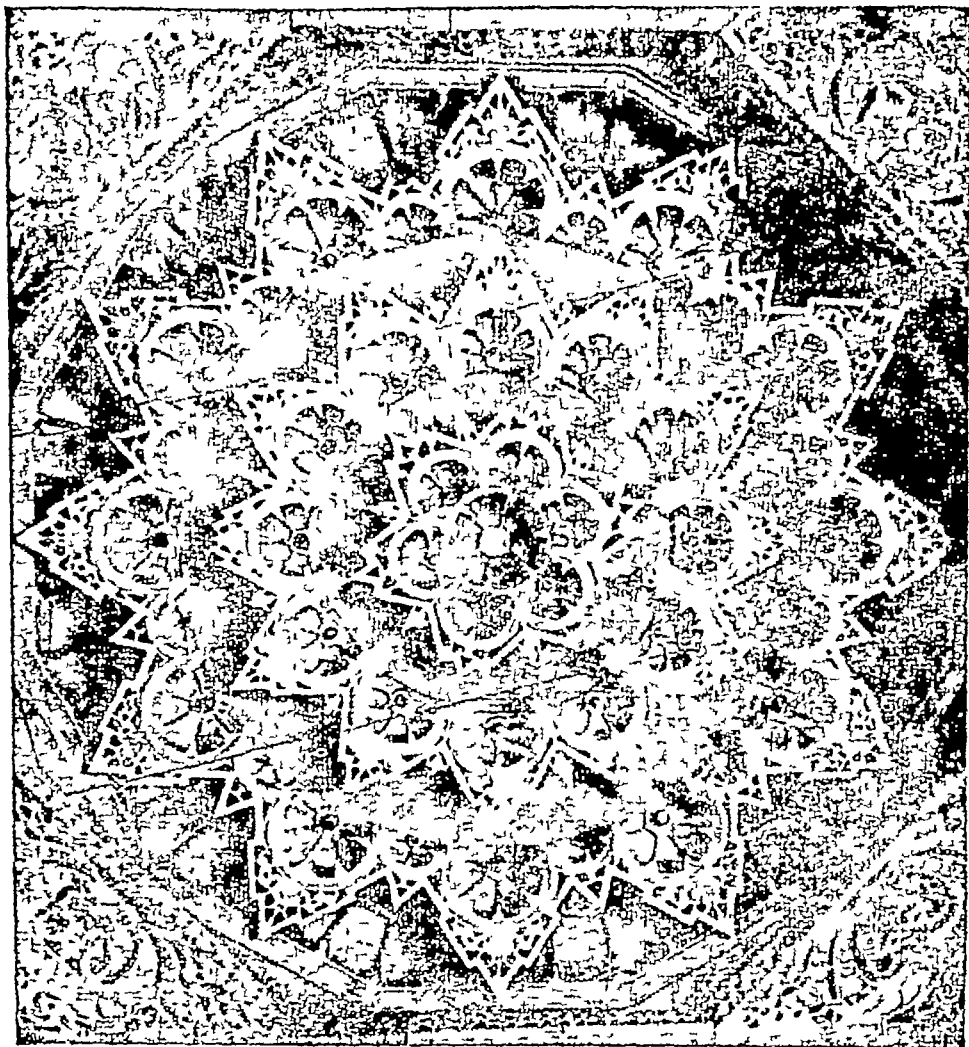
छत *Ceiling*
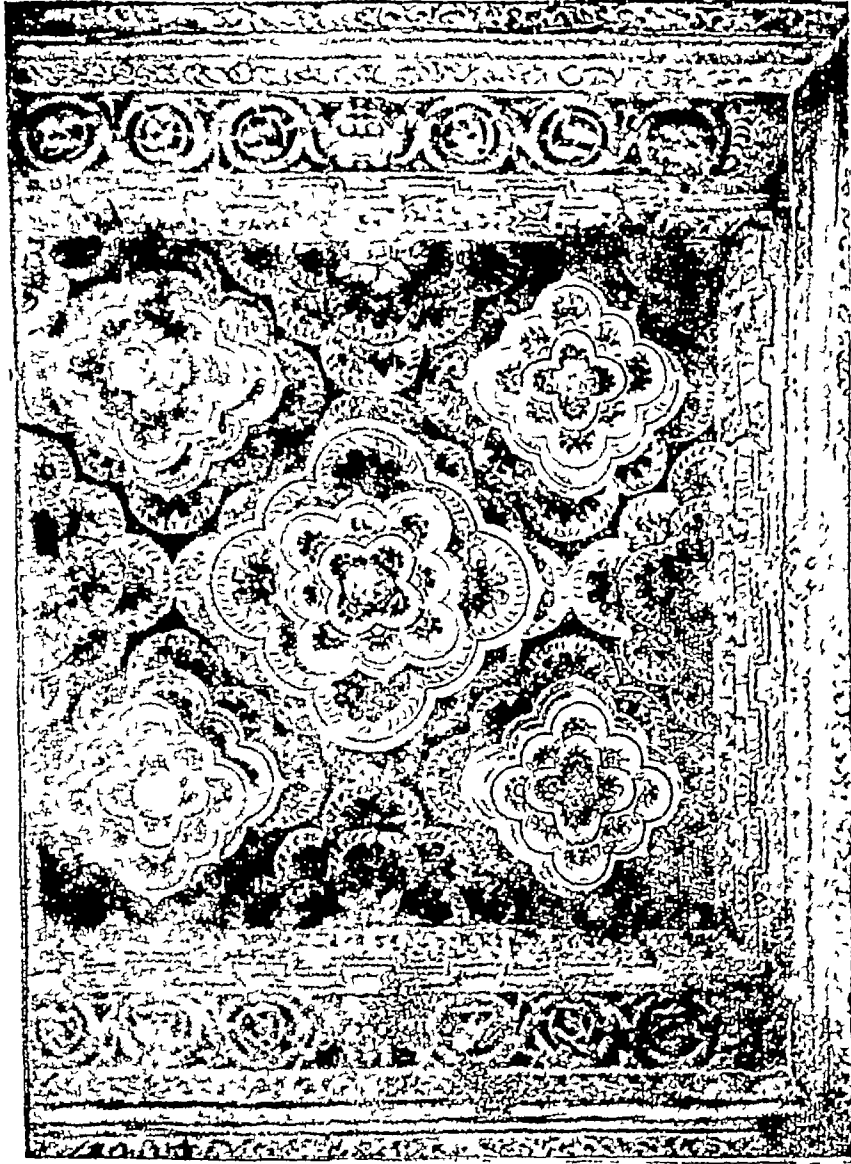
छत Ceiling

विकर्ण वितान की पृथक् छतें *Various Ceilings of Corner*
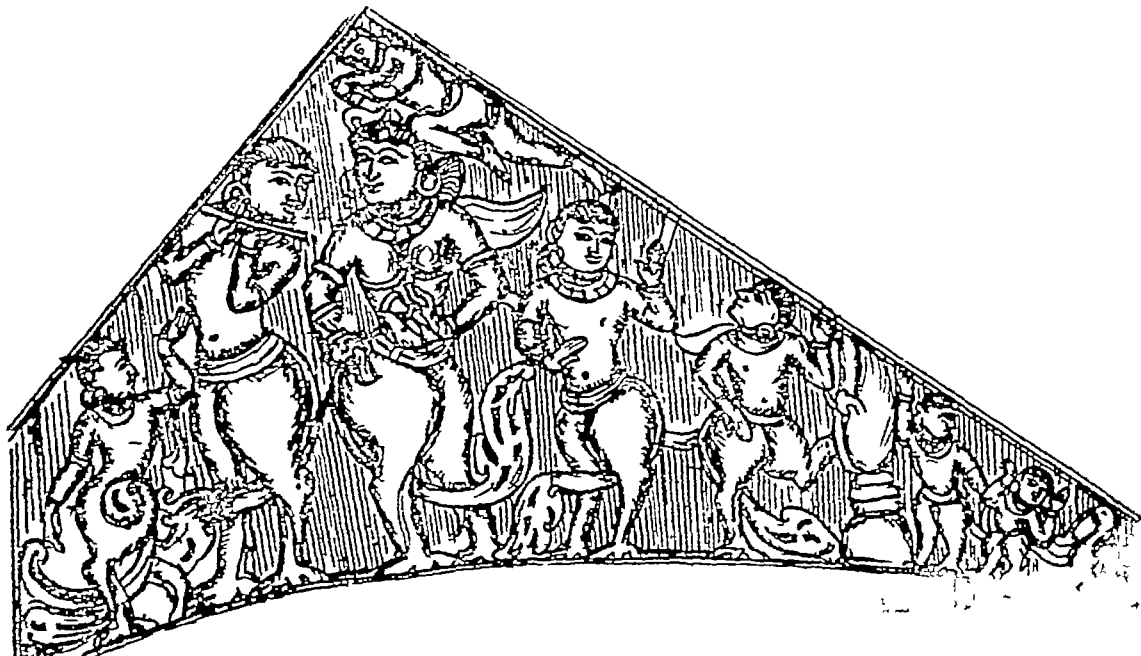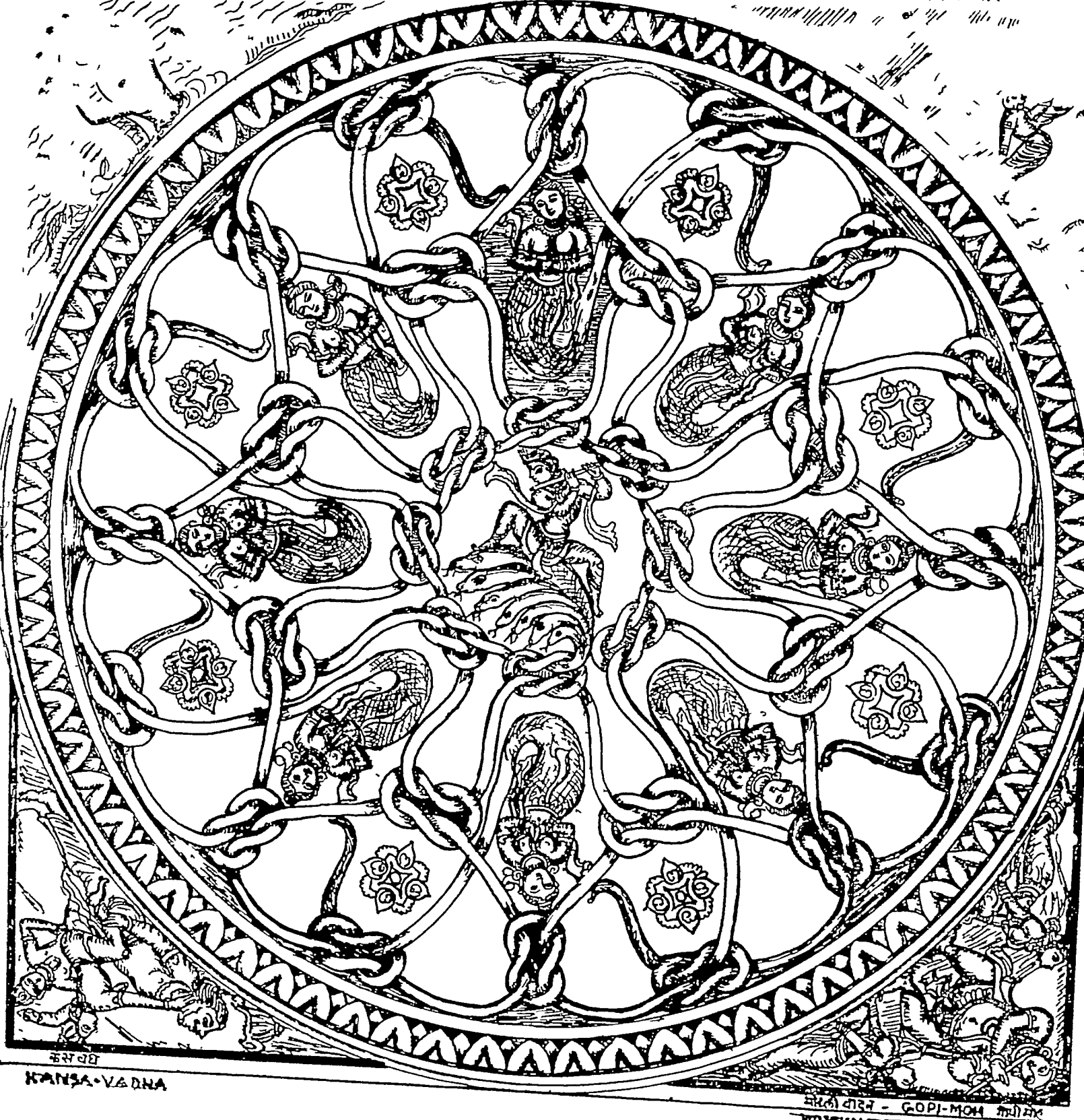
छत—श्रीकृष्ण कालिया मर्दन और कृष्ण-चरित्र *Ceiling—Lord Krishna's Triumph over Nāga*

छत—कालियामर्दन और कृष्ण चरित्र *Ceiling—Ornamented with Lord Krishna's Life*

छत—एक मुख पांच शरीर *One Head with five Bodies*

छत—दो मुख और चार शरीर *Two Heads with Four Bodies*
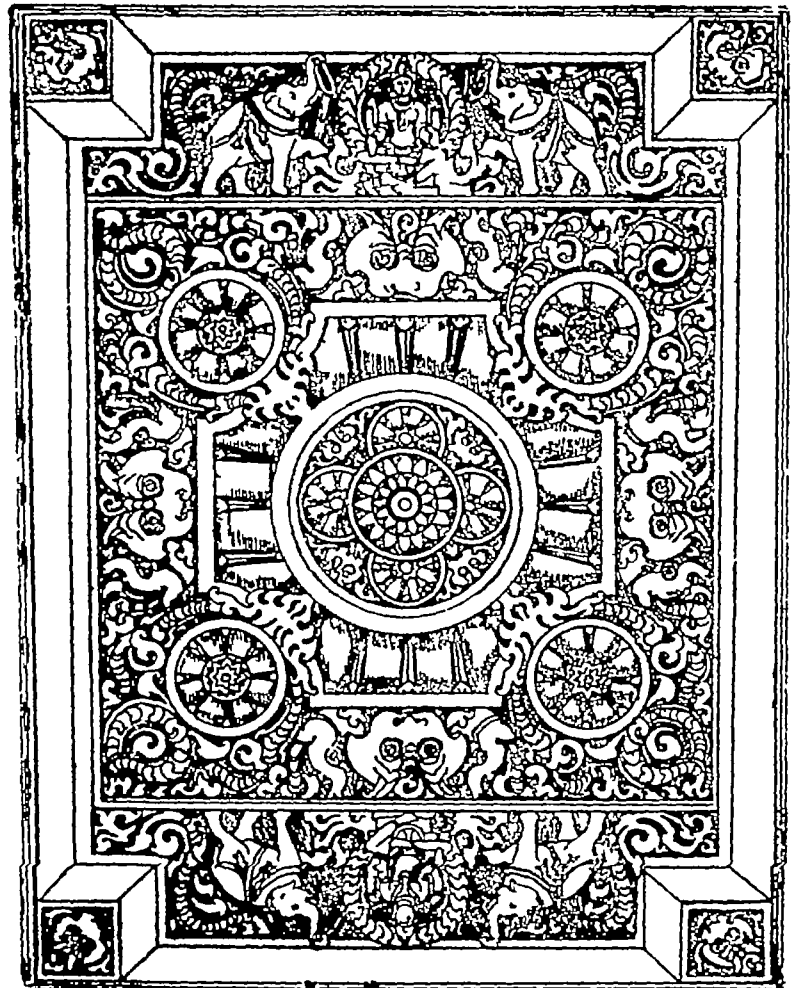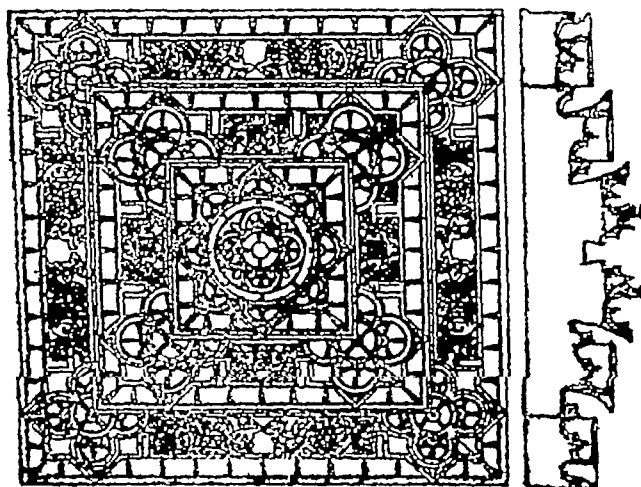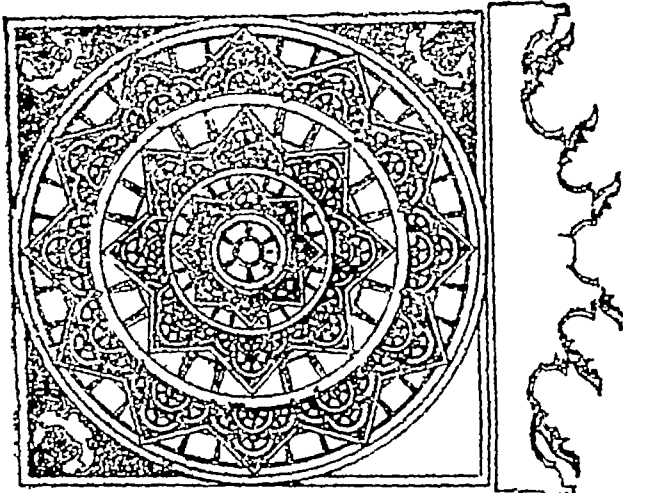
चोकी की छतें *Ceilings of Choki*
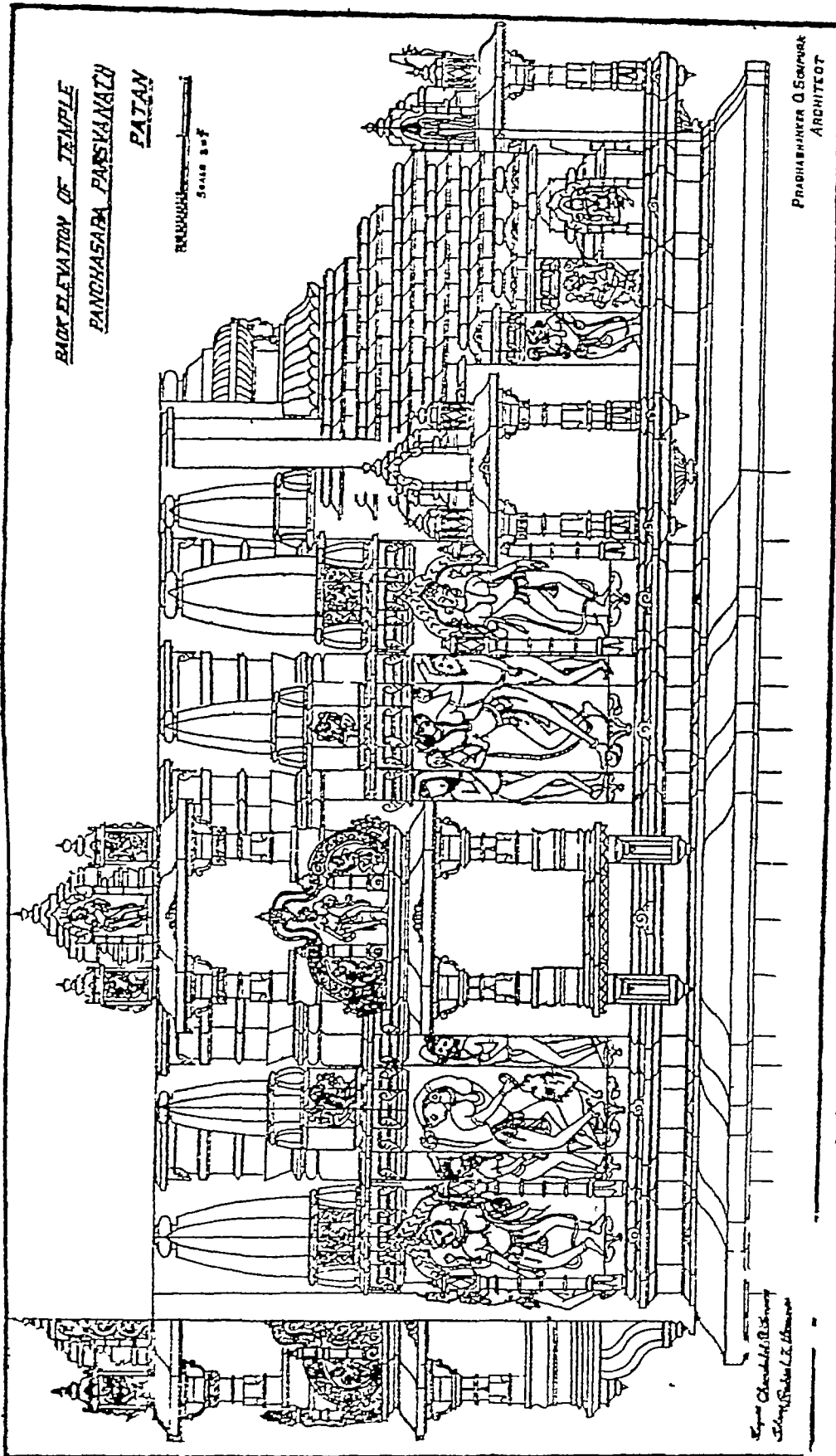
छाद्योर्ध्व शिखर की जँघा भद्र मे अलंकृत गवाक्ष *Decorated Jangha—Lower Part of Shikhar*

शिखर के पृथक् भाग
Parts & Details of Spire
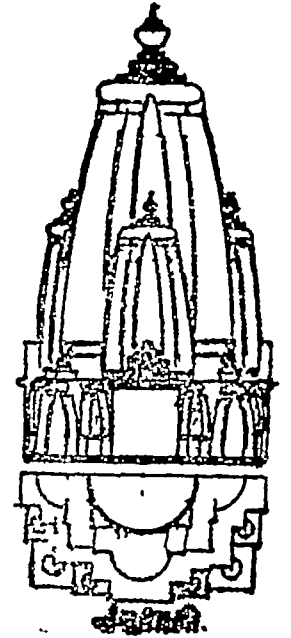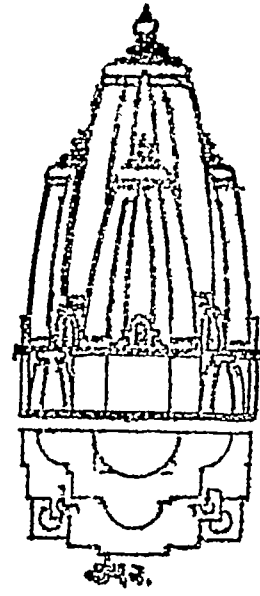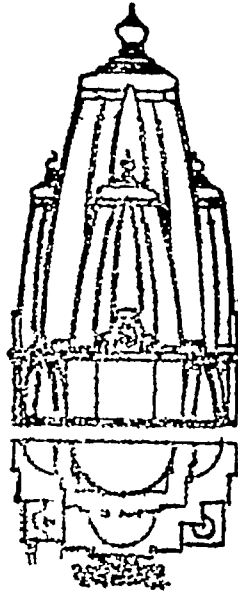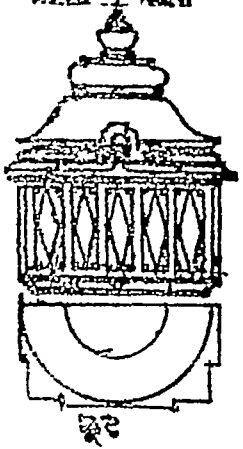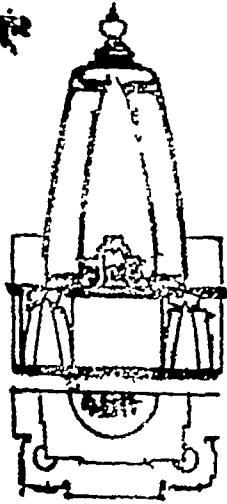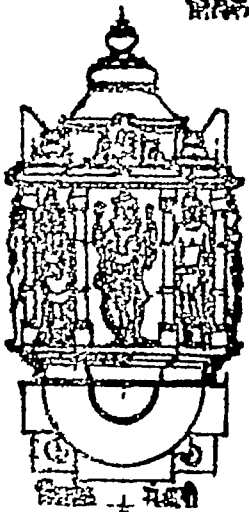
शिखर *Shikhar*

कूट *Koota*

श्रीवत्स श्रृंग *Shrivatsa*

श्रृंगोपश्रृंग *Shrungopashrung*
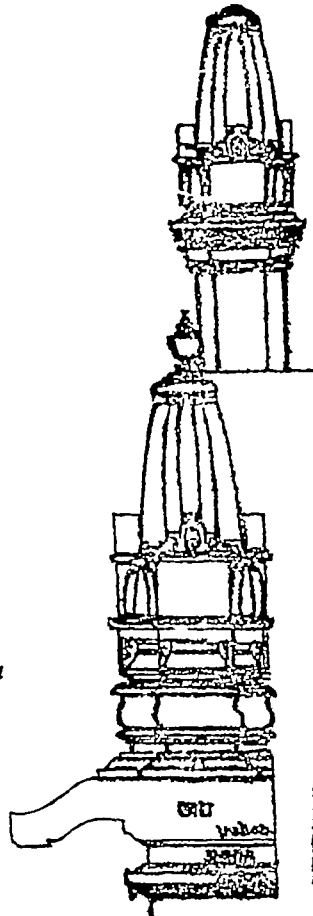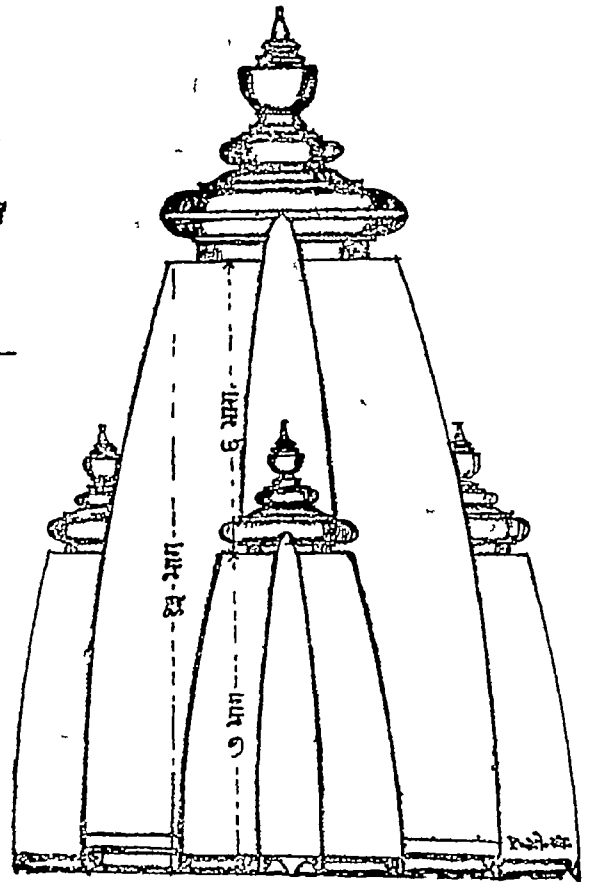
उरुश्रृंग युक्त शिखर *Urushrung Shikhar*
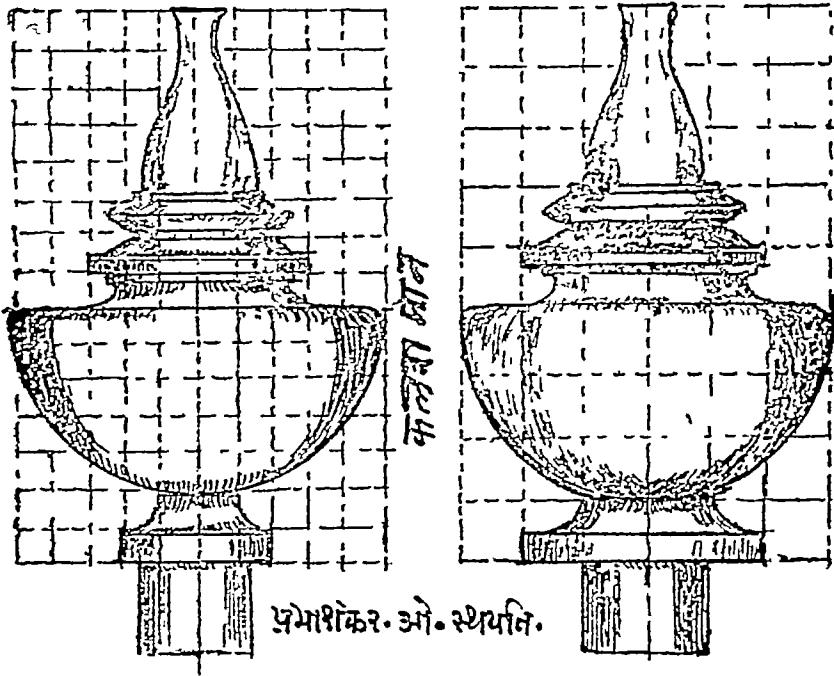
कलश *Kalasha—Crowning Element of Temple in form of stone vase*

आमलसारक *Amalsaraka Crowning Member of Spire*

ध्वज दड *Dhvaja Danda—The Flag*
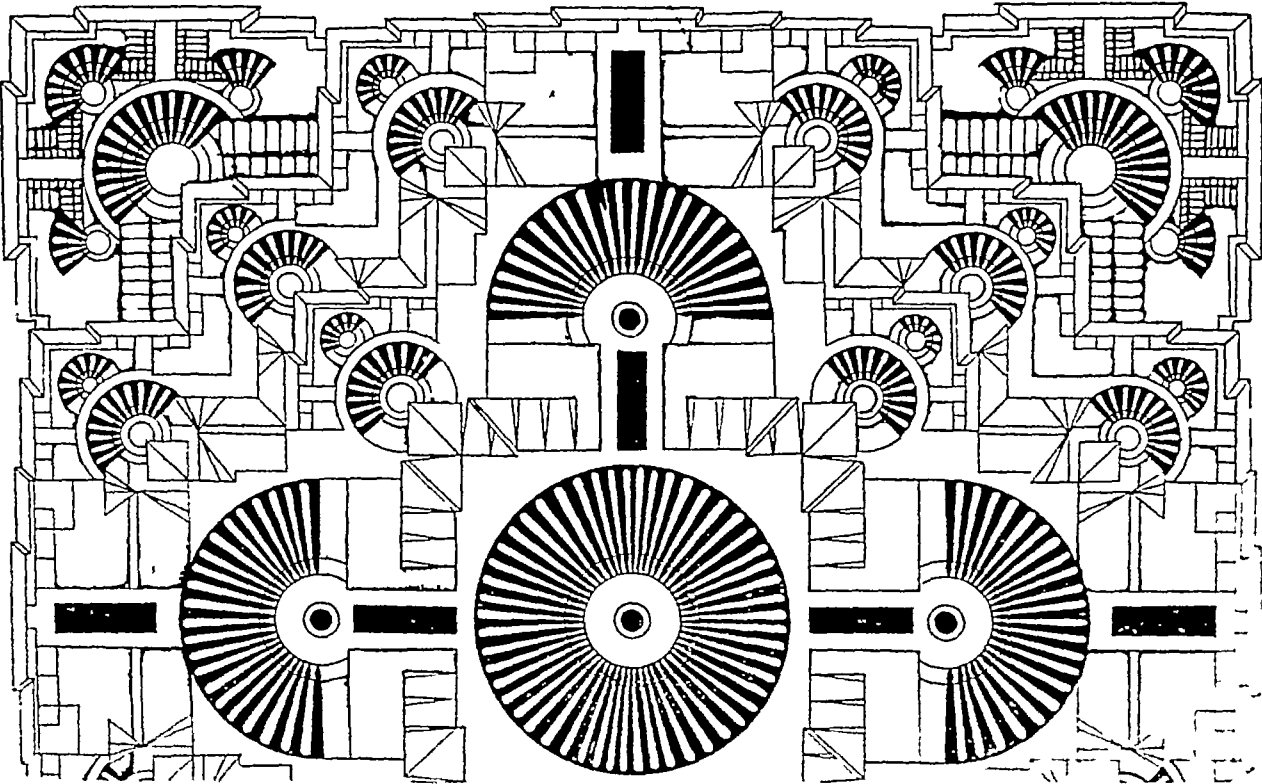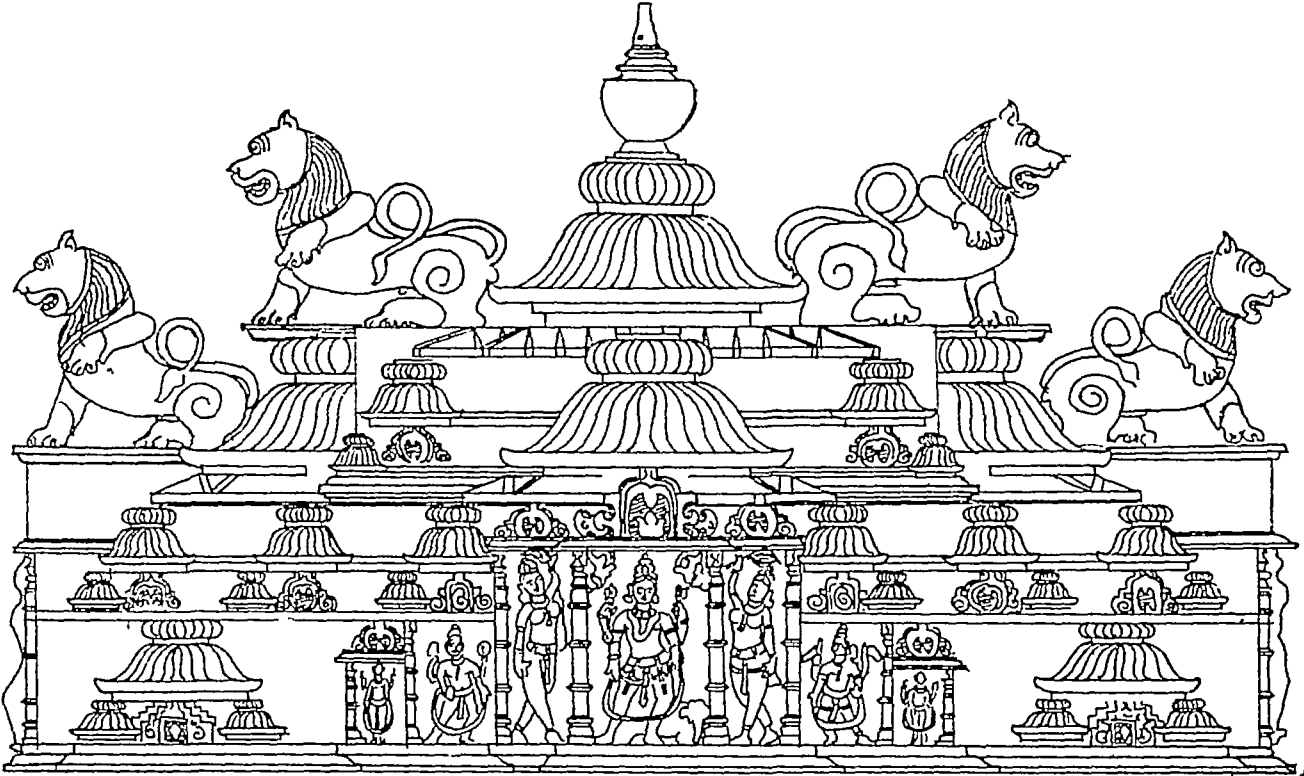
प्राचीन शैली की सम्वर्णा *Samvarnā*
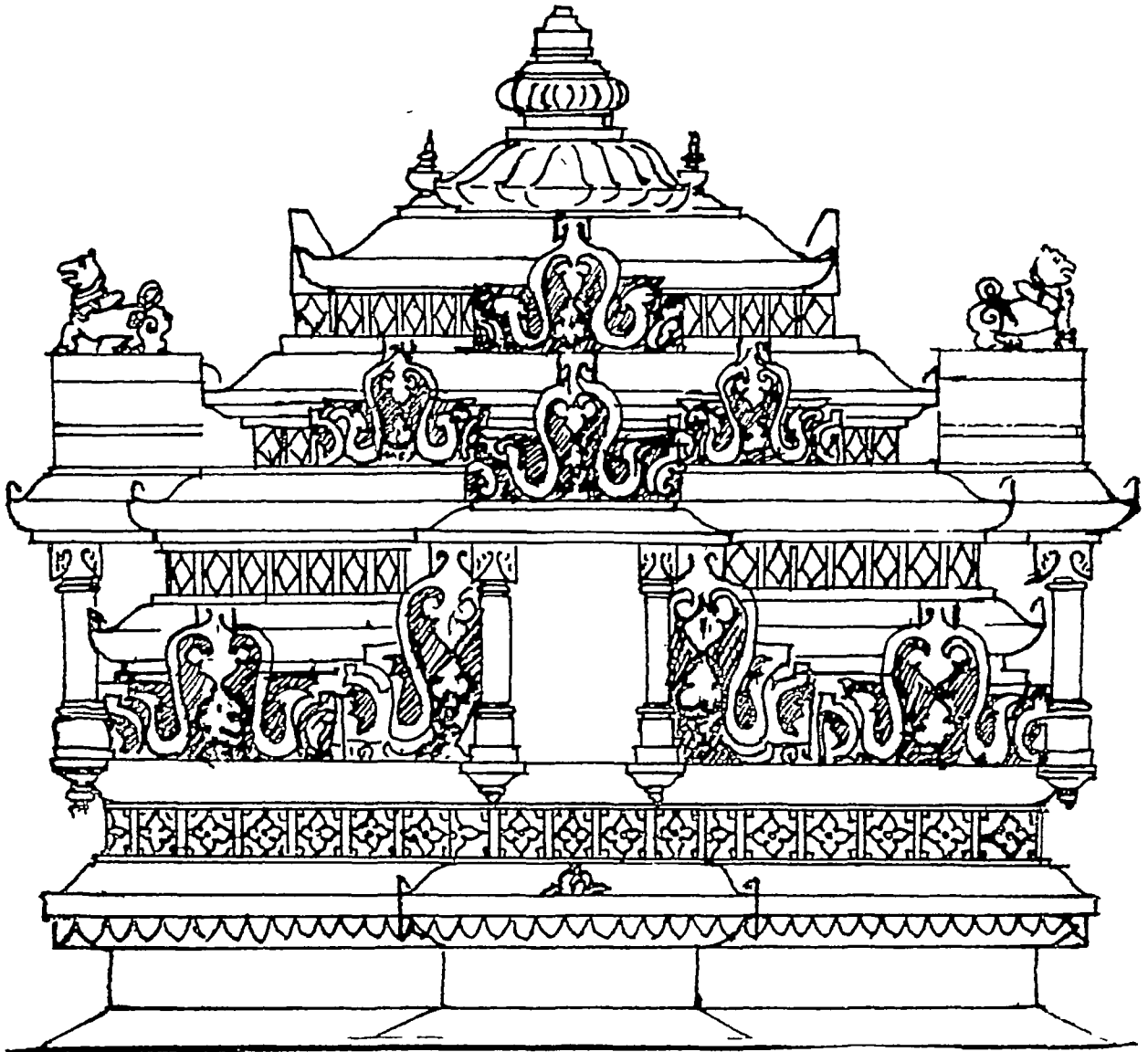
सम्वर्णा *Saṁvarṇā*
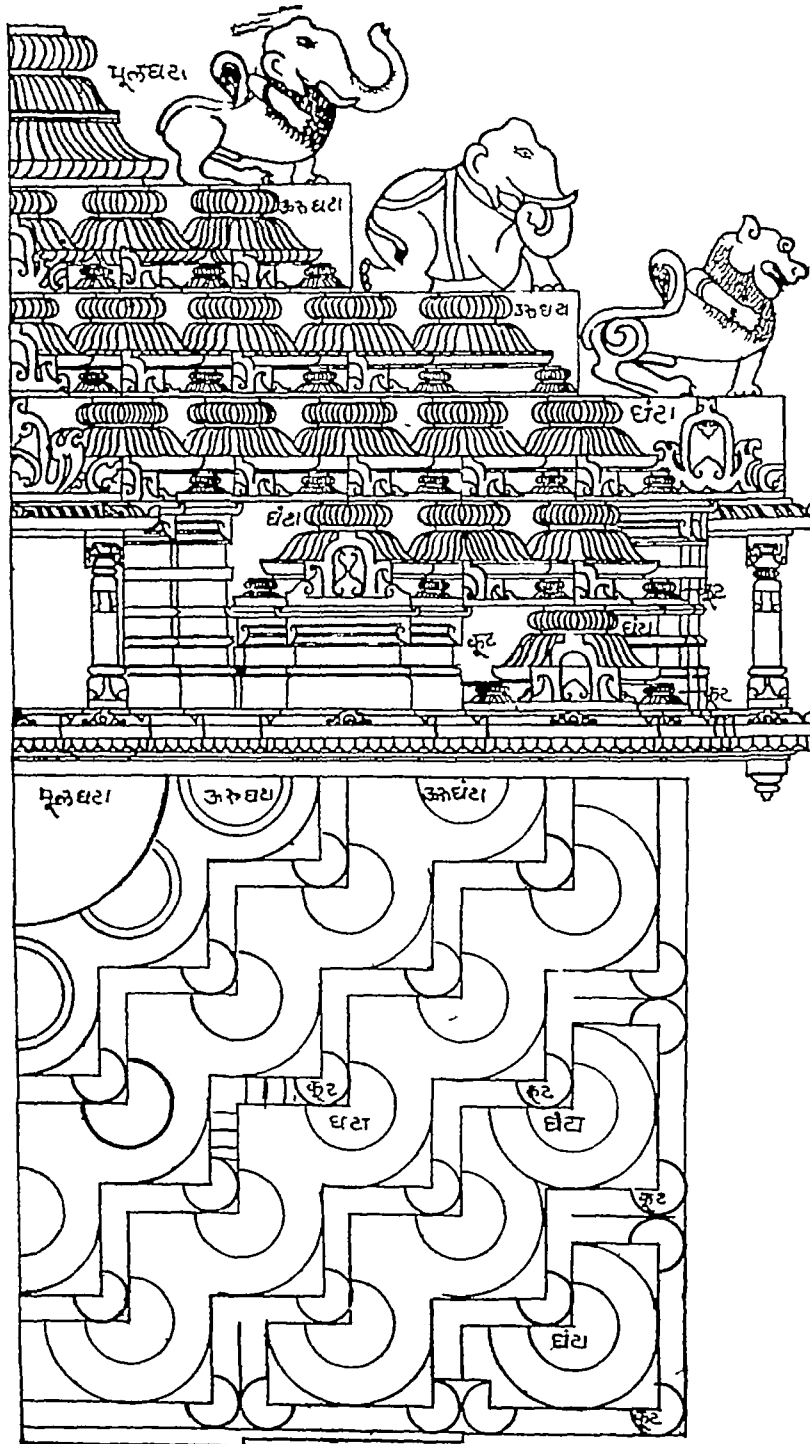
सम्वर्णा और तल दर्शन *Saṃvarṇā and Ground Plan*
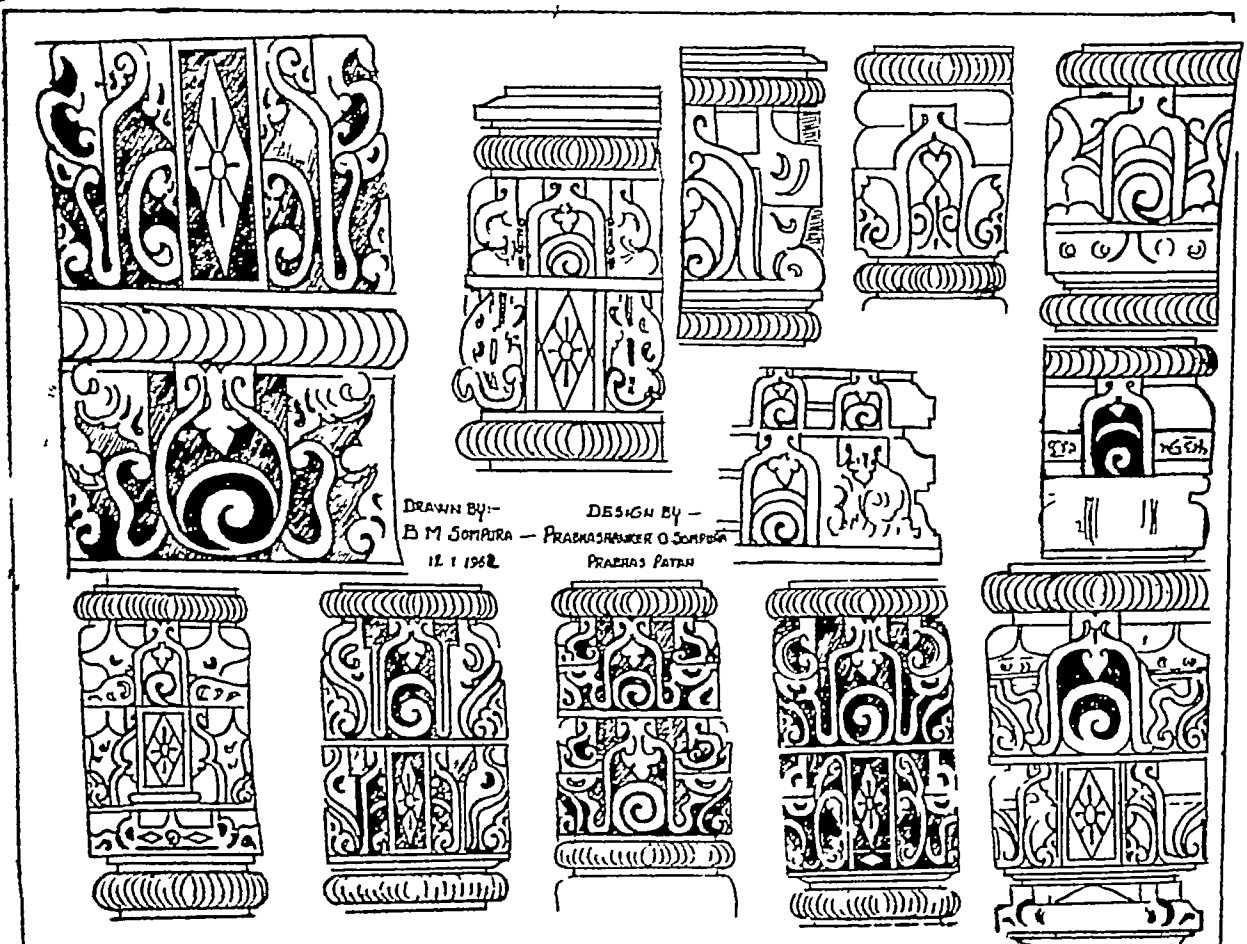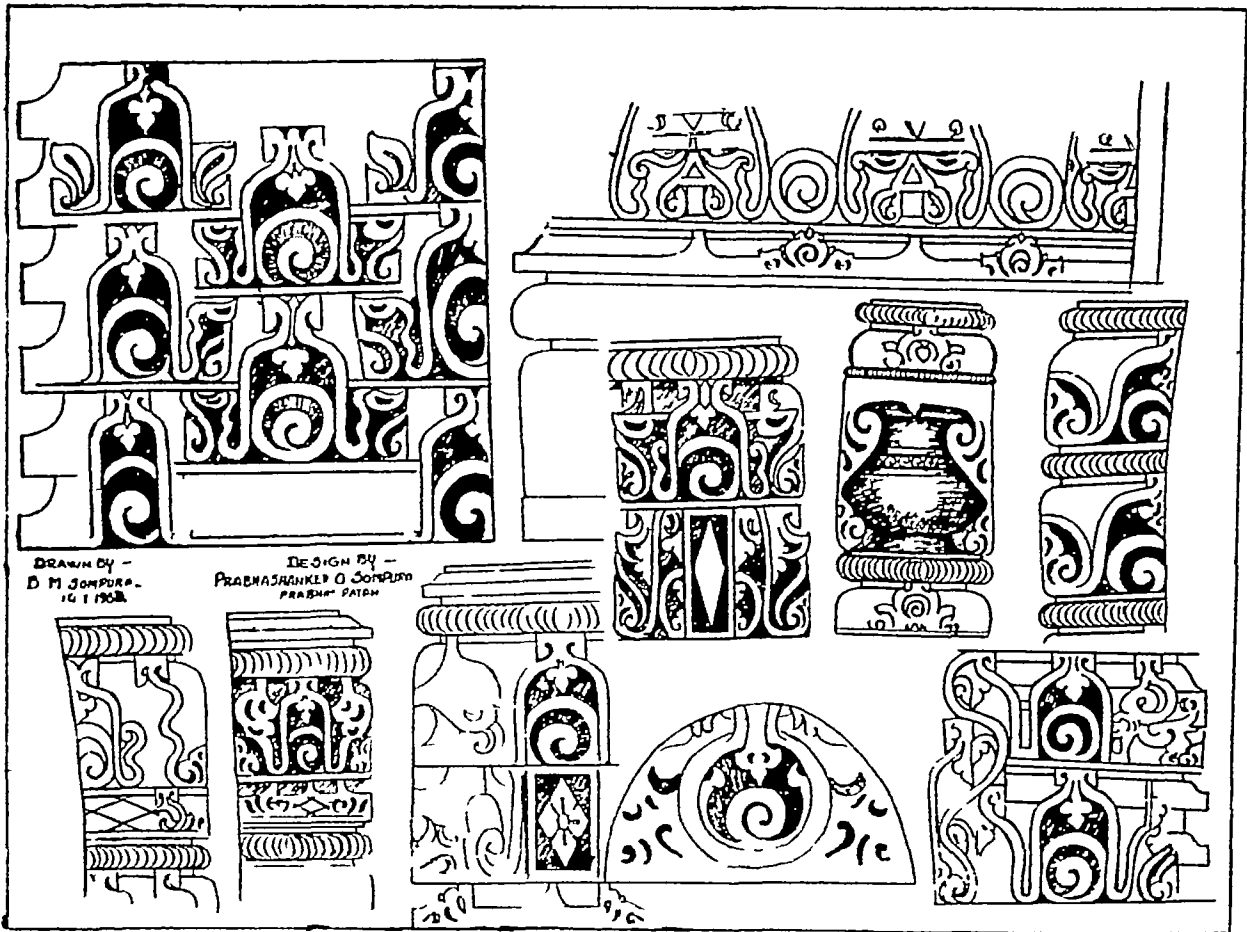
कुडचल *Kudchala Different Ornamentation of Shikhar*

प्रतोल्या, प्रवेशद्वार और तल

स्तम्भ तोरण

Gates and Ground Plans

Gates with Pillars
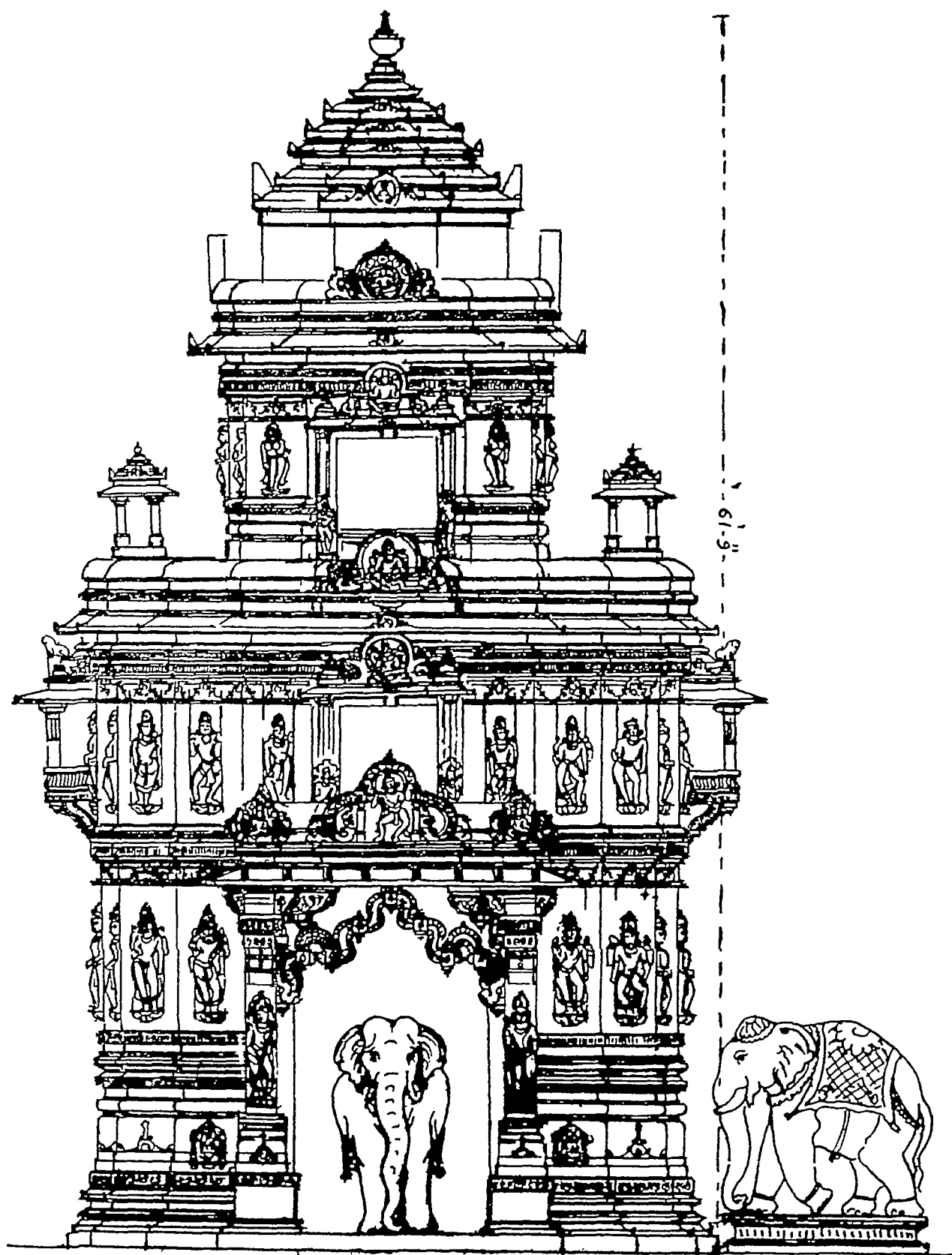
त्रयभूमि उत्तुग प्रतोल्या *Three-Storey Huge Gate, Somnath (Gujarāt)*
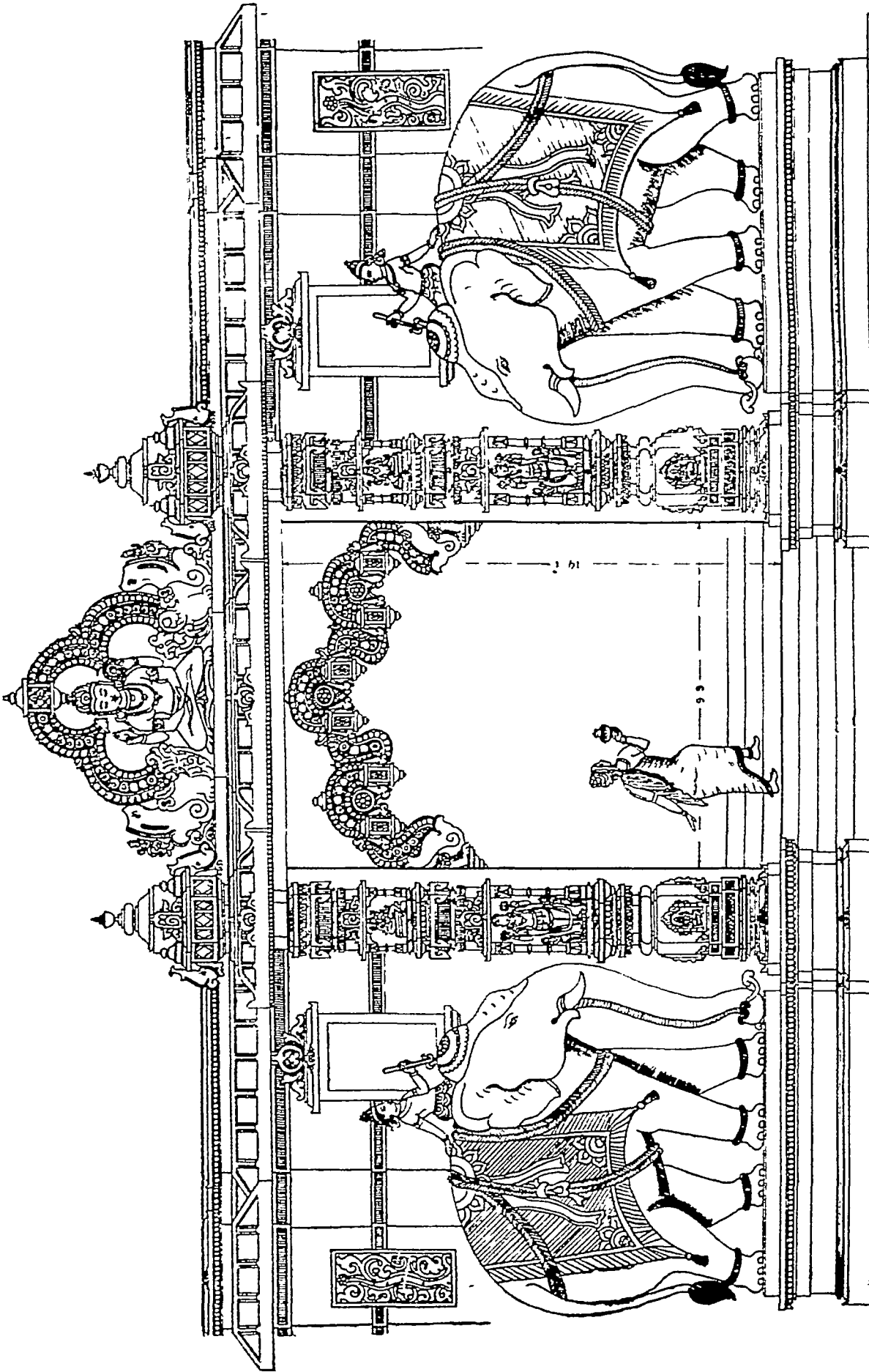
शामलाजी मंदिर का प्रवेश द्वार और प्रतोल्या (गुजरात) *Gate of Shāmalājī Temple (Gujarāt)*
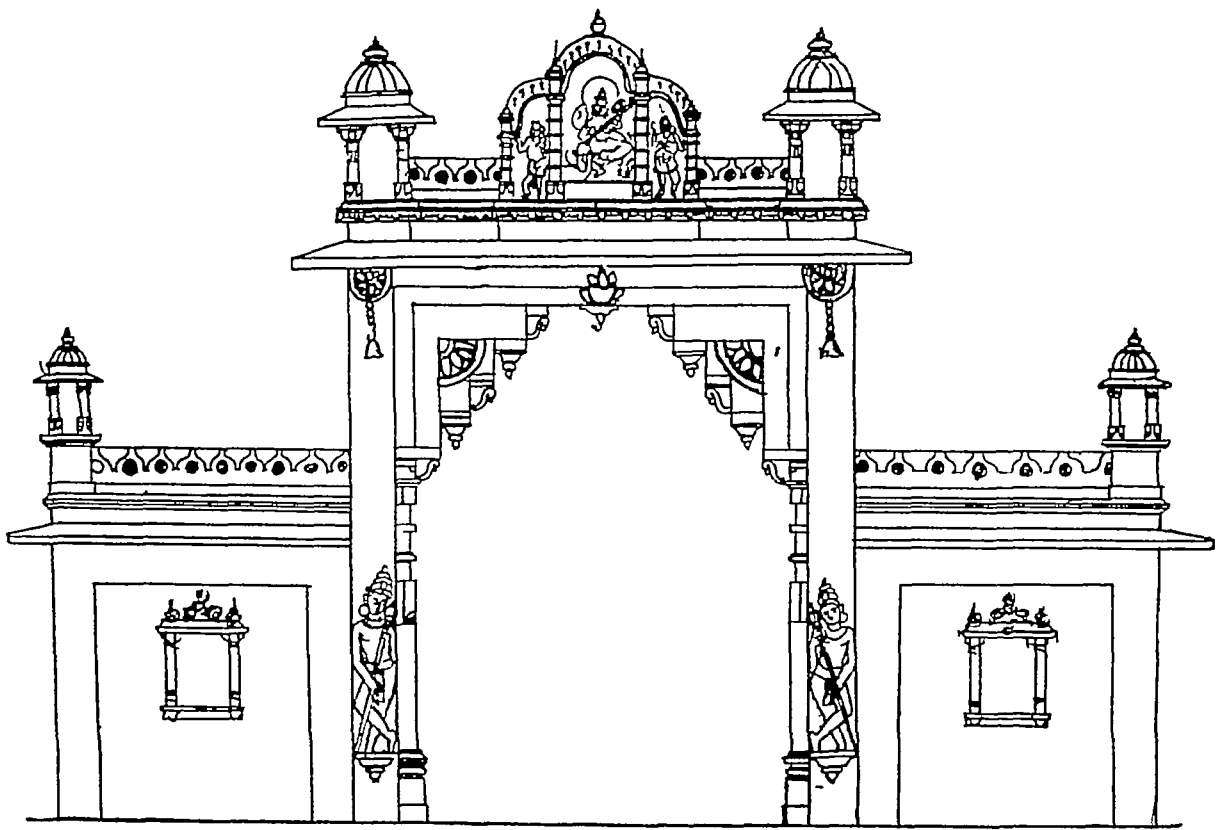
प्रतोल्या *Pratolyā—Main Gate*
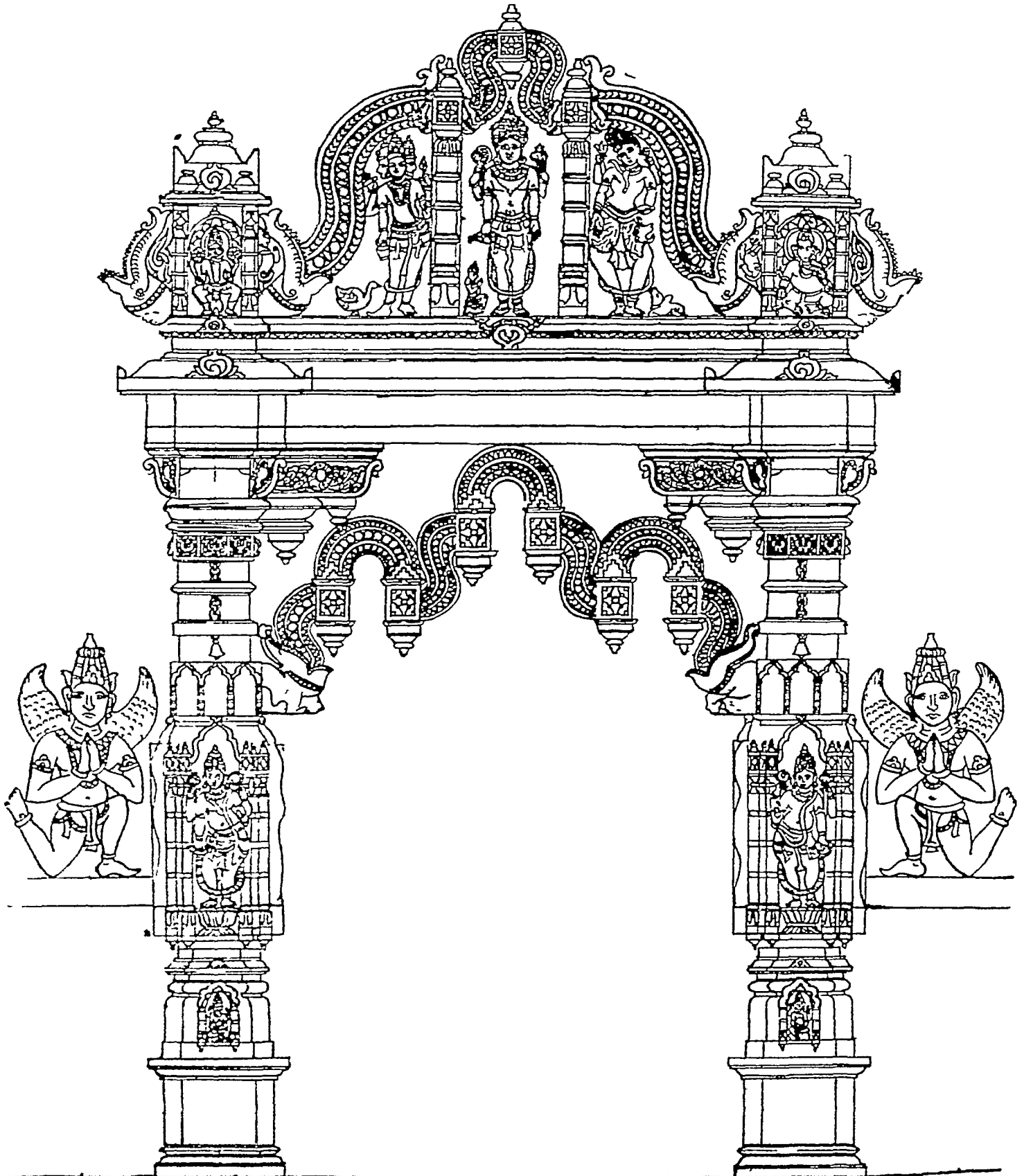
प्रतोल्या, विष्णुमंदिर, विरलाग्राम (नागदा) *Pratolyā of Vishnu Temple, Birlagrām (Nāgadā)*
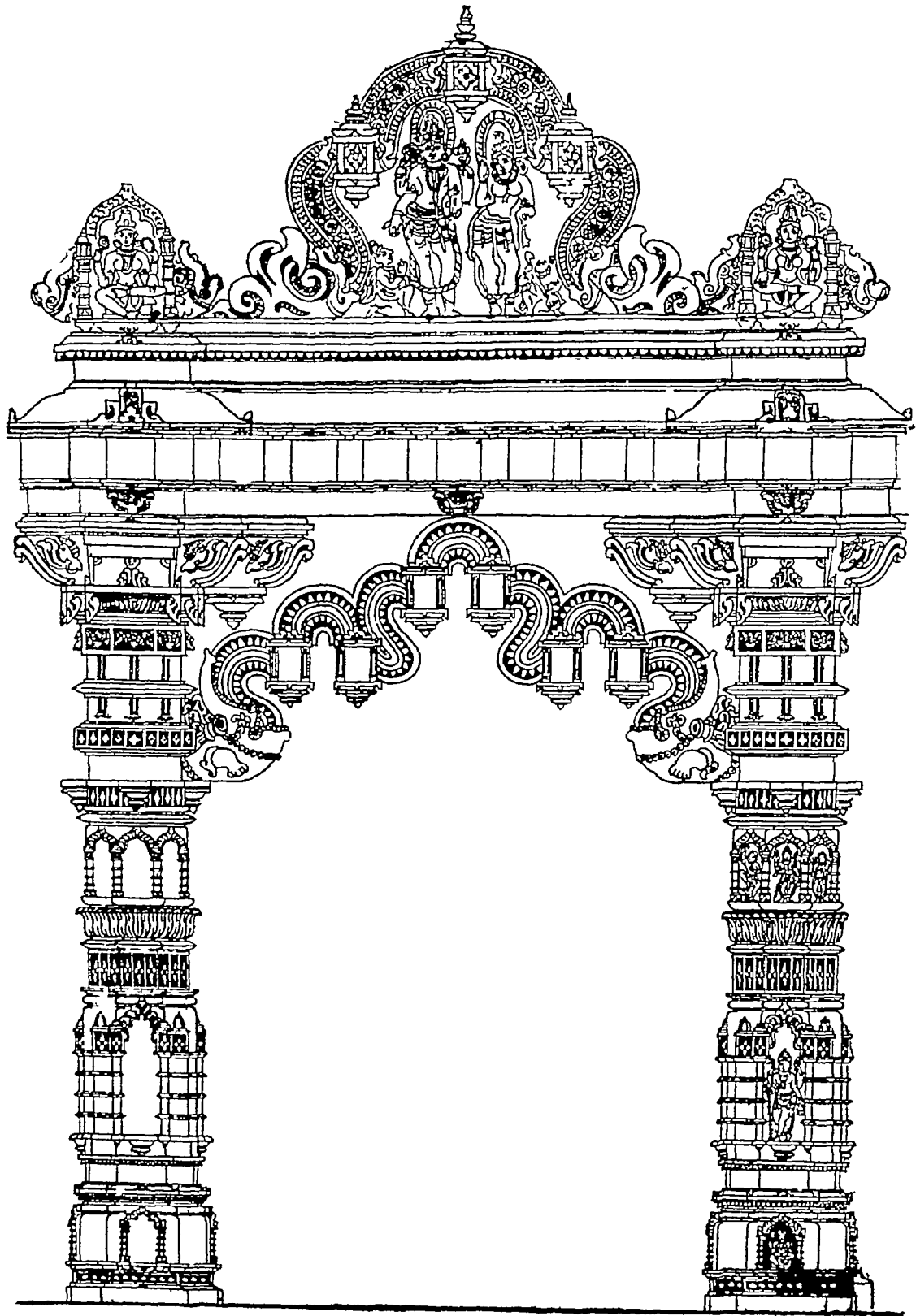
प्रतोल्या, कायावरोहण (गुजरात) *Gate, Kayāvarohan (Gujarāt)*

मवल युक्त चतुरस्र प्रतोल्या Gate
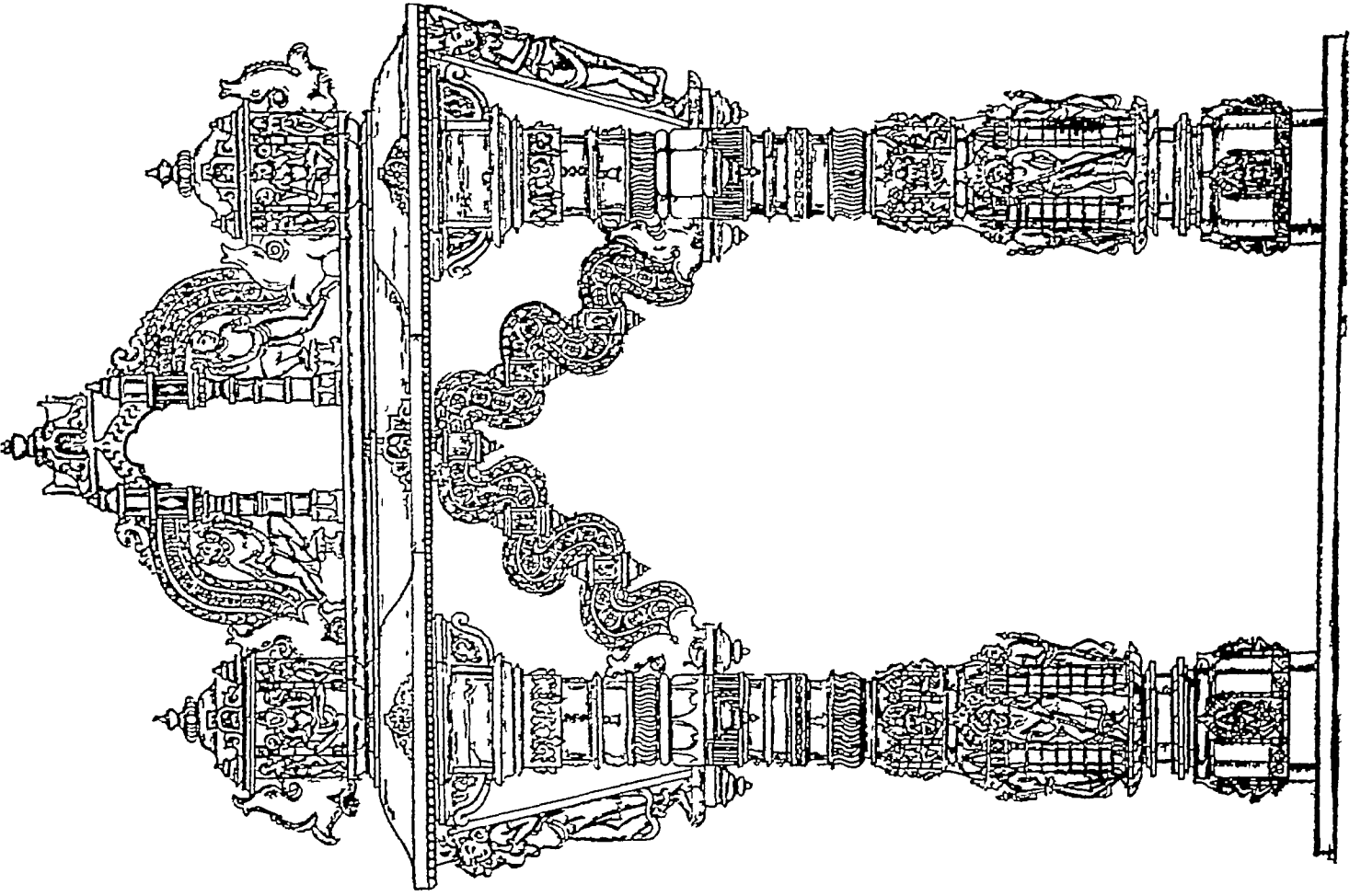
अलङ्कृत तोरण और स्तम्भ युक्त प्रतोल्या *Pratolyā with Ornamented Pillars*
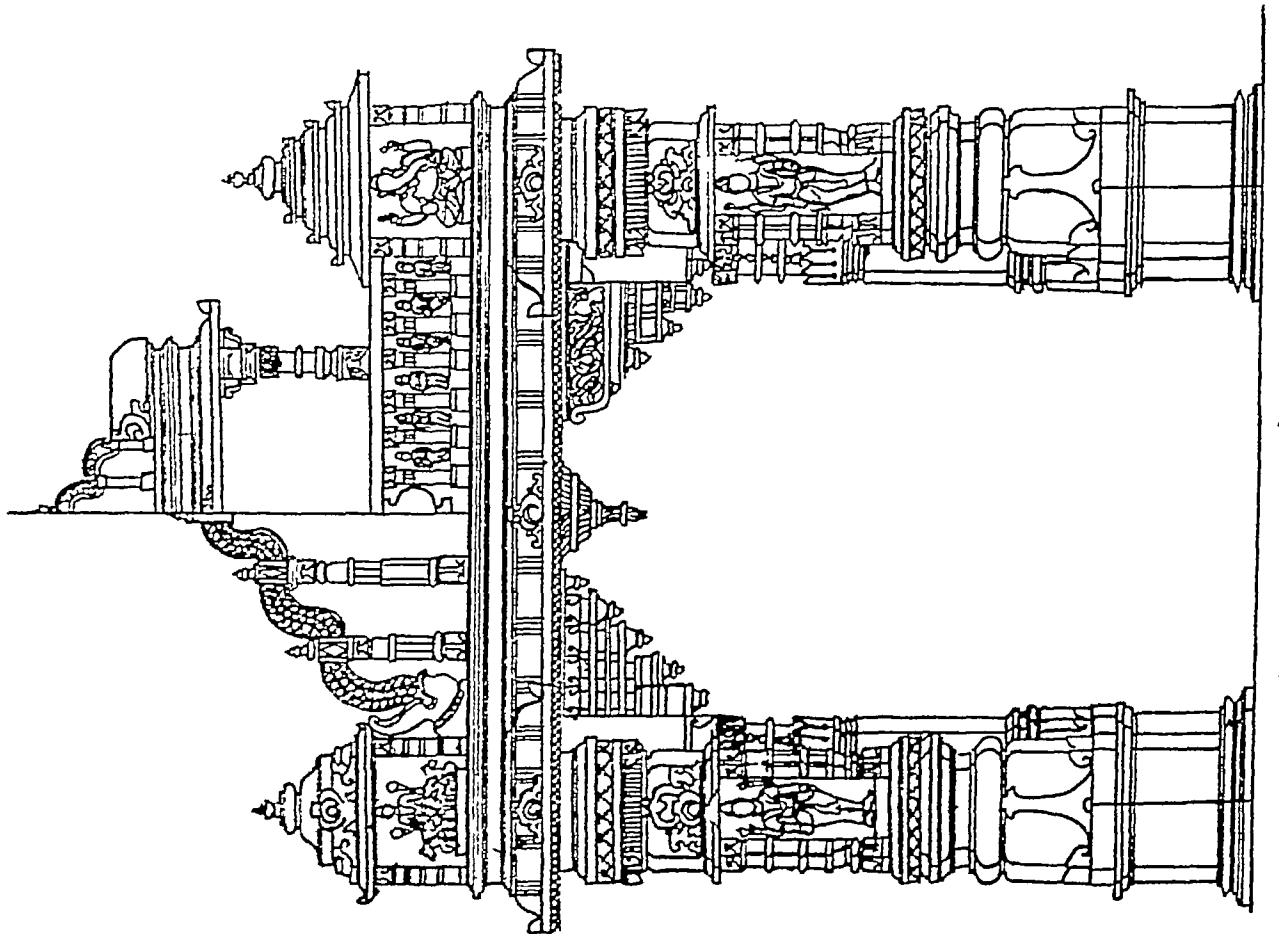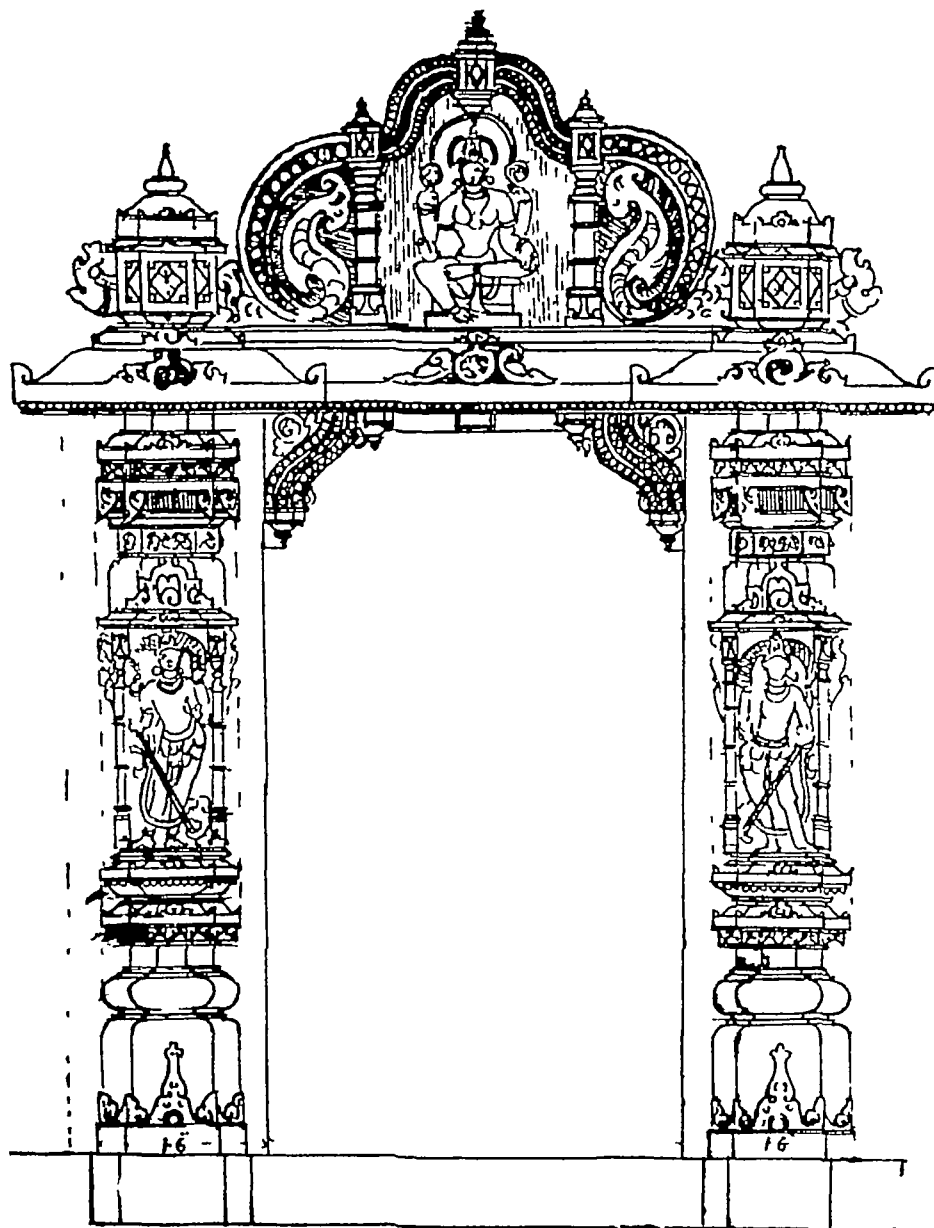
प्रतोल्या *Pratolyā*
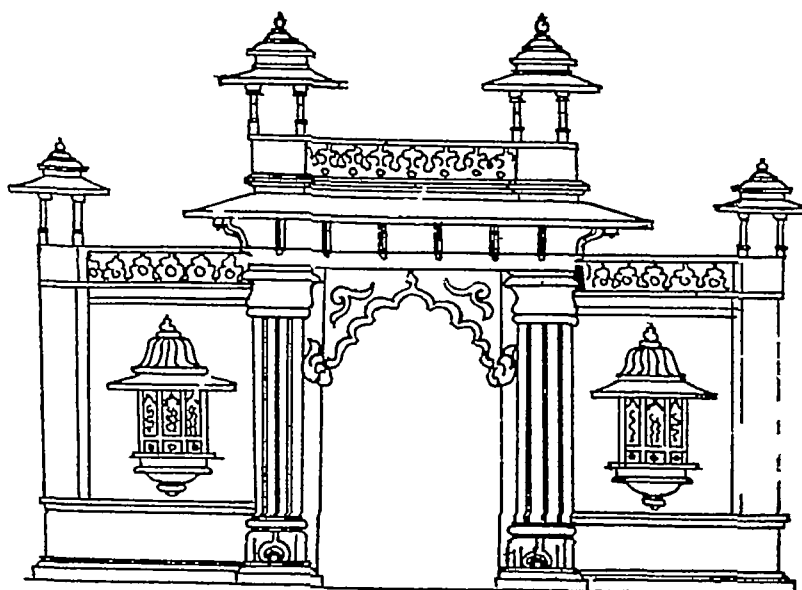
गवाक्ष युक्त प्रवेश द्वार *Entrance with Niches*
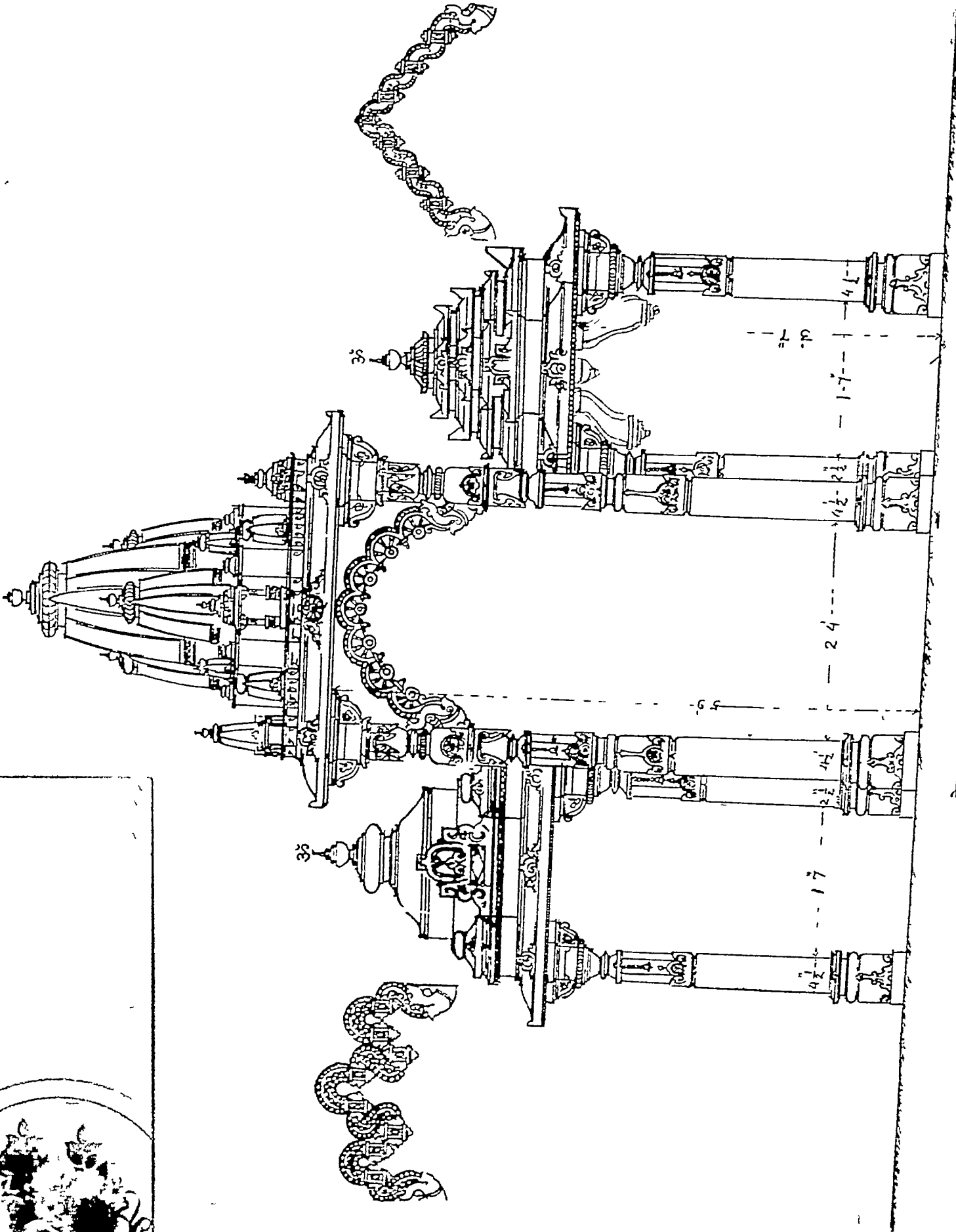
देवप्रासाद का प्रवेशद्वार *Gate of Deva-Prāsād*
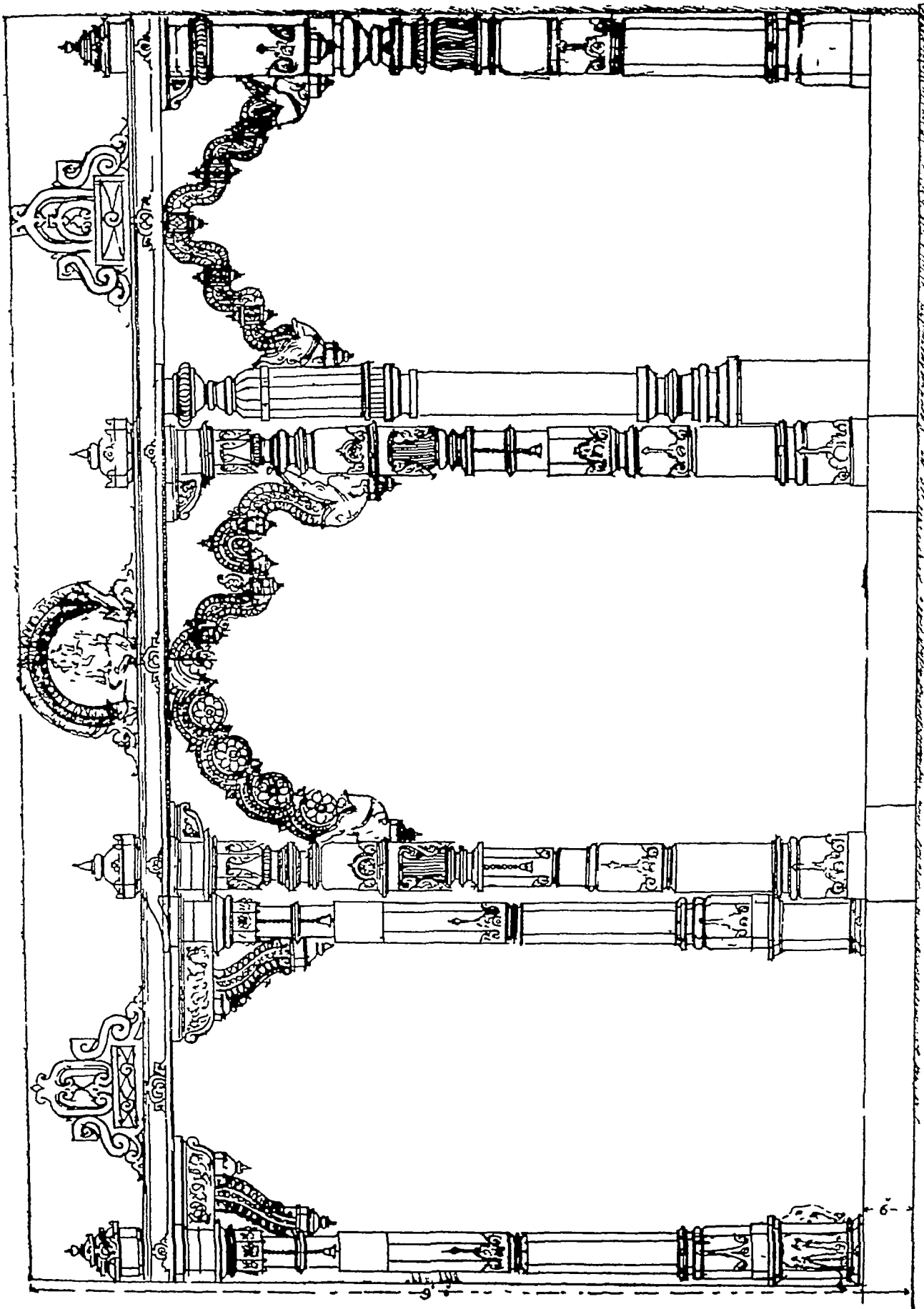
मंदिर के तीन अलग शैली के प्रवेशद्वार *Three Different Gates of Temple*
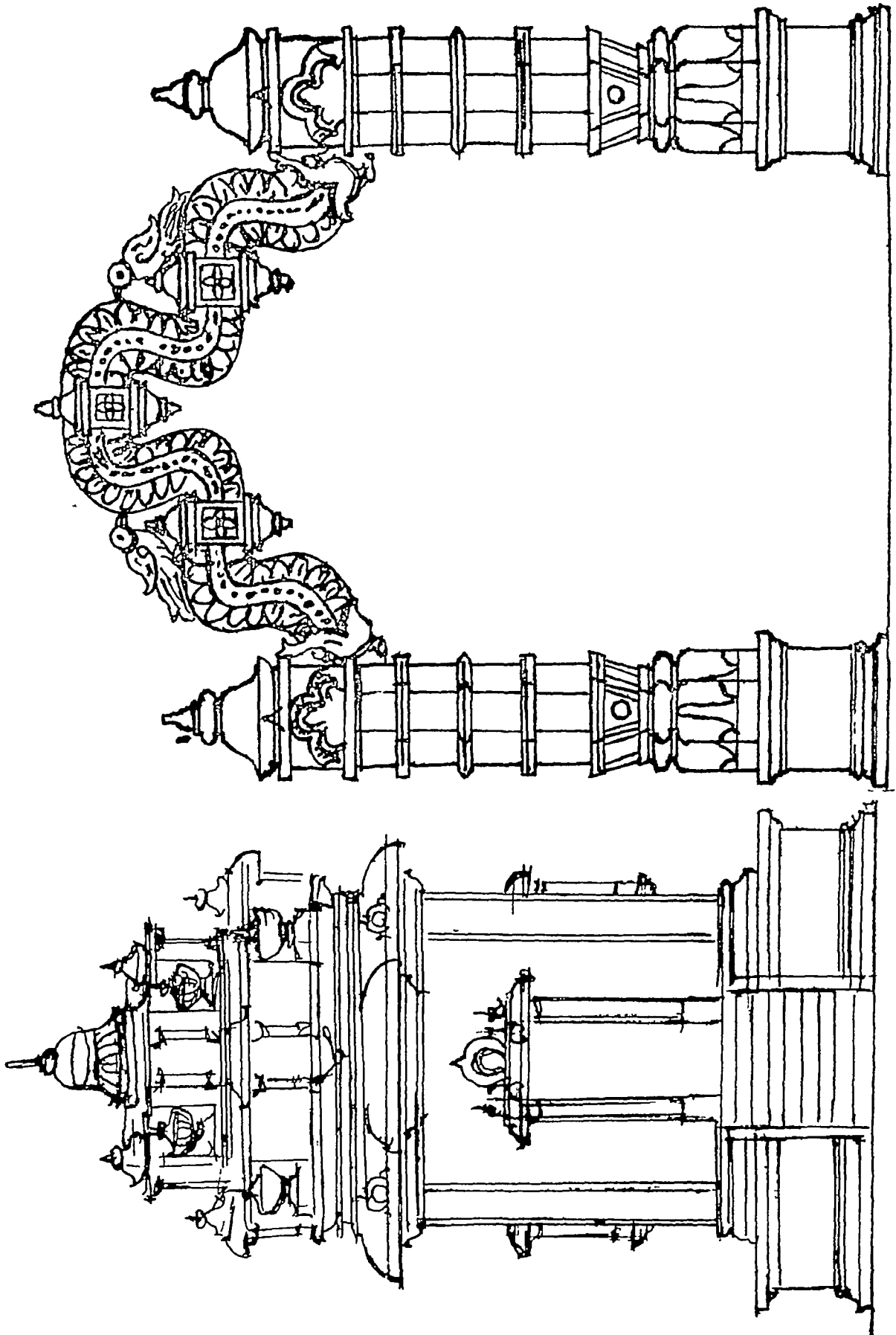
जावा का मन्दिर *A Small Temple of Jāvā*

स्तम्भ-तोरण *Stambha-Torana*
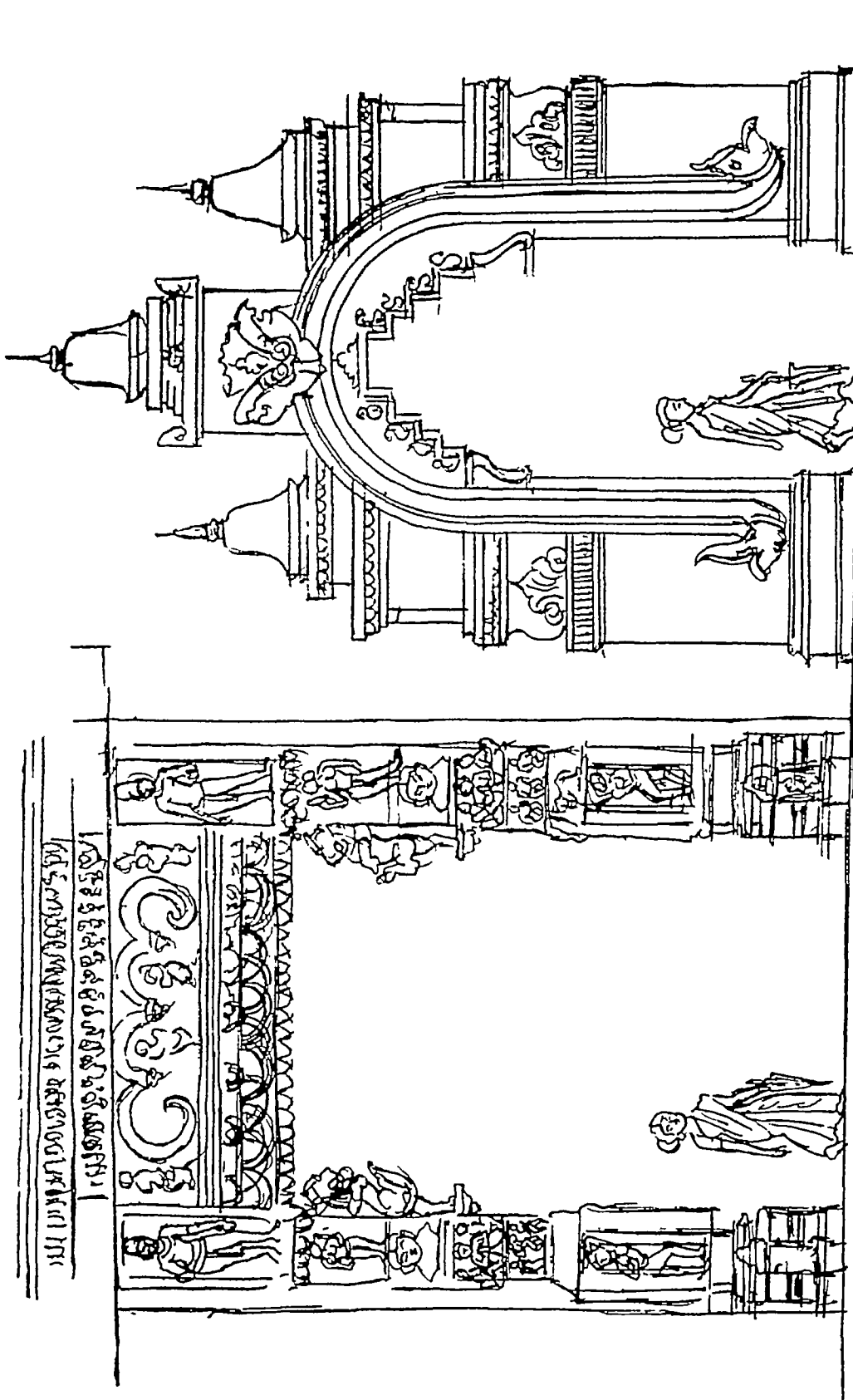
प्रतोल्या, रेवा (उत्तर भारत) *The Gate, Revā* (*North India*)

प्रतोल्या, जावा मन्दिर *The Gate, Jāvā Temple*

घंटाघर

भारतीय भवन

स्मारक

राज्यभरायल

राजस्थान, राजपुताना और मोगल शैली के भवन

Tower

Indian Edifices

Memorials

Stately Buildings In Rajastan

Rajputana and Moghul Style
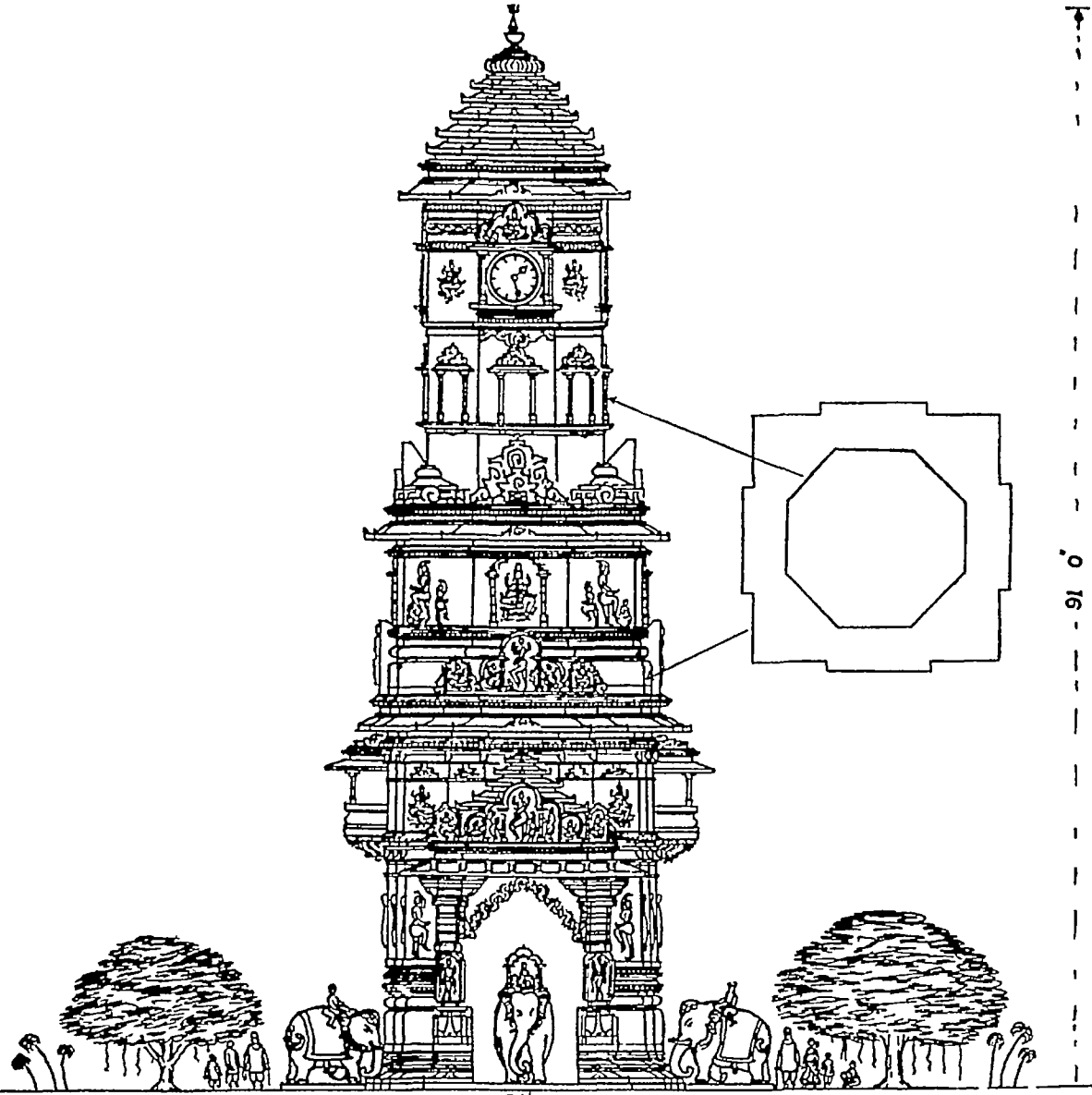
FRONT ELEVATION

भारतीय शैली का घटाघर *Tower in Indian Style*
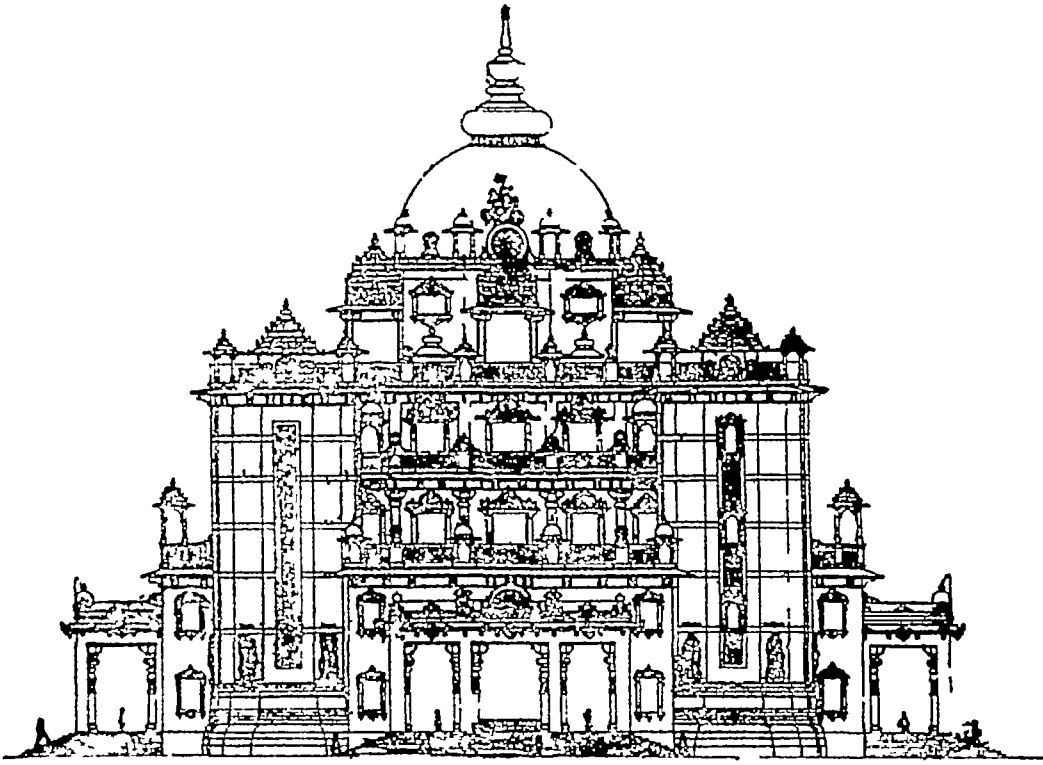
ग ाधी स्मारक
Gāndhi Memorial
Length—265′
Width—200′
Height—155′
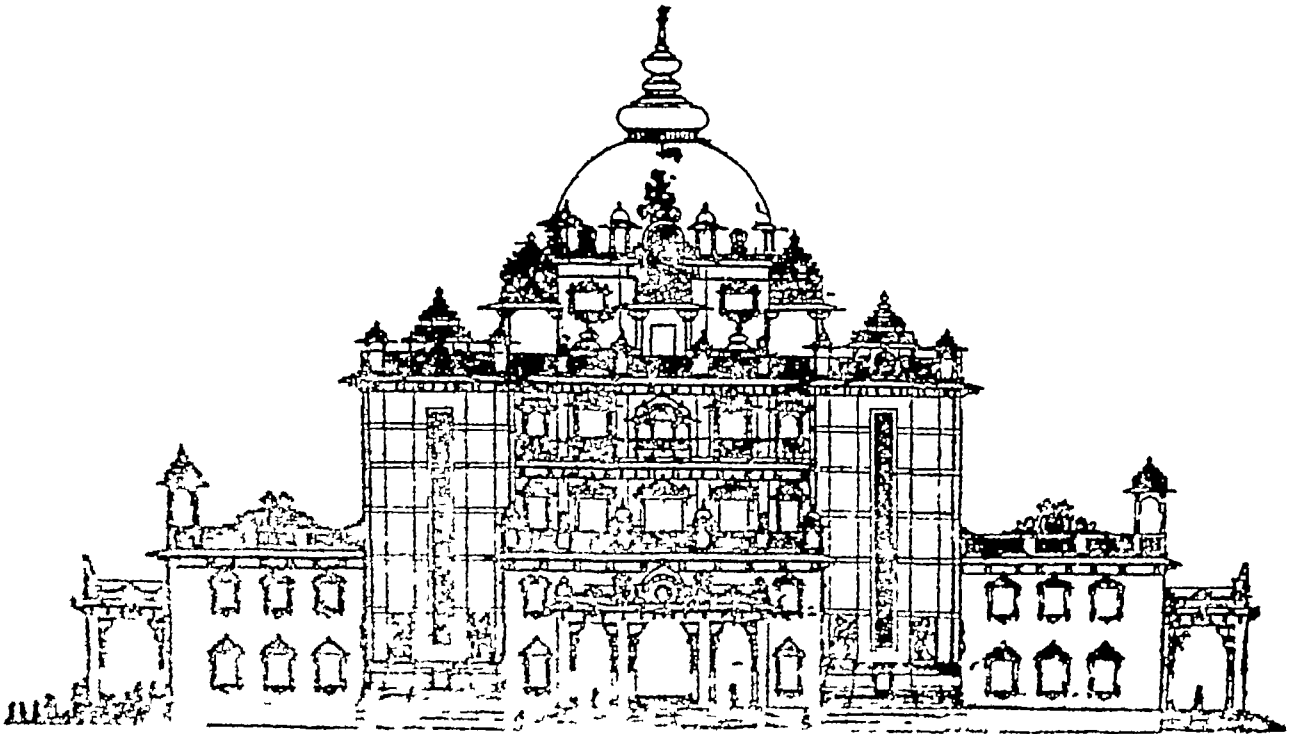
गांधी स्मारक *Gāndhi Memorial*
Width—200 Length—265′ Height—155
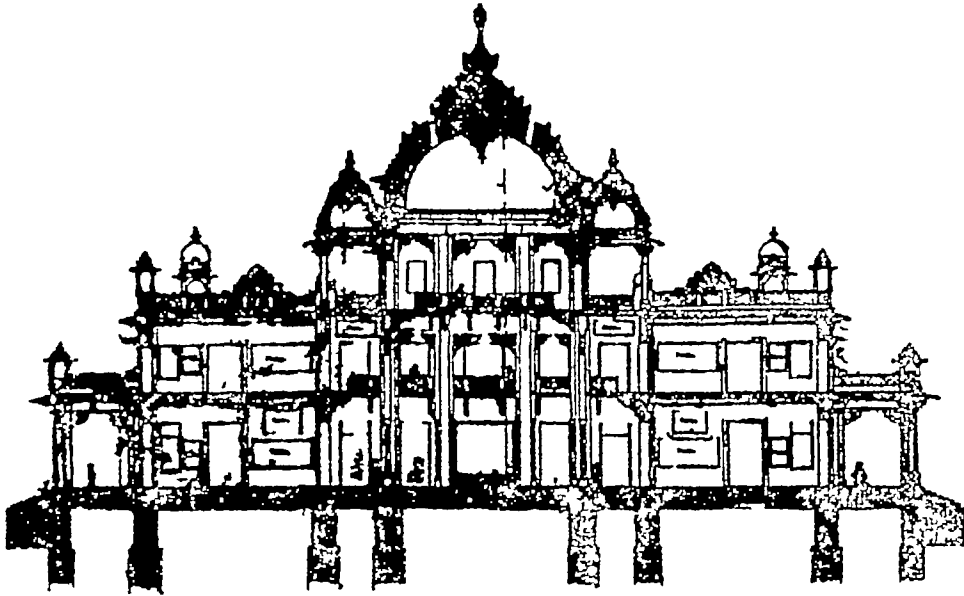
गांधी स्मारक, सेक्शन *Section of Gāndhi Memorial* 200′ × 106′
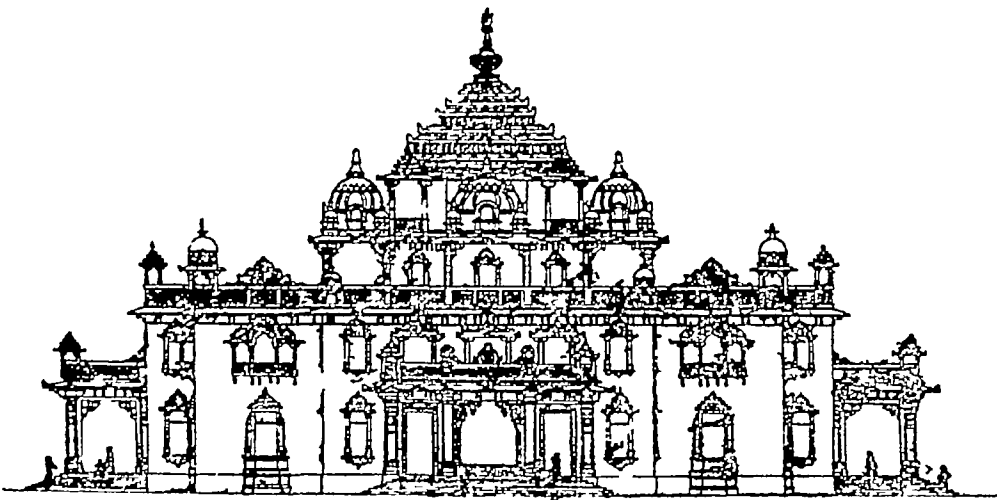
गांधी स्मारक का सन्मुख दर्शन *Elevation of Gāndhi Memorial* 200′ × 106′
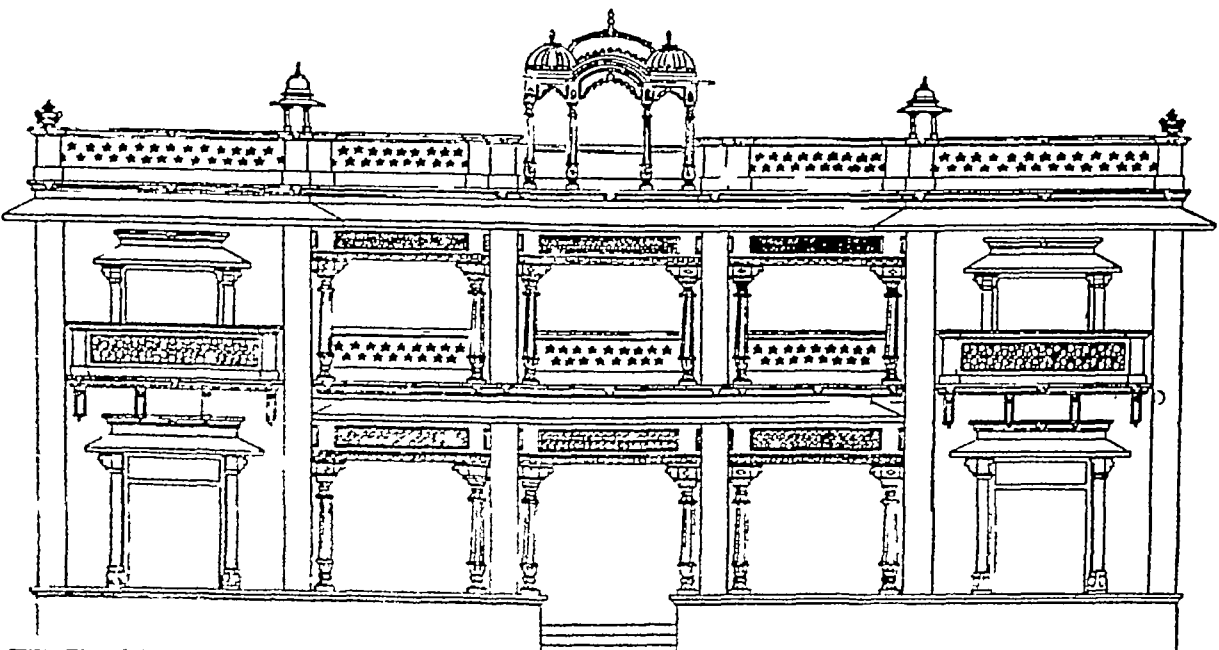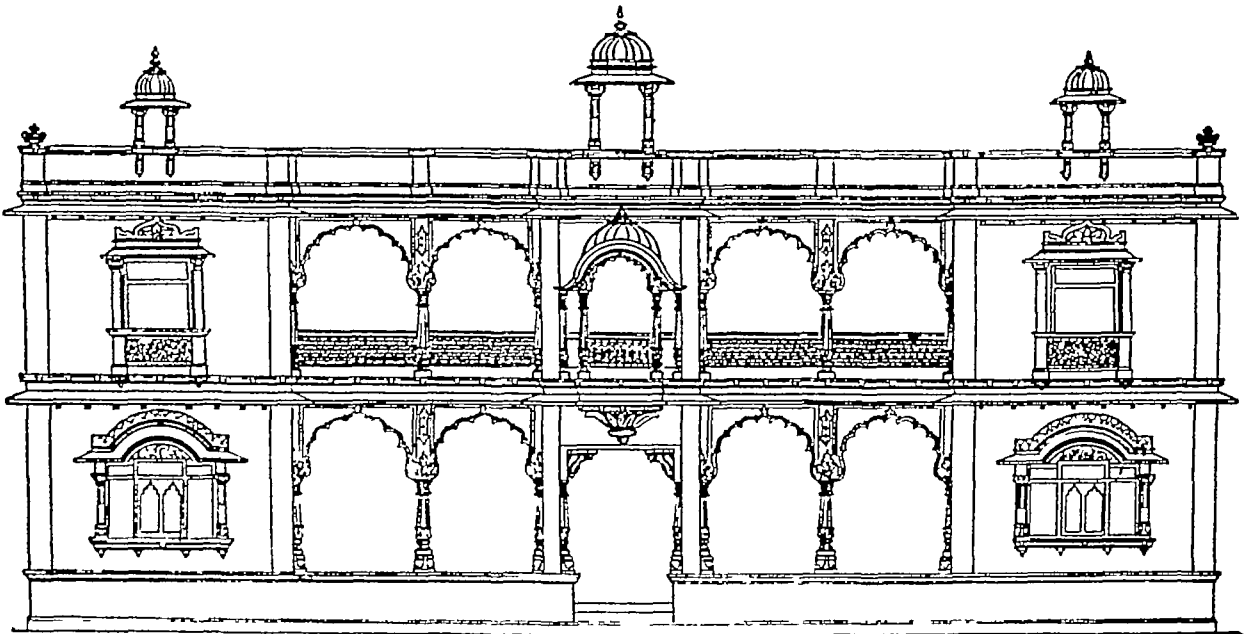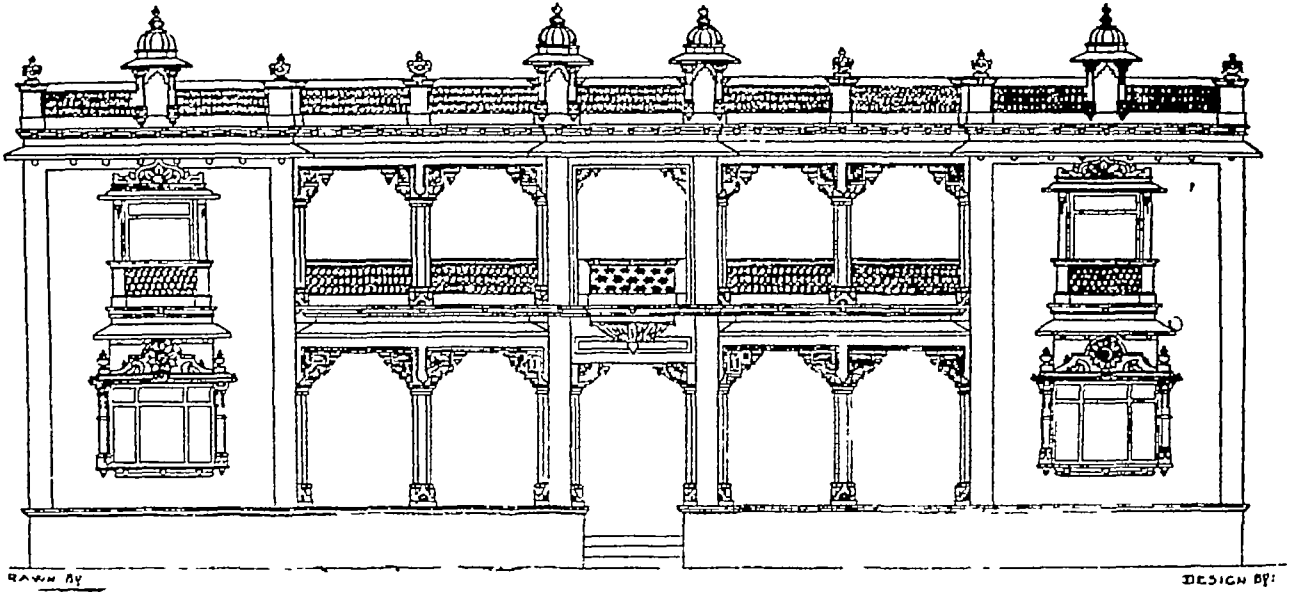
भारतीय भवन के मुख दर्शन *Elevation of Indian Edifices*
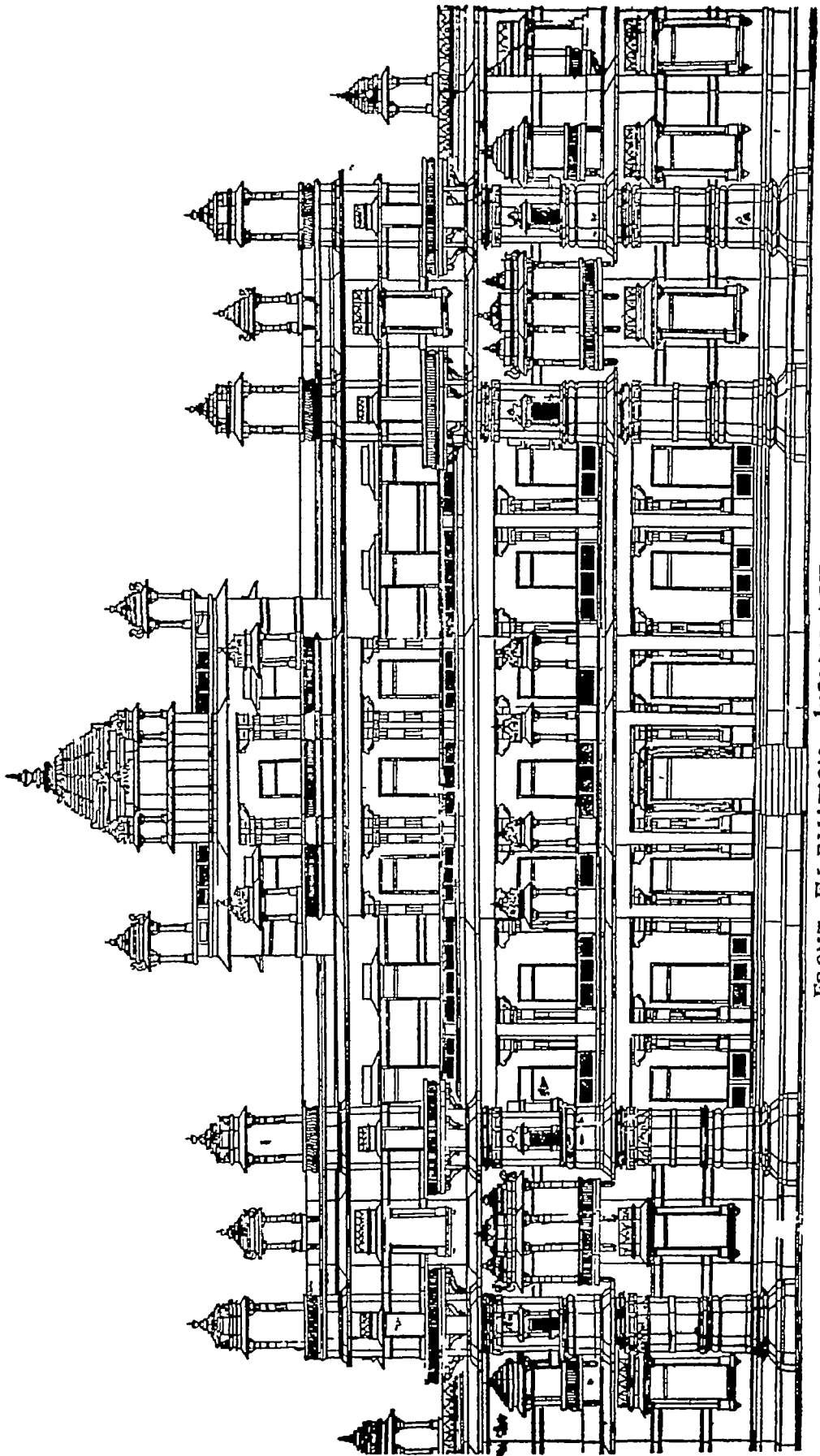
भारतीय शैली का राज्यभरालय *Huge and Stately Edifice of Indian Style*
Length-200', Width-192', Height-95'

मोगल शैली की इमारत का मुखदर्शन *Elevation of Edifice of Moghul Style*
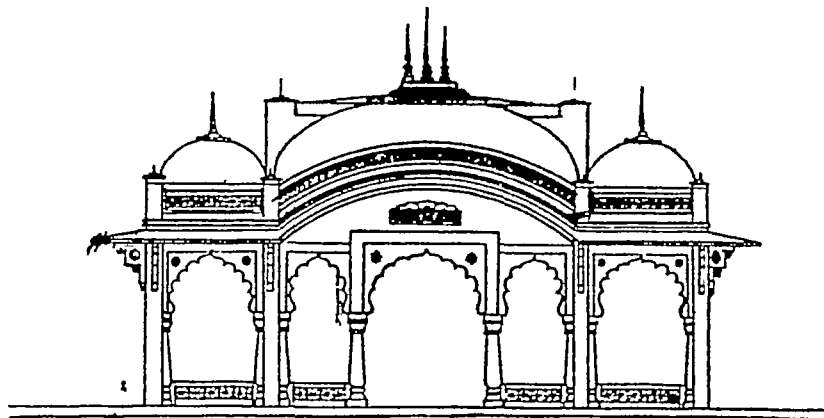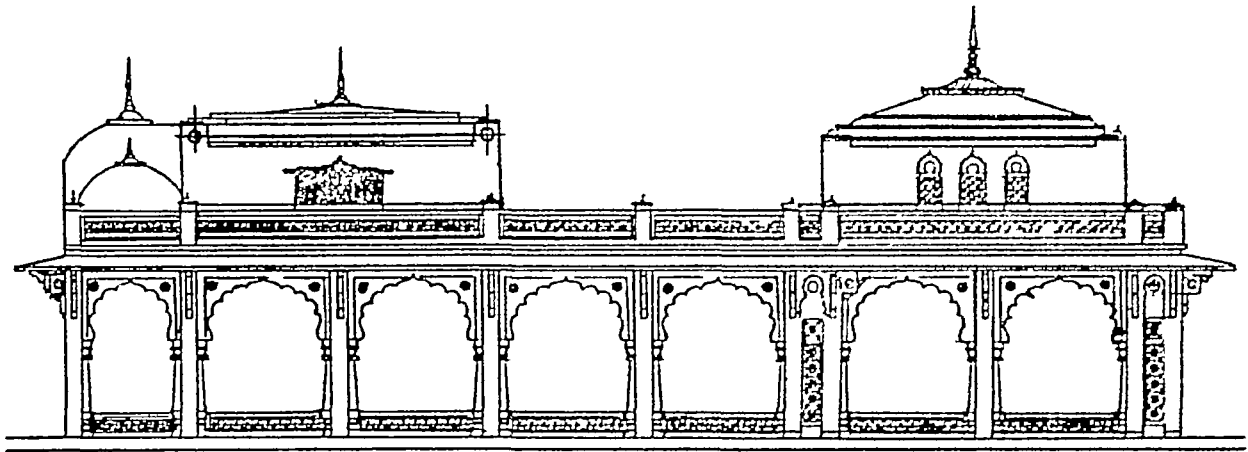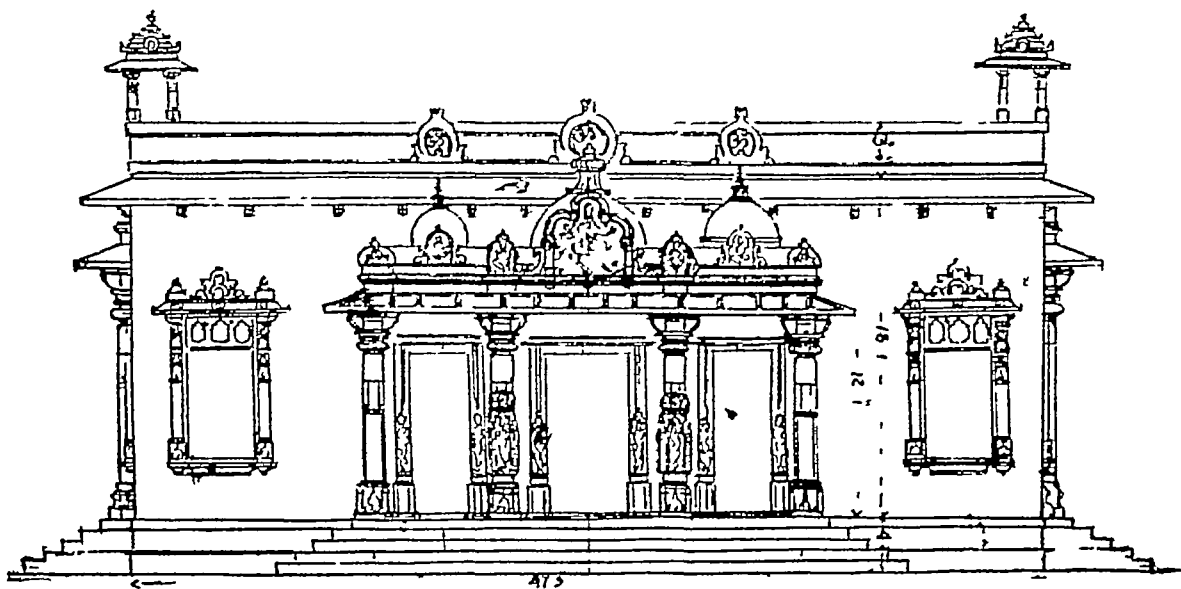
भारतीय भवन का गवाक्ष युक्त मुख दर्शन *Front Portion of Indian Edifice with Mullioned Windows*

15' 1"

10' 6"
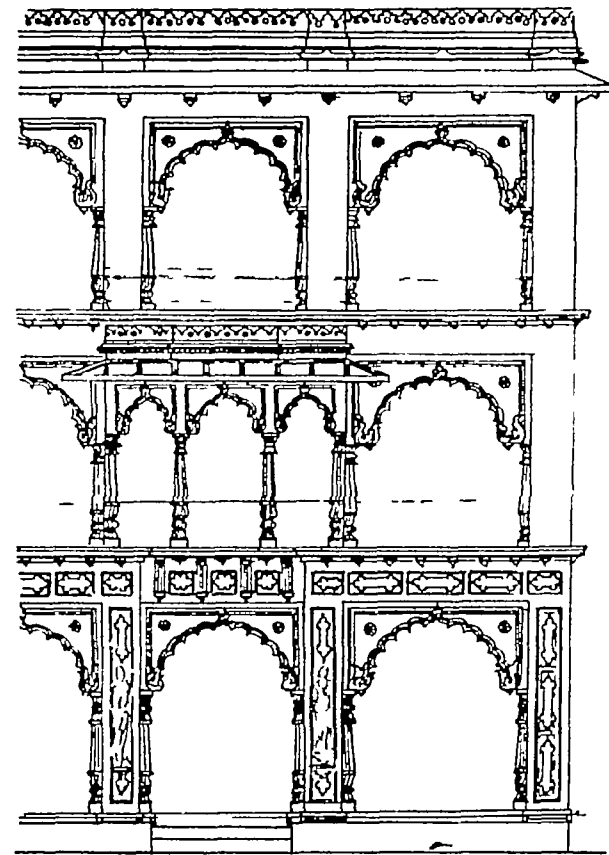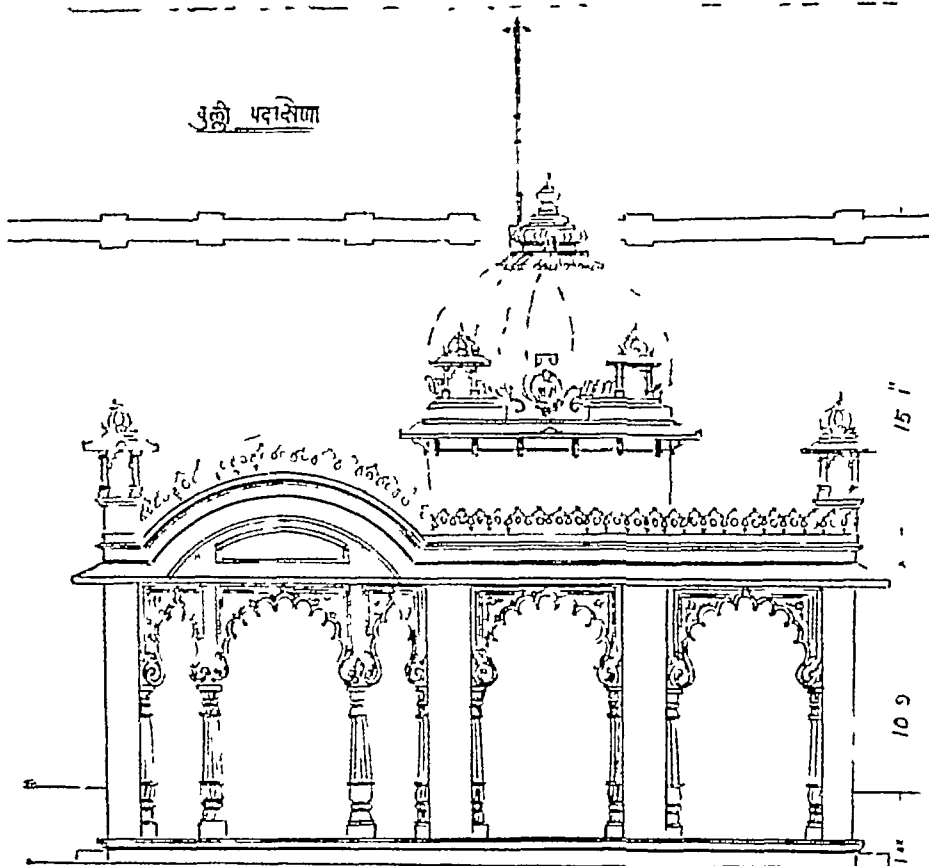
पक्ष दर्शन

SIDE ELEVATION

NORTH FRONTEGE

भवन, राजपुताना शैली *Edifice of Rājputānā Style*

भारतीय भवन *Building of Indian Style*
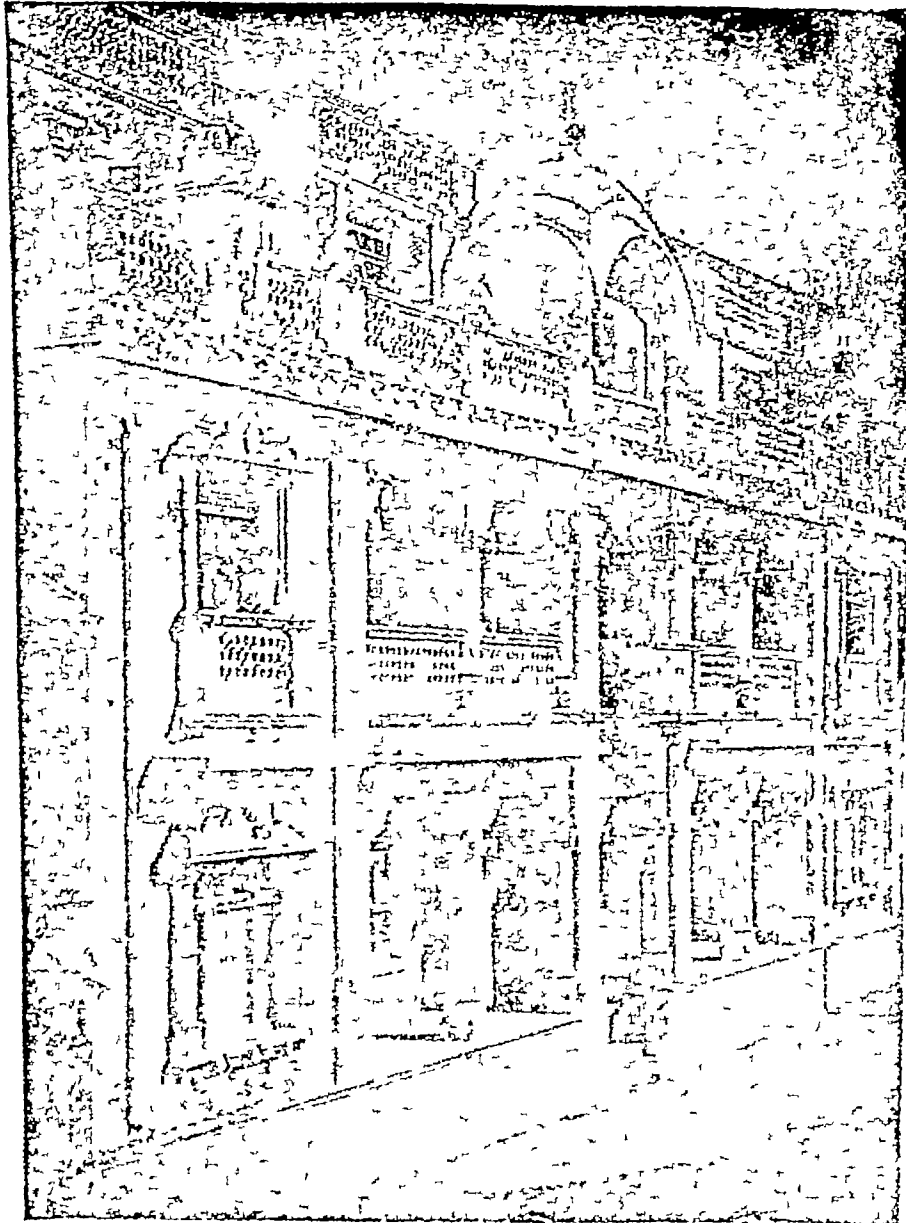
भारतीय शैली का भवन *Building of Indian Style*
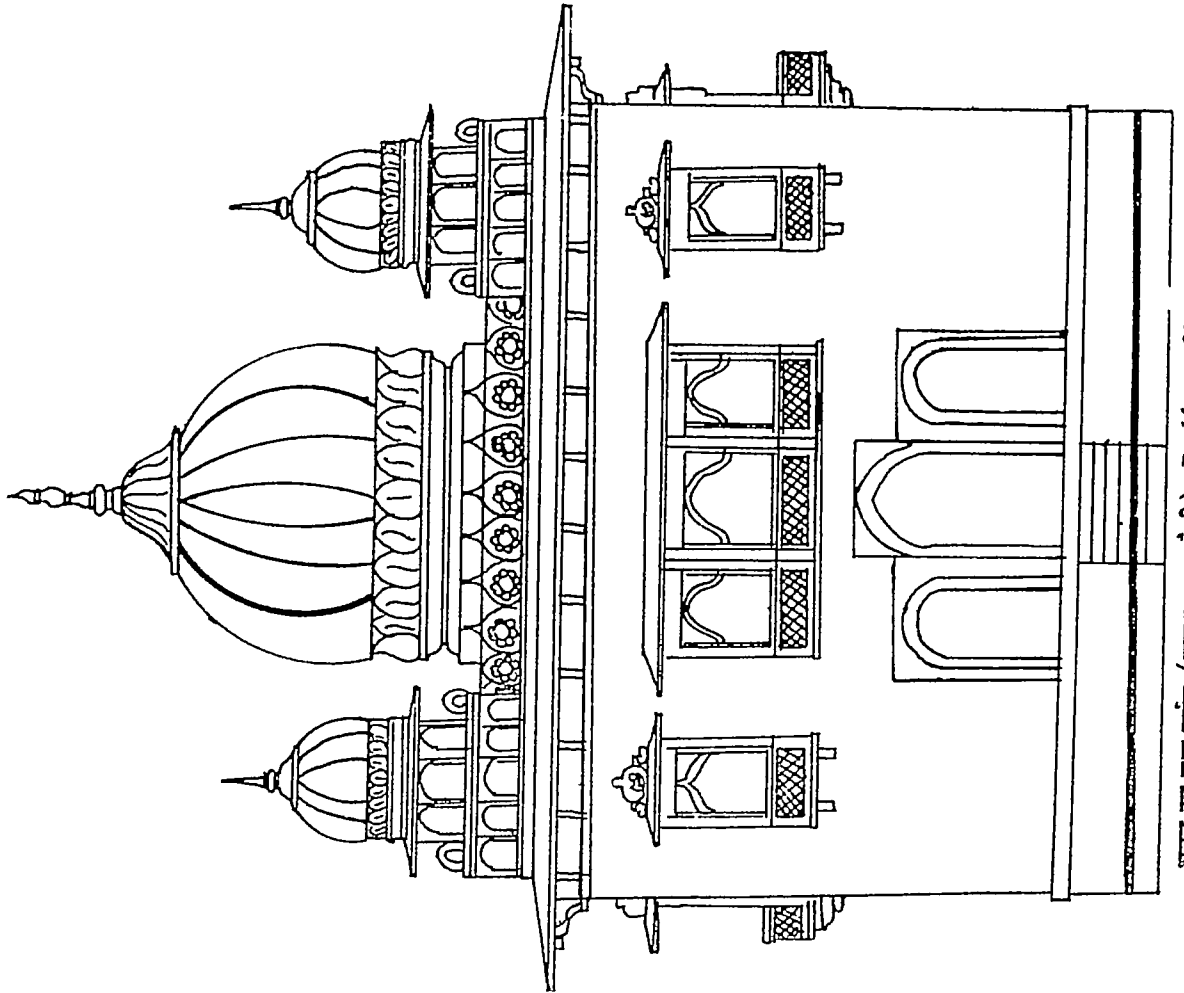
पूजा छत्री *Pujā-Chhatri*

भवन का मुख दर्शन (राजपुताना शैली) *Building of Rājputānā Style*
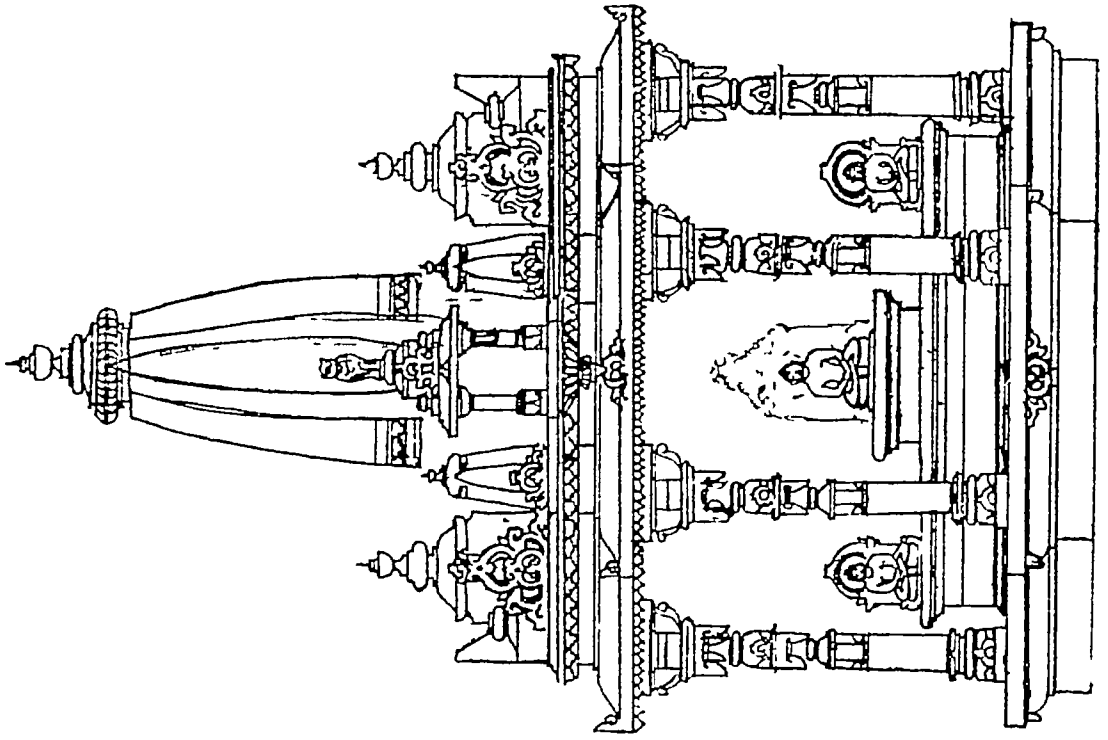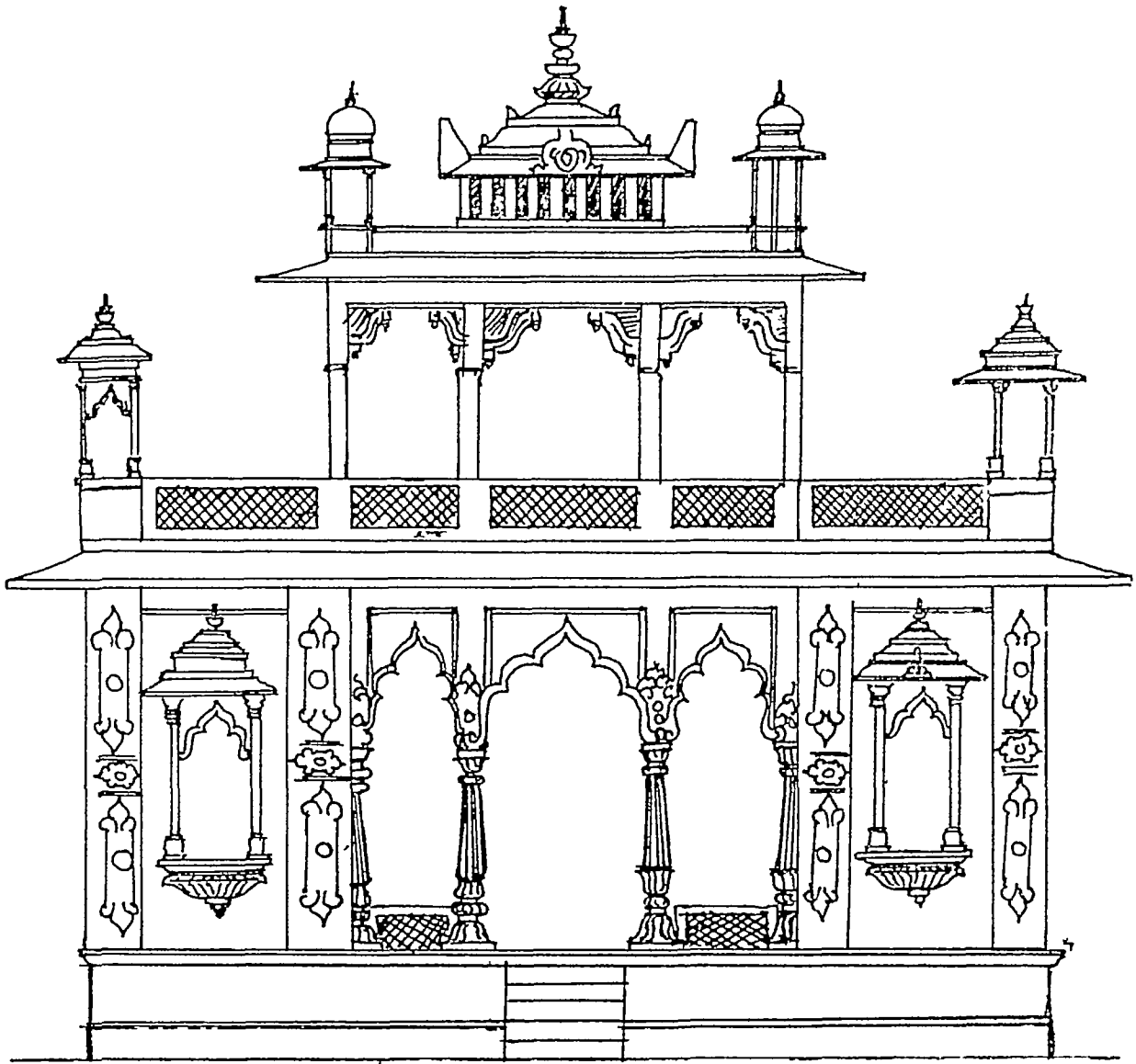
भवन का मुख दर्शन (राजस्थान) *Elevation of Royal Palace (Rājasthān)*
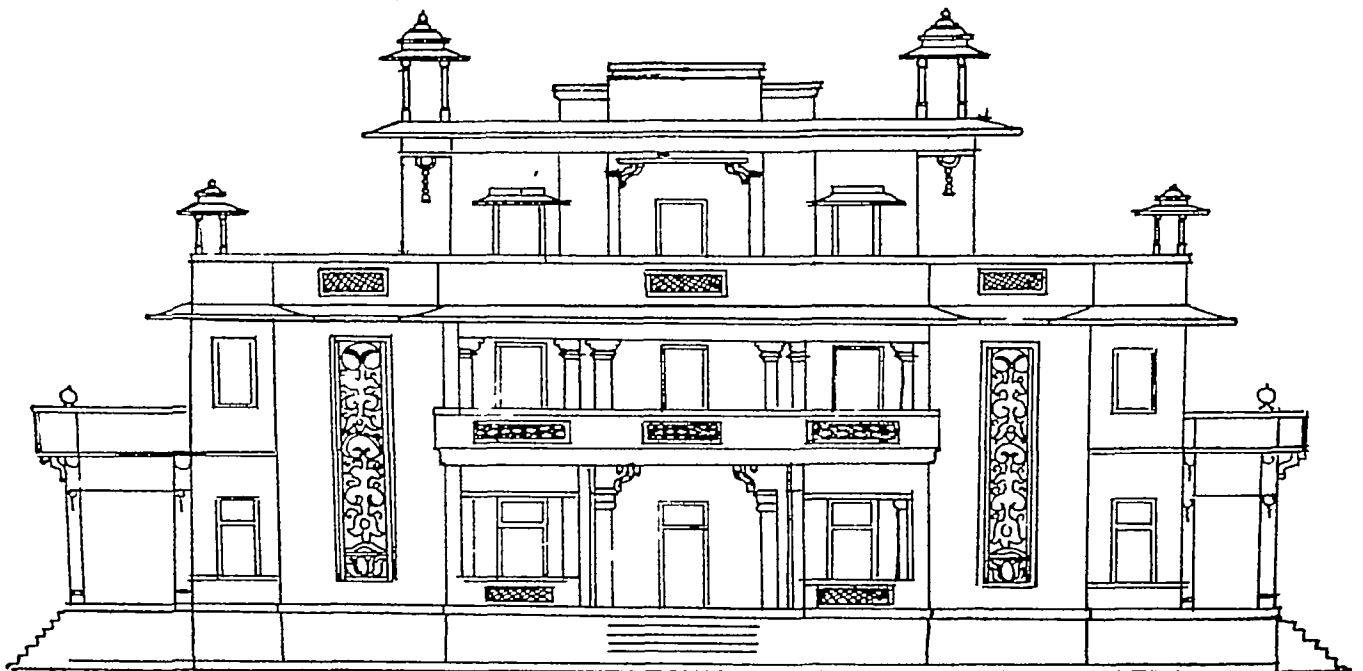
भारतीय भवन का मुख दर्शन *Elevation of Indian Mansion*
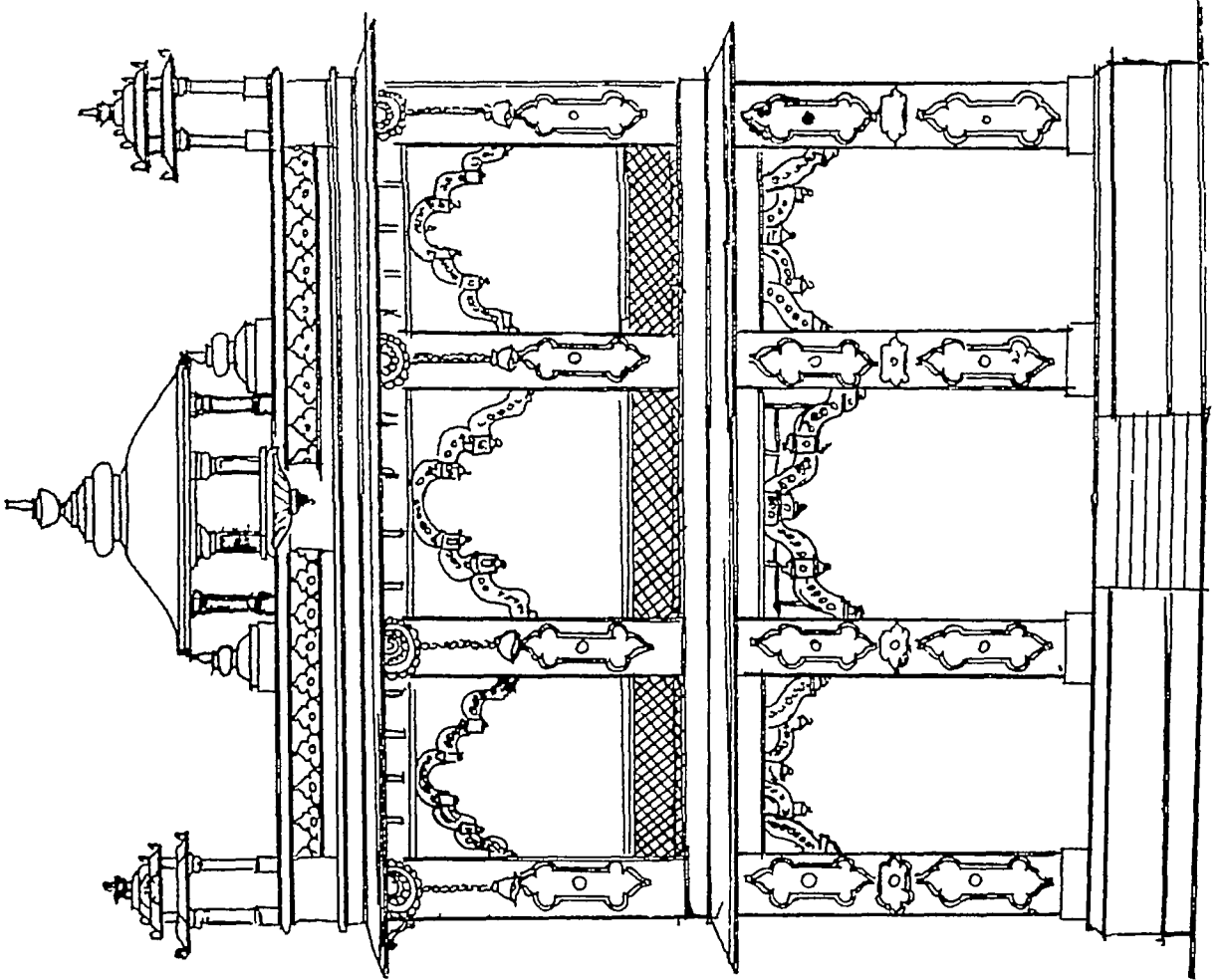
भवन का मुख दर्शन (राजपुताना शैली) *Front Portion of Edifice (Rājputānā Style)*
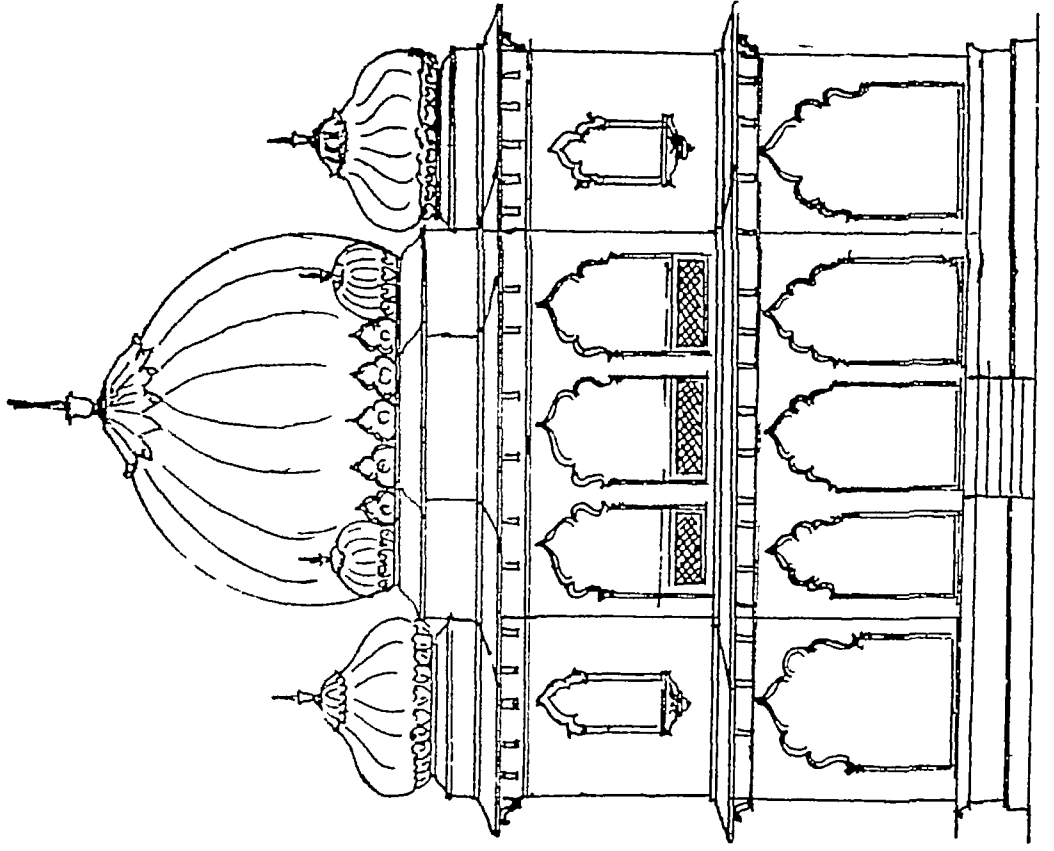
भवन का मुख दर्शन (मोगल शैली) *Edifice, (Moghul Style)*
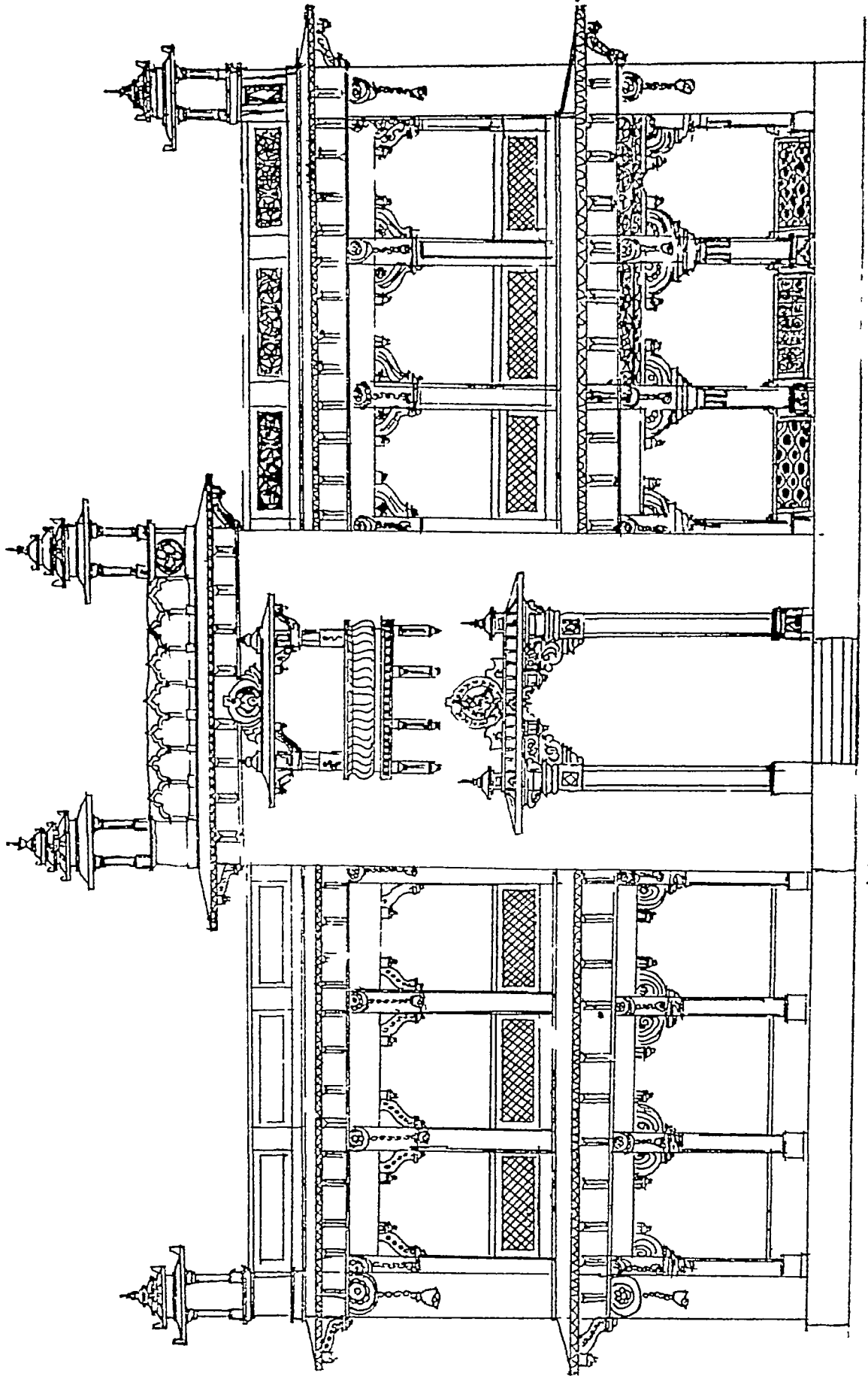
राजस्थान शैली का भवन *Stately Palace of Rājasthān Style*
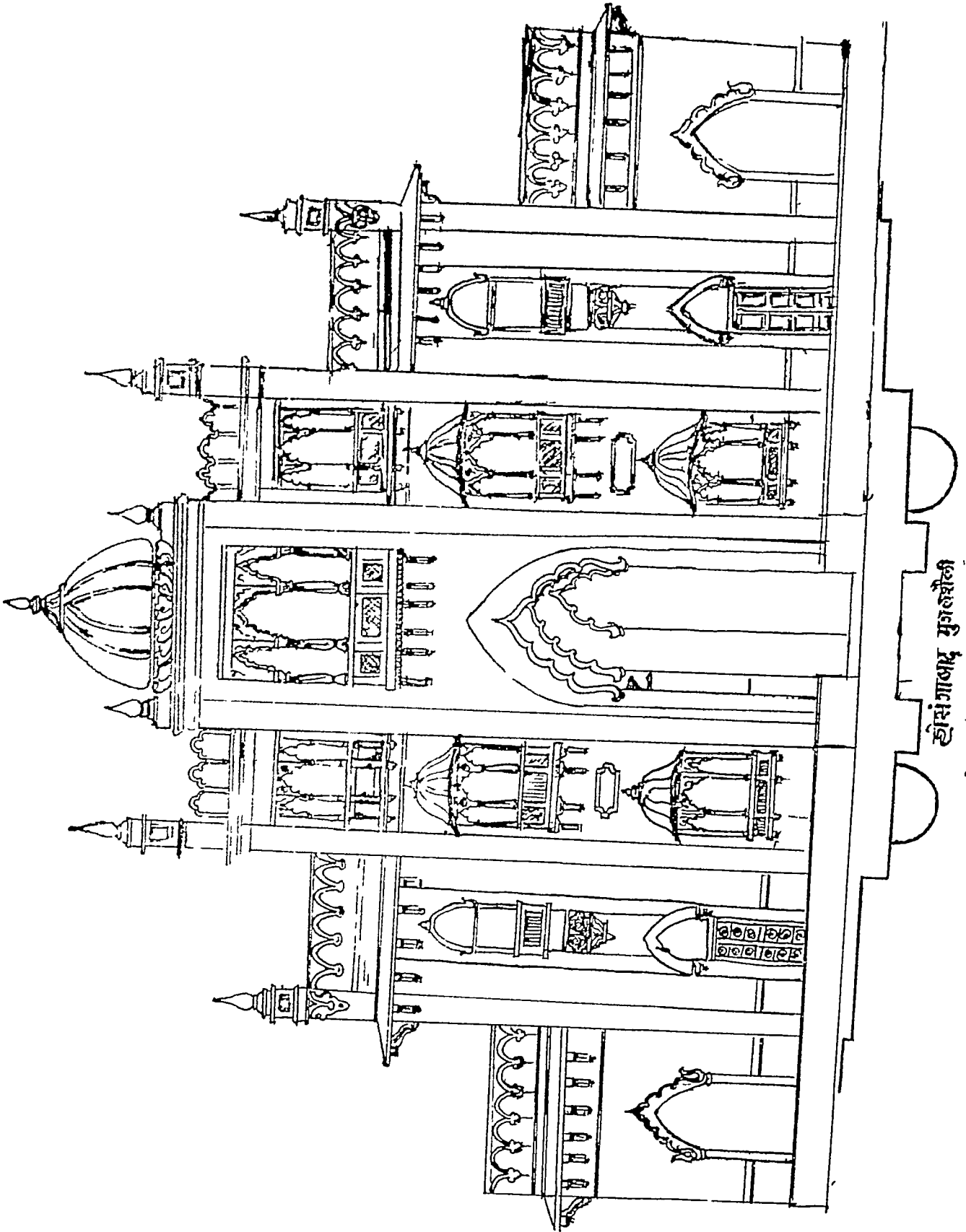
होसंगाबाद् मुगलशैली

भवन का मुख दर्शन *Elevation of Royal Palace in Moghul Style, Hosangābād*

पाट मोयला

ढावडी

वेलापत्र

जालियां

किवाड़

Decorative Elements

Grills

Doors
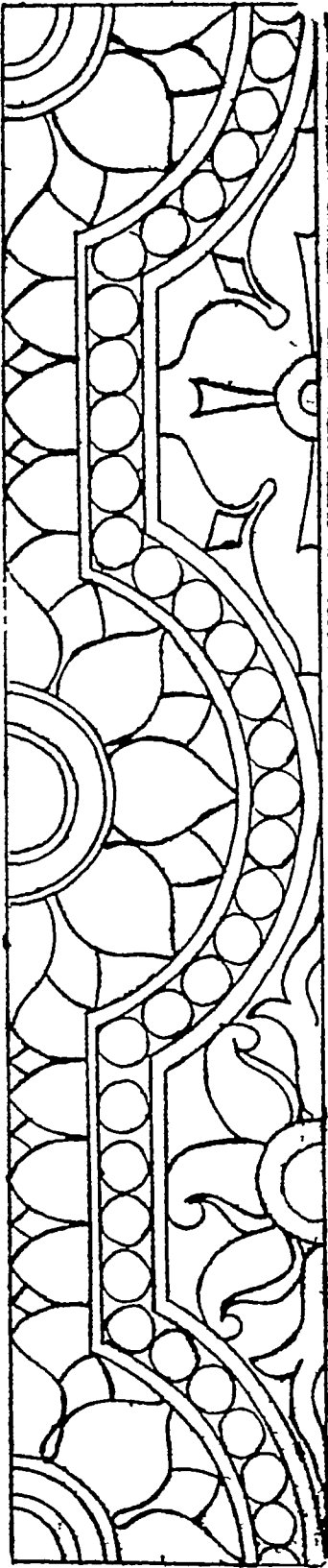
पाट के फूल
Flowers

हस्ति
Elephants

हंस
Hamsa, Swān

ग्रास मुख
Gras-Mukha, Lion Face
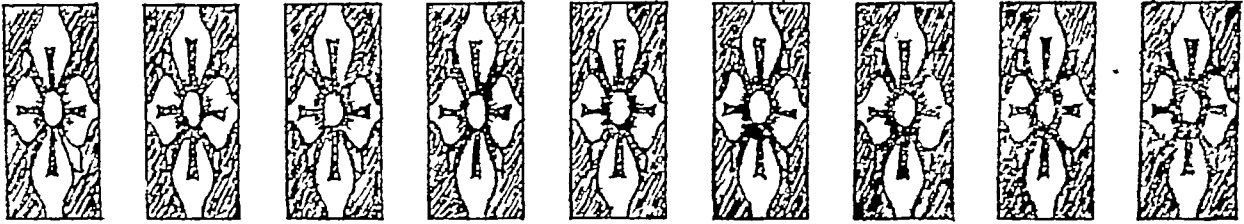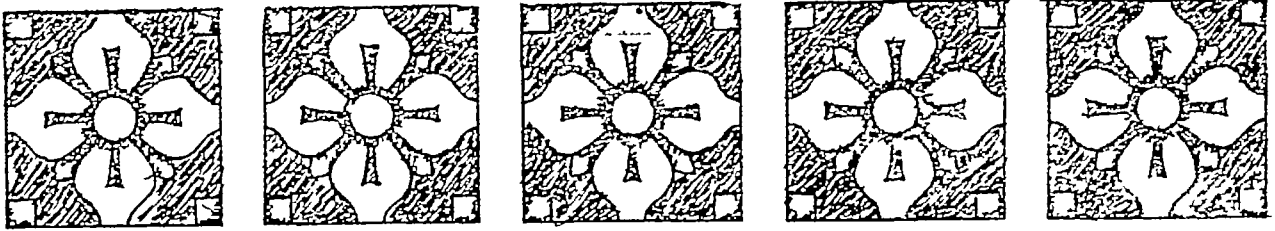
फूल, मोयला और दावडी *Flowers, Moyalas and Dābadı*
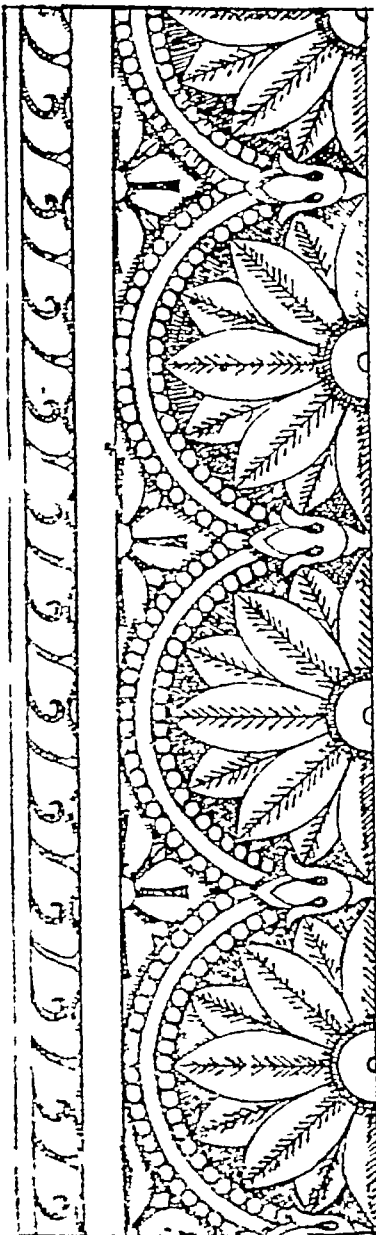
अलकृत पाट *Decorated Lintel*
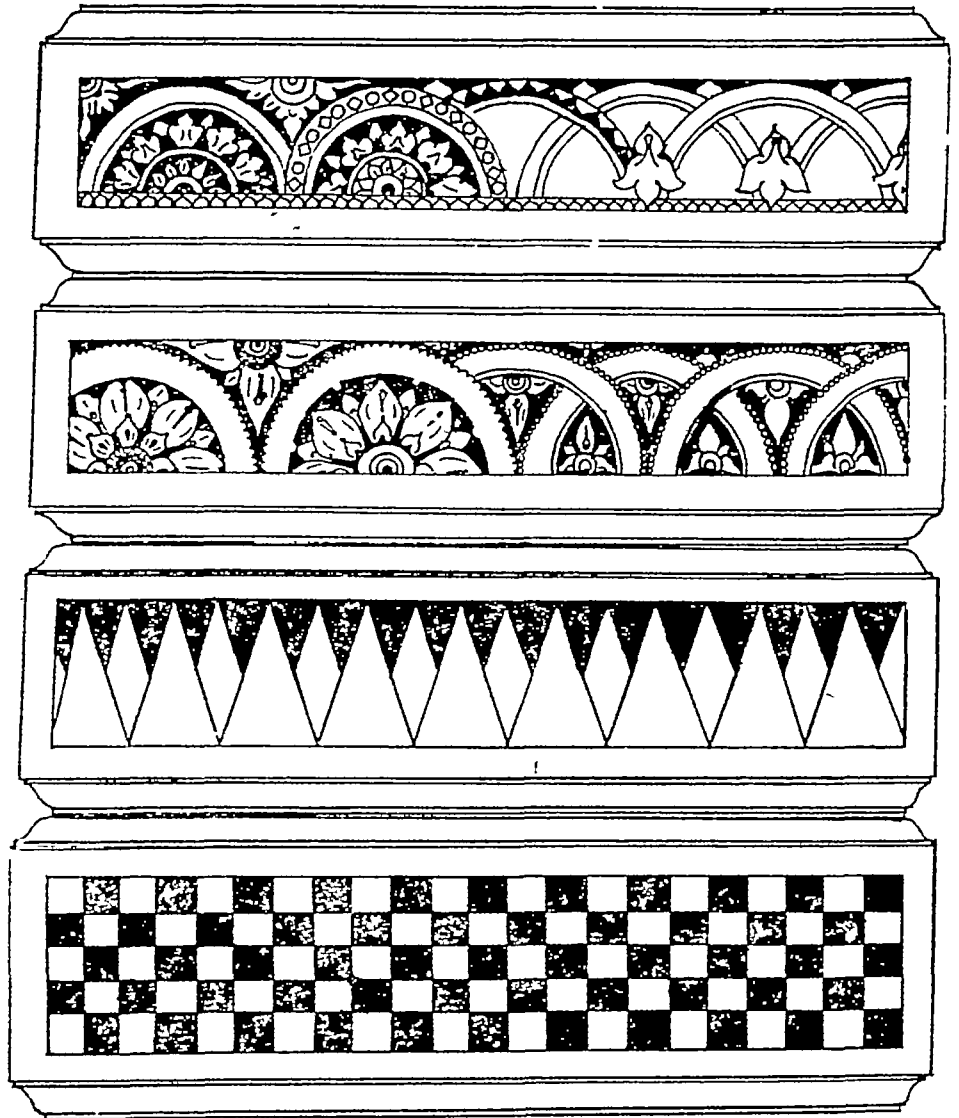
दावडी के चार प्रकार *Four Different Types of Dābadı*

सुदरी *Nymph* जाली *Grill* देवशाखा *Nymph* जाली *Grill* तापस *Sear*
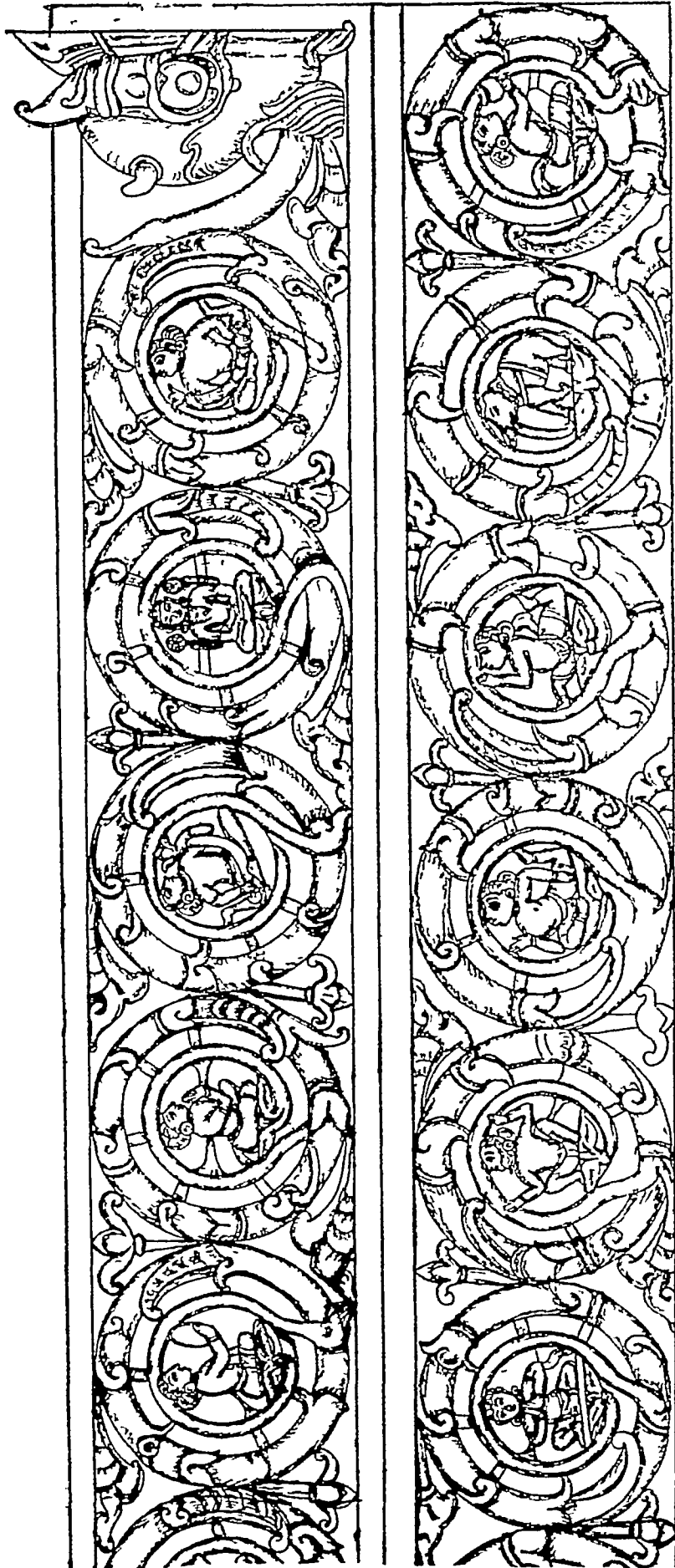
तीन प्रकार की बेला पंक्ति *Three Different Latas*
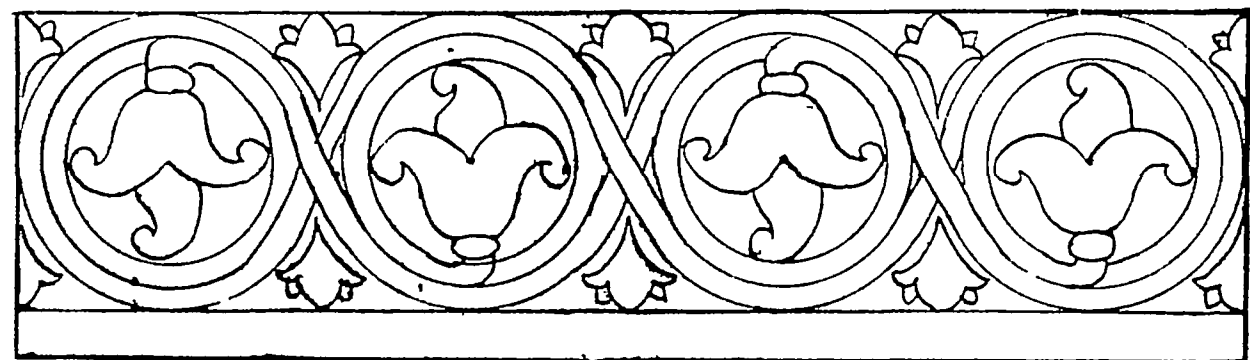
वेला पत्र *Vela Patra*
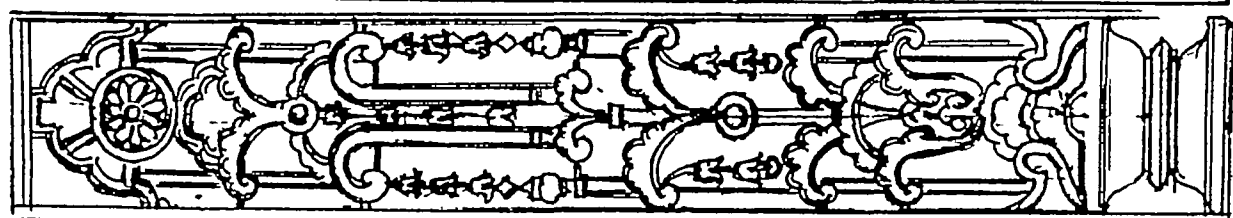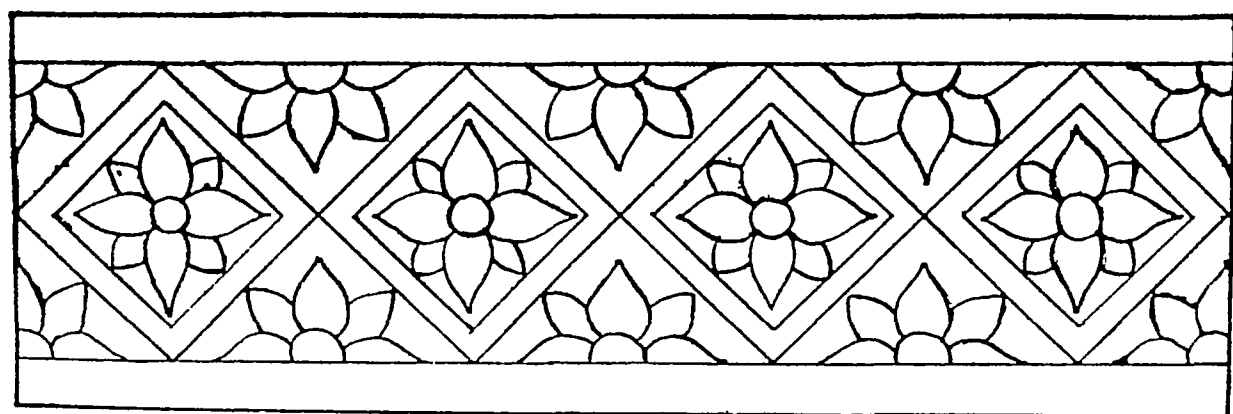
जाली *Grill*
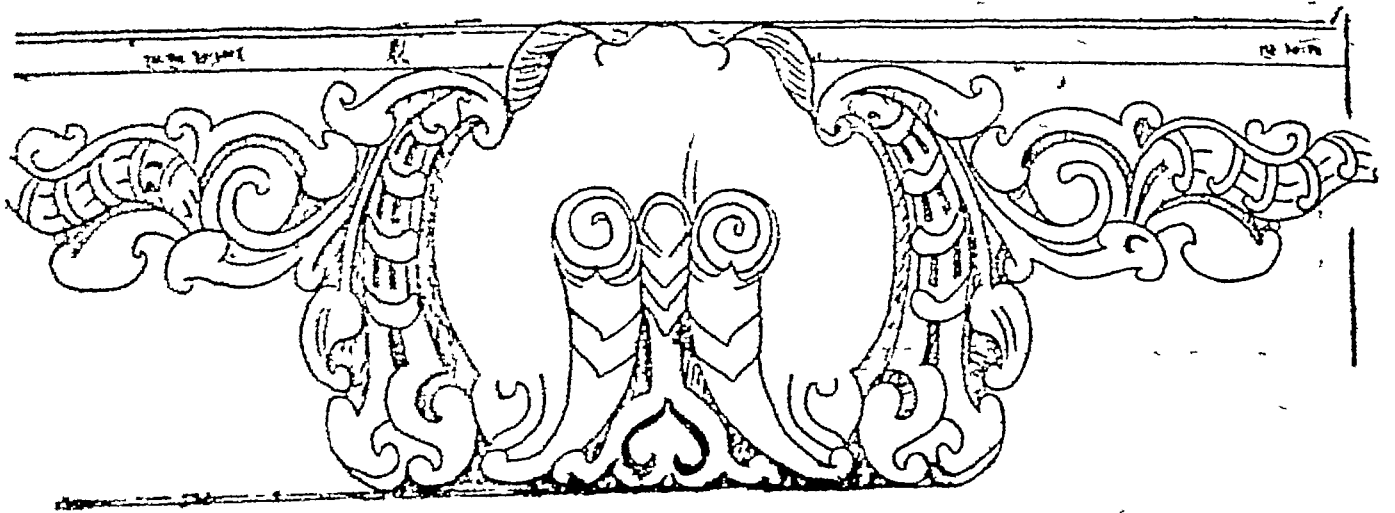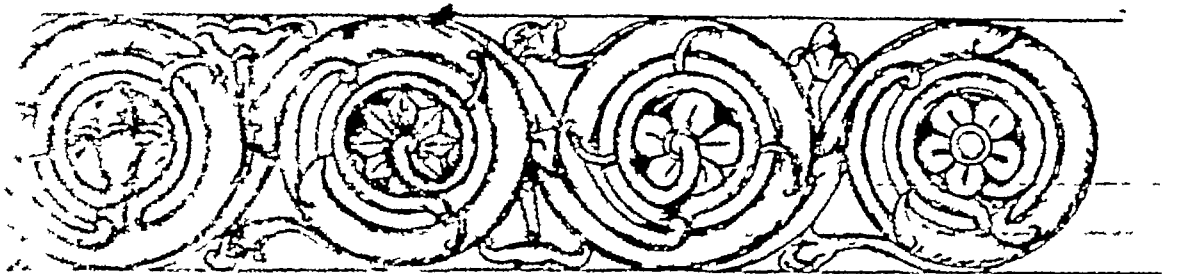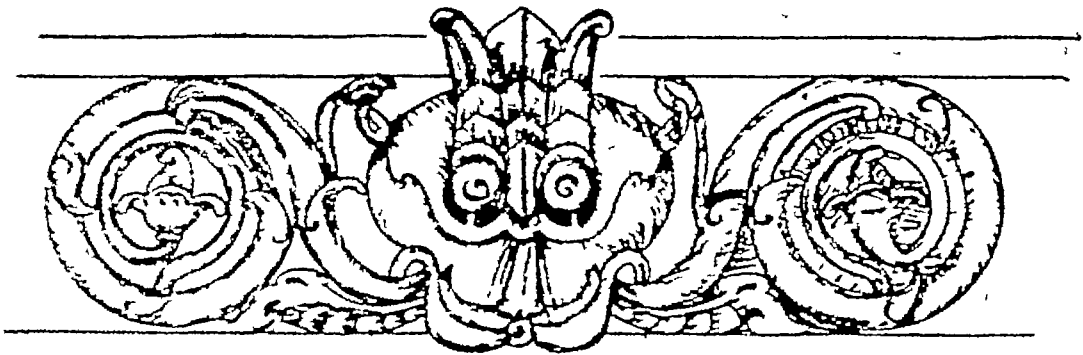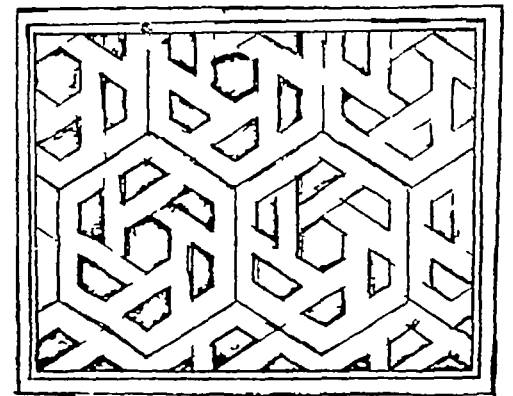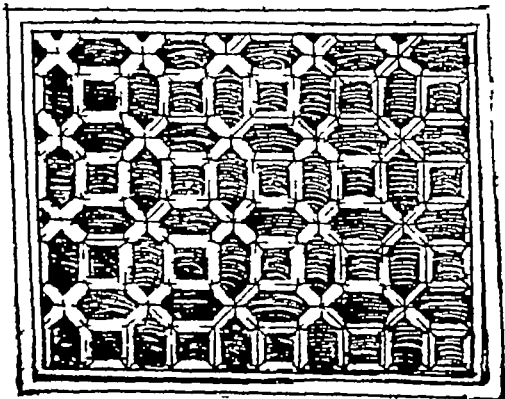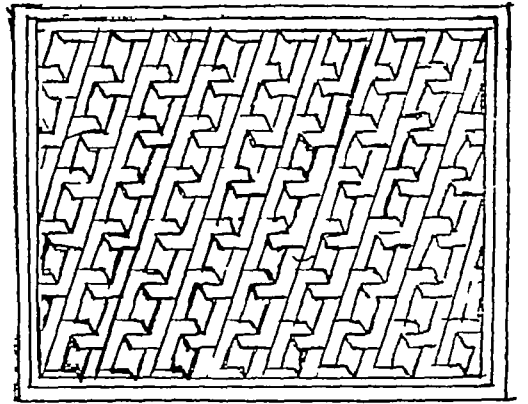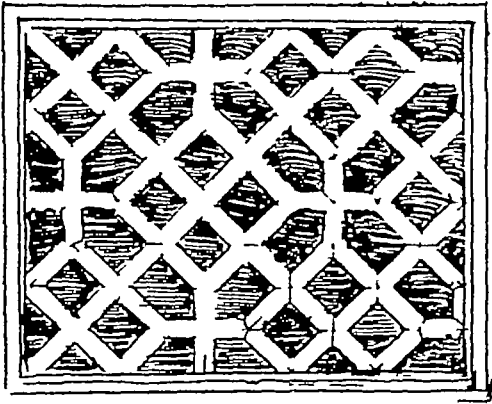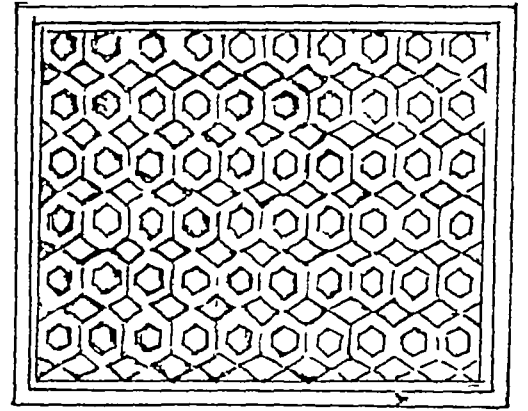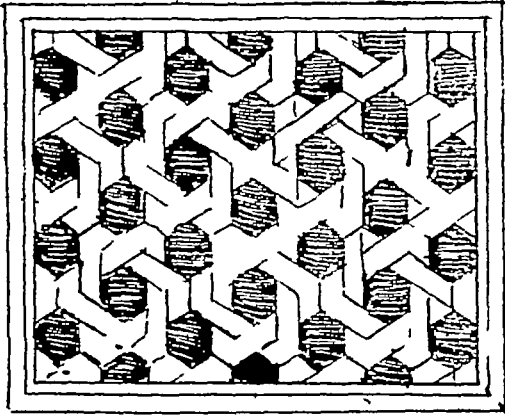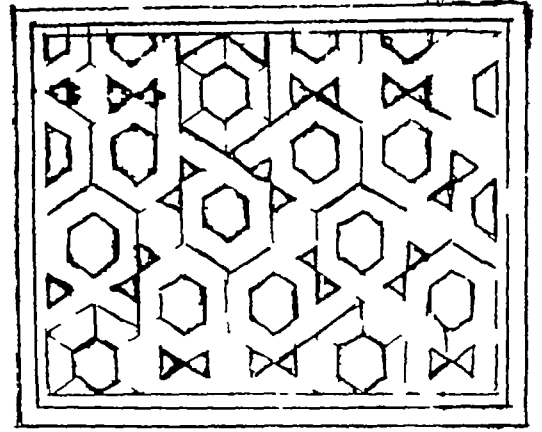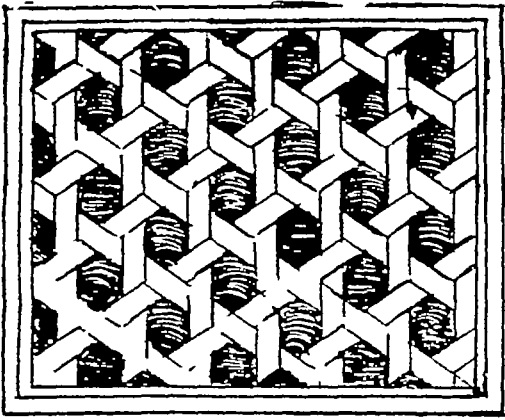
अलग अलग प्रकार की जालियाँ *Different Forms of Fret-Work in Stone*
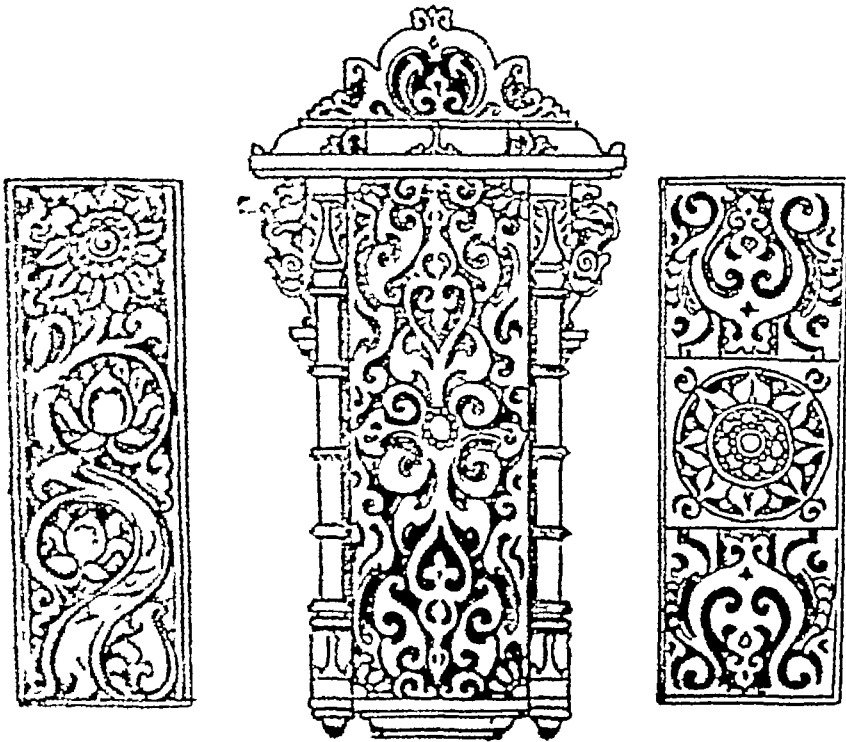
गवाक्ष में जाली *Fret-Work in Niche*
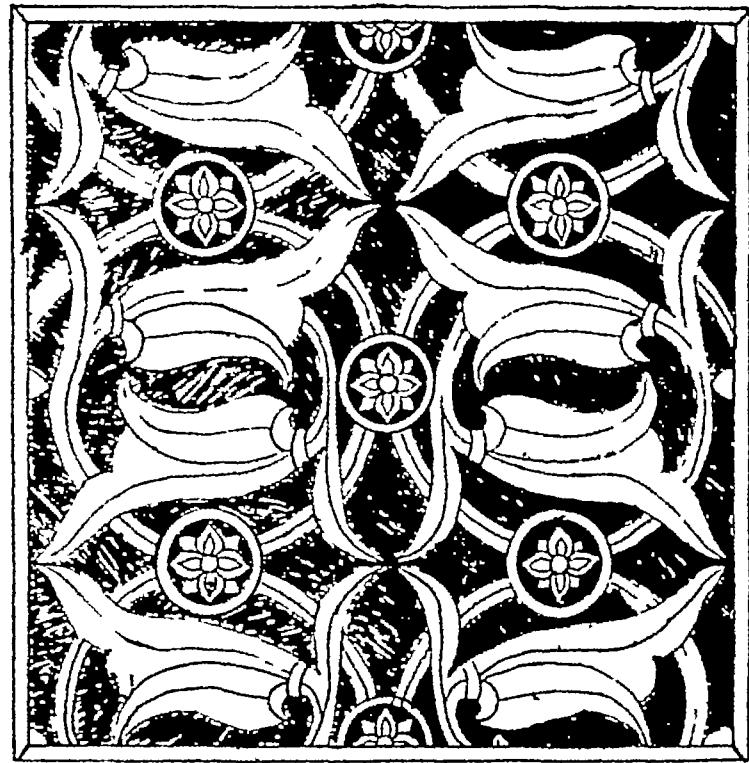
जाली *Grill*
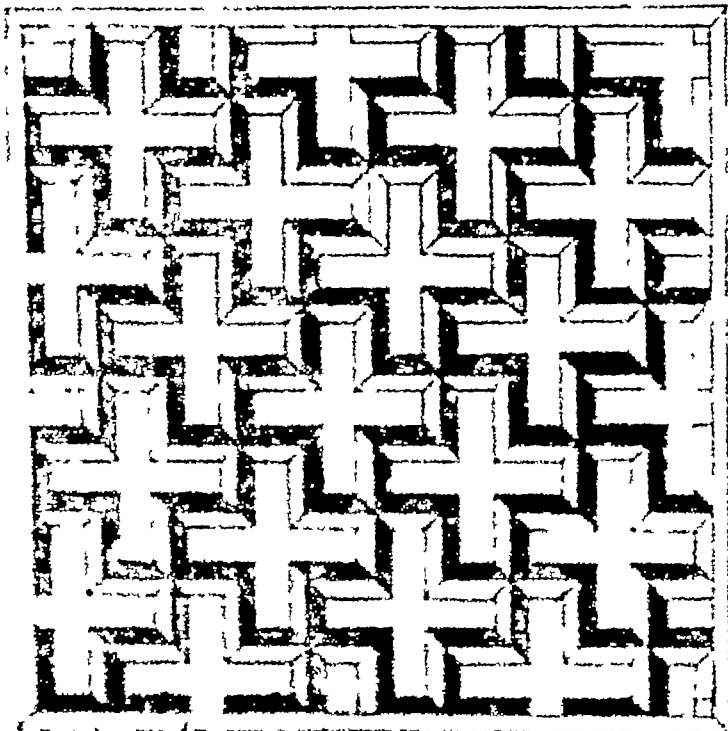
जाली *Grill*
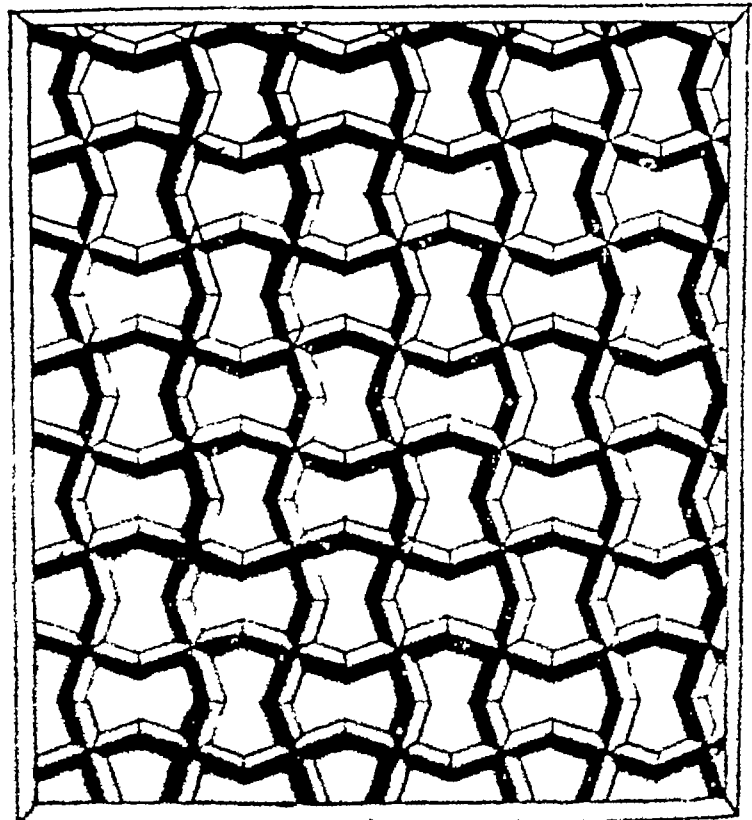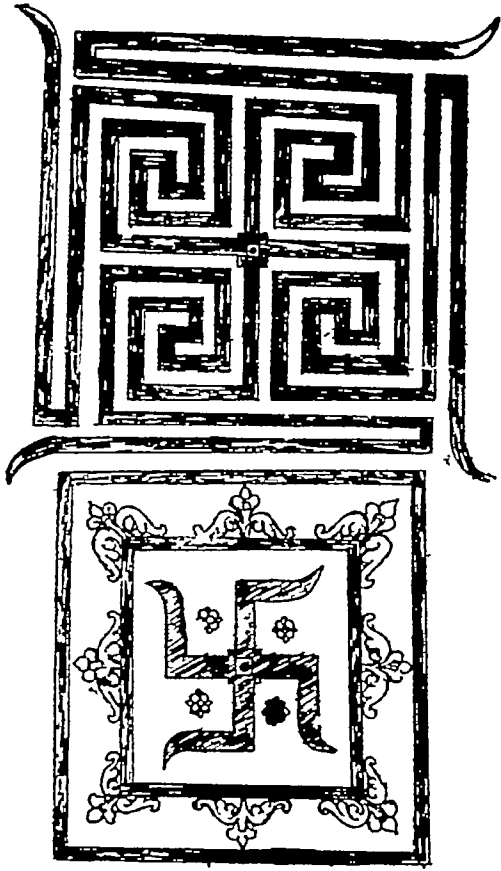
स्वस्तिक *Swastika*

नाग गाठ *Nāga Gānth*

नदावर्त *Nandāvarta*

जाली *Grill*

नवखंड जाली
Grill (Nine Divisions)
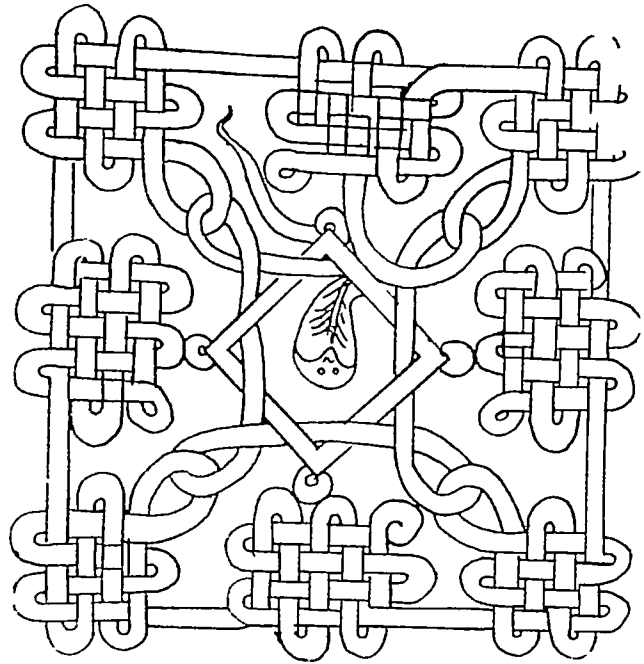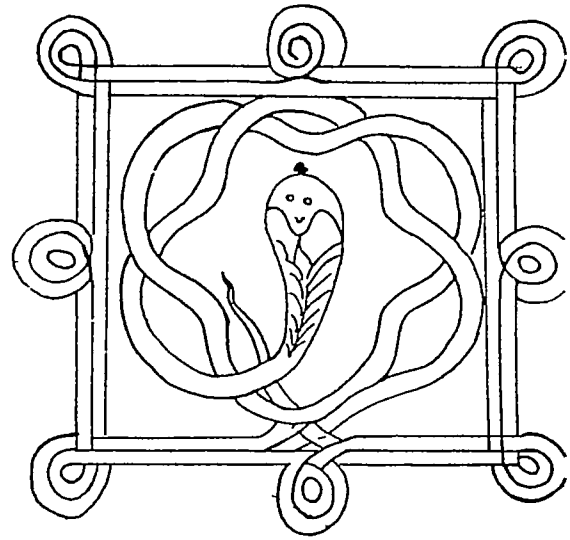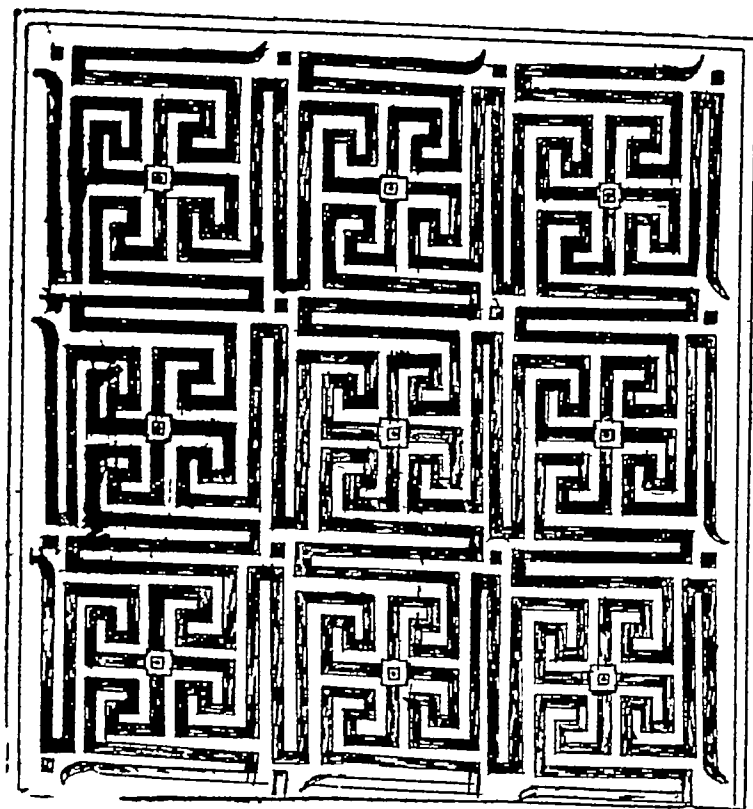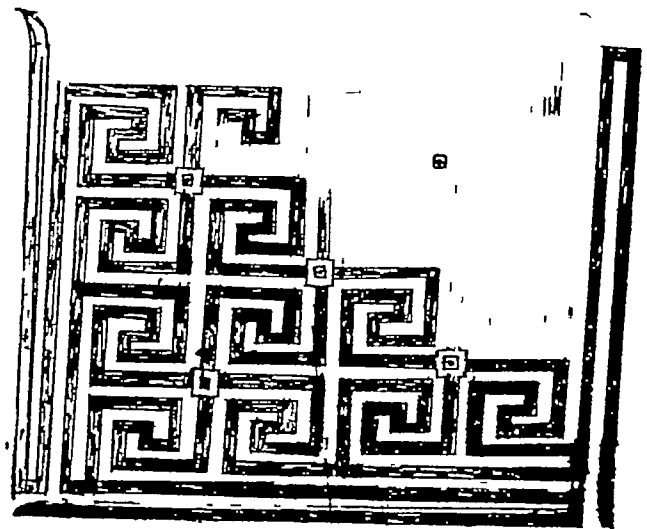
स्तम्भिका, विरालिका, उद्गम *Stambhikā, Virālikā, Udgam*
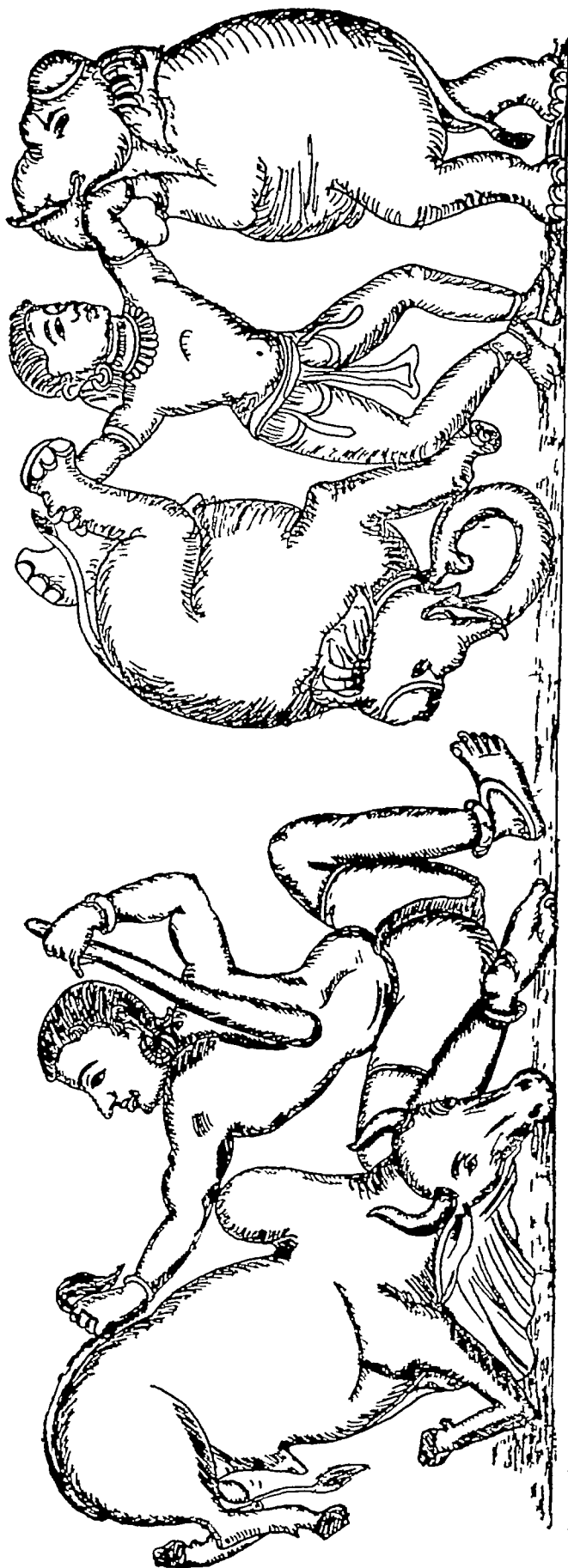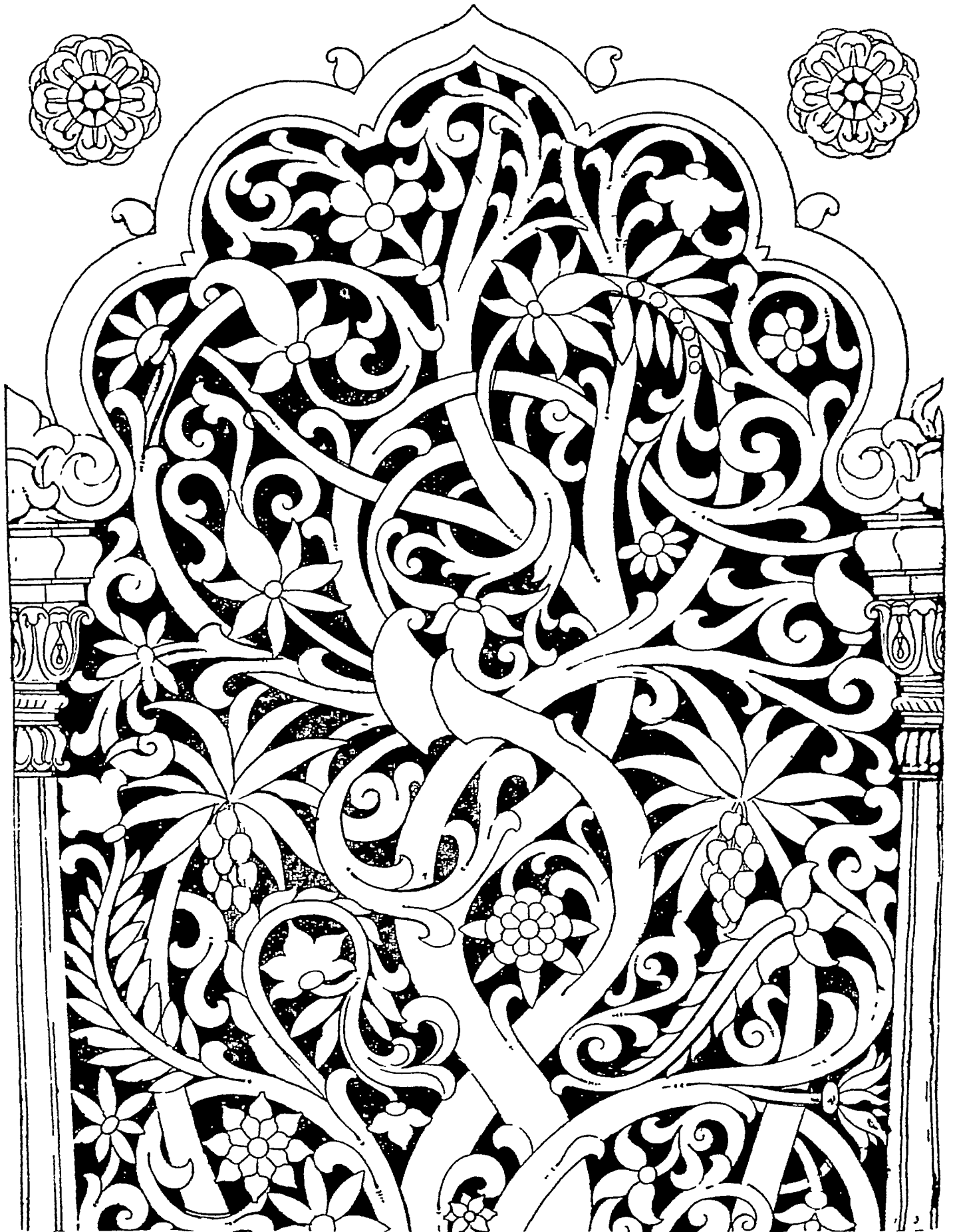
वेलपत्र से अलकृत जाली *The Net-Work of Flowers and Trees in Stone*
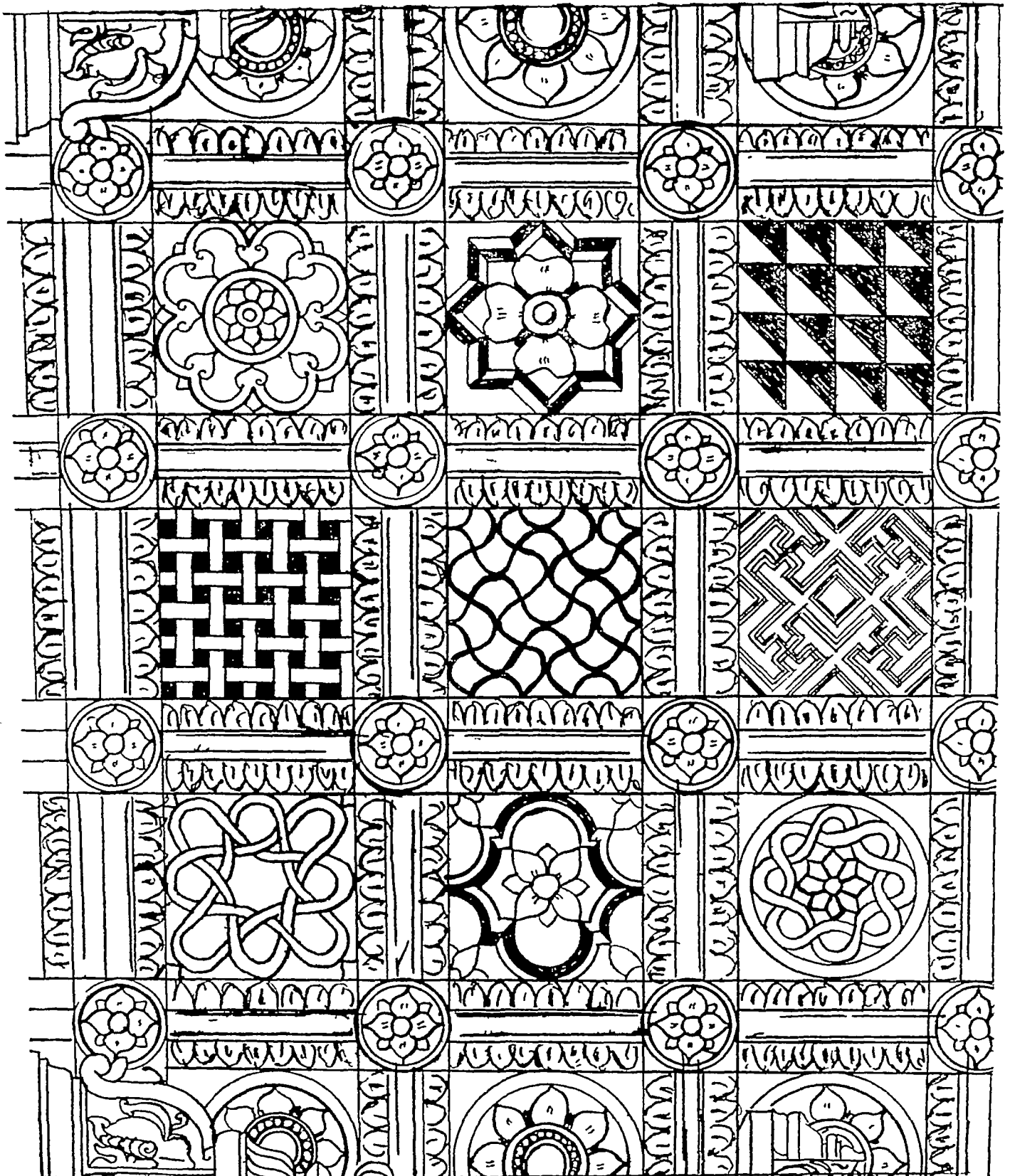
पद्रह खँड की जाली *Grill in Fifteen Divisions*

उद्गम, अंधकारसुर वध *Udgama with Shiva Killing Andhakāsura*
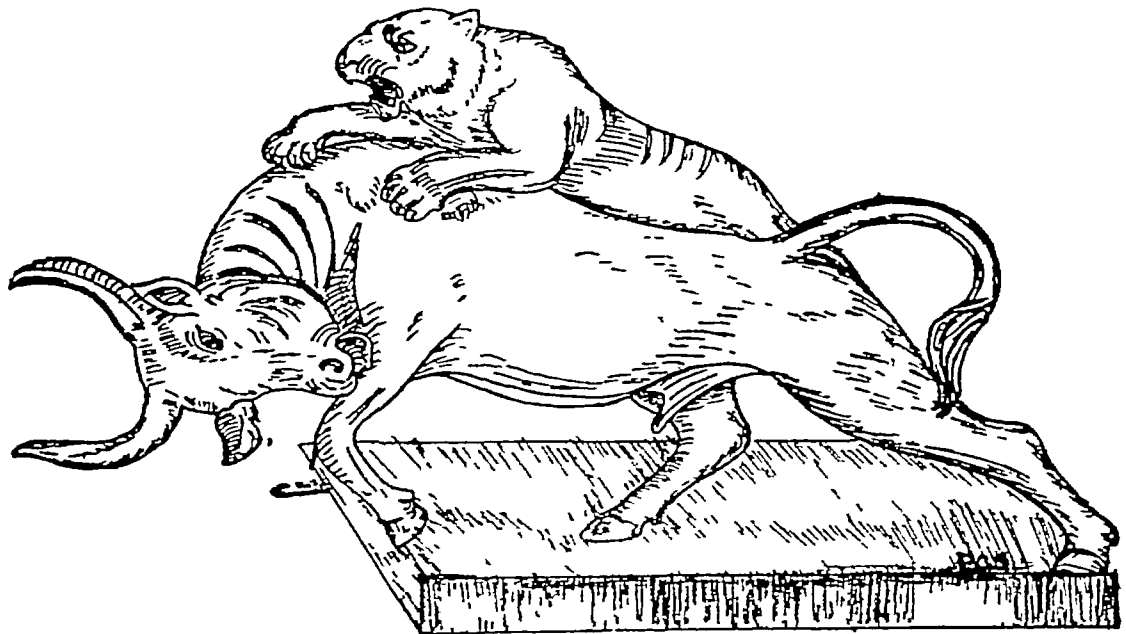
वृषभ-व्याघ्र युद्ध *Bullock and Lion Fight*
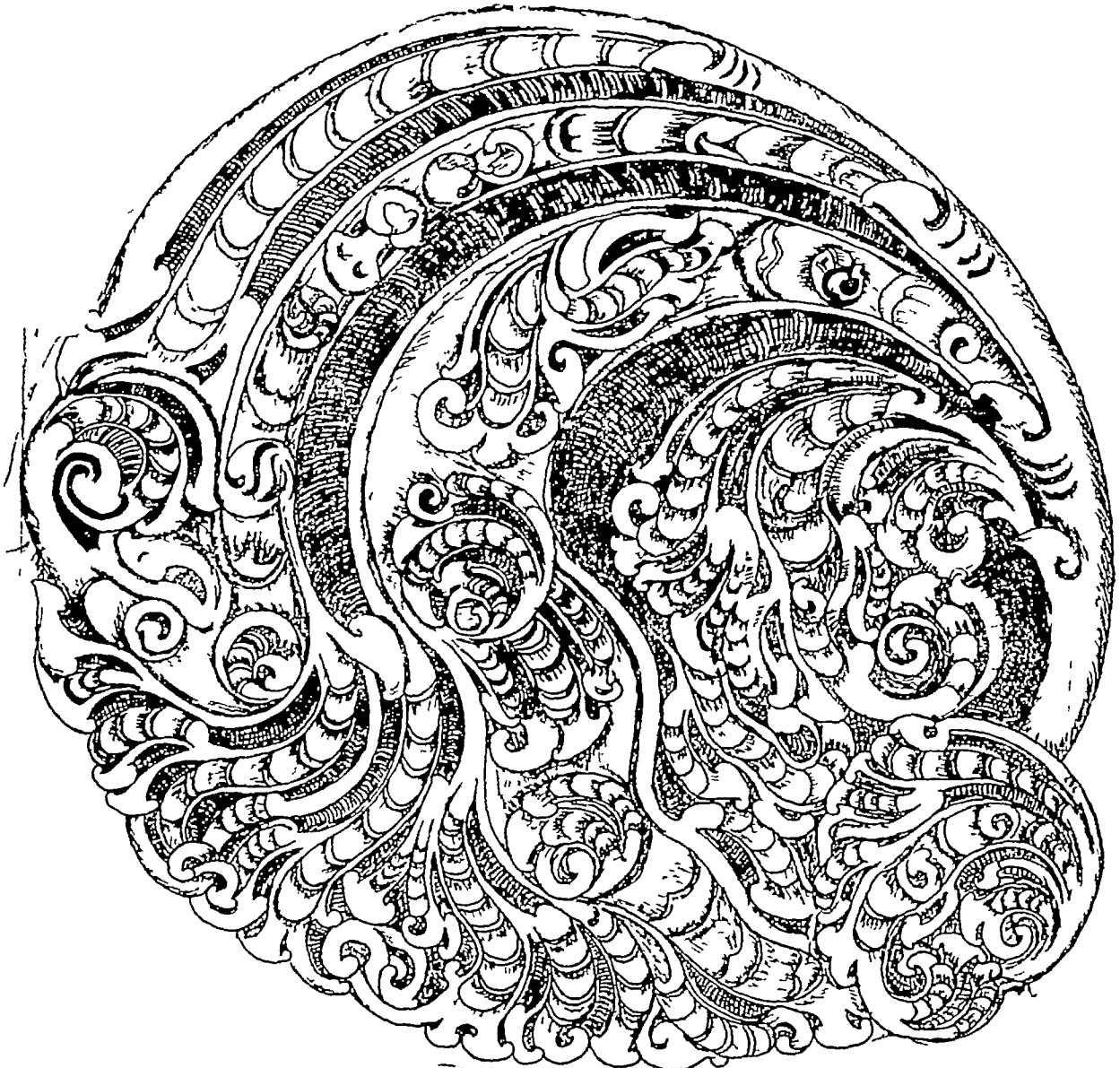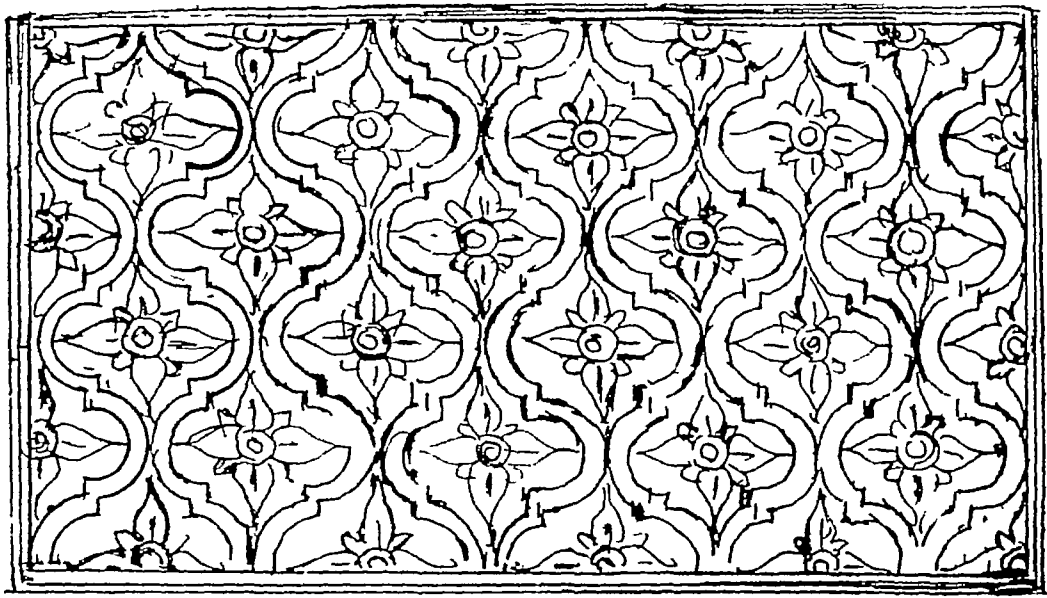
कुड्चलयुक्त वेलपत्र *Kudchala, Liana*
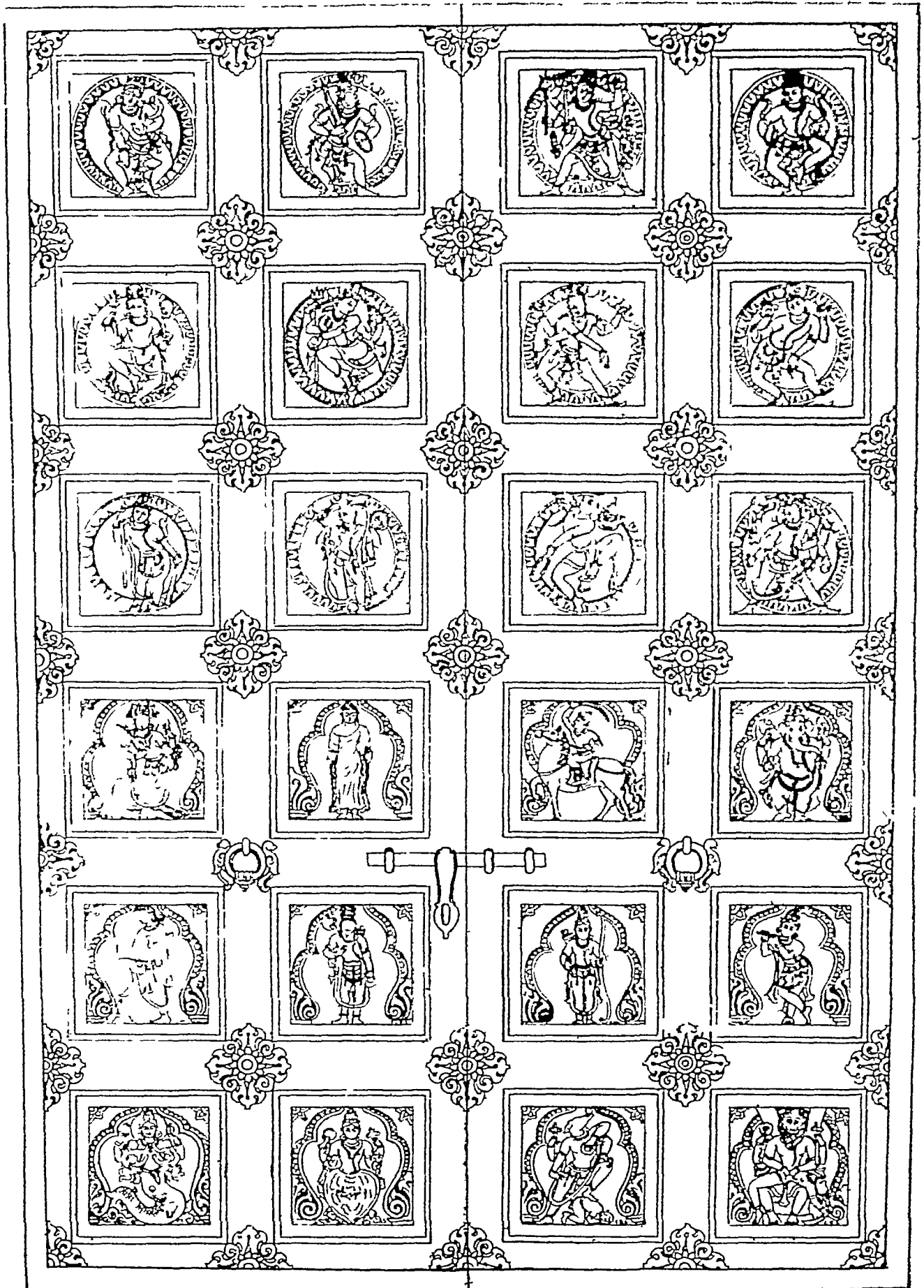
देवमूर्ति से अलकृत किवाड़ *Doors Ornamented with Deities*
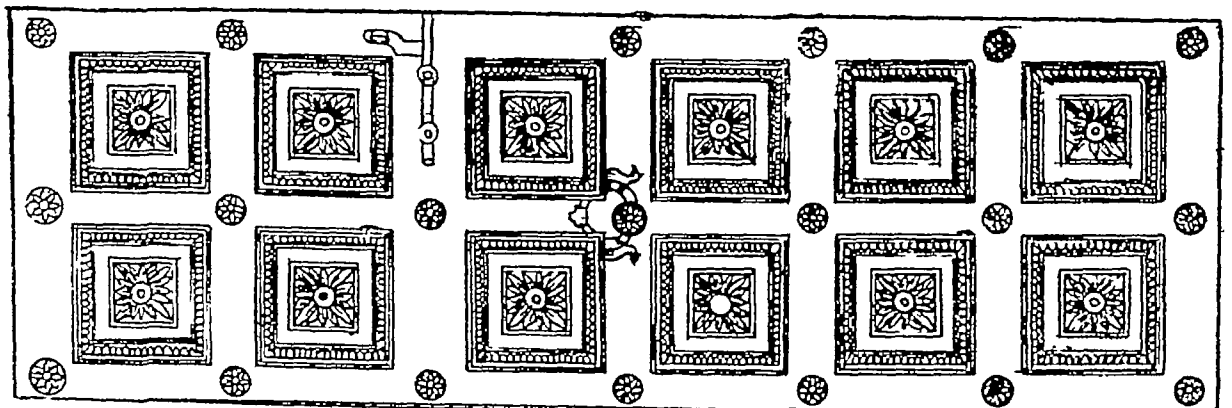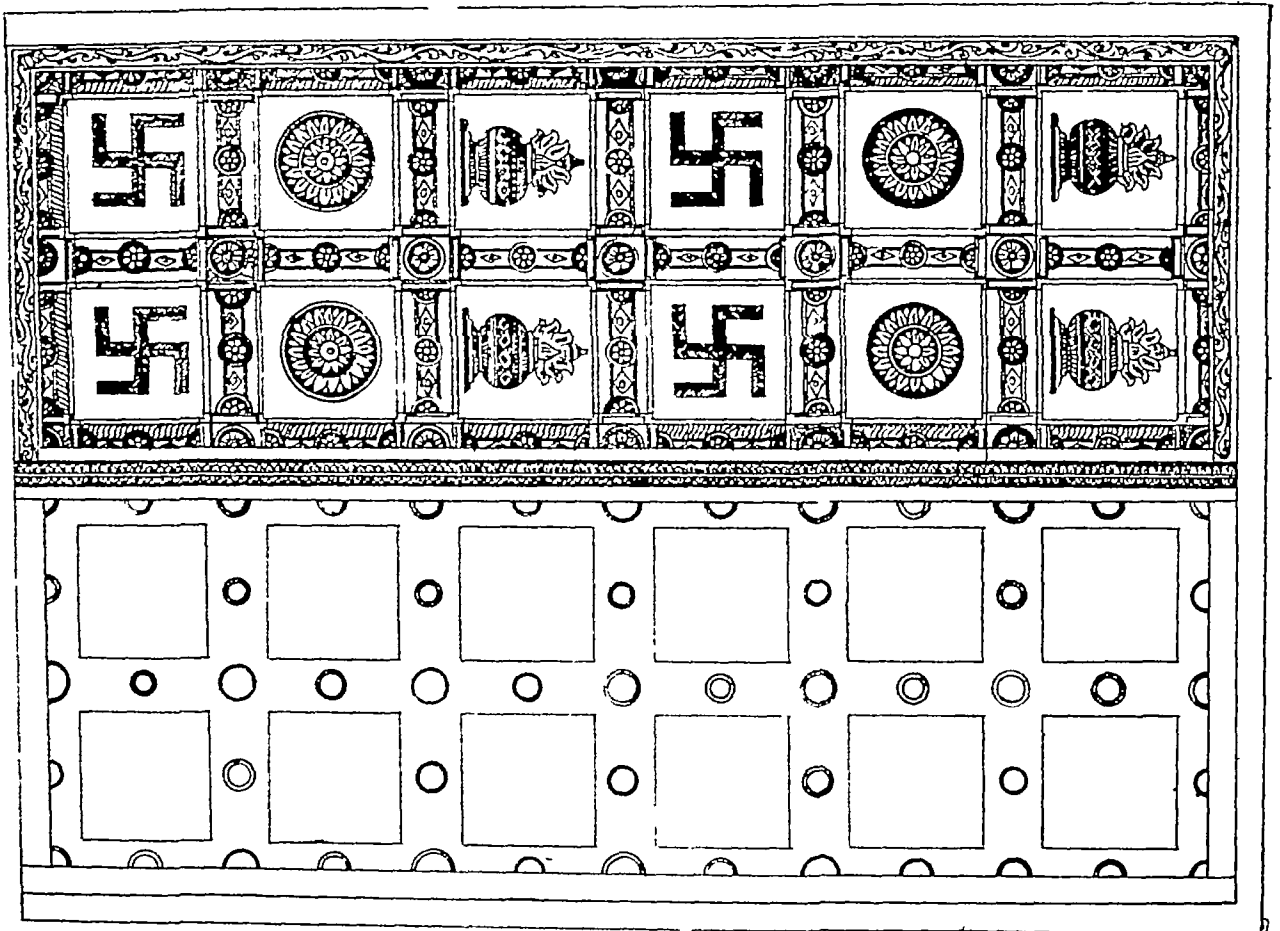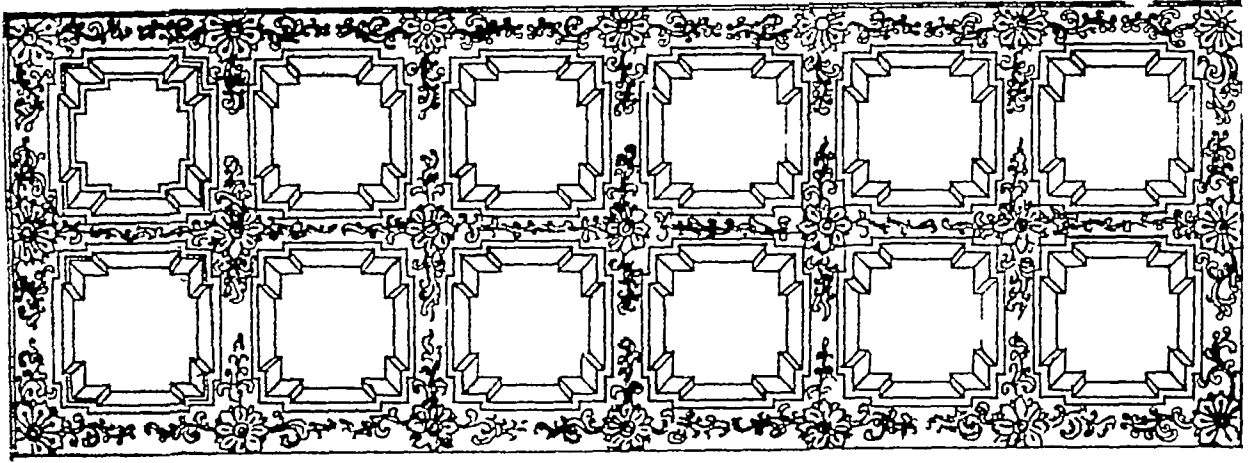
अलकृत किवाड *Ornamented Doors*

मंदिर का अलंकृत दरवाजा *Decorated Door Frame of The Temple*
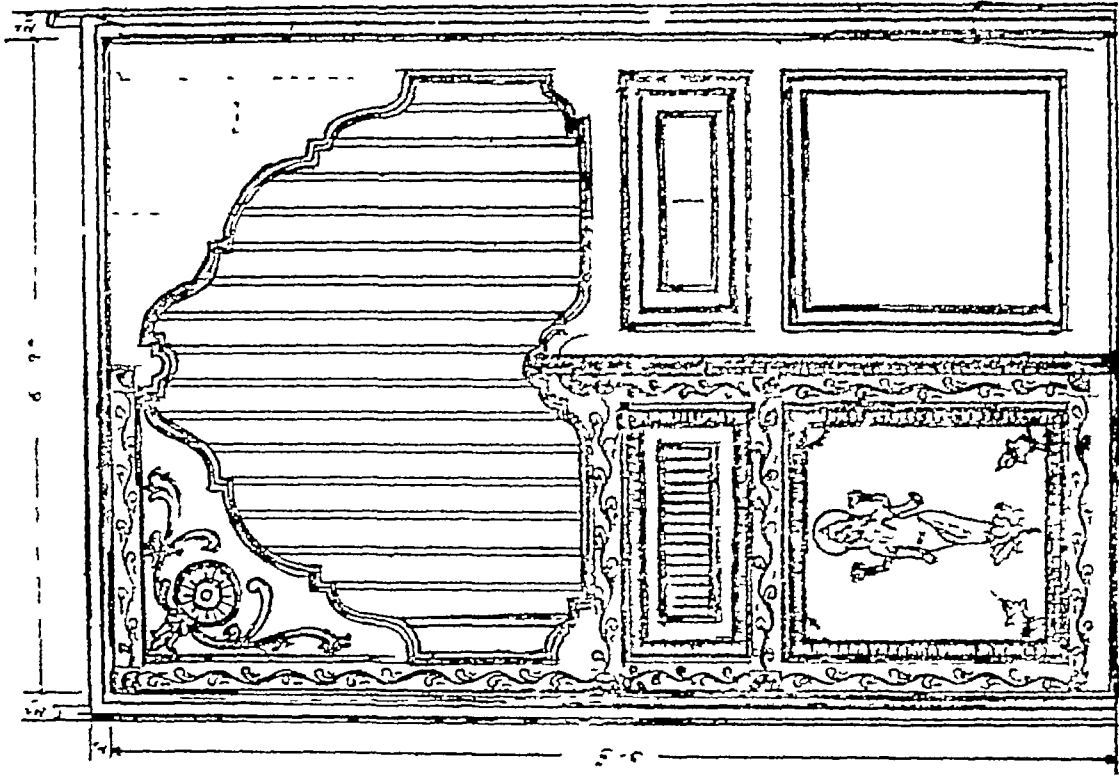
गर्भगृह के जाली युक्त किवाड़ *Doors of Garbhagruha with Grill*

गेवल

देव और देवीस्वरूप

दिग्पाल

Gables

Gods

Goddesses

Guardian Deities

त्रिमूर्ति-गेबल *Gable with Trimurti*
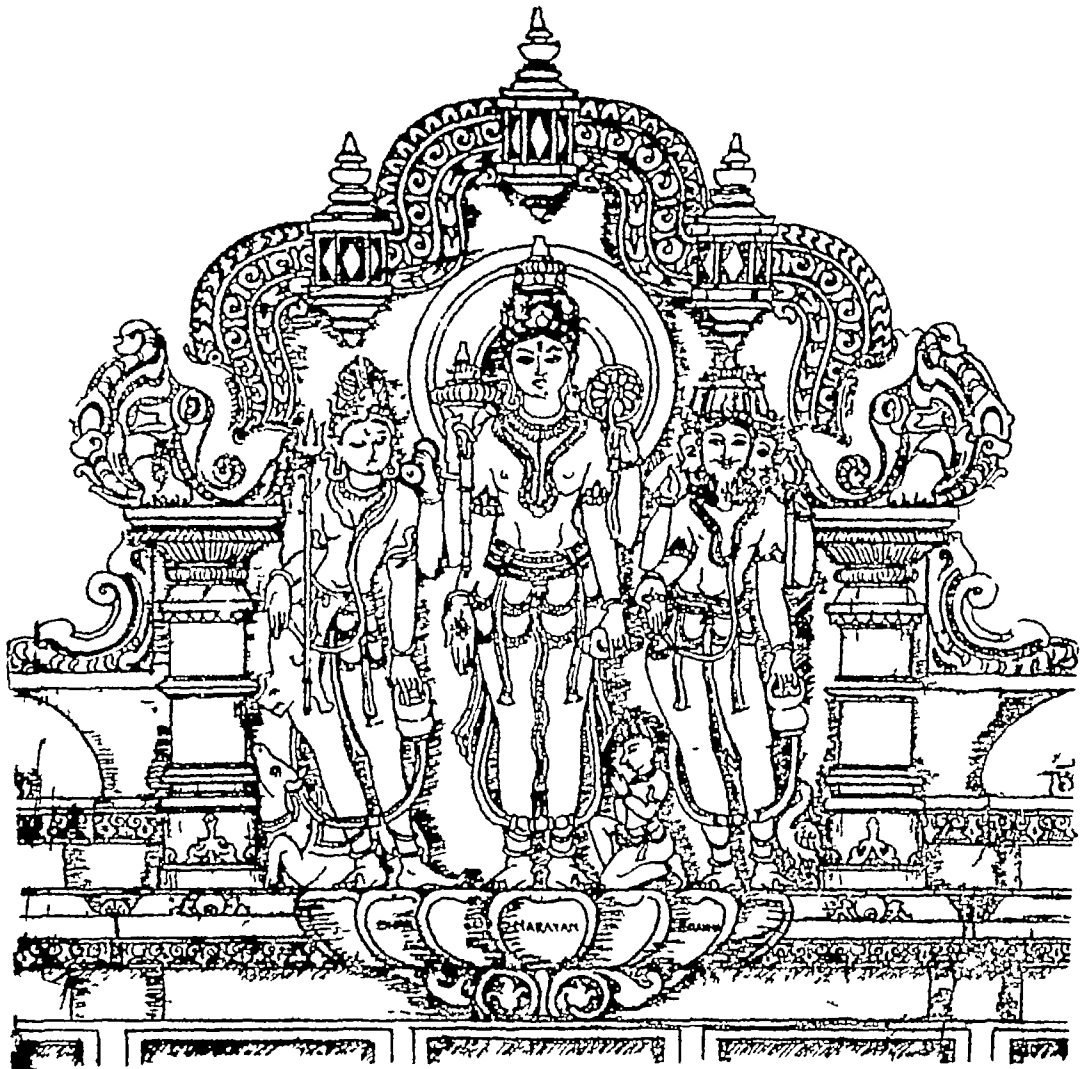
महेश *Mahesh*   विष्णु *Vishnu*   ब्रह्मा *Brahmā*
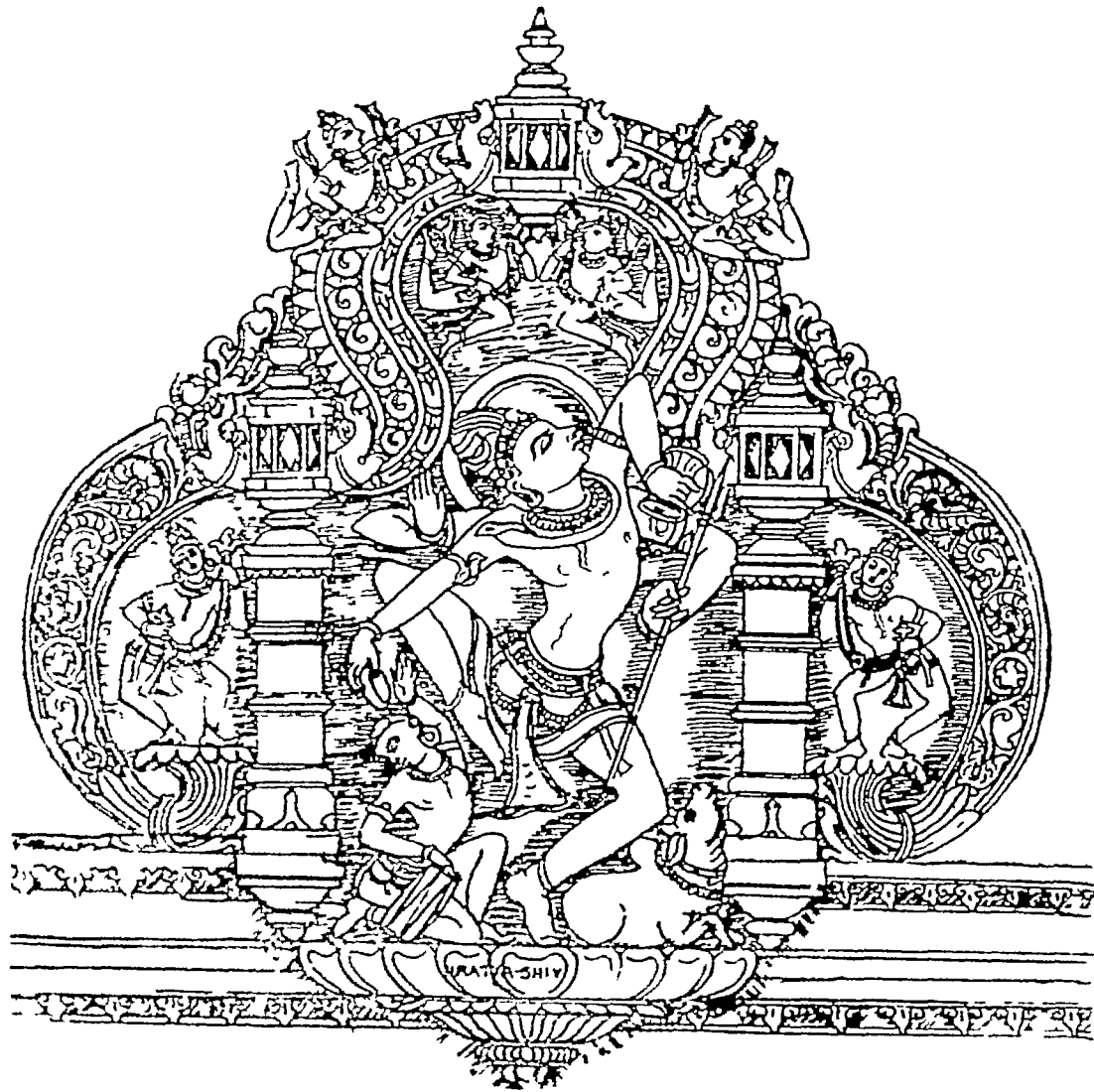
शिव ताडव *Shiva Tandava in Medallion*

महिषासुर मर्दिनी *Mahishāsura Mardini*
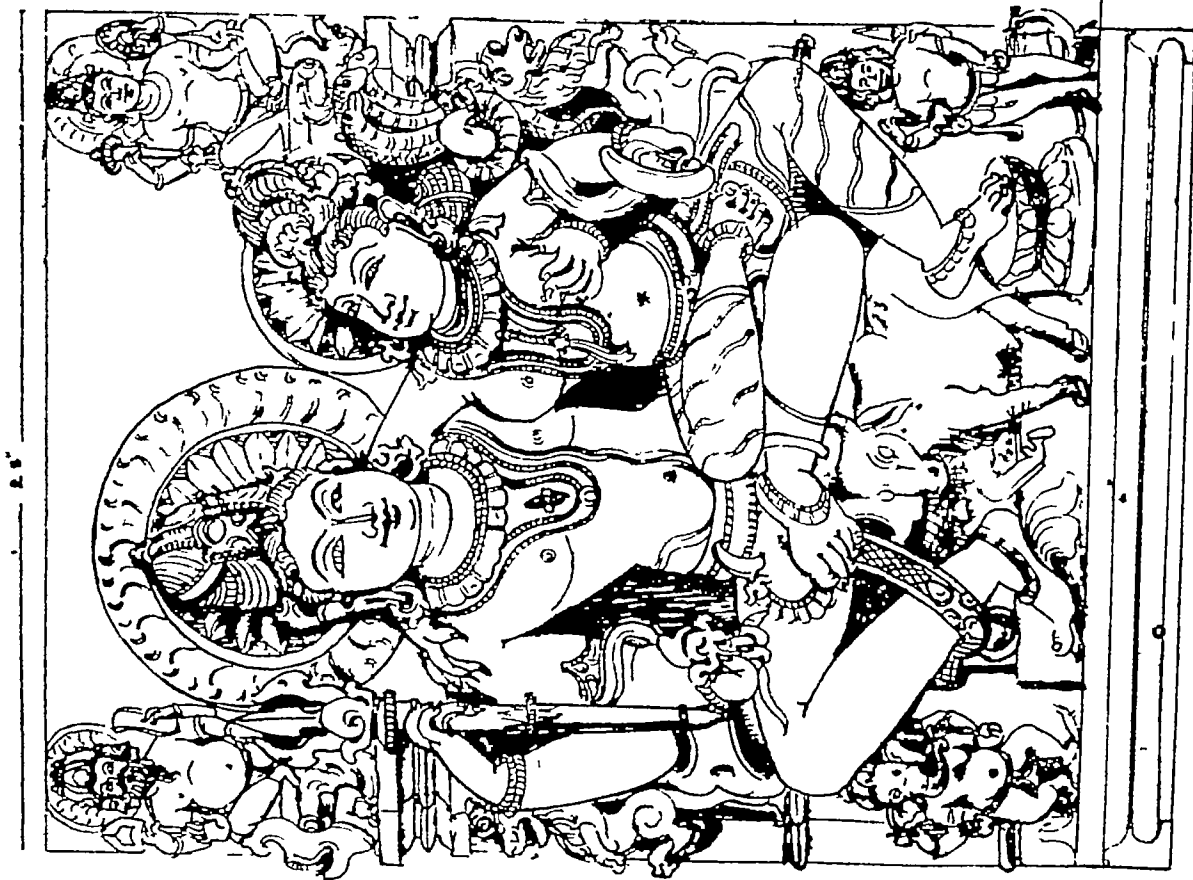
UMA MAHESH FOR HINDALCO TEMPEL (U P)

उमा महेश्वर
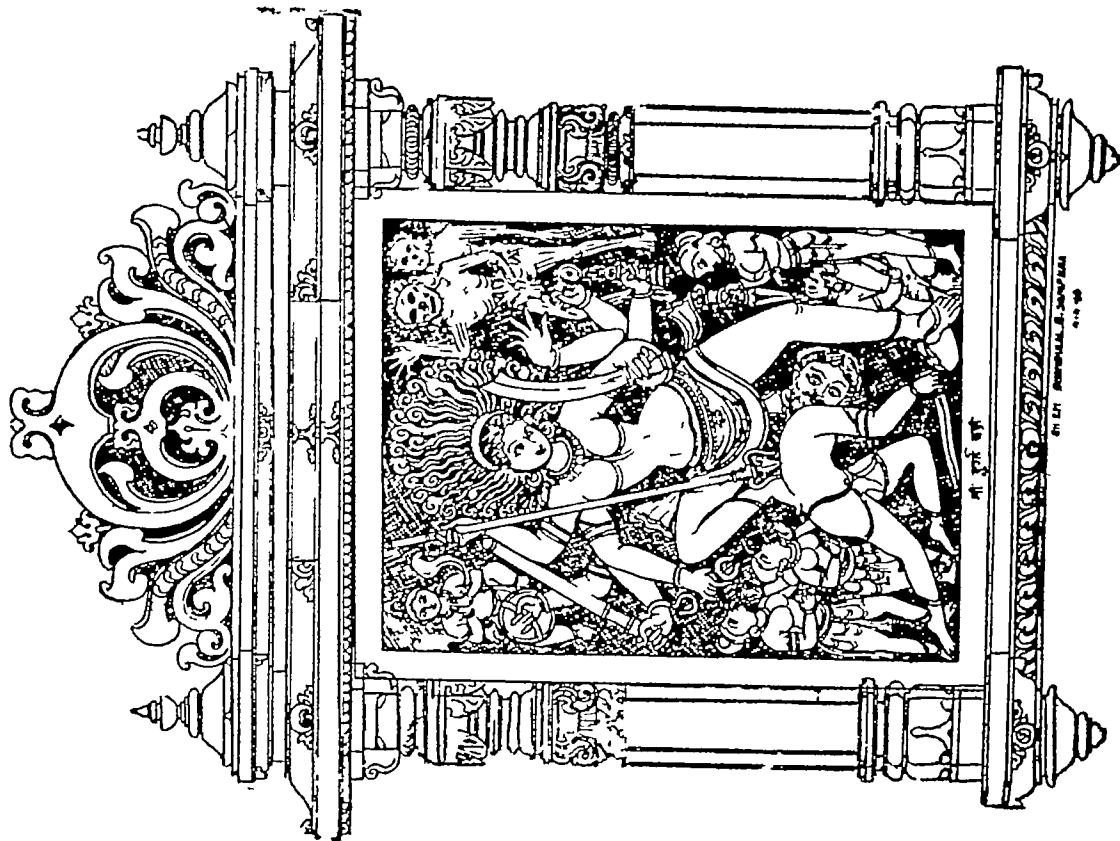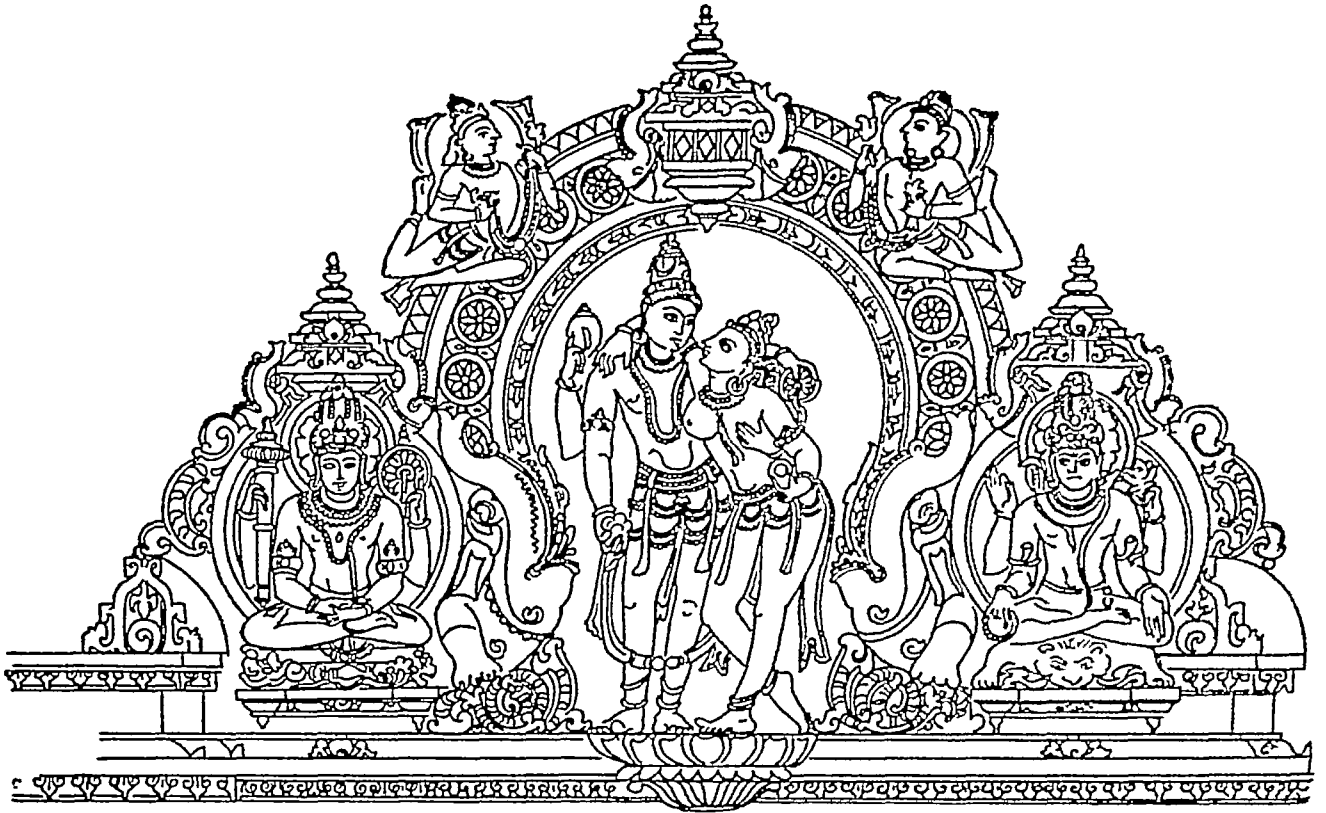
योगेश्वर विष्णु *Yogeshvar Vishnu* लक्ष्मी नारायण *Lakshmi-Narāyana* योगेश्वर शिव *Yogeshvar Shiva*
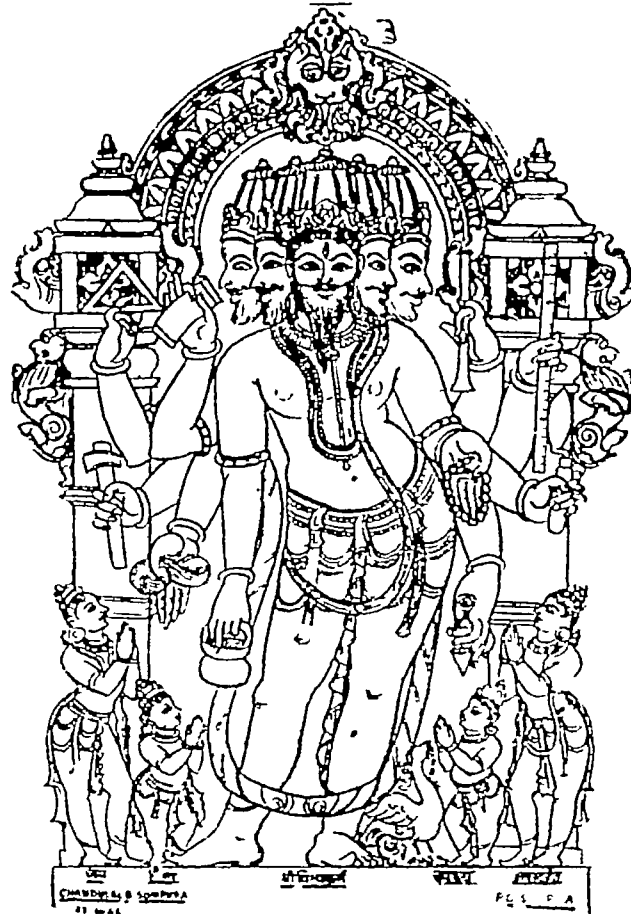
पचमुख विश्वकर्मा *Panchamukha Vishvakarma—the Architect of the Universe*
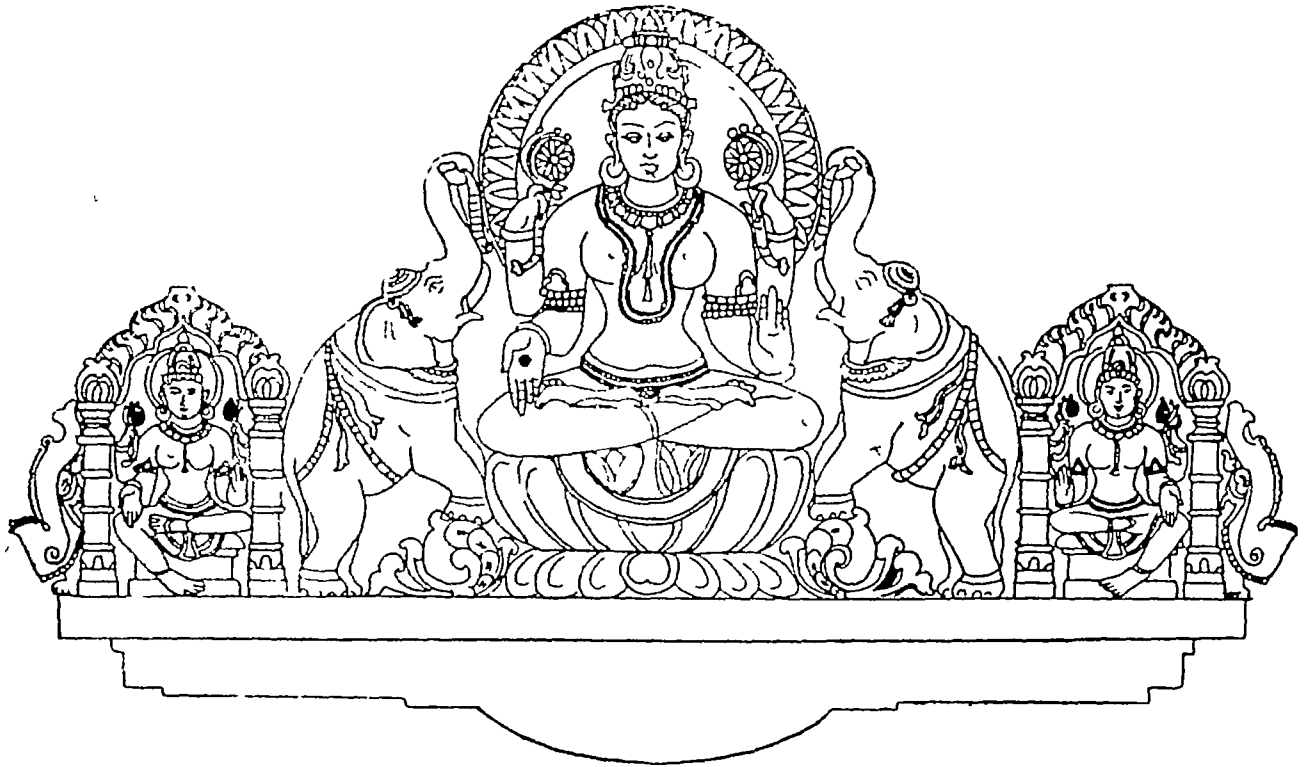
महाकाली *Mahākāli* — महालक्ष्मी *Mahālakshmi* — महासरस्वती *Mahāsarasvati*

गेबल *Gable*

भुवनेश्वरी देवी *Bhuvanesvari*
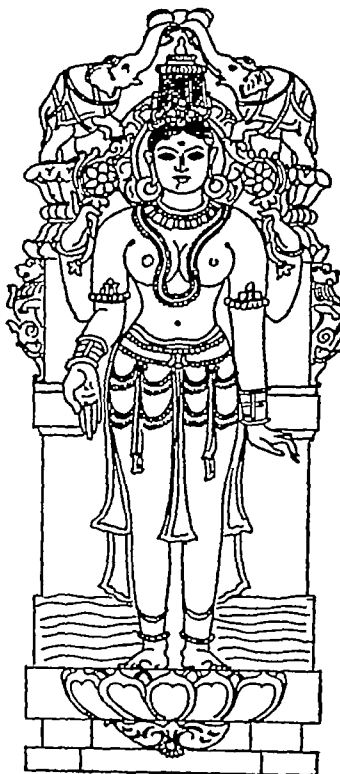
महालक्ष्मी *Mahālakshmi*

कार्तिक स्वामी *Kartik Swāmi*

शिव-नृत्य *Dancing Shiva*
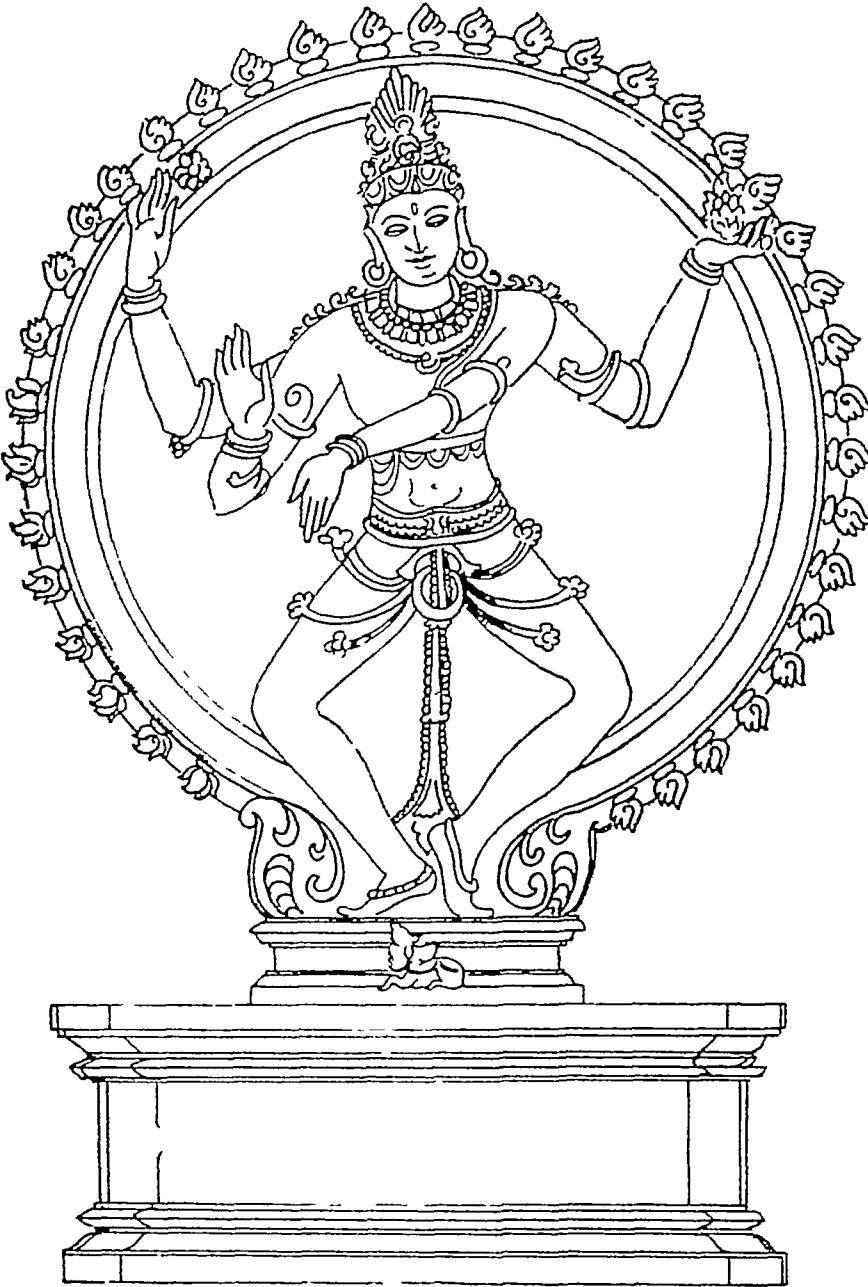
नटराज शिव *Natarāj Shiva*
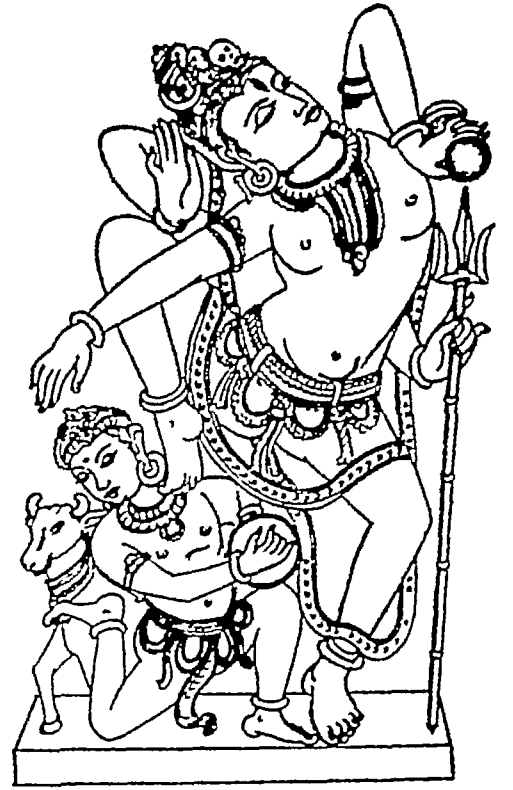
अघोरेश्वर शिव *Aghoresvar Shiva*
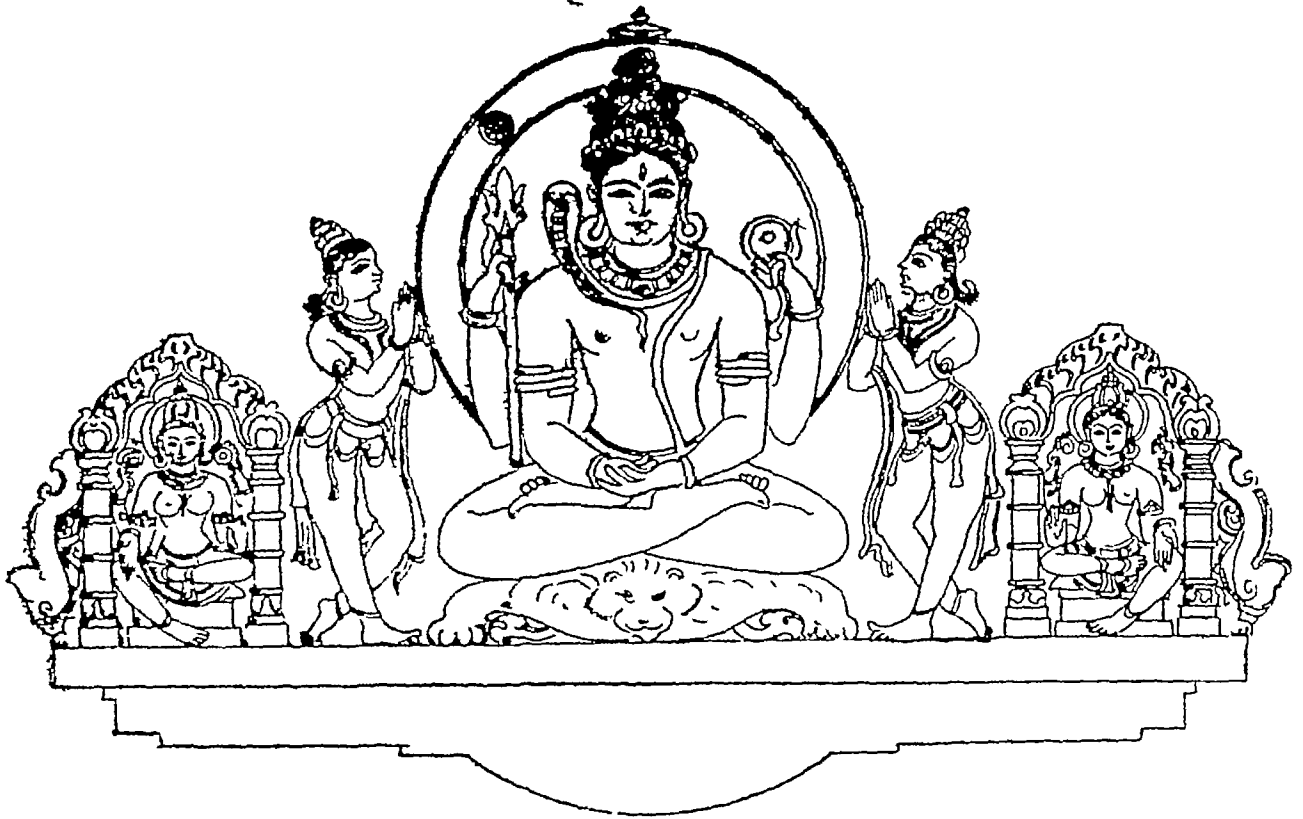
पार्वती *Pārvati* | योगेश्वर शिव *Yogeshvar Shiva* | गौरी *Gouri*
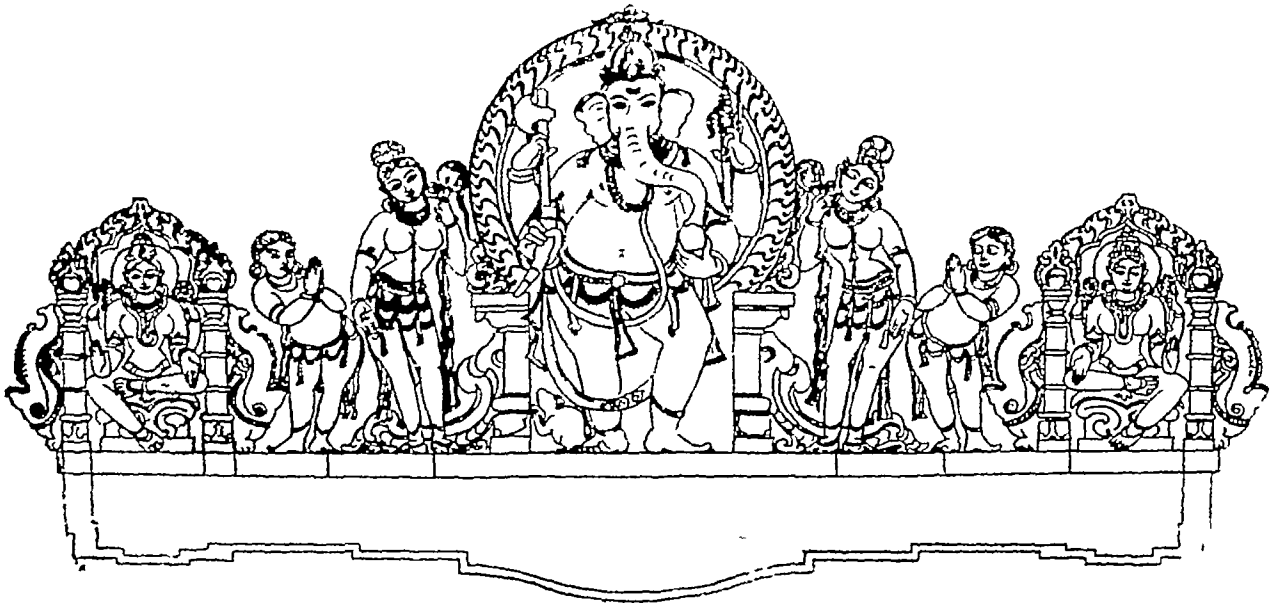
गेबल– *Gable*

गणेश रोध्दी और सिद्धी

Ganesha with his two Consorts Riddhi and Siddhi

गेबल *Gable*
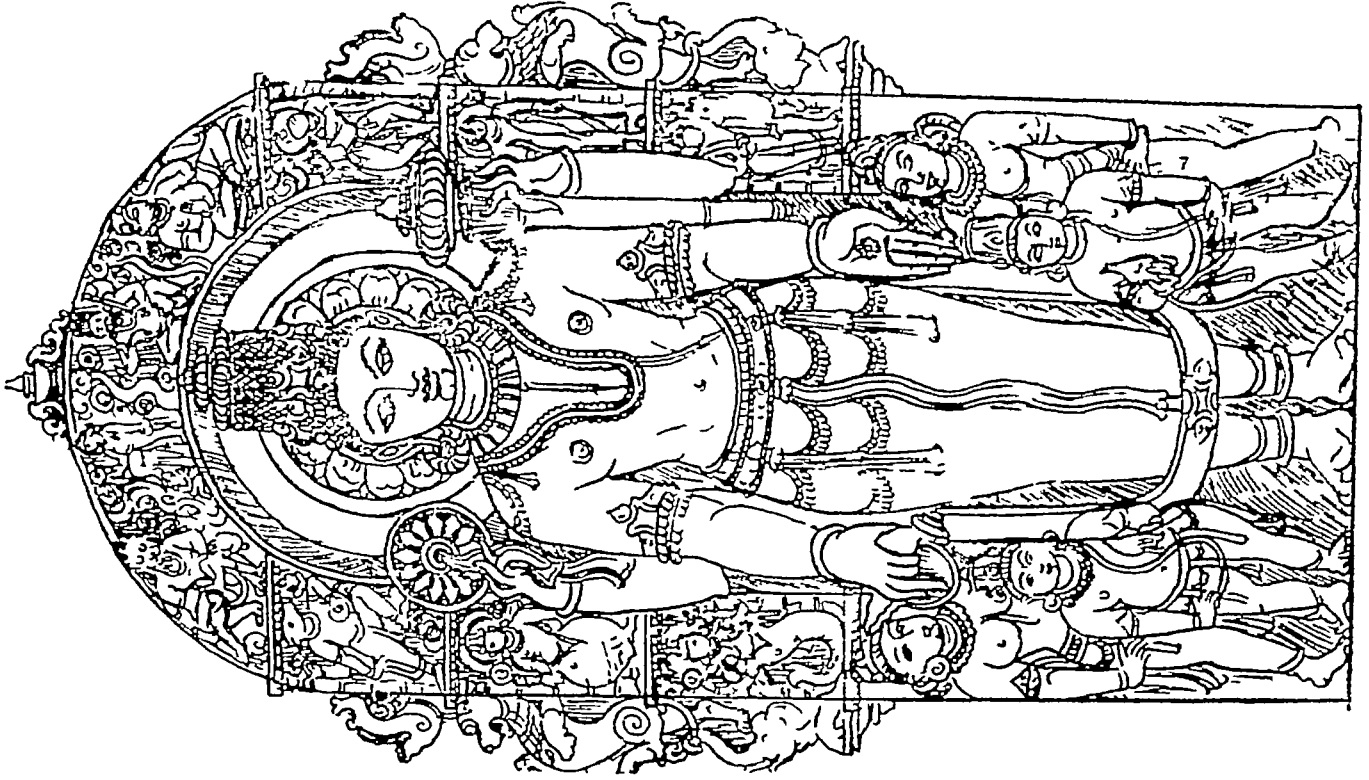
दशावतार विष्णु, *Vishnu with his Ten Incarnations*
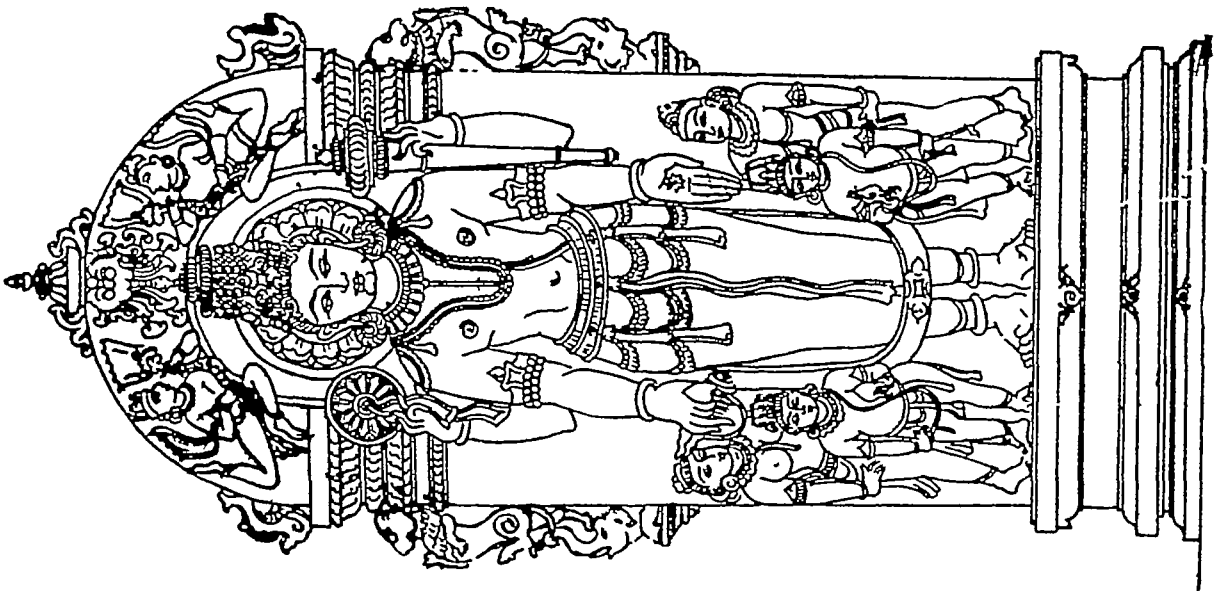
परिकरयुक्त विष्णु *Vishnu with Ornamental Frame-work*

दशदिग्पाल *Guardian Deities*
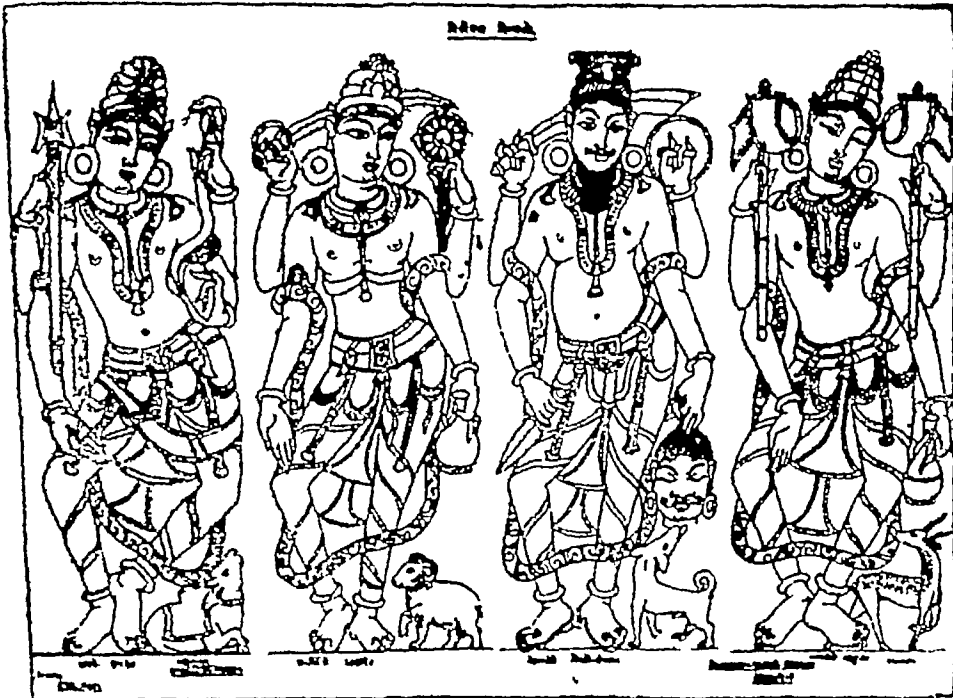
ईशान *Ishāna* (*North- East*) | अग्नि *Agni* (*South-East*) | नैरुति *Nairuti* (*South-West*) | वायु देव *Vāyu Deva* (*North-West*)

पाताल का शेष | आकाश का ब्रह्मा
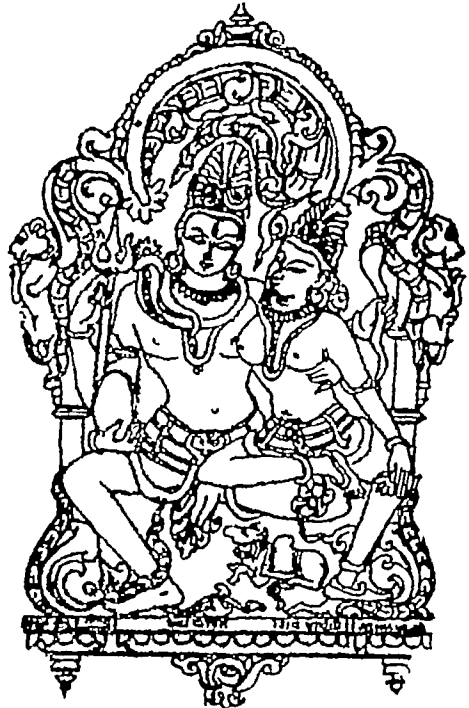
उमा-महेश्वर *Uma-Maheshvar*

शेषशायी विष्णु *Sheshshāyi Vishnu*
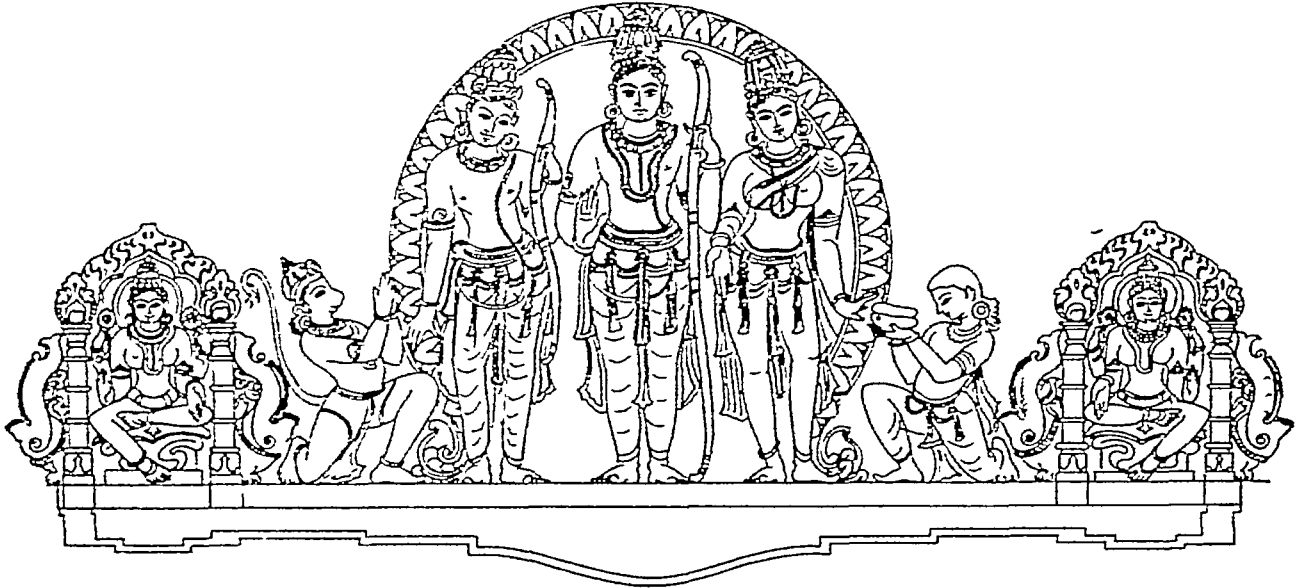
हनुमत लक्ष्मण राम सीता
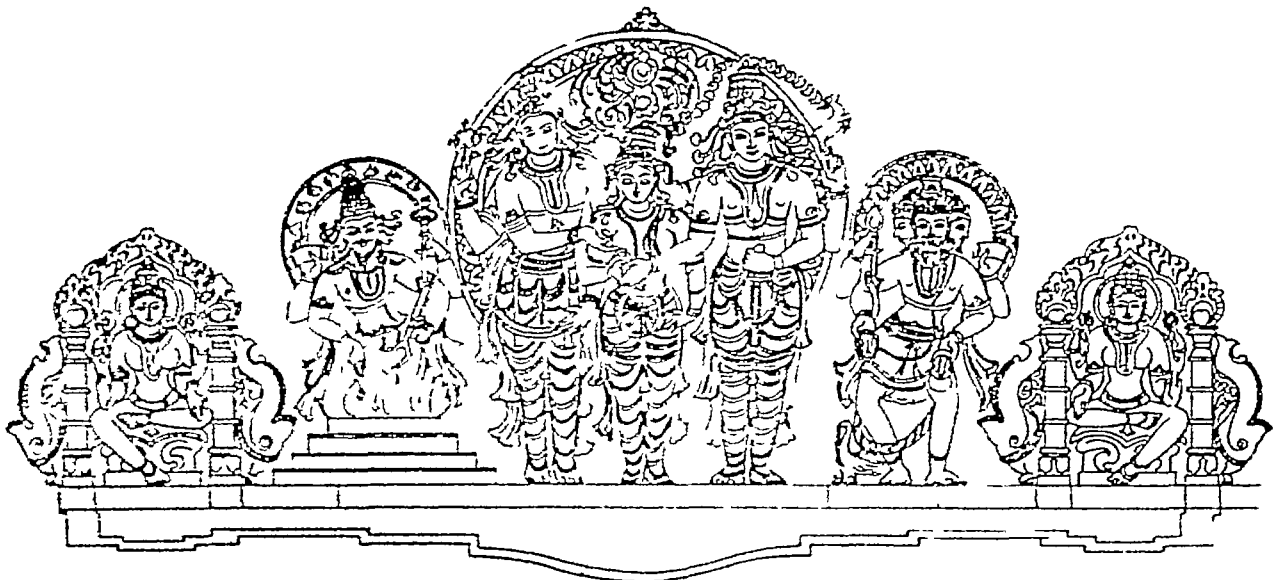
गौरी *Gauri*, अग्नि *Agni*, विष्णु *Vishnu*, मिनाक्षी-शिव विवाह *Minākshi-Shiva Marriage*, ब्रह्मा *Brahmā*, पार्वती *Pārvati*
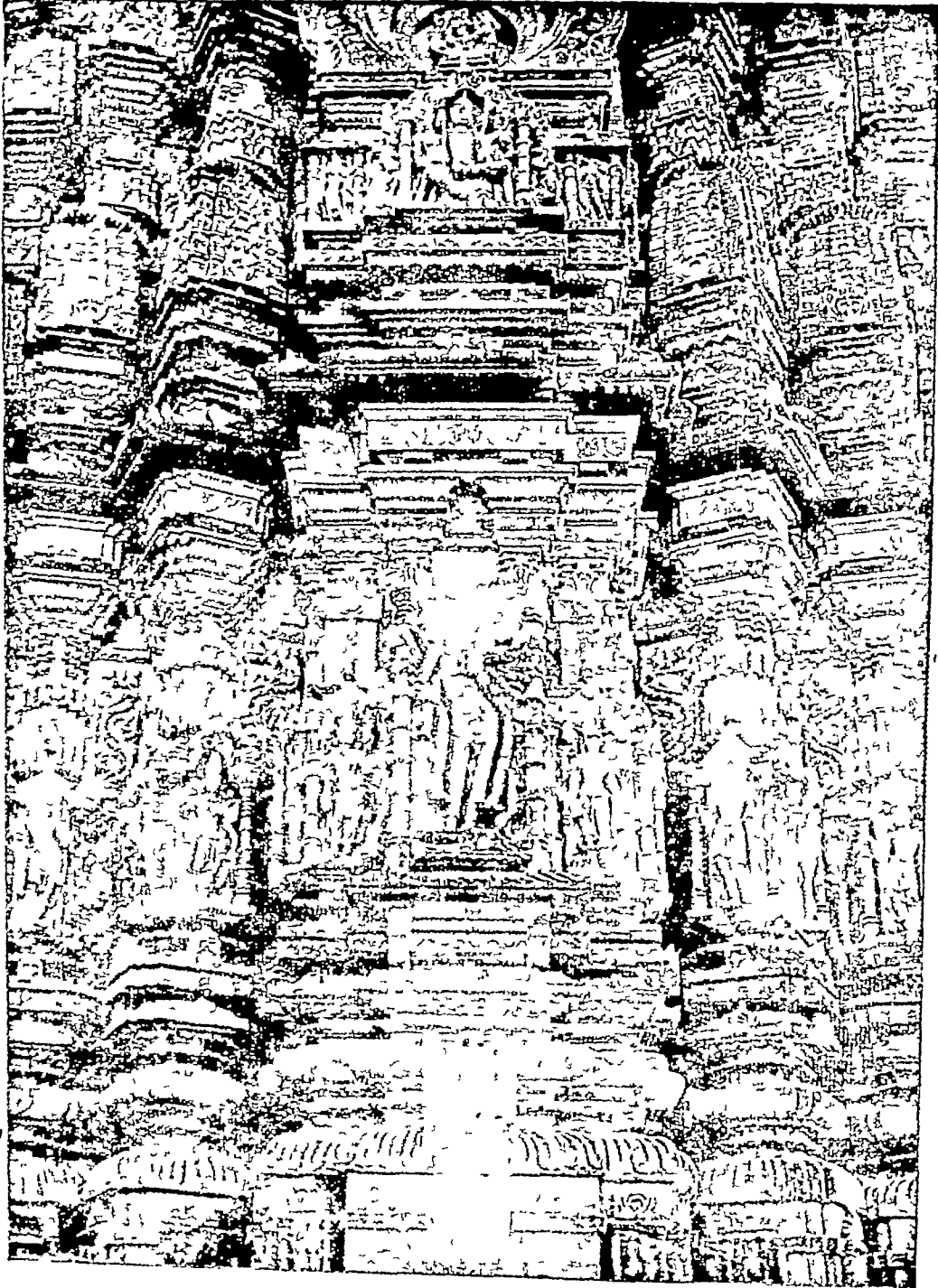
मंडोवर उदयेश्वर मालवा *Mandovar of Udayeshvar, Malava*
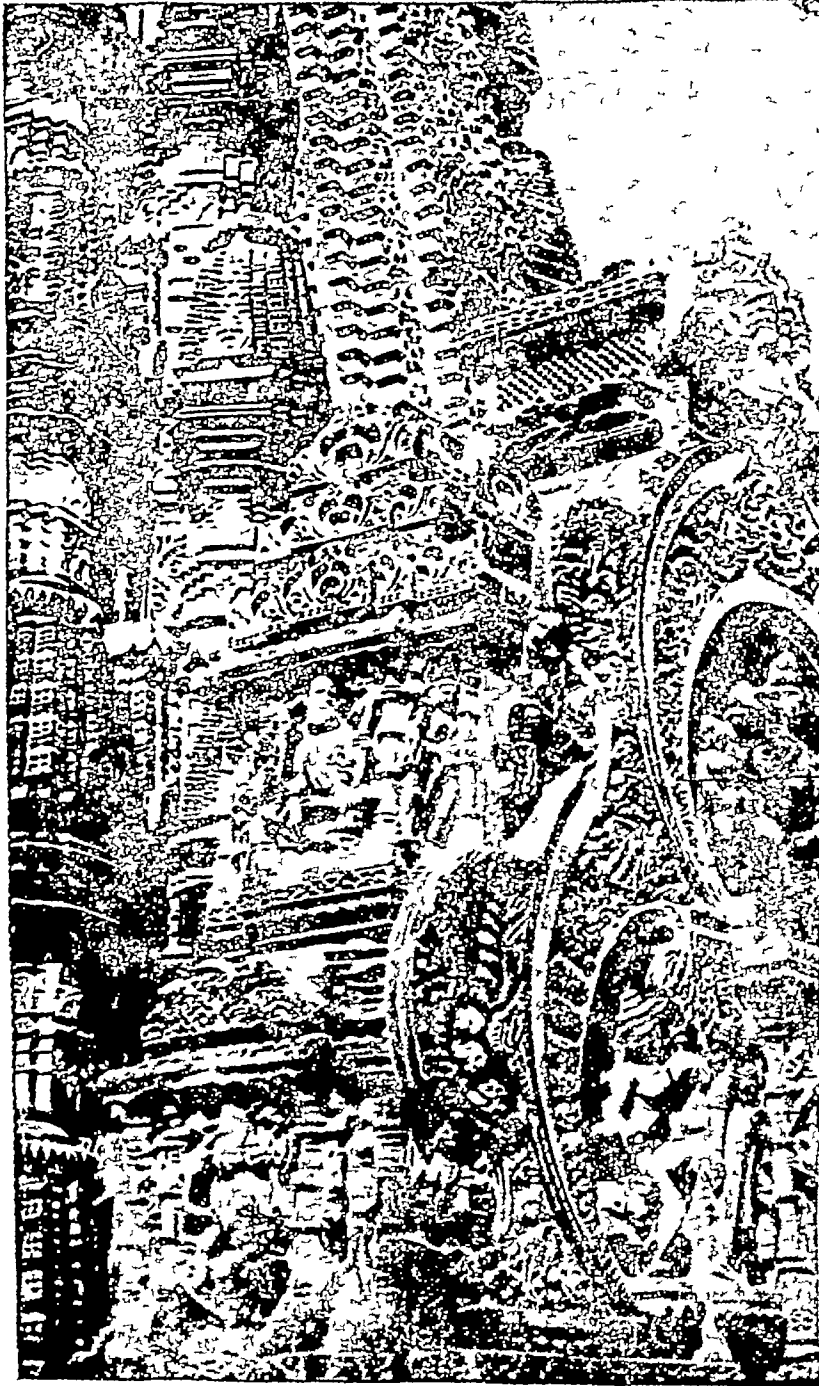
शिखर का शुकनास–उद्येश्वर मंदिर, उदयपुर (मध्यप्रदेश)
Shuknash of Shikhar, Udayeshwar Temple (Madhya Pradesh)
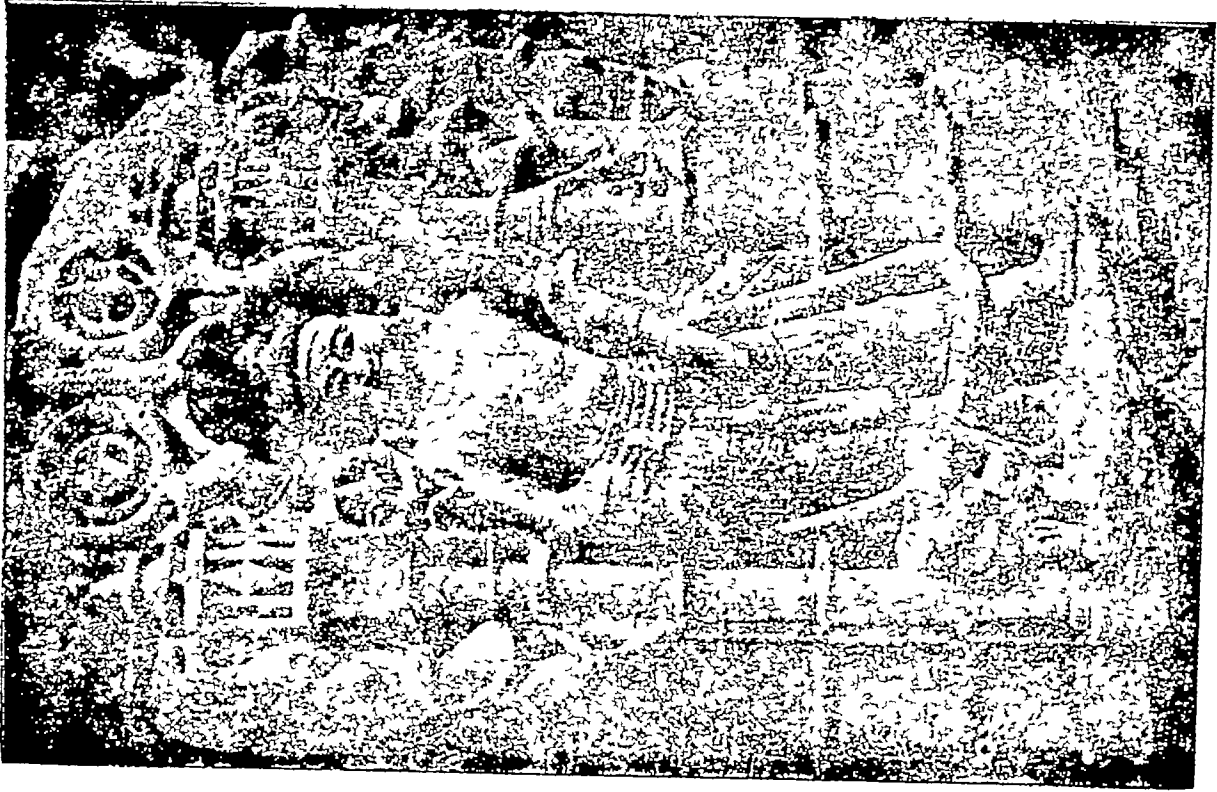
स्तम्भ में इन्द्र प्रतिमा

Idol of Indra on Pillar
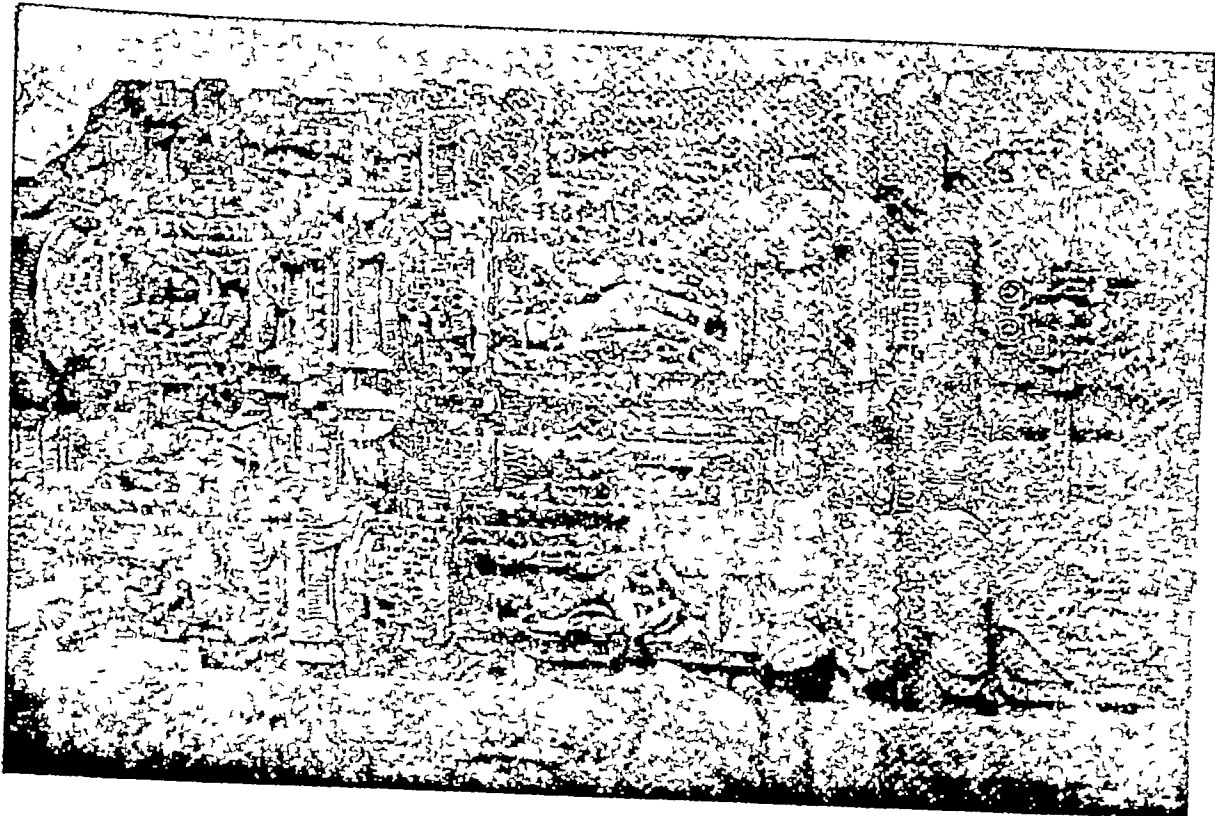
मडोवर आवु (राजस्तान)

Mandovar, Abu (Rajasthan)
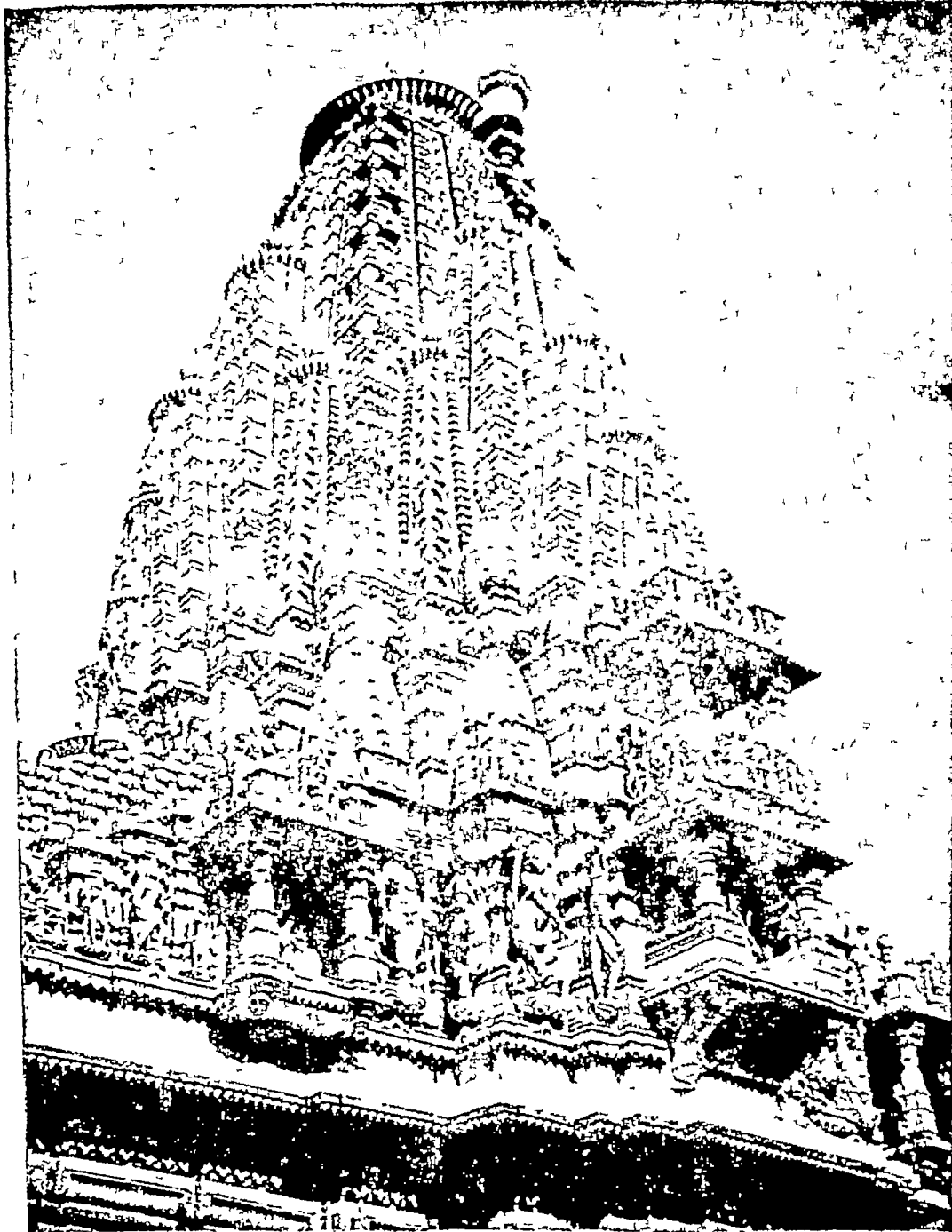
पाटण पचासराजी का शिखर *Shikhar of Panchasara, Patan*
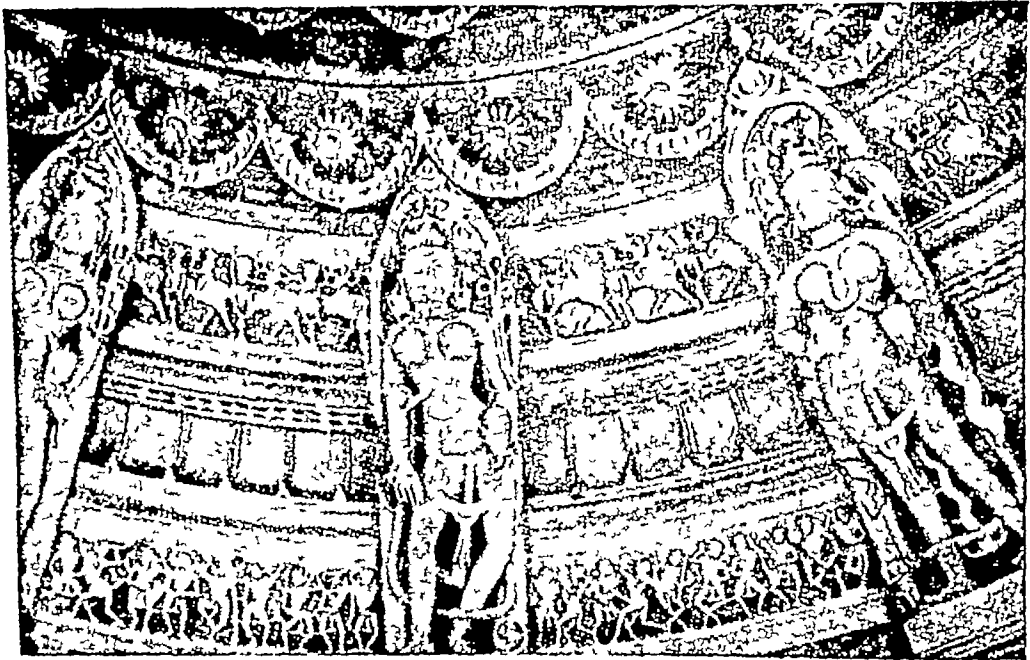
वितान गुम्बज *Doam*
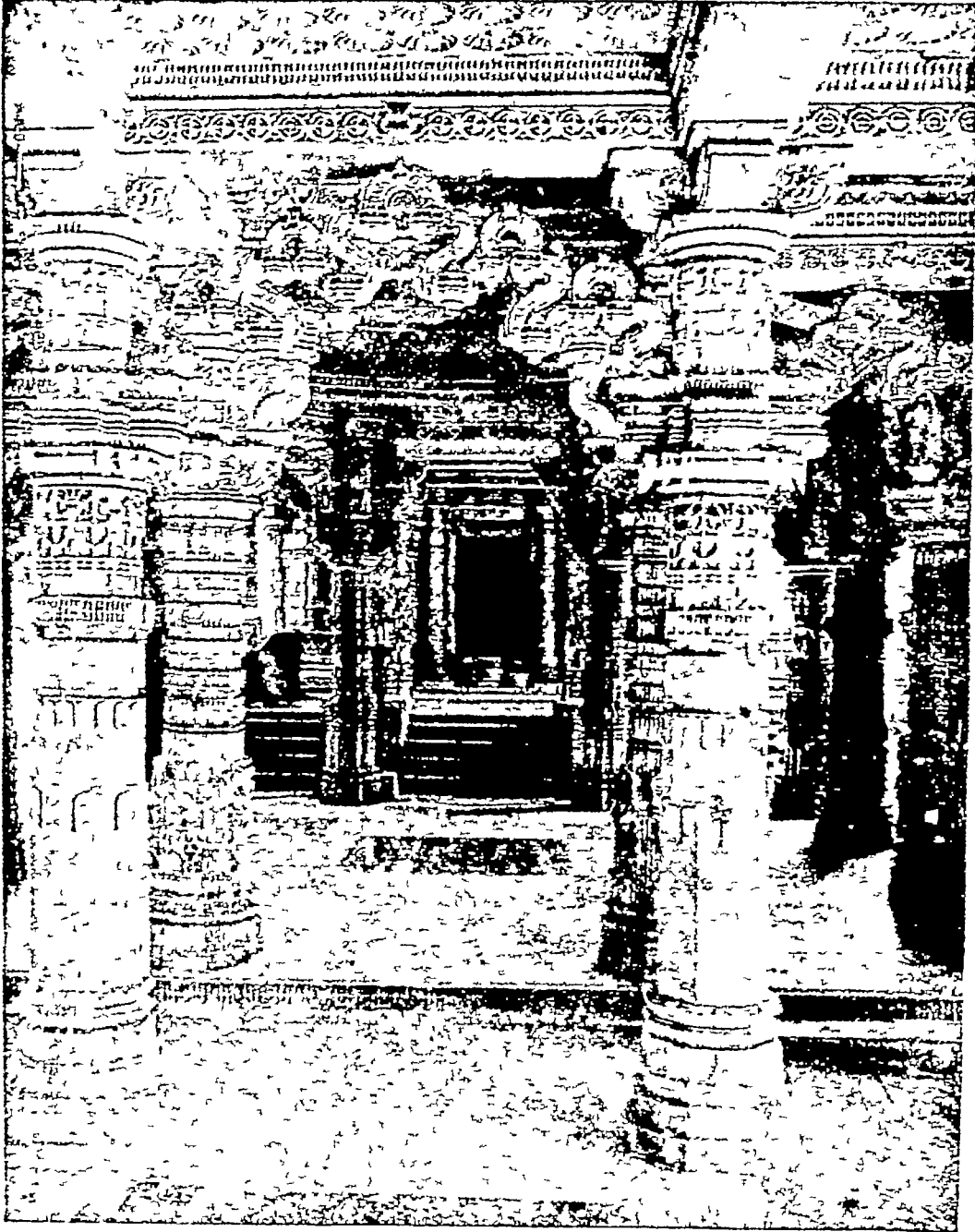
स्थम और तोरन माउन्ट आबु *Toran and pillars, Mount Abu*
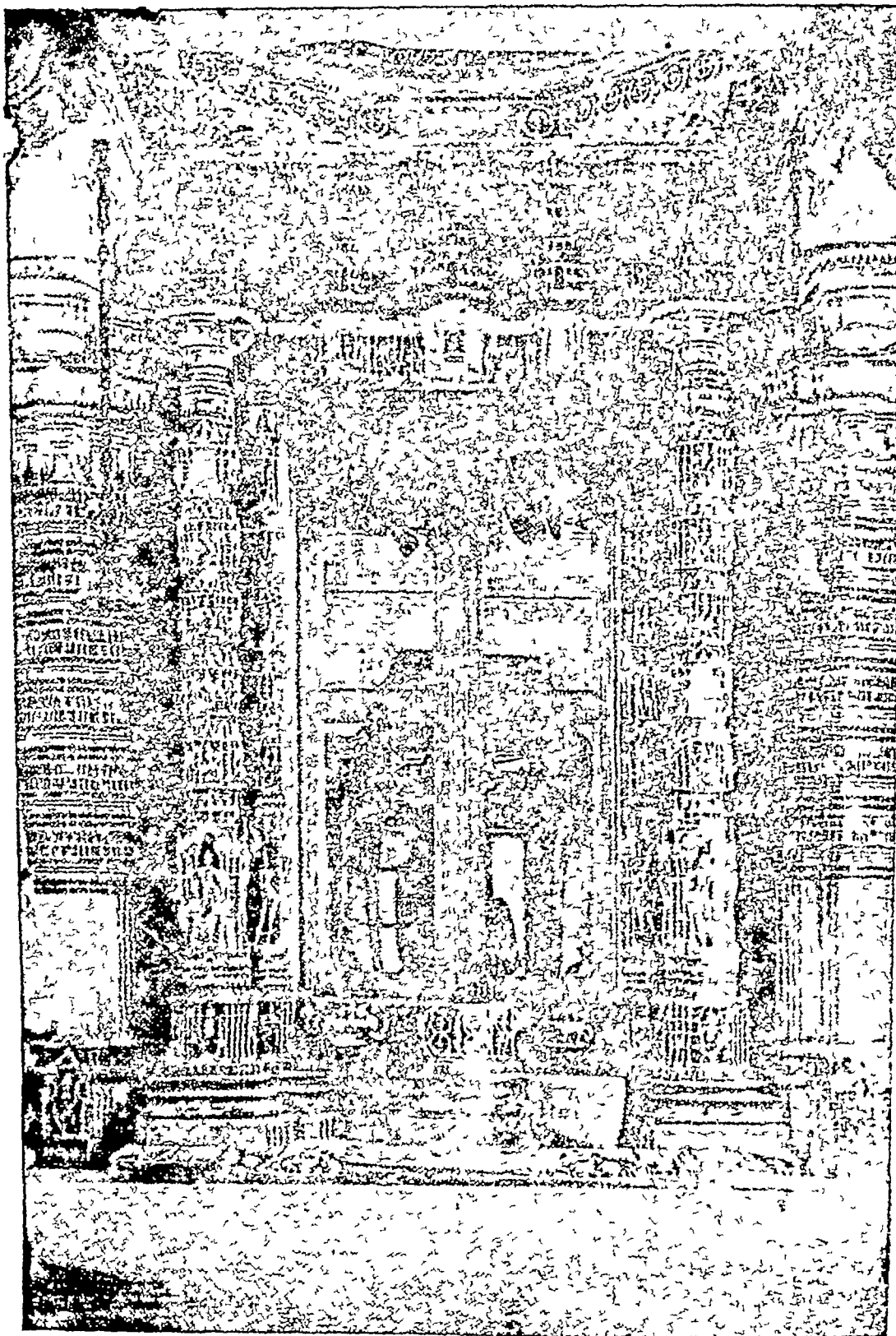
रूपवाला द्वार माउन्ट आबु *Door with Designs, Mount Abu*
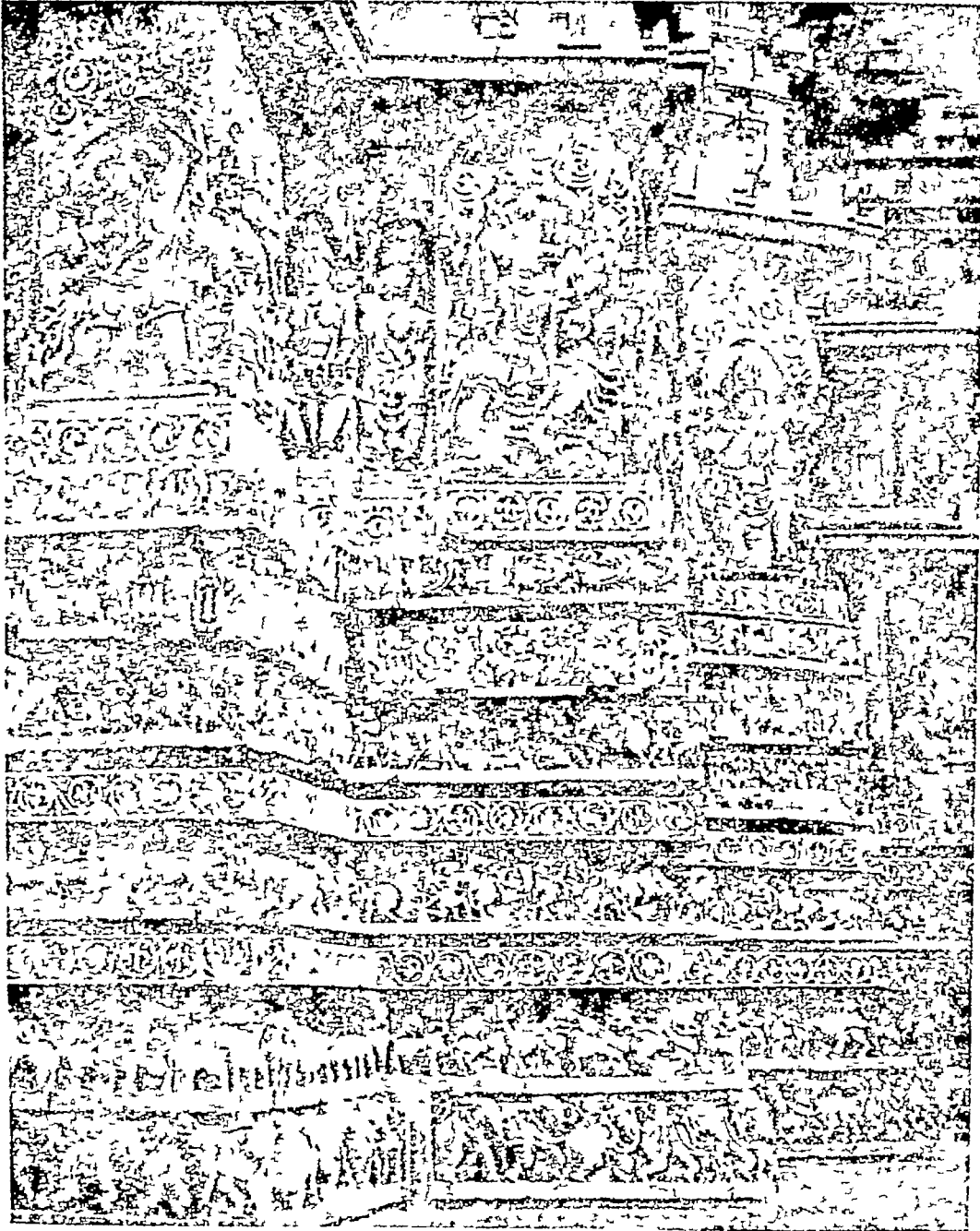
कर्णाटक वेलुर जघा और महापिठ *Karnatak, Belur Jangha and Mahapith*

सूर्य प्रतिमा, कोणार्क *Image of Surya, Konark*
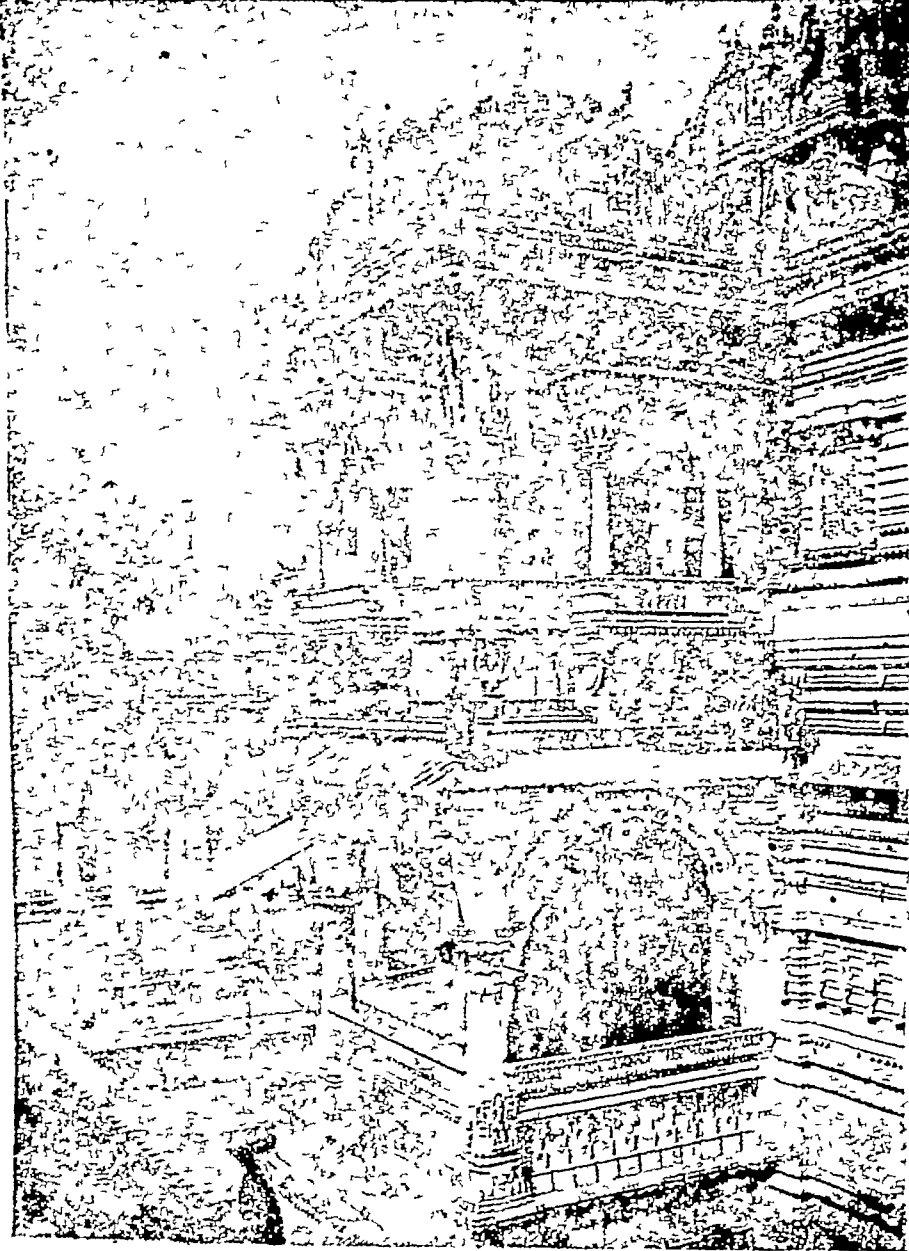
प्रवेश द्वार, हठीसींग मदिर, गुजरात *Entrance, Hathising Temple, Gujarat*
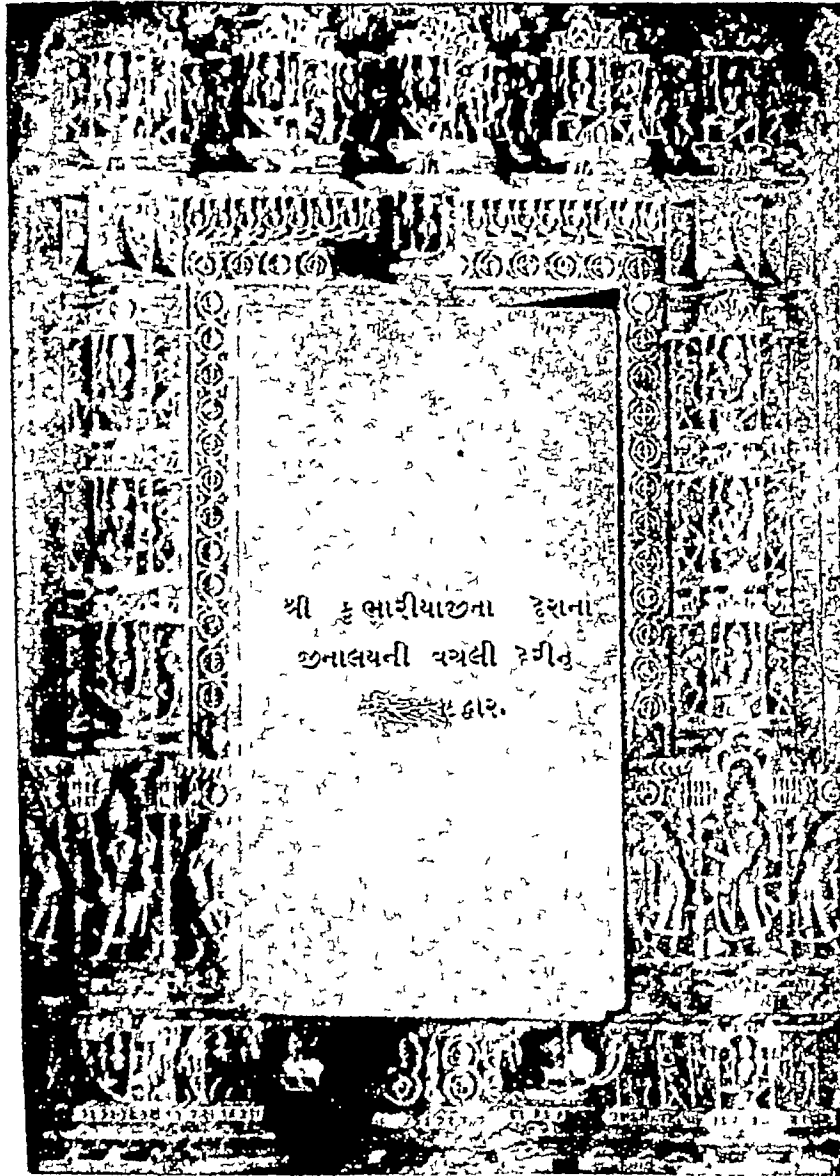
द्वार, कुभारिया मंदिर, गुजरात *Door frame, Kumbhariya Temple, Gujarat*

दुर्ग का भीतरी भाग *Details of fort*
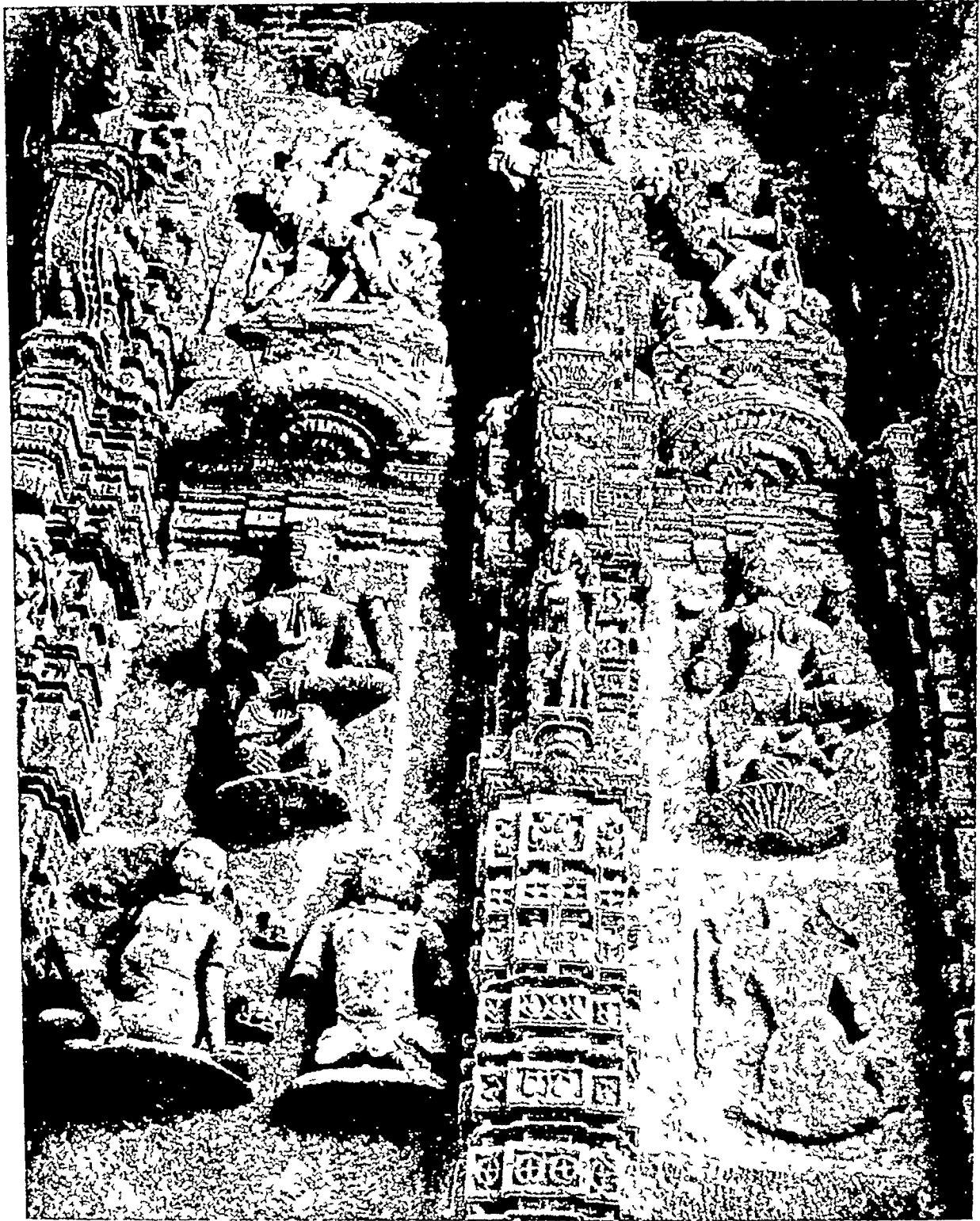
दुर्ग का भीतरी भाग *Details of fort*
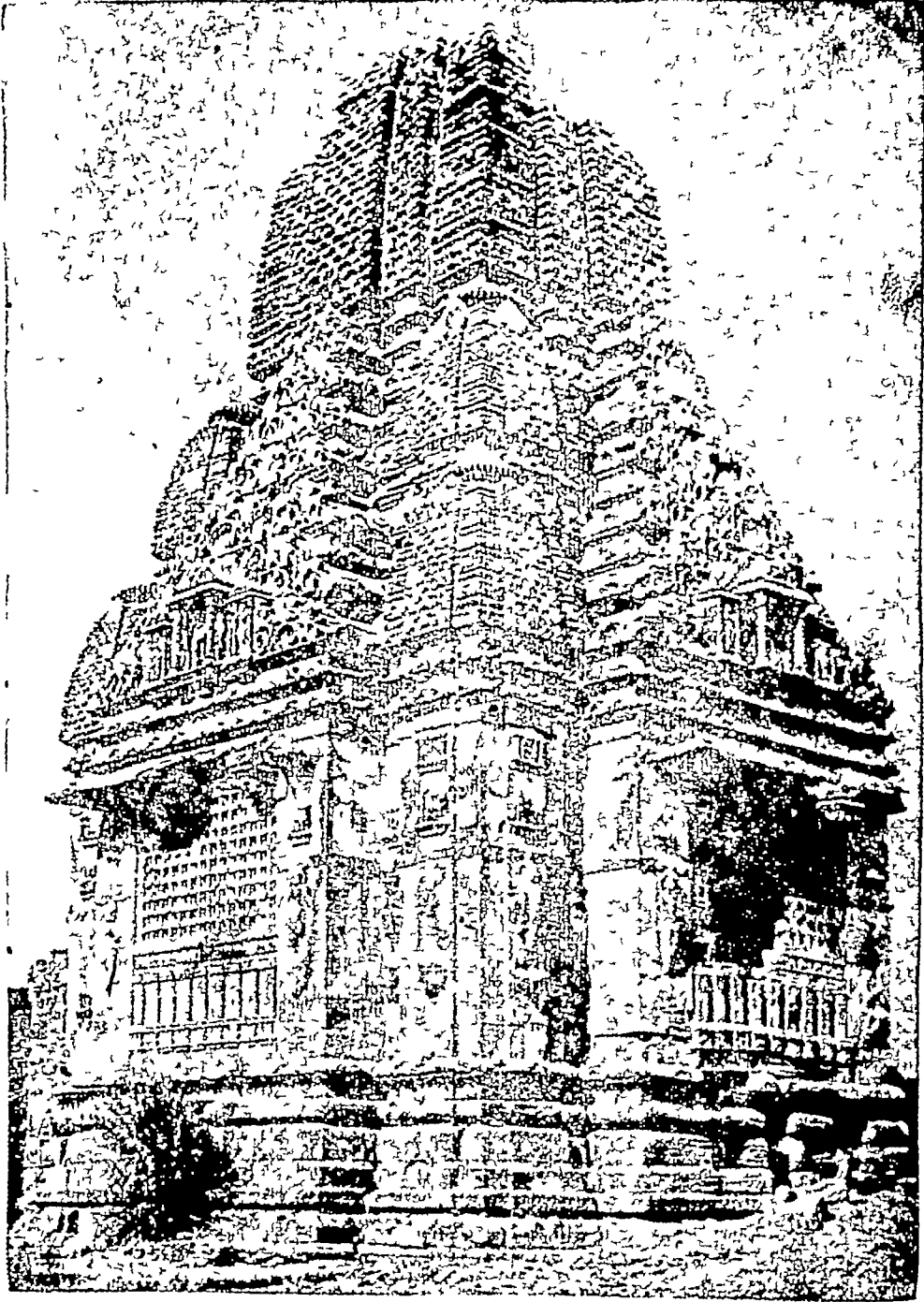
केराकोटा (कच्छ) का मंदिर, १० वीं सदी *Temple of Kerakota, 10th Century*
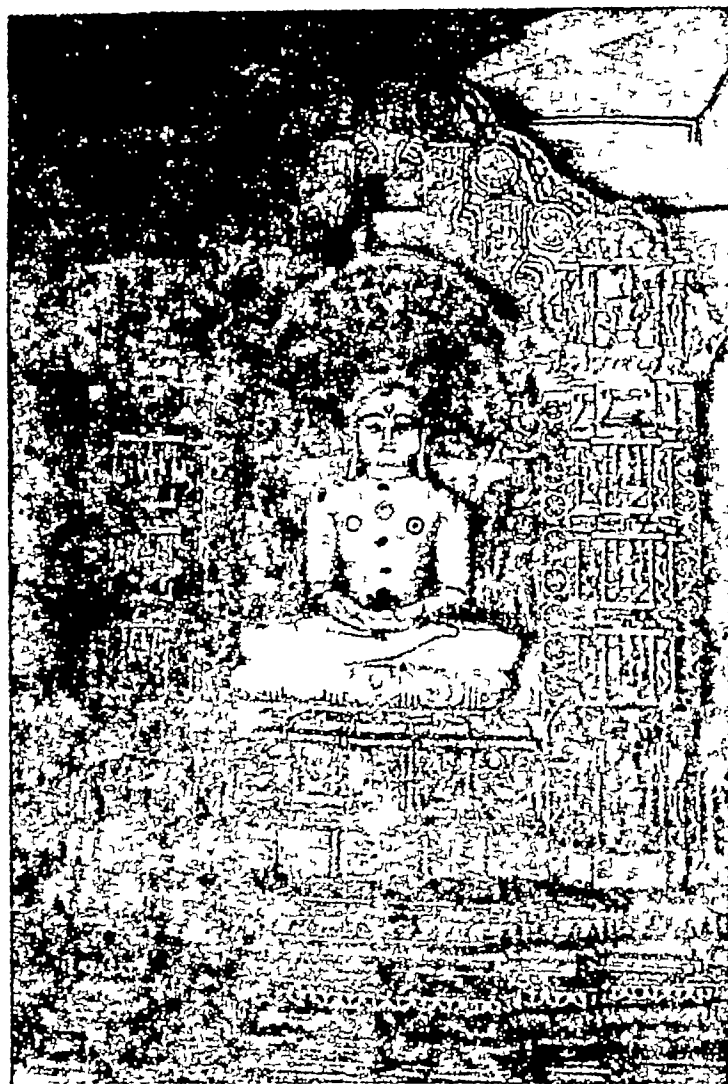
परिकर युक्त जैनप्रतिमा *Decorated Jain Image*